कुरुजनपदीय स्वाँग परम्परा : सांस्कृतिक अध्ययन

(अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ की पी-एच०डी० उपाधिहेतु प्रस्तुत शोध-सार)

१९९७

निर्देशक
प्रो० शिवकुमार शाण्डिल्य
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
अ० मु० वि०, अलीगढ़-२०२००२

शोधार्थी
मौहम्मद कलीम सिद्दीक़ी
एम०ए० (हिन्दी)

हिन्दी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

ANA AZAD
ACC No.
T-5073
Muslim University, Al

प्रबन्ध सार

लोक-साहित्य : परिभाषा एवं क्षेत्र :

लोकवार्ता में किसी न किसी रूप में किसी प्राचीन युग की झलक मिल सकती है। वह कहानी-कार की मौलिक कल्पना नहीं होती बल्कि किसी प्राचीन कल्पना का रूपान्तर होती है और उसकी विविध निर्माण–वस्तुओं में ऐसी अद्भुत असम्भावनाओं का समावेश होता है कि वे किन्हीं अन्य तत्वों की व्याख्या के द्वारा ही अभिव्यक्ति का रूप ग्रहण कर पाती है। इन लोकवार्ताओं के कथा–तत्वों को समझने के लिए इनमें निहित रहस्य का उद्घाटन आवश्यक है।

लोकवार्ता में, मानव की आदिम स्थिति से आजतक के विकास की विविध अनुभूतियों का ज्ञान हो जाता है। लोकवार्ता में लोकमानस जितनी शुद्ध अवस्था में प्रतिबिम्बित और सुरक्षित रहता है उतना वह किसी अन्य माध्यम में नहीं रहता।

वास्तव में लोक–मानस का प्राचीनतम रूप इसमें निहित रहता है। लोक–मानव उनमें प्राण–प्रतिष्ठता नहीं कर सकता था। वह उनके अस्तित्व में ही विश्वास करता था। वह स्थूल दृष्टि से अपनी कसौटी द्वारा मानवेतर सृष्टि के व्यापारों और वस्तुओं को ग्रहण करता था। उसका यह बोध एक ही वस्तु के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न अवसरों पर भिन्न होता था। इन्हीं मानसिक अनुभावों को उसकी भाषा व्यक्त करती थी। भाषा का स्वभाव इन्हीं संस्कारों के अनुकूल था।

जिस युग में लोकवार्ता सम्बन्धी प्रयास आरम्भ हुए उस युग में भारत का विदेशों से घनिष्ठ सम्पर्क भी बढ़ने लगा था। संस्कृत की खोज पाश्चात्य क्षेत्रों के लिए हो चुकी थी। इन्हीं पाश्चात्य विद्वानों ने पहले भारत की लोकवार्ता पर दृष्टिपात किया। टाड महोदय को सबसे पहले लोकवार्ता संग्राहकों में स्थान दिया जा सकता है। इन्होंने 'एनाल्स ऑफ राजस्थान' में राजस्थान के इतिहास की जितनी सामग्री इकट्ठी की है, उतनी हो लोकवार्ताएँ भी। प्रचलित विश्वासों, रीति–रिवाजों का भी उल्लेख उसमें हुआ है।

आर०सी० टेम्पल महोदय ने 'लीजैंड्स ऑफ पंजाब' में लिखा है – "५० वर्षों में अर्थात् जब से टॉड ने अब तक प्रामाणिक माना जाने वाला ग्रन्थ राजस्थान पर लिखा –स्लेवों के गीतों और लोकवार्ताओं का वृहत् अनुलेखन लेखकों ने कर डाला है। रूसी, पोली, श्वेत, क्रोशीय, सर्वी, मोरावी,

बेंडी, रुथेनी तथरा अन्य पर विस्तृत कार्य हुआ है। भारत में शासक अपनी ऊँची बुद्धि पर, अपने भेजे हुए प्रतिनिधियों की ऊँची शिक्षा पर एवं शासन के ऊँचे लक्ष्यों पर गर्व करते हैं, वहाँ यह कार्य अभी आरम्भ ही हुआ है।" टेम्पल महोदय का कहना सही था। १८८४ तक जितना कार्य भारत देशों में लोकवार्ता के क्षेत्रों में हो चुका था उतना भारत में आज तक नहीं हुआ। वास्तव में इस दिशा में इन्हीं टेम्पल महोदय के प्रयास से विशेष प्रगति हुयी। १८६६ में इन्होंने रेवेरेंड एस० हिस्लप के लेखों का प्रकाशन किया। हिस्लप के लेख मध्यभारत की आदिम जातियों के सम्बन्ध में थे। इन्हीं में कहानी उसके मूल के साथ दी गयी थी। हिस्लप महोदय का अनुकरण भी नहीं हो सका और वह उद्योग लोकप्रिय भी नहीं हुआ। इस लेखक की लेखन–शैली विद्वतापूर्ण होने के कारण रोचक नहीं हो सकी। १८६८ में मिस फ्रेयर ने 'ओल्ड डैकन डेज' नाम से कहानियों का एक छोटा सा रोचक संग्रह निकाला। १८७१ में डाल्टन ने **'डिस्क्रिप्टीव एथनालॉजी ऑफ बंगाल'** प्रकाशित की। डैमण्ट ने पुरातत्व और इतिहास के सुप्रसिद्ध पत्र इण्डियन एक्टिविटी में बंगाल की लोकगाथाओं को प्रकाशित करना आरम्भ किया। १८८३ में रेवरेन्ड की **'फोकटेल्स ऑफ बँगाल'** निकली। १८८४ में रिचर्ड टेम्पल महोदय की **'लीजेण्ड्स ऑफ दी पंजाब'** तीन भागों में प्रकाशित हुयी। १८८५ में श्रीमती एफ० ए० स्टील के सहयोग से टेम्पल महोदय ने 'वाइड उनके स्टोरीज' नाम से कहानियों का संग्रह प्रस्तुत किया। नरेश शास्त्री ने 'इण्डियन एण्टिक्वेरी' में जो कहानियाँ छपवायी उनका संग्रह भी 'फाक्लोर इन सर्दन इण्डिया' नाम से प्रकाशित हुआ। सन् १८९० में डब्ल्यू क्रुक ने 'नार्थ इण्डियन नोट्स एण्ड क्वेरीज' नाम का पत्र प्रकाशित किया।

कुछ वर्षो बाद रेवरेंड ए० कैंपबे तथा रेवरेड जे०एस० नोलीज ने संथालों और काश्मीर की कहानियों का संग्रह करना आरंभ किया। आर०एस० मुखर्जी की **"इण्डियन फोकलोर"** श्रीमती डूकोर्ट की **'शिमला विलेज टेल्स'**, रेवरे सी० स्विनर्टन की **'रोमाण्टिक टेल्स फॉम पंजाब'** नाम के ग्रन्थों ने लोकवार्ता की महत्वपूर्ण सामग्री दी। १९०९ में जी०एच० बोम्पस ने रेवरेंड ओ० बौडिंग द्वारा संकलित **'संथाली हाउस होल्ड टेल्स'**, शोभनादेवी की ओरियण्ट पर्ल्स' भी महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। पार्थर का **'विलेज फोक टेल्स ऑफ सीलोन'** (तीन भाग) अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। पेज़र द्वारा संपादित **टानी की कथा सरित्सागर** का लोकवार्ता में महत्वपूर्ण स्थान है। कथाशास्त्र का यह अनुपम ग्रन्थ है। शरतचन्द्र राय भारत के प्रतिष्ठित नृशास्त्र–वेत्ताओं में है। ग्रन्थों में भी कुछ कहानियों का समावेश हुआ है। ग्रियर्सन के नृअध्ययनों में भी एक दो कहानियाँ आ गयी है। रामास्वामी राजू का नाम भी उल्लेखनीय है। उन्होंने १०० भारतीय कहानियों का संग्रह भेंट किया जो 'इण्डियन फेबिल्स' के नाम से ख्यात है। जी०आर०

सुब्राहियां पंवालु की **'फोकलोर ऑफ दी तेलगूज'** में साहित्यिक पुट है। 'मारिस ब्लमफील्ड, नार्मन ब्राउन रूथनार्टन, एम०बी० एमेन्यू जैसे अमरीकन विद्वानों का नाम भी उल्लेखनीय है, इन्होंने लोकगाथाओं के अध्ययन की नितान्त नवीन प्रणाली स्थापित की।[1]

आजकल इस दिशा में सबसे अच्छे नृविज्ञान वेत्ता डॉ० बैरियर एलविन हैं, जिनके गीत और कहानियों के कई रोचक संग्रह प्रकाशित हुए हैं। सारे उद्योगों का वर्णन अंग्रेजी माध्यम में हुआ है। इसमें सन्देह नहीं भारत में लोकवार्ता के क्षेत्र में ये अग्रणी हैं। इनके दिशा निर्देश से भारत में अन्य प्रयत्न आरम्भ हुए।

लोकवार्ता में लोकगीतों का भी संग्रह हुआ। इस दिशा में सी०ई० ग्रोवर का नाम अविस्मरणीय है। उन्होंने **'फोक सॉंग्स ऑफ सर्दन इण्डिया'** नाम का संग्रह १८७२ में प्रकाशित कराया। १८८२ में तोरूदत्त ने **'ऐशियंट बैलेड्स एण्ड लीजेण्ड्स ऑफ हिन्दुस्तान'** प्रकाशित कराया। टेम्पल महोदय की **'लीजेंड्स ऑफ दी पंजाब'** भी गीत–संग्रह ही है।

क्षितिमोहनसेन की 'दारामणि' उल्लेखनीय है। मैमन सिंह गीतिका भी बंगला का संग्रह है। गुजराती के झबेरचन्द मेघाणी की 'रठियाली रात ३ भाग', रणजीराव मेहता की **'लोकगीत'**, नर्मदा शंकर लाल शंकर की **'नागर स्त्रियों मॉं गवाता गीत'**, पंजाबी में संतराम के पंजाबी गीत, मारवाड़ी में मदनलाल वैश्य की मारवाडी गीतमाला, निहालचन्द वर्मा के मारवाड़ी गीत, खेताराम माली का मारवाडी गीत संग्रह, ताराचन्द ओझा का **'मारवाड़ी स्त्री गीत संग्रह'** एवं प्रो० शांडिल्य के कौरवी लोक–कथाएँ कौरवी लोक–कथाएँ, कौरवी लोक–गीत एवं कौरवी लोकोक्तियाँ संग्रह उल्लेखनीय हैं।

आठवें दशक तक इस दिशा में हिन्दी में बहुत अच्छा कार्य हुआ है। राजस्थान के सूर्यकरणी जी पारीक, ठा० रामसिंह, श्री नरोत्तम स्वामी का नाम बहुत सराहनीय है। राजस्थान के लोकगीतों का अच्छा संग्रह प्रकाशित किया गया। प्रो० कन्हैयालाल सहल को भी इस ओर विशेष रुचि है। नरोत्तम स्वामी आदि के उद्योग से बीकानेर राज्य से 'राजस्थान' पत्रिका अंग्रेजी के इंडियन ऐंटिक्वेरी आदर्श पर निकल रही है जिसमें पुरातत्व के साथ लोकवार्ता को भी स्थान दिया जाता है। मिथिला में राम इकबाल सिंह 'राकेश' ने लोकवार्ता के क्षेत्र में कार्य किया। उनके लेख 'हँस' तथा 'विशाल भारत' में प्रकाशित हुए। भोजपुरी लोकगीतों का भी एक संग्रह सामने आया। बुन्देलखण्ड में पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के अभियान के पश्चात् जो स्थानीय साहित्यिक जागृति हुयी उसके परिणामस्वरूप चन्द्रभानु शर्मा, रामस्वरूप योगी, शिवसहाय चतुर्वेदी आदि अच्छे लोकवार्ता संग्रहकार सामने आये हैं। श्रीकृष्णनंद गुप्त

ने अंग्रेजी 'फोकलोर' मैगज़ीन के आदर्श पर 'लोकगीत' नाम त्रैमासिक पत्रिका भी हिन्दी में निकालने का सफल आयोजन किया। इन्हें वासुदेवशरण अग्रवाल तथा प्रसिद्ध भारती नृ–विज्ञानवेत्ता डॉ० वैरियर ऐलविन का सहयोग भी मिला। 'ईसुरी के फाग' नाम की पुस्तक भी लोकवार्ता परिषद की ओर गुप्त जी ने प्रकाशित करायी।

कौरवी के क्षेत्र में प्रो० शिवकुमार शाण्डिल्य के कार्य उल्लेखनीय हैं। इन्होंने लोककथाओं, लोकवार्ताओं, लोकगीतों तथा स्वॉगों के महत्वपूर्ण संग्रह किए हैं। ये सभी उद्योग श्लाघ्य हैं और लोकवार्ता के अध्ययनक्षेत्र को विस्तृत करनेवाले हैं। इनमें यथार्थतः वैज्ञानिक उद्योग कम हुए हैं। ब्रजक्षेत्र में ब्रज साहित्य मण्डल ने सामूहिक उद्योग किया।

कुरु जनपदीय समाज-व्यवस्था

कुरु प्रदेश में आज भी संयुक्त परिवारों की अधिकता है। इस प्रदेश में अधिकतर खेती करनेवाले लोग रहते हैं अर्थात् अधिकतर खेती पर निर्भर रहनेवाले परिवार हैं। ये परिवार सब तरह आपस में मिल–जुलकर अपने पारिवारिक कार्य करते हैं। ये परिवार एक–दूसरे के लिए महत्वपूर्ण सहयोगी भी हैं। परिवार में बाबा या दादी की आज्ञा को उच्चतम न्यायालय की तरह माना जाता है। उसके बाद माता–पिता और बड़े भाई की आज्ञा का महत्व है। पारिवारिक जीवन में ऐसी अव्यवस्था न आने पाये इसलिए ऐसी व्यवस्था की गई है। परिवार के छोटे–मोटे झगड़े एवं पारिवारिक समस्यायें सुलझा लेते हैं। औरतों के बीच कलह हो जाने पर या तो बँटवारा कर दिया जाता है, या परिवार का बड़ा–बूढ़ा सबके हितों का ध्यान रखते हुए अपना फैसला सुना देता है। फैसला सभी को मानना पड़ता है। इस व्यवस्था के फलस्वरूप यहाँ के लोगं अत्यन्त परिश्रमी और प्रगतिशील है।

कौरवी स्वाँगों में पारिवारिक जीवन के स्पष्ट चित्र मिलते हैं। ये चित्र अधिकतर राजा और रानी की कथाओं के माध्यम से प्रस्तुत किये जाते हैं। ये स्वाँग लोक–परिवेश को उजागर करने, कुछ विशिष्ट सन्देश देने और पारिवारिक जीवन की कानून–व्यवस्था स्थापित करने का कार्य करते हैं।

खेतीहरों एवं मजदूरों की संख्या अधिक होने के कारण यहाँ पर पति–पत्नी–सम्बन्ध अधिकतर मधुर नहीं हैं। इसका कारण धनाभाव या कार्याधिक्य है। कुछ जातियों में मुक्त साहचर्य देखने को मिलता है। कुलटा स्त्रियाँ अपने प्रमियों से छिप–छिपकर खेतों में मिलती हैं। पुरुष भी इसके अपवाद नहीं। वे भी इसके दोषी हैं। मुक्तहास और व्यंग्य अक्सर देखने को मिलते हैं। मुक्तहास और व्यंग्य जीवन

को सरस बनाने में सहायक होते हैं। स्वाँगों में मुक्त–साहचर्य परस्त्री–गमन और परपुरुष सम्बन्ध को पाप कहा है। वे इस प्रथा पर स्वाँगों में प्रहार करने से नहीं चूकते।

लोक मानव सहज विश्वासी होता है। तर्क में उसका विश्वास नहीं होता। वह भाग्य भरोसे सम्पूर्ण जीवन–नैया को खेता है। यह भरोसा उसको अकर्मण्य बना देता है। किन्तु यह विश्वास उसे अनेक बुराइयों और आपाधापी से बचा लेता है। 'ऐसा ही होना था' यह सोचकर वह अपने अहित करनेवाले व्यक्ति को भी क्षमा करता है। नियतिवादी भावना उसकी नीयत को भी सरल बनाए रखती है। यह नियति के भरोसे अपने दैनिक कार्यों और मानसिक संवदेना को संयत रखता है। उसका विश्वास है कि निश्चित समय, निश्चित माध्यम से पूर्व निर्धारित कार्य स्वतः सम्पन्न होता है। यह सब अनायास होता है।

लोक स्वाँगी, लोक की मिट्टी की भावनाओं का गायक होता है। वह लोक की सूक्ष्मतम संवदेनाओं को आत्मसात् करके उसे वाणी प्रदान करता है। लोक में परम्परागत भावना का प्राधान्य होता है। युगों–युगों की मान्यताओं को स्वाँगों में महत्वपूर्ण स्थान मिलता है। ये मान्यताएँ युगानुरूप नहीं होती इसीलिए इन्हें अन्धविश्वास कहा जाता है। वैसे इन आस्थाओं और विश्वासों के वैज्ञानिक आधार होते हैं। कालान्तर में इनकी वैज्ञानिकता सम्बन्धित ज्ञान लुप्त हो जाता है। इसके फलस्वरूप यह धर्मका अंग बनकर अध ाविश्वास बनकर रह जाता है।

कुरु प्रदेश की भौगोलिक स्थिति में विषमताओं के कारण उस परिवेश में बाघ, भालू, चीते, सर्प आदि बहुतायत में मिलते हैं। इनका विवरण टोटम तथा टेबू के रूप में स्वाँगों में सर्वत्र मिलता है। इनमें से कुछ हानिकारक और कुछ (पालतू पशु आदि) उपयोगी होते हैं। नाग को देवता के रूप में तथा बाघ को नरसिंह के रूप में पूजने की परम्परा लोक–मनस्तत्व का परिणाम है। सर्पों को भगवान शिव और कृष्ण से भी जोड़ा जाता है। सिंह नरसिंह का टोटम भी है। परिणामतः धर्म से संबद्ध लोक–मानस इन पशु–पक्षियों में टोटम के भाव को शास्त्र–सम्मत मानते हुए इनमें देवत्व का ओरापण करता है।

इन पर्वों, त्यौहारों और मेलों के विवरण विभिन्न स्वाँगों में स्थान–स्थान पर मिलते हैं। किसी एक पर्व त्यौहार या मेले का सन्दर्भ देकर अपनी बात की पुष्टि नहीं की जा सकती इसके लिए कुरु जनपदीय स्वाँगों का विस्तृत अध्ययन आवश्यक है। परिशिष्ट में इन्हें संकलित किया गया है। उनमें अभिव्यक्त आस्थाओं से इन तथ्यों की पुष्टि हो जायेगी।

कुरु प्रदेश का प्रमुख उद्योग कृषि है। बहुत पहले यह क्षेत्र तराई का क्षेत्र था। खेती के साथ–साथ तराई कुछ कम होती गयी किन्तु अपना उपजाऊपन धरती में बराबर बना रहा। कुरु प्रदेश की लोक

कथाओं में ऐसे संकेत बराबर मिलते हैं कि पॉडवों ने कुरु प्रदेश के मुजफ्फर नगर जनपद के तराई क्षेत्र में अज्ञातवास का एक वर्ष व्यतीत किया।

खेती, इस प्रदेश का मुख्य व्यवसाय है। खेती बिना बैलों तथा उपकरणों के सम्भव नहीं हो पाती। खेती के साथ–साथ जुड़े होते हैं खेत और जंगल, नदी, नाले, तालाब, रहट, हल, बैल, नौकर–चाकर आदि। विभिन्न उपकरणों के संकेत कौरवी लोक स्वाँगों में बराबर मिलते हैं। खेती के साथ–साथ कुछ अन्य व्यवसायी भी जुड़े रहते हैं – लुहार, कुम्हार, बढ़ई, तेली, नाई, चमार, सक्के आदि।

आजादी से पहले इन व्यवसायों को मजदूरी के रूप में खेत में से निर्धारित उपज दी जाती थी। यह अदायगी दुसेरी (दो सेर) पँसेरी (पाँच सेर) आदि के रूप में दी जाती थी। मेहनत के अनुसार किसी को एक पँसेरी किसी को दो पँसेरी अनाज दे दिया जाता था। इस परम्परा के संकेत कौरवी स्वाँगों में यत्र–तत्र मिल जाते हैं।

भारतीय संस्कृति सर्वत्र मूलतः एक है। उसके मूल तत्व एक हैं किन्तु स्थानीय संस्कारों के कारण स्थानीय संस्कृति में सूक्ष्म अन्तर हो जाता है। इसी आधार पर लोक–संस्कारों में भी सामान्य भिन्नताएँ मिल जाती हैं।

वैदिक काल से ही कुरु–जनपद का वैदिक संस्कृति से सम्बन्ध रहा है। वैदिक संस्कार इस क्षेत्र की लोक–संस्कृति में सर्वत्र मिल जाते हैं। काल की लम्बी अवधि में इनमें कुछ परिवर्तन अवश्य हुए हैं किन्तु सूक्ष्म संप्रेषणीयता में विशेष अन्तर नहीं है। यहाँ की स्थानीय संस्कृति के संस्कारों की जड़ें बहुत गहरी हैं। ये जड़ें इतनी विस्तृत और सूत्रोंवाली हैं कि उनका उद्‌गम–स्थल जानना कभी–कभी असम्भव हो जाता है। कुछ भी हो यह क्षेत्र वैदिक संस्कारों और परवर्ती स्थानीय संस्कारों के सम्मिलन की अभूतपूर्व स्थली है। इस संस्कृति के विशेष तत्वों का अध्ययन इस अध्याय में किया गया है। किन्तु इस और विस्तृत अध्ययन की अपेक्षा है। विस्तार–भय के कारण इन तत्वों पर यहाँ संक्षेप में विचार किया गया है। स्वाँगों में उपलब्ध संस्कृति के कुछ उदाहरण विस्तार से परिशिष्ट में संगृहीत स्वाँगों में देखे जा सकते हैं।

कुरु लोक-साहित्य और कुरु जनपदीय स्वाँग परम्परा

भारतीय लोकसाहित्य अत्यन्त प्राचीन है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका प्रभाव संसार के प्रायः सभी सभ्य देशों के लोकसाहित्य पर प्रचुर रुपेण पड़ा है। यूरोपीय देशों में इनके

प्रचार–प्रसार का कहानी लम्बी है। सर्वप्रथम भारतीय लोक–कथाओं कहानियों का अनुवाद अरबी और पहलवी भाषाओं में हुआ। इसके पश्चात् यूरोप की विभिन्न भाषाओं में इनके अनुवाद प्रस्तुत किये गये। यूरोप में प्रचलित 'इसाप्स' की कहानियों में भारतीय प्रभाव, स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

हिन्दी में लोक का साहित्य अत्यन्त उच्च कोटि का है। डॉ० सत्येन्द्र ने हस्तलिखित ग्रन्थों का उल्लेख किया है जिसमें लोक वार्ता की परम्परा मिलती है। उन्होंने लिखा है – "और जब हम हस्तलिखित ग्रन्थों के शोध के पन्ने पलटते हैं तो हमें आश्चर्य में पड़ जाना पड़ता है। अनेक पुस्तकें हैं जो लोक वार्ताओं को स्पष्ट करती हैं"।

डॉ० सत्येन्द्र ने प्रतिपादन क़ी दृष्टि से उन पुस्तकों को साधारणतः सात भागों में बॉटा है।

१. लोक कहानी – इसमें वह पुस्तकें आती हैं जो लोक प्रचलित कहानियों के लिए हैं।
२. धर्म महात्म्य कथा – व्रत आदि से सम्बन्धित कथाएँ।
३. अवदान कथाएँ ।
४. वीर गाथाएँ।
५. साधु कथाएँ।
६. पौराणिक कथाएँ।
७. जन–कथाओं का वर्ग। इसमें विभिन्न लौलिक संस्कारों का उल्लेख है।
८. विविध

डॉ० शिवकुमार शांडिल्य के.अनुसार – लोक मानस का स्वरूप इस प्रकार है[1] : लोकमानस, लोक प्रचलित आस्थाओं, विश्वासों, मान्यताओं, समय के चिरन्तन प्रवाह में अर्जित संवेदनाओं, कल्पनाओं एवं अनुभूतियों का आगार होता है या यों कहिये कि लोक मानसलोक की सतत् प्रवाहमान सांस्कृतिक मान्यताओं एवं भौतिक परिवेशगत विशेषताओं का समग्र चेता होता है। लोककथाएँ तथा लोकगाथाएँ किसी एक कथाकार की रचनाएँ न होकर सतत गतिशील एवं प्रवाहमान लोकमानस की रचनाधर्मी प्रकृति का प्रतिफल होती हैं। ये कथाएँ श्रुति–परम्परा से एक पीढी से दूसरी पीढी को प्राप्त होती है। इस दृष्टि से इन्हें लोक वेद की संज्ञा दी जा सकती है। इस रचनाओं में सामूहिक अचेतन मन की रचनाकार को मानसी शाब्दी अभिव्यक्ति होती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से :

लोकमानस

क. लोक सांस्कृतिक परिवेशगत मान्यताएँ।

ख. लोक भौतिक परिवेशगत संवेदनाएँ।

लोक-सांस्कृतिक परिवेश

धार्मिक आस्थाएँ – नियतिवाद – उदार मनोवृत्ति – तर्कहीन आस्थाएँ – अंधविश्वास आदि।

लोक-भौतिक परिवेश

भोज्य पदार्थ, वस्त्रघर नदी पर्वत मैदान, पशु पक्षी, नौकर–चाकर, पारिवारिक जन, बर्जुआ एवं सर्वहारा वर्ग।

लोक–मानस को प्रभावित करनेवाले उपर्युक्त कारकों के प्रभाव की अभिव्यक्ति निम्नलिखित उपादानों से होती है।

लोक-ज्ञान

लौकिक संवेदनाएँ, प्रत्यक्षीकरण, ज्ञान, अन्त स्फूर्ति, स्मृति, कल्पना, सक्रिय, निष्क्रिय ग्रहणात्मक बौद्विक, व्यवहारिक, सौन्दर्यात्मक ज्ञान।

लोक-इच्छाएँ

परस्पर स्नेह, सौहार्द, आदि मानवीय भावनाओं से प्रेरित क्रियाएँ।

लोक-साहित्य

लोक–साहित्य, लोक–सांस्कृतिक प्रतिबिम्ब है। मनुष्य लोक का ऐसा प्राणी है जो सामूहिक अवचेतना का प्रतिफल अधिक है। लोक–साहित्य धरोहर के रूप में पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलता है। इसकी कोई भाषा, रचना–पद्धति और व्याकरणिक नियम नहीं होते। जो चीजें लोकचित्त से सीधे उत्पन्न होती है और जनसाधारण को आन्दोलित एवं प्रमाणित करती है वही लोकसाहित्य, लोकशिल्प, लोकनाट्‌य, लोक कथानक आदि नामों से पुकारी जाती है। लोकसाहित्य शिक्षित समाज से अलग लोकमानस की अभिव्यक्ति का साहित्य है।

लोकसाहित्य लोक संस्कृति का दर्पण है। लोक संस्कृति और साहित्य का आपस में निकट सम्बन्ध है। लोकसाहित्य लोकभाषा से जुड़ा है। लोकसाहित्य में सभी देशों का अद्‌भुत सौन्दर्य और

माधुर्य रहता है। यह शिष्ट साहित्य का ही परिष्कृत रूप है।

लोकसाहित्य सामान्य जीवन के सर्वांगीण तथ्यों को उद्घाटित करता है। देश एवं जाति का लोकसाहित्य में कई दृष्टियों से विशेष महत्व है। मौलिक स्वरूप के कारण इसमें अनेक विशेषताएँ दिखाई देती है जो शिष्ट साहित्य में समाप्त हो जाती है। लोकसाहित्य अपने व्यापक परिवेश में समस्त देश के जीवन की धार्मिक सामाजिक तथा सदाचारसम्बन्धी विशेषताओं को सुरक्षित रखता है। लोकसाहित्य का अध्ययन सामाजिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक तथा नैतिक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

लोकसाहित्य के माध्यम से भौतिक संस्कृति को भी उजागर किया जा सकता है। परिवेशीय भोज्य पदार्थों , वेश–भूषाओं, वस्त्रों, आभूषण और सौन्दर्य–प्रसाधनों का चित्रण लोक–साहित्य में मिलता रहा है। दूसरी ओर इनमें नौकर–चाकर, मजदूर–वर्ग, पारिवारिक जनजीवन, घर, नदी, जंगल, मैदान, पशु–पक्षी आदि सभी का स्थान–स्थान पर वर्णन मिलता है।

कुरु प्रदेश के स्वाँगों में महाभारत के पात्रों के नाम मिलते हैं। यहाँ के लोगों को भीम का नाम अत्यन्त प्रिय हैं। राम के अनन्य भक्त हनुमान को भी भीम की ही भाँति आदर मिलता है। ऐतिहासिक पात्रों को मिथक के रूप में भी इन कहानियों में स्मरण किया जाता है। ये हैं राजा भोज, राजा हरिश्चन्द्र और राजा बीर विक्रमाजीत। राम के विरोधी रावण से यहाँ व्यक्तिगत राग–द्वेष न मिलकर कर्मगत द्वेष मिलता है। ये रावण विभीषण को उनके कर्मो के कारण नकारते हैं न कि राम–विरोध के कारण। लका यहाँ की औरतों की एक गाली है।

लोक–साहित्य को श्रुति परम्परा से प्राप्त होने के कारण लोक वेद की संज्ञा दी जा सकती है। इस साहित्य में लोक की सम्पूर्ण आस्थाओं, मान्यताओं, आशाओं, निराशाओं, विश्वासों, अन्ध विश्वासों आदि का सजीव चित्रण होता है। लोक में इसकी मर्यादा की रक्षाओं के लिए किसी न किसी वृद्ध पुरुष का होना नितान्त आवश्यक है। लोक–साहित्य को उसी वृहद्ध पुरुष के समान माना जा सकता है। अन्तर केवल इतना होता है कि वृहद्ध पुरुष की आयु और यात्रा अनन्त होती हैं।

भारतीय लोकमानस का सीधा सम्बन्ध परम्परा से जोड़ा जा सकता है। यह कहना उपयुक्त न होगा कि लोक का जीवन, परम्परा–जीवन होता है। परम्पराएँ लगातार विकसित हुआ करती हैं, टूटती नहीं हैं। इस प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि परम्परा का विकास लोक–संस्कृति का विकास है और संस्कृति के परम्परागत तत्व लोक–सांस्कृतिक मान्यताएँ हैं। भारत आरम्भ से ही अरण्य संस्कृति की नींव पर खड़ा है। अरण्य संस्कृति का विकास अधिकांशतः नदियों के किनारे और हिमालय और

विंधयाचल की चोटियों पर हुआ। इस समतल भूमि और ऊँचाई के दोनों गुण लोक–संस्कृति में मिलते हैं। समतल होने के नाते इसमें समद्रष्टा होने का प्रधान गुण और शिखर के उन्नत होने के कारण इसमें लगातार प्रगति की भावना समाविष्ट रहती है। लोक–संस्कृति के पोषक अरण्य पर्वत श्रृंखलाएँ रही है या समतल मैदान। इन तीनों का ही सम्बन्ध क्षण–क्षण परिवर्तनशील उदात्त एवं स्थिर प्राकृतिक उपादानों से है। जहॉ एक ओर पेड़े अपना सिर ऊपर उठाये रहते हैं वहीं दूसरी ओर सामान्य वनस्पति अपने कलेवर को बराबर बदलती रहती है।

कुरु जनपद में स्वॉग का आरम्भ जावली गॉव से माना जाता है जो इस समय गाजियाबाद जनपद में आता है। यह बताया जाता है कि यहॉ के प्रसिद्ध स्वॉगी नत्थूलाल, मानसिंह थे। इनके यहॉ पर ४०० ढ़ोलक थीं जो एक साथ गरज कर स्वॉग की सूचना १०–१० कोस तक पहुँचा देती थीं। एक प्रकार से जावली गॉव ही कुरु जनप्रद के स्वॉग का आरम्भिक केन्द्र माना जाता है। इन्हीं स्वॉगियों के शिष्य और प्रशिष्य पूरे कुरु जनपद में लगभग १९५०–१९६० के बीच जगह–जगह मिल जाते हैं। जावली, सूप, बागपत, मुज्जफरनगर, सनौली, दत्तनगर, मस्तानखेडा, फिरोजपुर, टीला, सरूरपुर, रटौल, डूॅडाहेड़ा, खानपुर, खेखडा, घोघा आदि जगहों के स्वॉगी प्रसिद्ध हुए हैं। स्वॉग की यह परम्परा रेडियो के आरम्भ से धीरे–धीरे कम होती गयी और आज दूरदर्शन के युग में यह भूतकाल की एक धरोहर–सी बनकर रह गयी है।

इस धरोहर में युगीन संस्कृति और समाज का जो चित्रण व्यापक रूप में मिलता है वैसा वर्णन कभी–कभी असम्भव हो जाता है। संस्कृति की सारी मान्यताओं और समाज के सारे उपादानों का जैसा चित्रण स्वॉगों में मिलता है वैसा लोक–साहित्य में अन्यत्र देखने को नहीं मिलता।

कुरु जनपद के सांगीतकार और उनका जीवन-वृत्त

कुरु जनपद में स्वॉग परम्परा का आरम्भ जावली गॉव से माना जाता है जो इस समय ग़ाजियाबाद जिले के अन्दर आता है। स्वॉग के आरम्भकर्ता पण्डित नत्थूलाल मानसिंह मूलतः स्वामी शंकर दास जी के शिष्य थे। स्वामी शंकरदास की लोक–संगीत तथा लोक–काव्य में गहरी पैठ थी। अन्तः साक्ष्यों के आधार पर स्वामी शंकर दास जी के अनेक शिष्य थे जिनमें ठाकुर प्रेमसिंह, उमराव सिंह, हरसामल, किदारनन्द, होरामसिंह (ब्रहमचारी), चेतना, आनन्द, गिरधारीलाल, नेतराम, शिवदयाल, लटूरसिंह, नत्थूलाल, मोहरसिंह प्रमुख थे। इनमें शिवदयाल की प्रशिष्य परम्परा में मुन्शीराम और लटूरसिंह की

शिष्य परम्परा में भगीरथ थे इनके शिष्य चेतराम, और चेतराम के शिष्य कल्लूसिंह और धनीराम हुए। पंडित नत्थूलाल के ५२ शिष्य हुए जिनमें पंडित मानसिंह, बलवन्त (बुल्ली), दीन्ना, पं० लक्ष्मीचन्द शर्मा, पं० रघुवीर शर्मा आदि प्रमुख थे।

पंडित नत्थूलाल मानसिंह

कुरु जनपद की स्वॉग परम्परा का आरम्भ स्वामी शंकरदास के परमशिष्य नत्थूलाल मानसिंह से होता है ये ग्राम जावली, जिला गाज़ियाबाद के रहनेवाले थे। इनका शरीर अत्यन्त भव्य और कायापुष्ठ एवम् विशाल थी। ये छः फुट से भी लम्बे और बलवान् थे। ऐसा बताया जाता है जब ये गरज़ते थे तो इनकी आवाज़ दो–दो कोस तक चली जाती थी। इन्होंने अपने समय में स्वाँग के लगभग ३६० अखाडे तैयार किये थे। यह बताया जाता है कि इनके इन अखाड़ों में ७५० ढ़ोलकें थी। इनके स्वॉगों को देखने के लिए लोग दस–दस पन्द्रह–पन्द्रह कोसों से पैदल चलकर आते थे। अपने समय में शादी एवम् विवाह आदि शुभ अवसरों पर इनको अवश्य बुलाया जाता था और इनका आगमन मेजबान की उच्च सामर्थ्य का सूचक होता था। नत्थूलाल मानसिंह और उसके अखाडे के किसी भी स्वॉगी को बुलाना वैभव का प्रतीक माना जाता था।

पंडित लक्ष्मीचन्द शर्मा

जन्मस्थान - सूप, मेरठ।

जन्म तिथि

सम्वत १९७६ चैत सुदी तीज वृहस्पतिवार तथानुसार सन् १९१९ अपैल माता पिता इनकी माता का नाम सुखदेई और पिता का नाम पं० भरतसिंह था। कुरु जनपद में कृषक और जमीदार परिवार के ब्राह्मण अपने नामों के पीछे सिंह लगाते थे। अब ये परम्परा जातिवाद के बढ़ने के साथ–साथ समाप्त होती जा रही है और जाट ही अपने नाम के पीछे सिंह उपनाम का प्रयोग करते हैं।

पंडित रघुबीर शरण

ये पंडित लक्ष्मीचन्द शर्मा के बड़े भाई थे ये भी सूप जिला मेरठ में पैदा हुए थे। और पंडित जी से पहले स्वाँग करने आरम्भ किये थे। ये अपने समय के अत्यन्त प्रसिद्ध सांगीतकार हुए इनका अधिकांश विवरण लक्ष्मीचन्द शर्मा जी के विवरण से प्राप्त हो जायेगा। पं० रघुबीर शर्मा भी लम्बी आयु को प्राप्त करके दिवंगत हुए और अपने पीछे एक समृद्ध भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। इनके द्वारा

खेले गये स्वॉग पं० लक्ष्मीचन्द शर्मा के स्वॉगों से तालमेल खाते हैं। रचनाकार की दृष्टि के कारण भाषा में थोडा बहुत अन्तर अवश्य हो जाता है। इनके गुरु भी पंडित मानसिंह जावली ही हुए है।

दीन्ना

दीन्ना गाधी गॉव, जिला मेरठ में पैदा हुए। ऐसा बताया जाता है कि दीन्ना पंडित मानसिंह के पास उनके शिष्य बनने के लिए गये थे। किन्तु पं० मानसिंह ने इन्हें काले और कुरूप होने के कारण इनको अपना शिष्य बनाने से इन्कार कर दिया परन्तु दीन्ना एकलव्य की भॉति अपनी जिद पर अड गये और छिप–छिप कर पं० मानसिंह के स्वॉगों की प्रतिक्रिया को आत्मसात करते रहे स्वॉग में पूरी तरह पारंगत हो जाने के बाद इन्होंने अपनी अलग मंडली बना ली और पं० मानसिंह को अपना गुरू मानकर उनका स्मरण करते रहे पं० मानसिंह ने भी आर्शीवाद स्वरूप इन्हें अपना शिष्य स्वीकार किया।

शकूर मीर

जन्म स्थान - आलमपुर, गाजियाबाद

जन्म तिथि - सन् १६२२

पिता का नाम - श्री फय्याज़ मीर

गुरू - पंडित मानसिंह जावली वाले

पारिवारिक जीवन

शकूर मीर के परिवार में उनके चार लडके और ३ लड़कियॉ हुयी लड़कों से इनके ११ पो और १३ पोतियॉ हैं। इस समय ये दिल्ली सीमापुरी में निवास करते हैं। शकूर जी को स्वॉग छोडे करीब १८ साल हो गये और आजकल मीर सहाबकव्वाली पढ़ने का पेशा करते हैं।

एक समय में शकूर मीर का नाम बहुत दूर–दूर तक जाना जाता था। ये उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पहले यह पंजाब का ही एक भाग था। पंजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बम्बई आदि बडे–बडे शहरों में इन्होंने अपने समय में स्वॉग से धूम मचा दी।

चन्द्रलाल बादी

चन्द्रलाल बादी का जन्म लगभग १६२० के आस पास चरखी दादरी (हरियाणा) में हुआ था। इनके पिता का नाम सोहन लाल और माता का नाम चावली था इन्होंने तीन विवाह किये हैं। इनकी पत्नियों के नाम इस प्रकार हैं – भरभाई, फूलवती, चन्द्रो चन्द्रलाल। ये तीनों पत्नियॉ अभी तक जीवित

है इनके चार लडके और चार लडकियॉ हैं सभी लोग संयुक्त परिवार के रूप में रहते हैं। सभी लोग सयुक्त परिवार के रूप में रहते हैं इन्होंने गुरू मंगलचन्द (हरियाणा) से स्वॉग की शिक्षा प्राप्त की ये अपने समय के कक्षा चार पास हैं। चन्द्रलाल बादी दिन में एक बजे से ६ बजे तक तथा रात में ६ बजे से २ बजे तक स्वॉग खेलते हैं। अब तक इनके स्वॉगों की संख्या लगभग ३० है। इनके स्वॉगों के प्रमुख पात्र राजा, रानी, नकलिया आदि होते हैं। चन्द्रलाल बादी बहुत बूढे हो चुके हैं। लेकिन अब भी बराबर स्वॉग खेलते हैं। आज जबकि स्वॉगों का स्थान टी०वी० ने ले लिया है। चन्द्रलाल बादी समर्पित सांगीतकार इस परम्परा को जीवित रखने में महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं। इनके विशिष्ट स्वॉगों में हीर राझा, लैला मंजनू, सत्यवान सावित्री और राजा हरिश्चन्द्र का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

अन्य सांगीतकार

अनेक सांगीतकारों का नाम जिनका कि उल्लेख प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है। उनके अधिक विवरण ना मिलने के कारण उनके सम्बन्ध में जानकारी प्रस्तुत करना कठिन हो गया है। या तो ये सांगीतकार अधिकतर मर चुके हैं या फिर इनके विषय में अधिक जानकारी देने में लोगों को विशेष रूचि नहीं रही है। इनके नाम प्रस्तुत अध्याय में ऊपर दिये जा चुके हैं। प्रमुख सांगीतकारों के स्वॉगो के कुछ अंश यहॉ प्रस्तुत हैं।

कौरवी जनपदीय स्वॉगों का सामाजिक अध्ययन

लोक–साहित्य किसी एक व्यक्ति की मानसी शाब्दी अभिव्यक्ति नहीं हुआ करती बल्कि इसमें दीर्घकालीन सामाजिक सांस्कृतिक परम्परा को चित्रित करने वाला सामूहिक अचेतन क्रियाशील रहता है। इस साहित्य को काल एवं स्थान की सीमाओं में बांध पाना अत्यन्त कठिन होता है। यह सुदूर सचरणशील भी होता है और स्थान बोध के अनेक आयाम भी इसके माध्यम से खुलते हैं। इस प्रकार लोक वार्ता या लोक साहित्य सापेक्ष होता है। प्रो० शाण्डिल्य के अनुसार "लोकवार्ता परिवेशगत आकाश अग्नि–वायु–जल–पृथ्वी से शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध प्राप्त अवश्य करती है। किन्तु इसकी मानसिक सांस्कृति व्याप्ति सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक होता है। पीढियों, विभिन्न विचारों एव स्थानों की विशिष्ट लोक संस्कृति की संपृक्ति के फलस्वरूप यह सामूहिक अवचेतन की कलात्मक शाब्दी अभिव्यक्ति का रूप ले लेती है। सतत गतिशील होने के कारण इसका स्वरूप भी लगातार परिवर्तित–परिवर्धित होता

जाता है।

स्वॉगों में चित्रित लोक सांस्कृति एवम् सामाजिक मान्यताओं को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

क. लोक सांस्कृतिक परिवेशगत मान्यताएँ।

ख. लोक भौतिक परिवेशगत संवेदनाएँ।

क. लोक सांस्कृतिक परिवेश = धार्मिक मान्यताएँ अथवा लोक मान्यताएँ, नियतिवाद, उदारमनोवृत्ति, तर्कहीन आस्था अथवा अन्धविश्वास।

ख. लोक भौतिक परिवेश के उपादान = भोज्य पदार्थ, वस्त्र, घर, नदी, पर्वत, मैदान, पशु पक्षी, नौकर चाकर, पारिवारिक जन, बुर्जुआ(राजा रानी) एवं सर्वहारा वर्ग (गरीब आदमी)

लोक की आधार–शिला धर्म होती है इससे लोक के जीवन को बल एवं प्राण मिलता है। धर्म की परिभाषा देते हुए कहा गया है – "धारयति इति धर्मः" जिसको धारण किया जाय वह धर्म होता है। धर्म को पहले धारण अवश्य किया जाता है किन्तु बाद में वही व्यक्ति की आत्मा बन जाता है। इसके बिना मानव जीवन असंभव हो जाता है।

भारत आदि काल से ही धर्म–प्रधान देश रहा है। धर्म और अध्यात्म यहाँ की आधार–शिलाएँ हैं। लोक–साहित्य की अन्य विधाओं के अनुरुप लोकोक्तियों एवं मुहावरों में भी धार्मिक विचारों एवं भावनाओं का समृद्ध रूप देखने को मिलता है। लोक–साहित्य में धर्म की गंध को इस प्रकार समझा जा सकता है। कि जिस प्रकार फूलों की माला में लगे हुए सूत्र में फूलों की गंध स्वतः समाहित हो जाती है उसी प्रकार लोक में धर्म की गंध व्याप्त रहती है। जबतक लोक रहेगा तब तक उससे धर्म को अलग नहीं किया जा सकता है।

सामाजिक नैतिक परिवेश को लोकाचार कहते हैं। हर समाज में ऐसे लोकाचार जातीय संस्कार और शिष्टाचार होते हैं इनमें नैतिक शिष्टाचार और सामाजिक शिष्टाचार का समन्वय होता है। बुद्धिमत्ता और सामाजिक सद्गुण का सम्बन्ध भी सामाजिक नैतिकता से होता है। इससे उसका चिन्तन उसकी भावनाएं और उसकी इच्छाएं प्रभावित होती हैं। सामाजिक नैतिकता के इस वातावरण का व्यक्तियों के व्यवहार पर गम्भीर प्रभाव पड़ता है। जो व्यक्ति लोकाचार का जितना पालन करता है वह सामाजिक दृष्टि से उतना ही अच्छा माना जाता है।

लोक सांगीतकार की भाषा जन प्रचलित सहज एवम् सरल होती है। इस पर किसी प्रकार का

लेबिल नहीं लगा होता और इस भाषा को हिन्दी उर्दू या अंग्रेज़ी में नही बांधा जा सकता सांगीतकार लोक प्रचलित शब्दावली का भरपूर प्रयोग करता है। वह शब्दावली चाहे अरबी की हो फारसी की हो खडी बोली की हो या हरयाणवी हो।

लोक सांगीतकार अपने वर्णन का आश्रय लेता है जिससे उसका श्रोता इतना अभिभूत हो जाये कि वह उसी मैं पूरी तरह खो जाये। पं० रामरतन **नरसी के भात** में बांके बिहारी की कृपा वर्णन इस प्रकार करता है कि उसकी कृपा से नरसी जैसे कंगाल राजा के भात का वर्णन इस प्रकार करता है

सांगीतकार के मन में सर्व जनहिताय, सर्वजनसुखाय की सार्वभौमिक भावना का प्राधान्य रहता है।

लोक में सदैव मिल जुलकर रहने की भावना की प्रधानता रहती है। यही कारण है कि वह संसार के माया जाल को बहुत बुरा मानता है। मायाजाल में फंसकर व्यक्ति बुरे काम करता है सांगीतकार लक्ष्मीचन्द अपने स्वॉग ध्रुव भक्त के आरम्भ में ही दोहे में इस भावना को अभिव्यक्त करते हैं

समाज के विभिन्न अंगों और उपांगों के सम्बन्ध में पिछले अध्याय में विस्तार से विचार किया जा चुका है। विस्तार भय के कारण यहॉ उस सम्बन्ध में दोबारा विचार नहीं किया जा रहा है।

संस्कृति संस्कार सम्यक और सम्यक कृति किसी शुभ चेष्टा या श्रेयकर कर्म को कहा जा सकता है। यद्यपि पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी का विश्वास है कि संस्कृति शब्द का धातुगत अर्थ उसे व्यवहारिक अर्थ को स्पष्ट करने में सहायक नहीं होगा। फिरभी हम समझते हैं कि धातुगत अर्थ, व्यवहारिक अर्थ की ओर संकेत करता है। यह एकान्ततः असम्बद्ध अथवा असम्वृश्त नहीं है।

यह कहना उचित ही होगा कि नवीन शिक्षा और नवीन आविष्कार ही किसी देश में आमूल परिवर्तन करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। प्राचीन और नवीन धारणाओं की समन्वय करते हुए हिन्दू धर्म की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने का श्रेय राम कृष्ण मिशन को भी है। श्री राम कृष्ण परमहंस उच्च कोटि के सन्त और साधक थे। उनकी रहस्यवादिता, आध्यात्मिक व्याग्रता और उदारता ने स्वामी विवेकानन्द पर भी अधिक प्रभाव डाला। १८८३ में शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में उपस्थित होकर उन्होंने वहाँ ऐतिहासिक विचार प्रकट किये, जिससे समस्त विश्व को पहली बार भारत के धार्मिक महत्व का परिचय हुआ। यह सुधारों की दृष्टि से ब्रह्म समाज की भांति क्रान्तिकारी नहीं है। उनको वेद ही मान्य थे तथा आध्यात्मिकता का विकास ही उनका मुख्य उद्देश्य था। ईश्वर के उपासक के विषय में

उनका विचार था – ''काम के समय तुम एक हाथ से ईश्वर के पैर पकड़े रहो और दूसरे हाथ से काम करो। जब काम से छुट्टी पाओ तो दोनों हाथ से भगवान के पैर पकड़ लो। श्री हरविन्द के शब्दों में राममोहन राय उपनिषदों पर ही ठहर गये थे, दयानन्द ने उपनिषदों से भी आगे देखा और यह जान लिया कि हमारी संस्कृति का वास्तविक मूल वेद है।[२]

मनुष्य जिस परिवेश में जीता है उस परिवेश की सम्पूर्ण आस्थाएँ उसके चेतन मन से होकर अचेतन की अलग गहराईयों में स्थित हो जाती हैं। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि व्यक्ति का अचेतन पूरे समाज की इतिहास का अवचेतन मन में स्थित हो जाता है। अचेतन से उपचेतन तथा चेतन को होकर उसकी उन भावनाओं की अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से होती है। प्रत्येक भाषा की अपनी सीमाएं होती है, और उन्हीं सीमाओं में व्यक्ति अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। वैसे यह कहना असम्भव ही है कि हम जो कुछ अनुभव करते हैं, उसे उसी रूप में भाषा में अभिव्यक्त कर देते हैं किन्तु भाषा अपनी सीमाओं में उन अनुभूतियों को अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। व्यक्ति के संस्कार उसे वंशानुक्रम एवं परिवेश से पूर्णतः प्रभावित रहते हैं। इसी कारण उसी अभिव्यक्ति भी उसके परिवेश से प्रभावित रहते हैं। इसी कारण उसकी अभिव्यक्ति भी उसके परिवेश से प्रभावित रहती है या यों कहिए कि सस्कृति भाषा को प्रत्येक स्थल पर प्रभावित करती है। यहॉ पर भाषा का सबंध सीधा साहित्य से होता है। इसलिए साहित्य को ध्यान में रखकर सीधा विचार किया गया है क्योंकि भाषा का मुख्य स्वरूप ही साहित्य है और साहित्य का मुख्य स्वरूप भाषा है।

कौरवी जनपदीय स्वाँगों का सांस्कृतिक अध्ययन

संस्कृति को सुगमता से ग्रहण नहीं किया जा सकता है, किन्तु सभ्यता को किसी परिवर्तन या हानि के ही दूसरे देश अथवा पीढ़ियां ग्रहण कर लेती हैं। उदाहरणार्थ किसी का धर्म जो किसी संस्कृति का अंग है, अन्य व्यक्ति सुगमता से ग्रहण नहीं कर सकते, परन्तु सभ्यता सूचक कार, हवाई जहाज, रेडियो स्कूटर, तिपइया आदि का प्रयोग कोई भी जाति या देश ज्यों का त्यों ग्रहण कर सकता है।

संस्कृति का सम्बन्ध हमारे आचारों से हैं, जबकि सभ्यता का संबंध विचारों से है, क्योंकि संस्कृति आत्मा के अभ्युत्थान की प्रदर्शिका मानी जाती है और सभ्यता मानव के मनोविकारों की द्योतक। सभ्यता मानव को प्रगति की ओर ले जाने का संकेत करती है और संस्कृति आन्तरिक एवं मानसिक समस्याओं पर नियंत्रण करने में सहायक सिद्ध होती है।मनुष्य का अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों से जो कुछ बना है वही संस्कृति है।

इस प्रकार संस्कृति का सम्बन्ध चिन्तन तथा कलात्मक सृजन की उन प्रक्रियाओं से है। जो हमारे जीवन एवं व्यक्तित्व को परोक्ष रूप से परिष्कृत एवं समृद्धिशाली बनाती है। यद्यपि प्रत्यक्षतः मानव जीवन के लिए उनकी कोई विशेष उपयोगिता परिलक्षित नहीं होती, जबकि सभ्यता (समाज) का सम्बन्ध उन अभिनय आविष्कारों, उत्पादन के साधनों एवं सामाजिक, राजनैतिक, सभ्यताओं से है जो हमारे जीवन को सरल एवं उपयोगी बनाती है।

कुरुजनपदीय स्वाँग परम्परा : सांस्कृतिक अध्ययन

(अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ की पी-एच०डी० उपाधिहेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध)

१९९७

निर्देशक

प्रो० शिवकुमार शाण्डिल्य

पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

अ० मु० वि०, अलीगढ़-२०२००२

शोधार्थी

मौहम्मद कलीम सिद्दीक़ी

एम०ए० (हिन्दी)

हिन्दी विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

अलीगढ़

T5073

परम श्रद्धेय

पिता जी

श्री (स्व0) निज़ामुद्दीन अहमद

को सादर

साभिवादन

समर्पित

जो इस ग्रंथ को पूर्ण

होने से पूर्व

ही स्वर्गस्थ हो गए।

Certificate

Certified that Mr. Mohd. Kaleem Siddiqui has submitted his thesis entitled, **Kuru Janpadiya Swang Prampara: Sanskritik Adhyyan** in fulfilment of the Ph.D. Degree in Hindi, of this university, under my supervision it is original research work. Mr. Mohd. Kaleem Siddiqui has fulfilled all the conditions laid down under academic ordinances of Aligarh Muslim University, Aligarh.

(Prof. S.K. Shandilya)
Ex-Chairman.
Department of Hindi
Supervisor

कुरु जनपदीय स्वाँग परम्परा : सांस्कृतिक अध्ययन

विषय - सूची

		पृष्ठ संख्या
प्राक्कथन		१
१.	**लोक-साहित्य : परिभाषा एवं क्षेत्र**	७
	लोक–साहित्य का सकलन	१७
	गवैयो का अभाव	१७
	पर्दे की प्रथा	१७
	पुनरावृत्ति की असमर्थता	१८
	गवैये हर समय गाने को तैयार नही होते	१८
	सकुचित मनोवृत्ति	१६
	लोक–साहित्य सग्रहकर्ता के उपादान	१६
क	आन्तरिक साधन	१६
	१ सामान्य जन से तादात्म्य	१६
	२ सहानुभूति	१६
	३ अनुसधान चातुर्य	२०
	४ जॉच परखकर ही किसी तथ्य को मान्यता देना	२१
	५ स्थानीय शब्दो का प्रयोग	२१
	६ यथानुरूप लिपिबद्ध करना	२१
	७ सग्रह की प्रामाणिकता	२२
	८ विभिन्न पाठो का सग्रह	२२
	६ बाह्य साधन	२३
	१० कैमरा	२३
	११ रिकार्डिंग मशीन	२४
	विभिन्न क्षेत्रीय लोक–साहित्य विधाएँ	२४
	पॅवाडा	२४
	लोकगीत	२४
	श्रम गीत	२५
	१ नृत्यगीत	२५
	२ मल्हार	२५
	३ ऋतुगीत	२५
(क)	सावन	२५
	होली पटका	२५
	पटका	२५
	त्यौहार गीत	२५

	सस्कार गीत	२५
	विवाह गीत	२५
	धार्मिक गीत	२५
	बाल गीत	२६
	रागनी	२६
	धोबियो के गीत	२६
	मैथिली लोक–साहित्य के मशहूर लोकगीत	२७
मगही लोक–साहित्य के लोक–गीत		२७
भोजपुरी		२७
अवधी		२७
बघेली		२७
छत्तीसगढी		२८
बुन्देली		२८
ब्रज लोक–साहित्य		२८
कन्नौजी लोक–साहित्य		२८
राजस्थानी लोक–साहित्य		२८
मालवी लोक–साहित्य		२८
पजाबी लोक–साहित्य		२८
डोगरी लोक–साहित्य		२८
कॉगडी लोक–साहित्य		२८
गढवाली लोक–साहित्य		२८
कुमॉउनी लोक–साहित्य		२८
नेपाली लोक–साहित्य		२८
कुलुई लोकगीत		२८
चवियाली लोकगीत		२८
२.	**कुरुजनपदीय समाज व्यवस्था**	२९
२ १	कुरु प्रदेश मे पारिवारिक जीवन	२९
२ २	कुरु प्रदेश मे रिश्ते नाते	३०
२ २ १	हिन्दुओ के रिश्ते नाते	३०
२ २ २	मुसलमानो के रिश्ते नाते	३०
२ २ ३	ईसाई रिश्ते नाते	३०
२ ३	कुरु प्रदेश के रीति रिवाज और सस्कार	३०
१	पक्की (भेट) तथा गोद भरना	३०
२	तिलक, टीका, सगाई	३०
३	टेवा	३०
४	लगन	३०
५	पीली चिट्ठी	३१

६.	मॉडवा	३१
७	अगवानी	३१
८.	चढत	३१
६	जनवासा : बारौठी एवं भॉवर	३१
१०	बन्ना बन्नी	३१
११.	रतजगा	३१
१२	कजेतिन	३१
१३	निकरोसी	३१
१४	बारौठी	३१
१५	बढार	३२
१६	कॅवर कलेऊ	३२
१७	नेग्गाचारा	३२
१८	चूल्हा न्योत या चूल्हा नोत	३२
१६.	पलका चारा	३२
२०.	भटटी जात	३२
२१	सिर गूँदी	३२
२२	बाइना	३२
२३	लाड कोथली	३२
२४	भात	३२
२५	कॅगना एवं छडी मार	३२
२६	छूछक	३३
२७	मरघट	३३
२८	पिंडोती	३३
२६.	दाग देना	३३
३०	फूल चुगना	३३
३१.	रोवा पीटटण	३३
३२.	बरसी	३३
३३.	तेरही	३३
	लोक संस्कार	३३
४.६	कुरु प्रदेश में नर नारी सम्बन्ध	३४
	२.४ कुरु प्रदेश की धार्मिक आस्थाएँ	३५
	२.४.१ नियतिवाद	३५
	२.४.२ कुरु प्रदेश के अंधविश्वास	३५
	२.४.३ जादू–टोने, भूतप्रेत में विश्वास	३६
४.७.४	टोटम एवं टेबू	३६
	२.४.५ परम्परागत रूढियॉ	३७
२.५	कुरु प्रदेश के पर्व, त्यौहार एवं मेले	३७
	२.५.१ मुजफ्फरनगर जनपद	४०

	२५२ जनपद मेरठ	४२
	२५२२ तहसील सरधना	४२
	२५२३ तहसील मवाना	४३
	२५२४ तहसील बागपत	४३
२६	जनपद गाजियाबाद	४३
	२६१ तहसील हापुड	४३
२७	जनपद सहारनपुर	४४
	२७१ सहारनपुर तहसील	४४
	२७२ तहसील नकुड	४४
२८	हरिद्वार जनपद	४४
	२८१ तहसील रूडकी	४४
२९	जनपद बिजनौर	४४
	२९१ बिजनौर तहसील	४४
	२९२ नजीबाबाद तहसील	४६
	२९३ तहसील नगीना	४७
	२९४ तहसील धामपुर	४७
	२१० कृषि उद्योग	४९
	निष्कर्ष	४९
३.	**कुरु लोक-साहित्य और कुरु जनपदीय स्वॉग परम्परा**	५१
३१	लोक शब्द की व्युत्पत्ति व्याख्या प्रयोग परम्परा	५१
३२	लोक साहित्य	५२
३३	लोक–साहित्य स्वॉग स्वरूप सम्बन्धी विद्वानो के कार्यो का मूल्याकन	५३
३४	लोक–साहित्य स्वरूप एव रचना प्रक्रिया	५४
३४	स्वॉग स्वरूप एव परिभाषा	५५
१	प्रसारवाद का सिद्धान्त	५५
२	प्रकृति स्वरूपवाद	५६
३	मनोविश्लेषणवाद	५६
४	इच्छापूर्ति	५७
५	व्याख्यावाद	५७
६	विकासवाद	५७
७	यथार्थवाद	५८
८	समन्वयवाद	५८
३५	भारत मे लोक–कथा की परम्परा	५८
३५१	सस्कृत	५८
३५२	वृहत्कथा	५९
३५२१	वृहत्कथा मजरी	५९
३	कथा सरित्सागर	५९

४	पचतत्र	५६
५	पचविशतिका	५६
६	शुक–सप्तशति	५६
७	माधवानल–काम कदला	५६
८	पुरुष परीक्षा	५६
६	कथा राशि	६०
३ ५ २	पालि	६०
३ ५ ३	जैन साहित्य (अपभ्रश)	६०
३ ५ ४	हिन्दी	६०
३ ६	लोक सस्कृति मान्यताएँ	६१
३ ७	लोक–वार्ता	६२
३ ६	लोकमानस	६३
	लोक–सास्कृतिक परिवेश	६३
	लोक–भौतिक परिवेश	६३
१	लोक ज्ञान	६४
२	लोक इच्छाएँ	६४
३ ८	लोक साहित्य	६४
३ ६	कौरवी भौतिक सस्कृति	६६
३ ६ १	भोज्य पदार्थ	६६
३ ६ १	वेषभूषा वस्त्र–आभूषण सौन्दर्य प्रसाधन आदि	६७
३ ६ २	स्त्रियो के आभूषण	६८
३ ६ ३	सौन्दर्य प्रसाधन	६६
३ ६ ४	नौकर, चाकर एव मनदूर वर्ग	६६
३ ६ ४ १	बढई	६६
३ ६ ४ २	खराद्दी	६६
३ ६ ४ ३	छीपी	७०
३ ६ ४ ४	सुनार	७०
३ ६ ४ ५	लुहार	७०
३ ६ ४ ६	भडभुजा	७०
३ ६ ४ ७	हलवाई	७०
३ ६ ४ ६	राज या कारीगर	७१
३ ६ ४ १०	जुलाहा	७१
३ ६ ४ ११	कुम्हार	७१
३ ६ ३ १२	सिकलीगर	७२
३ ६ ४ १३	पटवा	७२
३ ६ ४ १४	ठठेरा	७२
३ ६ ४ १५	तमोली	७२
३ ६ ५	उच्च, मध्य एव निम्न वर्ग का पारिवारिक एव जनजीवन	७३

३ ६ ५ १	उच्च वर्ग	७३
३ ६ ५ २	मध्य वर्ग	७३
३ ६ ५ ३	निम्न वर्ग	७३
३ ६ ६	मनोरजन के साधन	७३
३ ६ ६ १	मुँह से बजानेवाले बाजे	७४
३ ६ ६ २	पाव से बजानेवाले बाजे	७४
३ ६ ७	कुर प्रदेश मे खेले जानेवाले खेल	७४
३ ६ ७ १	घर मे खेले जानेवाले खेल	७४
३ ६ ७ २	मदान मे खेले जानेवाले खेल	७४
३ ६ ७ ३	मदान मे खेले जानेवाले खेल	७६
३ १०	कोरवी लोक कथाओ मे विचित्र भौतिक सस्कृति	७७
३ ११	स्वॉग का स्वरूप और कुरु जनपदीय स्वॉग–परम्परा	७६
३ ११ १	स्वॉग का स्वरूप	७६
३ ११ २	स्वॉग परम्परा	८१
४.	**कुरु जनपद के सांगीतकार और उनका जीवनवृत्त**	८२
४ १	स्वामी शकरदास का जीवन वृत्त	८३
४ १ १	अन्तसाक्ष्य	८३
४ १ २	बाह्यसाक्ष्य	८३
४ १ ३	जीवन वृत्त जन्मतिथि	८४
४ १ ४	मृत्यु तिथि	८५
४ १ ५	जन्मस्थान	८६
४ १ ६	शिक्षाक्रमश	८६
	जाति	८७
४ १ ७	परिवार	८७
४ १ ८	गृहस्थाश्रम	८८
४ १ ६	राजशाही ठाट–बाट	८६
४ १ १०	गुरु व पथ सम्प्रदाय	८६
४ १ ११	स्वामी शकरदास की धर्मशाला	६०
४ १ १२	गुरु प्राप्ति	
४ १ १३	वैराग्य	६२
४ २	पडित नत्थूलाल मानसिह	६८
४ २ १	जन्मतिथि	६६
४ २ २	शिक्षा	६६
४ २ ३	गुरु	६६
४ २ ४	शिष्य परम्परा	६६
४ ३	पडित लक्ष्मीचन्द शर्मा	१०१
४ ३ १	जन्मतिथि	१०१

४ ३ २	पारिवारिक जीवन	१०१
४ ३ ३	गुरु	१०१
४ ३ ४	शिक्षा	१०१
४ ३ ५	स्वॉग का समय	१०२
४ ३ ६	स्वॉगो के प्रमुख पात्र	
४ ४	पडित रघुबीर शरण	१०३
४ ५	दीन्ना	१०३
४ ६	शकूर मीर	१०४
४ ६ १	जन्मस्थान	१०४
४ ६ २	जन्मतिथि	१०४
४ ६ ३	पिता का नाम	१०४
४ ६ ४	गुरु	१०४
४ ६ ५	पारिवारिक जीवन	१०४
४ ६ ६	स्वॉगो के पात्र	
४ ७	अन्य शिष्य	१०५
	शिब्बी मीर	१०५
४ ८	चन्द्रलाल बादी	१०६
४ ९	अन्य सागीतकार	१०६
५	**कौरवी जनपदीय स्वॉगों का सामाजिक अध्ययन**	११४
१	परिवेशीय अतरग अनुभूति की प्रधानता	१२०
२	सरल सहज स्वाभाविक वृत्तियो का निरूपण	१२२
३	सहज भाषा	१२३
४	अतिरेकपूर्ण अभिव्यक्ति	१२४
५	लोकोत्तर कल्पना का प्राधान्य	१२५
६	सार्वभौमिक भावना का प्राधान्य	१२६
७	आधुनिक सामाजिक मान्यताओ का उपहास	१२८
ˆ	लोक भावनाओ का उदघाटन	१२९
९	विशिष्ट परिवेशीय अन्धविश्वासो का उद्घाटन	१३०
१०	परिवार पारिवारिक जन एव विशिष्ट लोक मे आस्था	१३०
११	स्थान विशेष की सार्वभौमिक सास्कृतिक मान्यताओ का चित्रण	१३२
१२	निर्वेयक्तिकता	१३३
१३	छद अलकार—बन्धनमुक्त रचना	१३४
१४	मिथको एव प्रतीको का प्राधान्य	१३४
१५	कालावधि निरपेक्ष मौखिक साहित्य	१३५
१६	सुमला तिरिया, परोक्ष आत्माओ, देवताओ, सन्त, फ़कीरो, लोकवीरो की पूजा	१३५
१७	विवरणात्मक पद्धति	१३५

१. खान की वस्तुएँ १३६
२ वस्त्र १३७
३ जवाहररात एवं गहने १३७
४. व्यक्तिवाचक नाम १३७
५ पेड पौधे १३६
६ नदी-नाले १३६
७ खेत खलिहान १३६
८ रिश्ते नाते १३६
६ जातियाँ १४०
१० पशु, पक्षी एव जीव-जन्तु १४१
११ श्रृंगार के उपादान १४१

६. **कौरवी जनपदीय स्वाँगों का सांस्कृतिक अध्ययन** १४२
बेमेल विवाह पर व्यंग्य १४६
स्थान परिवर्तन के साथ अर्थ-परिवर्तन १४६
ध्वनि भेद से अर्थ-परिवर्तन १५०
स्वॉगो में मिथक का कार्य-परिवर्तन १५०
कालक्रम से अर्थ-परिवर्तन १५०
मुहावरों एवं लोकोक्तियो में अर्थ-परिवर्तन १५१
प्रतीकों में अर्थ-परिवर्तन १५१
कुरु प्रदश के स्वॉगो में अभिव्यक्त प्रवृत्तियॉ १५२
कुरु स्वॉगों मे ब्रहम, माया, जीव, जगत् का स्वरूप १५४
माया का स्वरूप १५४
जीव और जगत् का स्वरुप १५५
कुरु स्वॉगों में मोक्ष का स्वरुप मोक्षोपाय १५६
कुरु स्वॉगों में कर्म, उपासना एवं मानव-सेवा १५६
निष्कर्ष १५७

७. **उपसंहार** १५८
परिशिष्ट
आधार ग्रंथ
सस्कृत ग्रंथ
हिन्दी कोश
पत्र-पत्रिकाएँ

०. प्राक्कथन

कुरु जनपद भारतीय संस्कृति एव इतिहास की सुदीर्घ–सम्पन्न पारम्परिक सम्पदा को अपने अक में संजोए हैं। यह प्रदेश वैदिक ऋषियो का आश्रय–स्थल एवं राजनीति का प्रमुख केन्द्र है। यहॉ के चक्रवर्ती सम्राटों ने कुरु जांगल में स्थित अनेक ऋषियों के गुरुकुलों को अपना अभयहस्त प्रदान किया और उस परम्परा को लगातार समृद्ध बनाया। विभिन्न विचारधाराओं और राजनीतिक उथल–पुथल को इसने अपने अंक में समाहित करके उन्हें कुरु जनपदीय संस्कृति का स्वरूप दिया।

कुरु जनपद की लोक–साहित्य परम्परा भी अत्यन्त समृद्ध और सुदीर्घ है। यहॉ की मिट्‌टी के लोक–कथाकारों ने जीवन के प्रत्येक पहलू की विसंगतियों से निस्तारा पाने के लिए अनेक शिक्षाप्रद कथाओं का वर्णन किया। इनकी यह सर्जना अत्यन्त गम्भीर है। जीवन के सूक्ष्म दर्शन इन ऋषियों के किए थे और सही दिशा के लिए प्रतीकात्मक कथाओं की सर्जना की थी।

कुरु जनपद के लोक–साहित्य का अध्ययन अत्यन्त अपेक्षित है। स्वॉग इस साहित्य की सशक्त विधा है। इसी कारण मैंने अपने अध्ययन का क्षेत्र, कौरवी स्वॉगों पर केंद्रित किया। इस अध्ययन मे स्वॉगों की सूक्ष्मतम झंकृतियों को संस्कृति के बाह्‌य एवं आन्तरिक उपादानों के माध्यम से समझने का प्रयास किया।

०.१ आलोच्य विषय के संदर्भ में पूर्वकृत शोध-कार्य

सांस्कृतिक दृष्टि से कुरु जनपद का भारतवर्ष के इतिहास में बहुत महत्व है। यह क्षेत्र एक ओर ऋषियों की तपोभूमि से घिरा है तो दूसरी ओर शूरसेन प्रदेश की सुदीर्घ सांस्कृतिक संपदा से यहॉ की सांस्कृतिक संपदा का आदान–प्रदान भी बराबर होता है। भारत का वैदिक, पौराणिक, प्राकृत, अपभ्रंश और वर्तमान हिन्दी साहित्य इसकी गौरवशालिनी परम्परा के साक्षात् गवाह हैं। तीसरी शती ईसवी के आसपास से इस जनपद का सम्पर्क अरब संस्कृति से हो गया था। यहॉ के लोक–ऋषि, लोक–साहित्य की रचना में संलग्न रहे। उन्होंने यहॉ की लोक–साहित्य संपदा को बर.बर समृद्ध किया।

लोक–साहित्य की इतनी समृद्धि होते हुए भी यहॉ इसके शोध की दिशा में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य नहीं हो सका है। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ लोक–साहित्य–सर्जना करनेवालों की संख्या

अधिक है, शोधार्थियों की कम। यहाँ की मिट्टी में पले और बढे साहित्यकार, यहाँ के लोक–साहित्य का स्मरण चिंतन, मनन और शोध करके इसे अपने कुछ श्रद्धा–सुमन समर्पित करते तो दिखाई पड रहे है किन्तु इस क्षेत्र के सुधी पाठक और समीक्षक इस दिशा में विशेष जागृत प्रतीत नहीं होते।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को कौरवी स्वाँगों के अध्ययन की दिशा में प्रथम प्रयास कहा जा सकता है। कुरु जनपद से दूर रहकर डॉ० शिवकुमार शाण्डिल्य ने कौरवी लोकोक्तियों का भाषिक- सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत किया। उन्होंने यहाँ की लोक–कथाओं, लोक–गाथाओं, स्वाँगों और लोक–गीतो के भी संग्रह तैयार किए जो प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत शोध–प्रबंध के परिशिष्ट में संगृहीत स्वाँग उन्हीं के सग्रह से साभार लिए गए हैं।

मेरठ विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद कौरवी लोक–साहित्य को लेकर निम्नलिखित शोध–प्रबंध प्रस्तुत किए गए हैं .

१ कौरवी के जन–कवि और जन काव्य, विक्रम सिंह, १९७७

२ कौरवी लोक–गीतों मे बिम्ब–योजना, राम कुमर शर्मा, १९७३

३. ब्रज एवं कौरवी लोक–नाट्य का तुलनात्मक अध्ययन, पुरुषोत्तम दयाल गौतम, १९७४

४. कौरवी लोक–गीतों में समाज संबंध, सरोजबाला, १९७८

५. कौरवी लोक–कथा : एक अध्ययन, सुनीता शर्मा, १९७८

६. कौरवी लोक–कथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन : रामप्रकाश शर्मा, १९९५

प्रस्तुत अध्ययन कौरवी स्वाँगों के सांस्कृतिक अध्ययन की दिशा में प्रथम प्रयास है। प्रस्तुत अध्ययन में सांस्कृतिक परिवेश को उजागर करने का प्रयास किया गया है। कौरवी स्वाँगों की कथाएँ मानक हिन्दी में न होकर मूल कौरवी में है।

०.२ शोध की दिशा में प्रस्तुत विषय की मौलिकता

प्रस्तुत विषय कौरवी स्वाँगों के सांस्कृतिक अध्ययन की दिशा में प्रथम प्रयास है। इस अध्ययन में कुरु संस्कृति के प्रत्येक पहलू को उजागर करने की कोशिश है।

स्वाँगों का महत्व असंदिग्ध है। स्वाँगों की कथाओं की कोई भौगोलिक सीमा नहीं होती। इनकी स्वीकृति सार्वदेशिक है। इनके अध्ययन से अन्तरराष्ट्रीय एकता को समन्वित किया जा सकता है।

स्वॉग जीवन के अटल सत्य को लेकर चलते है। आदि मानव की सामाजिक भावना के साथ ही लोक–साहित्य का जन्म हुआ होगा। इन कहानियो मे चरित्र–निर्माण एवं मार्ग–दर्शन की महान क्षमता होती है। लोक–ऋषि स्वॉगो की सर्जना करता है। इनमे प्रकृति और मानव के बीच सघर्ष का इतिहास छिपा रहता है। लोक मनोबल को ऊँचा रखने मे इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। इस साहित्य की रचना लोक–हित में होती है। इसका मुख्य स्वर लोक–मगल है।

अनेक घटनाओं से सम्बद्ध स्वॉग, सामाजिक सिद्धान्तो की व्याख्याएँ करते है। इनमे प्रतीको के माध्यम से एकात्म भाव की पुष्टि होती है। पारस्परिक स्नेह, सौहार्द एव सहानुभूति जैसी मानवीय भावनाएँ इनमें कूट–कूट कर भरी रहती है। इन स्वॉगों में लोक–अध्यात्म भरपूर रहता है।

सामाजिक जीवन कर्म–क्षेत्र है। जीवन चारो ओर से सघर्षों से घिरा रहता है। स्वॉग सामाजिक मानव को निर्भीक एवं निडर होकर जीवन की विसगतियो को झेलने की प्रेरणा देती है। स्वॉग जिनमे नायक के सामने एक के बाद एक कठिनाई आती है किन्तु वह बराबर उनका सामना करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढता जाता हे।

स्वॉग शाश्वत जीवन–कठिनाइयो को झेलकर पार करने का मार्ग सुझाते है।

मूल मानवीय वृत्तियों पर आधारित स्वॉग प्राय सभी देशो मे एक–समान भावना से भरपूर होते है। स्वॉगो की भाषा अनगढ अवश्य होती है किन्तु और व्यजना के अप्रतिहत प्रयोग, लोक प्रवर्तित मुहावरो और लोकोक्तियें से परिपुष्ट स्वॉगो की भाषा मे महान क्षमता होती है।

स्वॉगों को साहित्यिक अभिरूचि की दृष्टि से भी कमजोर नहीं माना जा सकता। अन्य विज्ञानो को पुष्ट करने में भी इनका हाथ रहता है। मानवीय मनोवृत्ति मे परिवर्तन के साथ–साथ लोकोक्तियो की वैचारिकता में भी परिवर्तन होता है। इस प्रकार ये समाज के परिवर्तन का दर्पण भी बन जाते है। ये इतिहास–प्रसिद्ध एवं पौराणिक चरित्रो को अत्यत मनोरम ढग से मानवमात्र के सम्मुख प्रस्तुत करते है।

सम्पूर्ण भारत में व्याप्त लोकाचारो–सस्कारो एवं परम्परागत विचारो का समायोजन करके ये पूरे देश को एकता के सूत्र मे बॉधते हैं। ये स्वॉग विभिन्न विषयो के ज्ञान–कोश, साहित्य एवं राष्ट्र–चेतना के आगार होते हैं।

सांगीतकार अपने श्रोताओ से यह अपेक्षा करता है कि वह स्वॉग सुनते समय शात रहे। कहावत है – कहानी में हुँकारा, लडाई मे नगाडा आवश्यक है।

हिन्दी से एम.ए करने के बाद डॉ० शिवकुमार शाण्डिल्य से शोध के संदर्भ में मिलने गया। उन्होंने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

पारिवारिक कठिनाइयॉ तो बीच–बीच मे आती ही रहीं। किसी प्रकार काम को पार पर लाया। कौरवी स्वॉगों के संकलन के लिए मै गर्मी, सर्दी एव बरसात मे कुरु जनपद मे लगातार घूमा। इस संदर्भ में मैं डॉ० शाण्डिल्य के पैतृक निवास गॉव सालह खेडी (अलीपुर खेडी), मुजफ्फरनगर भी गया। आदरणीय दादी जी श्रीमती मगलादेवी के पास प्रकाशित स्वॉगों का अपार जखीरा था। उनसे लेकर उन्हें एकत्रित किया। इनके माध्यम से परोक्षतः मैं डॉ० शाण्डिल्य के विचारों से भी लाभान्वित होता गया। आदरणीया मंगला देवी जी के आर्शीवाद से मैं इस सारस्वत कार्य की नौका को खे सका।

मेरी धर्मपत्नी श्रीमती गजाला सिद्दीकी का शोध कार्य करने में पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। उसने हमेशा मेरा हौसला बढाया। विशेष कर मेरे दोनो चाचा गुलाम अहमद, मौ० अख्तर बडे भाई नईम अहमद, मुईन अहमद और छोटे भाई मौ० ताहिर, मौ० नौशाद, मौ० गुलजार, बहनों शमीम, नसरीन वसीम, ताहिरा, गुड्डी, भतीजो आकिल आदिल, रानी, रूमी, रूही और कैफिया का मुझे पूर्ण सहयोग मिला।

मेरे हरदिल अजीज डॉ० मेराजुद्दीन अहमद, जुनैद फरीदी, बाबू भाई, भाई छब्बी, हाजी तन्जीम कुरैशी, चौ० अनीस, चौ० आबिद, निसार, एजाज अहमद, रियाजुददीन अहमद, फिरोज अहमद और नाहिद अख्तर के बिना यह कार्य सम्पन्न हो पाना नितान्त असम्भव था।

शोध कार्य में मुझे प्रो० अबुल हसन सिद्दीकी, पूर्व उप–कुलपति, ए०एम०यू०, सैय्यद हामिद हसन, विभाग अध्यक्ष, कम्प्यूटर साइस, ए०एम०यू०, अलीगढ, डॉ० रामप्रकाश शर्मा, हसन मतीनुलइस्लाम सैयद अहसन साहब, सैयद आबिद हसन एव मेरे ससुर डॉ० इस्लाम अहमद साहब और मेरी सास साबरा इस्लाम, दोस्त आबिद हुसैन, इमरान खां, खलीलउल्लाह, कुं० आरिफ बेग, बिलाल अहमद से जो अपनत्व एवं सहयोग मिला उसे भुला पाना असंभव है। मेरा मन हमेशा इनके प्रति श्रद्धानत् रहेगा।

प्रो० शिव कुमार शाण्डिल्य, पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, ए०एम०यू०, अलीगढ का शोध कार्य के दौरान पूर्णरूपेण सहयोग मिला है। प्रो० शाण्डिल्य अत्यंत योग्य एवं महान चरित्र के धनी है। प्रो०

शाण्डिल्य ने कुरु जनपद मे जहाँ भी मुझे सामग्री लेने के लिए भेजा मै वहाँ से जाकर सामग्री एकत्र करके लाया। इन्होंने हमेशा मुझे शोध–कार्य करने की प्रेरणा दी। प्रो० शाण्डिल्य ने जिस लगन और मेहनत के साथ मेरे निर्देशन का कार्य किया। उसके लिए उनका आभार किन शब्दों में व्यक्त करूँ समझ में नहीं आता। उनका आभार व्यक्त करके उनके ऋण से मुक्त नहीं हो पाऊँगा।

श्रीमति श्यामलता शर्मा, एम०ए० साहित्य रत्न से मुझे सदैव मेरी अम्मा जैसा प्यार मिला मै जब भी घर जाता था उनका शफक्कत का हाथ हमेशा मेरे सिर पर होता था। यह उनकी दुआओं का ही असर है जो मैं अपना शोध–कार्य करने में सफल हुआ हूँ।

भाभी मीनाक्षी शर्मा ने हमेशा मेरा हौसला बढाया और समय–समय पर पूछती थी कि भाई साहब आपका शोध कार्य कहाँ तक पहुँचा। मीनाक्षी भाभी का मै हमेशा शुक्रगुजार रहूँगा। उन्होंने हमेशा देवर की तरह प्यार दिया। उनके तीनों बच्चे सना शाण्डिल्य, समीर शाण्डिल्य और उदित शाण्डिल्य हमेशा चाचा–चाचा कह कर मेरा स्वागत करते रहे हैं।

शोध–कार्य के दौरान मुझे वर्तमान विभागाध्यक्ष प्रो० कृष्ण मुरारि मिश्र से अपनत्व मिला है। प्रो० के०पी० सिह, प्रो० शैलेश जैदी, प्रो० अजब सिंह और प्रो० अयूब खा प्रेमी साहब हिन्दी के महान् विचारक एवं प्रसिद्ध विद्वान है। इनके विचारों से मैं सदैव लाभान्वित हुआ है। डॉ० उमाशकर श्रीवास्तव, डॉ० रमेश चन्द शर्मा, डॉ० आरिफ नजीर, डॉ० अब्दुल अलीम, डॉ० उस्मान साहब से भी सहायता मिलती रही है। अपने इन सभी गुरुजनों का सदैव आभारी रहूँगा। इन्होंने समय–समय पर अच्छी सलाह से नवाजा। डॉ० शोएब सिद्दीकी, खालिद अलवी ने हमेशा मुझे शोध–कार्य के लिए प्रोत्साहित किया। मैं अपने विभागीय सभी गुरुओं का सदैव आभारी रहूँगा। उनका स्नेह सदैव मेरा हौसला बढाता रहा।

इस सारस्वत कार्य को पूरा करने में मेरे सभी परिवारजनों का हमेशा सहयोग रहा है। मेरी अम्मा बिलकिस निजामुददीन मेरे प्रति शुभकामनाओं के शब्द बुदबुदाती रहती हैं। जिससे मैं इस शोध–कार्य को करने में सफल हुआं हूँ।

मेरे पिता परम् श्रद्धेय स्वर्गीय निजामुददीन अहमद की स्मृति में श्रद्धानत् होकर मैं सारस्वत साधना का यह पुष्प मैं विद्वानों के सम्मुख इस आशा से प्रस्तुत कर रहा हूँ कि इसकी सुगध उनको स्वर्ग में आनन्द प्रदान कर सकेगी तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा।

उन सभी विद्वानों के प्रति भी श्रद्धानत् रहूँगा जिनके विचारों से मैं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से लाभान्वित हुआ हूँ।

मैं इस शोध–प्रबन्ध के टंकण के लिए श्री प्रदीप शर्मा (डी०टी०पी० कम्प्यूटर आपरेटर) का दिल से आभारी हूँ जिन्होंने इस शोध–प्रबन्ध को टंकित कर अपनी परिणति तक पहुँचाया है।

विद्वजन कृपाकांक्षी

दिनांक

स्थान

मौ० कलीम सिद्दीकी

१. लोक साहित्य : परिभाषा एवं क्षेत्र

लोकसाहित्य के क्षेत्र में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण से महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ हुआ। लोकसाहित्य के विषय मे इस काल में पर्याप्त विचार किया गया। गाम्मे ने प्रबल तर्कों के आधार पर यह प्रतिपादित करते हैं कि लोकवार्ता को विज्ञान कहा जाना चाहिए। गाम्मे की स्थापना को विद्वानो ने स्वीकार नहीं किया फिर भी इतना तो माना ही गया कि 'आधुनिक मानव के दैहिक और मानसिक निर्माण तन्तुओं के जटिल विधान की परीक्षा करनेवाला जो नृतत्व विज्ञान है[१], उसके विशद क्षेत्र मे एक महत्वपूर्ण स्थान लोकवार्ता का भी है।"[२]

लोकवार्ता के अन्तर्गत वे समस्त आचार–विचार आ जाते हैं जिसमें मानव का देव परम्परित रूप सामने आता है जिसका आधार लौक–मानस है। लोक–मानस में परिष्कार अथवा सस्कार की चेतना निष्क्रिय रहती है। लौकिक धार्मिक विश्वास, धर्मगाथाएँ–कथाएँ, लौकिक गाथाएँ–कथाएँ, कहावतें, पहेलियॉ आदि सभी लोकवार्ता के अॅग हैं। लोकवार्ता के सम्बन्ध में श्री कृष्ण चन्द्र गुप्त ने बुन्देलखण्ड के लोकवार्ता पत्र के निवेदन में लिखा है कि लोकवार्ता को अंग्रेजी में फोकलोर कहते हैं। फोकलोर का प्रचलित अर्थ है – जनता का साहित्य, ग्रामीण कहानी आदि। फोकलोर वास्तव में जन सामान्य की वार्ता जनसामान्य का कथोपकथन अथवा उसके विषय में कहा और सुना जानेवाला साहित्य लोकवार्ता है। जिस प्रकार प्रत्येक देश की अपनी लोक–भाषा होती है उसी प्रकार उसकी अपनी लोकवार्ता भी होती है। जन सामान्य में लोकवार्ता का जन्म होता है। किसी देश की लोकवार्ता को विधिवत् संगृहीत किया जाय तो वहॉ के निवासियों के अतीत से लेकर वर्तमान की बौद्धिक, नैतिक, धार्मिक एवम् सामाजिक अवस्था का समग्र चित्र इस साहित्य में उजागर हो जाता है।

विवाह उत्तराधिकार, बाल्याकाल तथा प्रौढ जीवन के रीति–रिवाज तथा अनुष्ठान और त्यौहार युद्ध, आखेट, मत्स्य–व्यवसाय पशुपालन आदि विषयों रीति–रिवाज, धर्म–गाथाएँ, लोक–कहानियॉ, किवदन्तियॉ, पहेलियॉ तथा लोरियॉ भी इसके विषय है। लोक की मानसिक सम्पन्नता के अन्तर्गत की सभी वस्तुएें इस क्षेत्र में समाहित हो जाती है। लोकवार्ता वस्तुतः आदिम मानव की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति है। वह चाहे दर्शन, धर्म, विज्ञान तथा औषधि के क्षेत्र में हुई हो चाहे सामाजिक संगठन तथा अनुष्ठानों में अथवा विशेषतः इतिहास काव्य और साहित्य के अपेक्षाकृत बौद्धिक प्रदेश में लोक–साहित्य लोकवार्ता का एक अँग है। एक दृष्टि से लोक–साहित्य का केवल एक अॅग ही लोकवार्ता[३] के अन्तर्गत आ सकता

---

१. ऐनथापालोजी से है।

२. कैप्टन आर०सी० टेम्पल की प्लीजेण्ड्स ऑफ दी पंजाब दूसरे भाग की भूमिका।

३. बर्न की हैण्डबुक ऑफ फोकलोर, पृ० ४

है। लोकवार्ता में केवल वही लोक साहित्य समावेशित होता है जो लोक की परम्परा को किसी न किसी रूप में सुरक्षित रखता है। इस लोकसाहित्य का मूल्य केवल साहित्य की दृष्टि से उतना नहीं होता जितना उसमें सुरक्षित उन परम्पराओं की दृष्टि से होता है जो नृ–विज्ञान के किसी पहलू पर प्रकाश डालती है। इस साहित्य को हम आदिम मानव की आदिम प्रवृत्तियों का कोश कह सकते हैं। इस प्रकार के लोकसाहित्य की व्याख्या करने में जब यह विदित हो कि उनके मूल्य में किसी आदिभौतिक तत्व का ही प्रतिबिम्ब है। आदिम मानव ने सूर्य और अन्धकार के संघर्ष को अथवा सूर्य और ऊषा के प्रेम को ही विविध रूप के द्वारा साहित्य का रूप प्रदान कर दिया है तो उसका यह रूप धर्मगाथा का रूप ग्रहण कर लेता है। तात्पर्य है कि लोकसाहित्य का वह अंश जो कहानी के रूप में प्रकट होता है। कहानी मे जिसकी अभिव्यक्ति अभिष्ट होती है। किसी ऐसे प्राकृतिक व्यापार का वर्णन जो साहित्य सृष्टा ने आदिम काल में देखा था और जिसमें धार्मिक भावना का पुट भी है वह धर्मगाथा कहलाता है। इसके अतिरिक्त समस्त प्राचीन मौखिक परम्परा से प्राप्त कथा तथा गीत–साहित्य भी लोकसाहित्य कहलाता है।

लोकवार्ता में किसी न किसी रूप में किसी प्राचीन युग की झलक मिल सकती है। वह कहानी–कार की मौलिक कल्पना नहीं होती बल्कि किसी प्राचीन कल्पना का रूपान्तर होती है और उसकी विविध निर्माण–वस्तुओ मे ऐसी अद्‌भुत असम्भावनाओं का समावेश होता है कि वे किन्हीं अन्य तत्वों की व्याख्या के द्वारा ही अभिव्यक्ति का रूप ग्रहण कर पाती है। इन लोकवार्ताओ के कथा–तत्वों को समझने के लिए इनमे निहित रहस्य का उद्‌घाटन आवश्यक है।

लोकवार्ताओं से अलग साधारण लोकसाहित्य भी होता है। इस साहित्य की जडे मानव इतिहास में इतनी गहरी नहीं समायी होतीं। सामान्य जन का मन इस साहित्य को अपनी अबोध उमंगो के कारण समय–समय पर प्रस्तुत करता रहता है। यह उस गरिमा से अभिभूत नहीं रहता जिससे लिखित साहित्य रहता है। इसमें मनुष्य के क्षण–क्षण के जीवन–स्पन्दन उन्मुक्त अवस्था में उद्‌भूत रहते हैं। इसमे स्थानीय तत्व बहुत प्रबल रहता है। इसे भी दो प्रकार का माना जाता है : एक ग्रामीण दूसरा नागरिक। गॉव और नगर के वातावरण मे जो अन्तर है वही इस लोकसाहित्य के ग्रामीण और नागरिक रूप मे होता है। **एनसाइक्लोपेडिया बिटानिका** में फोक की जो परिभाषा[१] दी गयी है उसके अनुसार तो नागरिक प्रभाव के बाहर का ही साहित्य लोक वार्ता अथवा लोकसाहित्य माना जायेगा।

नगरीय सभ्यता के दो धरातल हैं – एक शिक्षित सभ्यता का है जो विशेष रूप से सभ्यता में

---

१. ऐनथापालोजी पृ० ३

प्रवाहित होनेवाले नये फैशनों को ग्रहण कर लेता है। ऐसी सभ्यता स्वाभाविक जीवन की धारा से दूर पड जाती है। कम शिक्षित अथवा अशिक्षित वर्ग पर धनाभाव अथवा सामाजिक अकुश प्रबल होने से तथाकथित सभ्यता का कृत्रिम प्रभाव कम हो जाता है। रचना–प्रतिभा के जागृत होने पर उन बन्धनो को वह जानती तक नहीं जो प्रबुद्ध वर्ग के शास्त्रीय ज्ञान ने बॉधे है।

लोकवार्ता मे, मानव की आदिम स्थिति से आजतक के विकास की विविध अनुभूतियो का ज्ञान हो जाता है। लोकवार्ता मे लोकमानस जितनी शुद्ध अवस्था मे प्रतिबिम्बित और सुरक्षित रहता है उतना वह किसी अन्य माध्यम मे नहीं रहता।

वास्तव मे लोक–मानस का प्राचीनतम रूप इसमे निहित रहता है। लोक–मानव उनमे प्राण–प्रतिष्ठता नहीं कर सकता था। वह उनके अस्तित्व मे ही विश्वास करता था। वह स्थूल दृष्टि से अपनी कसौटी द्वारा मानवेतर सृष्टि के व्यापारो और वस्तुओ को ग्रहण करता था। उसका यह बोध एक ही वस्तु के सम्बन्ध मे भिन्न–भिन्न अवसरो पर भिन्न होता था। इन्हीं मानसिक अनुभावो को उसकी भाषा व्यक्त करती थी। भाषा का स्वभाव इन्हीं सस्कारो के अनुकूल था।

उसकी मनोदशा ने ही उसकी भाषा के स्वभाव का निर्णय किया। उसमे अब जैसे बच्चो मे, उस भावना को कार्य करते प्रकट करती है जो समस्त बाह्य वस्तुओ को एक ऐसे जीवन से अभिमडित कर देती है, जो उसके अपने जीवन से भिन्न नहीं होती। अपने दृष्टिपथ मे आने के सम्बन्ध मे उसे कोई निश्चित ज्ञान नहीं था। किन्तु वह जीवन–सम्पन्न था ओर इसलिए उसकी समझ से शेष समस्त वस्तुओ मे भी जीवन होना चाहिए। इसे उन्हे व्यक्तित्वमय करने की आवश्यकता नहीं थी, क्योकि वह स्वय अपने सम्बन्ध मे आत्म–चेतना तथा व्यक्तित्व मे भेद नहीं जानता था। इसे अपने तथा अन्य किसी के जीवन की अवस्थाओ के सम्बन्ध मे कोई ज्ञान नहीं था। इसलिए पृथ्वी तथा आकाश मे सभी वस्तुएँ अस्तित्व मात्र के एक ही अस्पष्ट भाव से अभिनिविष्ट थी। सूर्य, चन्द्र, तारा, वह भूमि जिस पर वह चलता था बादल, तूफान तथा बिजलियॉ सभी सजीव व्यक्ति थे, क्या वह बिना यह सोचे रह सकता था कि उसकी भांति वे सचेतन व्यक्ति थे ? उसके शब्दो से ही अनिवार्यत यह विश्वास प्रकट होगा। उसकी भाषा मे ऐसा कोई भी मुहावरा नहीं हो सकता था जिसमे जीवन–सम्बन्धी विशेषण का अभाव हो, साथ ही उसमे जीवन के स्वरूप की विभिन्नता अचूक सहज ज्ञान से प्रकट होगी। भौतिक ससार के प्रत्येक पहलू के लिए वह किसी न किसी जीवनप्रद मुहावरे का प्रयोग करेगा। ये पहलू उसके शब्दों की अपेक्षा कम भिन्न होंगे। एक ही पदार्थ भिन्न–भिन्न समय पर अथवा भिन्न–भिन्न अवस्थाओ में अत्यन्त विषम

तथा असमवाची भाव जागृत करेगा।

सूर्य से शोक प्रेरक तथा प्रोत्साहक, दोनो ही प्रकार के भाव उदय होगे, विजय तथा पराभव सम्बन्धी, परिश्रम तथा असामयिक मृत्यु सबधी किन्तु यह व्यक्तित्वारोप नहीं होगा, और न यह रूपक ही होगा। यह उसके लिए असदिग्ध वास्तविकता होगी, जिसकी परीक्षा तथा विश्लेषण उसने उतना ही कम किया है। जितना कि अपने ऊपर विचार। यह उसका मनोवेग तथा विश्वास होगा, किन्तु किसी भी अर्थ मे धर्म नहीं।"[१]

लोकवार्ता से हमे जो सामग्री मिलती है वह मानव की उस अवस्था की है जब वह सभ्यता से बहुत दूर था उसके प्राचीन के ये अवशेष और वर्तमान सभ्यता की तह मे दिये पडे हुए है। गाम्मे महोदय ने लिखा है कि "सभ्यता की तुलना मे यह स्थिति निर्देश करती है कि उसकी निर्माण तत्व उस मानवीय भाव की अवस्था के अवशेष है जो अवस्था की अपेक्षा जिसमे वे आज मिलते है अधिक पिछडे हुए है और इसलिए अधिक प्राचीन है" ये इसीलिए अधिक प्राचीन हैं"।[२] कारण यह है कि सभ्यता के प्रभाव से लोकवार्ता का विकास नहीं हो पाता, लोकवार्ता के विकास मे व्यवधान पडने लगता है और वह अपनी प्राचीन मनोदशा अथवा स्थिति को सुरक्षित रखते हुए सभ्य समाज के अन्त मे प्रवाहित होती रहती है। लोकवार्ता मे उपलब्ध सामग्री मे जो मनोदशा प्रकट होती है उसी के आधार पर यह निश्चय हो सकता है कि लोकवार्ता मे जातीय तत्व मिलते है। इसी आधार पर विद्वानो ने लोकवार्ता को जाति–विध ान का सहायक माना है। जातियो का निर्माण उनकी अपनी भौगोलिक और वातावरण–निर्मित परिस्थितियो मे घनिष्ठतापूर्वक होता है। उनके चारो ओर विस्तृत प्रकृति की प्रक्रिया, जिस रूप मे भी उनके मस्तिष्क मे होती है, उसी को वे अपने आचार–विचार मे ढाल लेते है और वही जब विकास मे रूक जाती है तो लोकवार्ता का रूप ग्रहण कर लेती है।

लोकवार्ता ने अपने विश्वासो के अनुरूप पहले वस्तु को स्थूल रूप मे विस्तार से देखा है फिर उसके प्रतीक को ही रखा है। प्रतीक ने प्रश्नानुकूल अर्थ बदले हैं और वार्ता का रूप बदल दिया है। अत. लोकवार्ता का अध्ययन इतना ही रोचक है जितना कि भाषा–विज्ञान का, लोकवार्ता–अध्ययन उससे भी अधिक रोचक है, क्योंकि यह शुष्क नहीं हो पाता। जनजीवन की विविध अद्‌भुत और आश्चर्यजनक बाते समझ में आती है। लोकवार्ता केवल रोचक ही नहीं उपयोगी भी है।

'जन' की आज तक प्रायः उपेक्षा रही है। उसका यथार्थ परिचयवार्ता में ही है। मनुष्य के जीवन को सुधारने के लिए अब तक बहुत से आन्दोलन हुए हैं उसमे मनुष्य के जीवन को बुराई तो मिलती

---

१. माइथालाजी आफ दी आर्यन नेशन्स, पृ० २२

२. एथ्नालाजी इन फोकलोर

रही है, उसमे अत्याचार को विशेष स्थान दिया गया है। मनुष्य को समझने के लिए लोकवार्ता का ज्ञान बहुत ही आवश्यक है। बिना उसके मनुष्य को उसकी अपनी आवश्यकताओं को ठीक प्रकार से नहीं समझा जा सकता। साधारण मनुष्य की उसकी अपनी समस्याएँ सामाजिक निर्माण से बहुत अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध रखती है। यही नहीं समाज के उसके मूल तत्वों के ऐतिहासिक मूल्यॉकन बिना लोकवार्ता के कोई सवाल ही नहीं उठता। अब तक का जो इतिहास है वह मनुष्य की उसकी बाह्य रचना के स्थूल घटनाचक्र को लेकर हुयी। लोक–वार्ता–इतिहास मनुष्य के आन्तरिक जीवन के निर्माण की कहानी बन जा रहा है। अब लोकवार्ता ही उन व्यक्तियो का संघर्ष प्रकट करेगी। जिनसे वह अन्तर्निर्माण हुआ है। सामाजिक संविधान और रीति–रिवाजो की जटिल रूपरेखा का स्पष्टीकरण लोकवार्ता से हो सकता है। सभ्यताओं के विभिन्न प्रकार के सघर्ष मनुष्य के जीवन पर कैसा प्रभाव डालते है।

यह सब इसी से प्रतीत होता है कि लोकवार्ता का क्षेत्र बहुत विस्तृत है और यह किसी हद तक जातीय लक्षणो से परिपूर्ण रहता है जिससे स्थूल ऐतिहासिक सकुचित सीमाओ के वैविध्य मे से मानव के ऐक्य का रहस्य झॉकता मिलता है। समाज का आन्तरिक विधान जिन भित्ति पर बना है उनकी मौलिक व्याख्या लोकवार्ता के पास ही है। इस प्रकार लोकवार्ता अत्यन्त महत्वपूर्ण विधान माना जा सकता है। फलत: लोकवार्ता एक विज्ञान है और लोकवार्ता–साहित्य का अध्ययन अत्यत उपयोगी कार्य है।

विभिन्न सभ्यताओ, सस्कृतियो और समाज–निर्माण के धरातलो का यथार्थ निर्णय इस विज्ञान द्वारा हो सकता है। तभी तो आज देश–विदेशों मे इस विज्ञान की ओर अधिकाधिक दृष्टि जा रही है और अधिक अध्ययन हो रहा है। लोकवार्ता पर आधुनिक काल में ही ध्यान दिया गया हो ऐसी बात नहीं है। पुराने जमाने मे लोक–जीवन और इसी अभिव्यक्तियों की ओर सत्रहवीं शताब्दी में आकर्षण हुआ था। जोह्न ओबे ने १६८७ में **रिमेन्स आव जेनेटिक्स एण्ड जुदाइज्म** पर जो नोट लिखे थे और जो **'कैरोलाइन ऐंटिक्वेरियन'** में १८८१ में छपे थे, वे यहूदियों तथा अन्य साधारण जन के लोकवार्ता से सम्बन्धित थे। बिशप पीरी ने १६वीं शताब्दी में **'रिलिक्स ऑफ ऐशियेंट पोइट्री'** में लोकगीतो को ही स्थान दिया था। १६वीं शताब्दी के पूर्व भाग में सर वाल्टर स्कॉट के प्रभाव से लोकगीत और काव्यों में रुचि अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी थी। १७७७ में जोन ब्रांड की **'आब्जर्वेशन ऑन दी पोपुलर एक्टिवीटीज आफ दी ब्रिटिश आइल्स'** प्रकाशित हुई। १८२६ में होन की **'एवरीडे बुक'** और १८२६ में ईयर बुक भी छपी। इन में भी लोकवार्ता सम्बन्धित साहित्य था किन्तु इस ओर दो जर्मन लेखकों का नाम बहुत ज्यादा उल्लेखनीय है जो सगे भाई थे। ये हैं : ग्रिम बन्धु। इनकी 'दि उत्स्के माइथालोजी'

१८३५ मे निकली। इनके इन उद्योगो से लोकवार्ता सम्बन्धी प्रयत्नो को वैज्ञानिक धरातल मिला। इन्होने लोकवार्ता कहानियो और विश्वासो तथा मूढाग्राहो के अध्ययन का आधार वैज्ञानिक ही नहीं बनाया, वरन तत्सम्बन्धी समस्याओ को सकुचित स्थानीय दृष्टि से न देखकर उदार और विस्तृत दृष्टि से देखा। इस दृष्टि से ग्रिम बन्धुओ का लोकवार्ता मे बहुत महत्व है। वे प्रथम चिंतक माने जा सकते है जिन्होंने इसको वैज्ञानिक रूप दिया। इस उद्योग के उपरान्त लोकवार्ता के अध्ययन की ओर बहुत प्रवृत्ति बढी। संस्कृत का पूर्ण विकास हो चुका था। वेदो को प्राचीनतम साहित्य माना गया। वैदिक साहित्य के आधार पर लोकवार्ता के अध्ययन का वैज्ञानिक अनुसन्धान किया गया। इस अध्ययन का सर्वप्रथम पोषण मैक्समूलर ने किया। वैदिक साहित्य की दृष्टि से लोकवार्ताओं के अध्ययन की प्रणाली भाषा–विज्ञान पर निर्भर करती थी[१]। लोक–साहित्य के विद्वानो ने निष्कर्ष निकाला कि भाषा–वैज्ञानिक मौलिक निष्कर्ष भ्रामक थे। इनसे लोक्र–वार्ता के मूल का उचित अनुसन्धान नही हो सकता था। ई०बी० टेलर और उनके पश्चात् सर जेम्स फ्रेजर ने इस दिशा मे शोध कार्य किया फ्रेजर महोदय ने अपनी पुस्तक **'दी गोल्डन बो'** के प्रथम सस्करण की भूमिका मे यह स्पष्ट स्वीकार किया कि डॉ० ई०बी० टेलर के ग्रन्थो को पढने से ही मुझमे समाज के प्राक् इतिहास मे रुचि जाग्रत हुयी थी और उनके ग्रन्थों ने ही मेरे मानस चक्षुओ के समक्ष वह लोक प्रस्तुत किया जिसका मै स्वप्न भी नहीं देखता था। फ्रेजर ने लोकवार्ता के इन दो और स्तम्भो का उल्लेख भी किया है मन्नहरि और डब्ल्यू राबर्ट्सन स्मिथ। मन्नहरि ने इस शास्त्र के लिए जीवनभर कार्य किया। उनके निष्कर्षो का प्रकाशन उनके जीवन–काल मे नही हुआ। उनके अप्रकाशित ग्रन्थ बर्लिन विश्वविद्यालय के पुस्तकालय मे जमा कर दिये गये। १८७५ और १८७७ मे इनकी दो छोटी रचनाएँ प्रकाशित हुयी। फ्रेजर ने मन्नहरि की कृतज्ञता स्वीकार की है। पर डब्ल्यू राबर्ट्सन स्मिथ की प्रशंसा की है। स्मिथ के प्रभाव से फ्रेजर महोदय ने लोकवार्ता के विधिवत् अध्ययन करने की प्रेरणा प्राप्त की। इसी प्रेरणा का परिणाम था – लोकवार्ता का महान ग्रन्थ – 'दी गोल्डन बो' जो तीन भागों मे १८९० में प्रकाशित हुआ। इसकी भूमिका मे फ्रेजर महोदय ने लिखा है – "अतः आर्यो के आदिम धर्म के अनुन्धान का काम या तो खेतिहरों के मूढाग्रहों, विश्वासों और रीति–रिवाजों से आरम्भ होना चाहिए, या उनका उपयोग करते हुए निरन्तर उसका सशोधन और नियन्त्रण होते रहना चाहिए। जीवित प्रथाओ के साक्ष्यों के समक्ष पूर्णकालीन धर्म के विषय में प्राचीन ग्रन्थों की साक्षी का विशेष महत्व नहीं है।" फ्रेजर महोदय की दृष्टि में ग्रन्थ साहित्य विचार प्रवृत्ति को इतनी तीव्र गति प्रदान कर देता है कि वह जन के मौखिक साधन से प्रचारित मन और विश्वासों को बहुत पीछे छोड़ जाता है। इन लोकवार्ताओं के आरम्भिक विचारकों

---

१. दी माइथालाजी आफ आर्यन नेशन्स, पृ० २२

ने अपने से पूर्व की प्रणाली को बदल दिया। इसलिए अब लोकवार्ता की व्याख्या के लिए वेदो की ओर देखने की आवश्यकता नहीं रह गयी। लोकवार्ता के मूल की खोज अशिक्षितो और असभ्यो के आचार–विचारों और उनकी प्राक् ऐतिहासिक स्थितियो और आवश्यकताओ मे किया जाने लगा। इस प्रकार खोज की दिशा बदली। फिर दोनो दृष्टिकोणो से पर्याप्त सघर्ष रहा। इस समय तक सभी क्षेत्रो मे लोकवार्ताओं का संकलन करने का उद्योग आरभ हुआ। इसलिए फ्रेजर ने सभी विशिष्ट देशो के बहुत छोटे स्तर से आचारों, विश्वासों, मूढाग्रहो को सकलित करके उनके गहरे निष्कर्षो की स्थापना की।[1] फ्रेजर महोदय के उद्योगो के होते हुए भी लोकवार्ता पडितो की नजरों मे आर्य– क्षेत्र से बाहर भी गयी और बहुत ज्यादा विकसित हुई। ऐड लैग ने इस विचार को अधिक प्रसारित किया। अब तक जो साधारण मनुष्य में धर्म के जो रूप मूढाग्रहो आदि के रूप मे मिलते थे वे आर्यों के अवशेष माने जाते थे। अब तक यह पता चला है कि सारे विश्व की आदिम मनुष्य जातियो मे वे बहुत अधिक मौजूद है। इन्हीं अवशेषों में इस दृष्टि से शोध करने की दिशा में प्रवृत्ति हुयी कि इन सभी का मूल क्या एक ही स्थान है। इसके बाद समझा जाने लगा कि सभी ने एकत्र होकर मनोविज्ञान की दृष्टि से एक से भाव पैदा किए। इस सम्बन्ध मे तीन सिद्धान्त सामने आए।

१ एटलाण्टिस महाद्वीप, जो अब करीब–करीब खत्म हो चुका है उसी मे एक सभ्यता का जन्म हुआ। ये सब उसी एक सभ्यता के अवशेष है।

२. मिस्र की छठी पीढी से इन सब का प्रारम्भ हुआ।

३ लोकवार्ता का वैदिक दृष्टि से अध्ययन, आर्य जाति के धर्म तक सीमित रहा। इस स्थिति मे लोकवार्ता माइथोलॉजी रही, उसका साधन भाषा विज्ञान मात्र था।

४. लोकवार्ता का वैज्ञानिक निरूपण और इसकी वैदिक आधार से च्युति। अब वह धर्म और माइथोलॉजी की व्याख्या न रहकर, सम्पूर्णतः जन–जीवन और उसकी प्राक् ऐतिहासिक परम्परा का शोध बन गयी। इस स्थिति में लोकवार्ता की परीक्षा के साधन नृविज्ञान और समाज विज्ञान की योग्यतम सामग्री रहे।

जिस युग में लोकवार्ता सम्बन्धी प्रयास आरम्भ हुए उस युग में भारत का विदेशो से घनिष्ठ सम्पर्क भी बढ़ने लगा था। संस्कृत की खोज पाश्चात्य क्षेत्रों के लिए हो चुकी थी। इन्हीं पाश्चात्य विद्वानो ने पहले भारत की लोकवार्ता पर दृष्टिपात किया। टाड महोदय को सबसे पहले लोकवार्ता संग्राहकों में स्थान दिया जा सकता है। इन्होंने 'एनाल्स ऑफ राजस्थान' में राजस्थान के इतिहास की जितनी

---

१. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका।

सामग्री इकट्ठी की है, उतनी हो लोकवार्ताएँ भी। प्रचलित विश्वासों, रीति–रिवाजों का भी उल्लेख उसमें हुआ है।

आर०सी० टेम्पल महोदय ने 'लीजैंड्स ऑफ पंजाब' में लिखा है – "५० वर्षों में अर्थात् जब से टॉड ने अब तक प्रामाणिक माना जाने वाला ग्रन्थ राजस्थान पर लिखा –स्लेवों के गीतों और लोकवार्ताओं का वृहत् अनुलेखन लेखकों ने कर डाला है। रूसी, पोली, श्वेत, क्रोशीय, सर्वी, मोरावी, बेंज़ी, रुथेनी तथरा अन्य पर विस्तृत कार्य हुआ है। भारत में शासक अपनी ऊँची बुद्धि पर, अपने भेजे हुए प्रतिनिधियों की ऊँची शिक्षा पर एव शासन के ऊँचे लक्ष्यों पर गर्व करते हैं, वहाँ यह कार्य अभी आरम्भ ही हुआ है।" टेम्पल महोदय का कहना सही था। १८८४ तक जितना कार्य भारत देशों में लोकवार्ता के क्षेत्रों में हो चुका था उतना भारत में आज तक नहीं हुआ। वास्तव में इस दिशा में इन्हीं टेम्पल महोदय के प्रयास से विशेष प्रगति हुयी। १८६६ में इन्होंने रेवेरेंड एस० हिस्लप के लेखों का प्रकाशन किया। हिस्लप के लेख मध्यभारत की आदिम जातियों के सम्बन्ध में थे। इन्हीं में कहानी उसके मूल के साथ दी गयी थी। हिस्लप महोदय का अनुकरण भी नहीं हो सका और वह उद्योग लोकप्रिय भी नहीं हुआ। इस लेखक की लेखन–शैली विद्वतापूर्ण होने के कारण रोचक नहीं हो सकी। १८६८ में मिस फ्रेयर ने 'ओल्ड डैकन डेज' नाम से कहानियों का एक छोटा सा रोचक संग्रह निकाला। १८७१ में डाल्टन ने **'डिस्क्रिप्टीव एथनालॉजी ऑफ बंगाल'** प्रकाशित की। डैमण्ट ने पुरातत्व और इतिहास के सुप्रसिद्ध पत्र इण्डियन एक्टिविटी मे बंगाल की लोकगाथाओं को प्रकाशित करना आरम्भ किया। १८८३ में रेवरेन्ड की **'फोकटेल्स ऑफ बैंगाल'** निकली। १८८४ में रिचर्ड टेम्पल महोदय की **'लीजेण्ड्स ऑफ दी पंजाब'** तीन भागों में प्रकाशित हुयी। १८८५ में श्रीमती एफ० ए० स्टील के सहयोग से टेम्पल महोदय ने 'वाइड उनके स्टोरीज' नाम से कहानियों का संग्रह प्रस्तुत किया। नरेश शास्त्री ने 'इण्डियन एण्टिक्वेरी' में जो कहानियाँ छपवायी उनका संग्रह भी 'फाक्लोर इन सर्दन इण्डिया' नाम से प्रकाशित हुआ। सन् १८९० में डब्ल्यू क्रुक ने 'नार्थ इण्डियन नोट्स एण्ड क्वेरीज' नाम का पत्र प्रकाशित किया।

कुछ वर्षों बाद रेवरेंड ए० कैंपबे तथा रेवरेड जे०एस० नोलीज ने संथालों और काश्मीर की कहानियों का संग्रह करना आरंभ किया। आर०एस० मुखर्जी की **"इण्डियन फोकलोर"** श्रीमती डूकोर्ट की **'शिमला विलेज टेल्स'**, रेवरे सी० स्विनर्टन की **'रोमाण्टिक टेल्स फॉम पंजाब'** नाम के ग्रन्थों ने लोकवार्ता की महत्वपूर्ण सामग्री दी। १९०६ में जी०एच० बोम्पस ने रेवरेंड ओ० बौडिंग द्वारा संकलित **'संथाली हाउस होल्ड टेल्स'**, शोभनादेवी की ओरियण्ट पर्ल्स' भी महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। पार्थर का **'विलेज**

फोक टेल्स ऑफ सीलोन' (तीन भाग) अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। पेजर द्वारा संपादित **टानी की कथा सरित्सागर** का लोकवार्ता मे महत्वपूर्ण स्थान है। कथाशास्त्र का यह अनुपम ग्रन्थ है। शरतचन्द्र राय भारत के प्रतिष्ठित नृशास्त्र–वेत्ताओ मे है। ग्रन्थो मे भी कुछ कहानियों का समावेश हुआ है। ग्रियर्सन के नृअध्ययनों में भी एक दो कहानियॉ आ गयी है। रामास्वामी राजू का नाम भी उल्लेखनीय है। उन्होने १०० भारतीय कहानियो का सग्रह भेट किया जो 'इण्डियन फेबिल्स' के नाम से ख्यात है। जी०आर० सुब्राहिया पंवालु की **'फोकलोर ऑफ दी तेलगूज'** मे साहित्यिक पुट है। 'मारिस ब्लमफील्ड, नार्मन ब्राउन रूथनार्टन, एम०बी० एमेन्यू जैसे *अमरीकन विद्वानो का नाम भी उल्लेखनीय है, इन्होंने लोकगाथाओ के* अध्ययन की नितान्त नवीन प्रणाली स्थापित की।[1]

आजकल इस दिशा मे सबसे अच्छे नृविज्ञान वेत्ता डॉ० बैरियर एलविन हैं, जिनके गीत और कहानियों के कई रोचक सग्रह प्रकाशित हुए है। सारे उद्योगों का वर्णन अंग्रेजी माध्यम में हुआ है। इसमे सन्देह नहीं भारत मे लोकवार्ता के क्षेत्र मे ये अग्रणी हैं। इनके दिशा निर्देश से भारत मे अन्य प्रयत्न आरम्भ हुए।

लोकवार्ता में लोकगीतो का भी सग्रह हुआ। इस दिशा मे सी०ई० ग्रोवर का नाम अविस्मरणीय है। उन्होंने **'फोक सॉग्स ऑफ सर्दन इण्डिया'** नाम का संग्रह १८७२ में प्रकाशित कराया। १८८२ मे तोरूदत्त ने **'ऐशियंट बैलेड्स एण्ड लीजेण्ड्स ऑफ हिन्दुस्तान'** प्रकाशित कराया। टेम्पल महोदय की **'लीजेंड्स ऑफ दी पंजाब'** भी गीत–सग्रह ही है।

क्षितिमोहनसेन की 'दारामणि' उल्लेखनीय है। मैमन सिंह गीतिका भी बगला का सग्रह है। गुजराती के झबेरचन्द मेघाणी की 'रठियाली रात ३ भाग', रणजीराव मेहता की **'लोकगीत'**, नर्मदा शकर लाल शकर की **'नागर स्त्रियों मॉ गवाता गीत'**, पजाबी में संतराम के पंजाबी गीत, मारवाडी में मदनलाल वैश्य की मारवाडी गीतमाला, निहालचन्द वर्मा के मारवाडी गीत, खेताराम माली का मारवाडी गीत संग्रह, ताराचन्द ओझा का **'मारवाड़ी स्त्री गीत संग्रह'** एवं प्रो० शांडिल्य के कौरवी लोक–कथाएँ कौरवी लोक–कथाएँ, कौरवी लोक–गीत एव कौरवी लोकोक्तियॉ संग्रह उल्लेखनीय हैं।

पंजाब में देवेन्द्र सत्यार्थी जैसे लोकवार्ता संग्रहकार पैदा हुए। उन्होंने भारत भर घूम–घूमकर बड़े अध्यवसाय से अमूल्य लोकवार्ता सामग्री एकत्र की। सेठ निहालसिंह की लोकवार्ता पर पत्रकार की दृष्टि रही। इसका विशेष महत्व नहीं है। हिन्दी में इस उद्योग का श्रीगणेश मन्नन द्विवेदी जी ने **'सरबरिया'** नाम की पुस्तिका से किया। संतराज के **'पंजाब लोकगीत'** भी हिन्दी में सरस्वती के

माध्यम से प्रकाश में आये। इन्होंने प० रामनरेश त्रिपाठी को प्रोत्साहित किया। जिन्होंने 'कविता कौमुदी' पॉचवे भाग में ग्राम गीतों का संकलन प्रस्तुत किया। उन्होंने इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है कि हिन्दी में उनका यह पहला प्रयास था। उन्होंने कहा – "गीत संग्रह का काम आरम्भ करने से पहले मैंने केवल स्व० मन्नन द्विवेदी की 'सरबरिया' नाम की पुस्तिका देखी थी पर इस किताब में मुझे कुछ खास देखने को नहीं मिला और ना ही कुछ मदद मिली। हिन्दी के बहुत प्रसिद्ध विद्वान और मेरे सहृदय मित्र लाला सीताराम, बी०ए० से मैंने सुना था कि न्यसफोल्ड साहब ने गीतों का एक संग्रह किया था किन्तु उसका अब कहीं पता भी नहीं है। कुछ अंग्रेजी साहित्यकारों ने भी यह काम किया है किन्तु उनकी छपी हुयी कोई भी पुस्तक मेरे देखने में कमी नहीं आई। **इंडियन ऐंटीक्वैरी** की पुरानी जिल्दों में ग्रामगीतों और गीत कथाओं पर बहुत से लेख निकले हैं। पर मैंने उनमें से एक भी गीत अपनी पुस्तक में नहीं छापा है।"

आठवें दशक तक इस दिशा में हिन्दी में बहुत अच्छा कार्य हुआ है। राजस्थान के सूर्यकरणी जी पारीक, ठा० रामसिंह, श्री नरोत्तम स्वामी का नाम बहुत सराहनीय है। राजस्थान के लोकगीतों का अच्छा संग्रह प्रकाशित किया गया। प्रो० कन्हैयालाल सहल को भी इस ओर विशेष रुचि है। नरोत्तम स्वामी आदि के उद्योग से बीकानेर राज्य से 'राजस्थान' पत्रिका अंग्रेजी के इंडियन ऐंटिक्वेरी आदर्श पर निकल रही है जिसमें पुरातत्व के साथ लोकवार्ता को भी स्थान दिया जाता है। मिथिला में राम इकबाल सिंह 'राकेश' ने लोकवार्ता के क्षेत्र में कार्य किया। उनके लेख 'हँस' तथा 'विशाल भारत' में प्रकाशित हुए। भोजपुरी लोकगीतों का भी एक संग्रह सामने आया। बुन्देलखण्ड में पं० बनारसीदास चतुर्वेदी के अभियान के पश्चात् जो स्थानीय साहित्यिक जागृति हुयी उसके परिणामस्वरूप चन्द्रभानु शर्मा, रामस्वरूप योगी, शिवसहाय चतुर्वेदी आदि अच्छे लोकवार्ता संग्रहकार सामने आये हैं। श्रीकृष्णनंद गुप्त ने अंग्रेजी 'फोकलोर' मैगज़ीन के आदर्श पर 'लोकगीत' नाम त्रैमासिक पत्रिका भी हिन्दी में निकालने का सफल आयोजन किया। इन्हें वासुदेवशरण अग्रवाल तथा प्रसिद्ध भारती नृ–विज्ञानवेत्ता डॉ० वैरियर ऐलविन का सहयोग भी मिला। 'ईसुरी के फाग' नाम की पुस्तक भी लोकवार्ता परिषद की ओर गुप्त जी ने प्रकाशित करायी।

कौरवी के क्षेत्र में प्रो० शिवकुमार शाण्डिल्य के कार्य उल्लेखनीय हैं। इन्होंने लोककथाओं, लोकवार्ताओं, लोकगीतों तथा स्वॉगों के महत्वपूर्ण संग्रह किए हैं। ये सभी उद्योग श्लाघ्य हैं और लोकवार्ता के अध्ययनक्षेत्र को विस्तृत करनेवाले हैं। इनमें यथार्थतः वैज्ञानिक उद्योग कम हुए हैं। ब्रजक्षेत्र में ब्रज

साहित्य मण्डल ने सामूहिक उद्योग किया।

हिन्दी की विविध बोलियो मे लोकवार्ता–सग्रह का कार्य आज भी हो रहा है। राजस्थानी बुन्देली बघेली, छत्तीसगढी, मैथिली ब्रजी, कौरवी आदि सभी हिन्दी की बोलियॉ है। सभी बोलियो मे सग्रह–कार्य लगातार गतिशील है। सभी बोलियो के लोकवार्ता साहित्य पर दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाता है कि स्थान भेदो के होते भी सास्कृतिक ऐक्य का अच्छा उदाहरण लोक–साहित्य मे मिलता है। लोकवार्ता का साम्य ससार के विविध भागो मे भी मिल जाता है। लोक–कथाओ मे तो कथा–तत्वो की समानता देखते ही बनती है।

लोकसाहित्य का संकलन

लोकसाहित्य सकलन का कार्य बहुत कठिन है। इस कार्य को करने मे कदम–कदम पर कठिनाईयॉ उत्पन्न होती हैं। धैर्यशाली व्यक्ति ही इस कार्य को सम्पादित कर सकता है। इस कार्य मे जो कठिनाईयॉ उपस्थित होती है उनका सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है

१. गवैयों का अभाव

गॉवो मे गीतो को गानेवालो की धीरे–धीरे कमी होती जा रही है। कुछ गीत इस प्रकार के है जिनको विशेष प्रकार की जातिया ही गा सकती है जैसे – धोबी, चमार, जुलाहा, तेली अहीर गोड आदि के गीत हैं। आधुनिकता के इस दौर मे सभ्यता के प्रसार के कारण गॉवो मे अग्रेजी शिक्षा का प्रभाव बढने से इन जातियो के पढे–लिखे नौजवान इन गीतो को गाने मे पूरी तरह से अपना अपमान समझते है। ये लोग अपनी पुस्तैनी धरोहर को खोते जा रहे है। ऐसी दशा मे लोकगीतो को बचाकर रखने मे इन लोगो से कोई आशा करना बेकार की बात है। इन गीतो की जिन लोगो ने अब रक्षा कर रखी है उनमे गॉव के बूढे या बूढी स्त्रियॉ ही है जो मृत्यु के बहुत ही समीप है। जो अपनी जिन्दगी के दिन पूरे कर रहे है और अपनी मौत का बेसब्री से इन्तजार कर रहे है। इस तरह लोकगीतो का इकट्ठा करने का कार्य बहुत कठिन होता जा रहा है।

पर्दे की प्रथा

पर्दे की प्रथा के कारण इस कार्य मे बडी–बडी कठिनाइयॉ उत्पन्न होती हैं। पूरब के जिलो तथा बिहार के पश्चिमी जिलो मे पर्दे की बहुत ही कठोर परम्परा है जिसके कारण कोई भी अच्छे कुल की स्त्री किसी भी गैर पुरुष के सामने नहीं आ सकती। इन स्थानो पर बूढी स्त्रियॉ भी पर्दे की परम्परा का पालन करती है। इस तरह से ऐसी दशा मे गीतो का इकट्ठा करने मे जो लोग इस कार्य मे लगे

हुए हैं उनके सामने बहुत अधिक कठिनाई आती हैं। आजकल पढी–लिखी लडकियॉ तो लोक–गीतों को घृणा की दृष्टि से देखने लगी हैं। ये लड़कियॉ इन गीतों को आजकल के माहौल से एकदम अलग समझती हैं। संस्कार से सम्बन्धित सभी लोकगीत स्त्रियों के गले अथवा कण्ड में ही निवास करते हैं। अतः पढ़ी–लिखी स्त्रियों से इन गीतों को गवाकर लिखना बहुत कठिन कार्य है।

पुनरावृत्ति की असमर्थता

गवैये जब अपनी पूरी मस्ती में होते हैं तभी वे गा पाते हैं और जब वो गाने लगते हैं तब बहुत ही अच्छे सुर में अथवा बहुत अच्छी लय में गाते हैं। पूरी मस्ती में ऊँचे स्वर में गाते समय वे कथा के प्रसंगों को भी भूल जाते हैं ऐसा हमेशा लोकगाथाओं के गाने में होता है। 'लोरकी' पूर्वी क्षेत्रों में गाया जाने वाला प्रबन्धात्मक गीत है। यह ताल स्वर से गाया जाता है। जब गवैये भावावेश में आकर गाने लगते हैं तब इस गीतों को लिपिबद्ध करना बड़ा मुश्किल होता है। गीत–सग्रह करने में गीत की कोई कड़ी बीच में छोड दी तो उसको दोबारा लिपिबद्ध करना कठिन है। गवैया किसी गीत को आरम्भ से ही गा सकता है। गीत गाते समय किसी छुटी हुयी पंक्ति को फिर से गाने में उसके लिए मुश्किल अथवा कठिन काम है। दोबारा शुरूआत से संग्रहकर्ता का कार्य कठिन हो जाता है। गीत बीच में ही अधूरा रह जाता है। गवैये इतनी तेजी के साथ इन गाथाओं (लोरकी विजयमल आदि) को गाते है कि एक तो गीत का अर्थ समझना कठिन फिर इतनी तेजी के साथ लिखना और कठिन है। स्त्रियॉ जब विवाह आदि विशेष उत्सवों पर समवेत स्वर से गाने लगती है तो के अर्थ को समझकर स्पष्ट रूप से उन गीतों को लिखना कुछ साधारण काम नहीं है। स्त्रियॉ भी किसी गीत को बीच से ही दुहराकर नहीं गा सकती।

गवैये हर समय गाने को तैयार नहीं होते

लोकगीतों के संग्रहकर्ता के सामने सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि गवैये हमेशा गाने के लिए कभी तैयार हो नहीं सकते जब उनका मूड़ होता है तभी वे गा सकते हैं। वे (ऋतु) के अनुकूल ही गीतों को गाना ज्यादा पसन्द करते हैं, जैसे फागुन के मौसम में वह "फगुआ" या होली के मौसम में होली गायेंगे और चैत के दिनों 'चैता' या 'घाटी'। आज्ञा देकर गवैये से नहीं गवाये जा सकते हैं। यदि उनको डरा–धमकाकर या आग्रह करके किसी प्रकार गायेंगे भी तो उनका हृदय अन्दर से उस गीत को गाने में नहीं होगा। उनका मन अन्दर से नहीं मानेगा। इस प्रकार संग्रहकर्ता को ऋतु के अनुकूल गीत सुनने और लिखने के लिए समय की बड़ी बेताबी से प्रतीक्षा करनी पड़ती है। एक और दूसरी

बहुत **बड़ी कठिनाई है** किसी कार्य विशेष को करते समय गाये जानेवाले गीतों–एक्शन सॉग्स की यह एक खास बात है कि वे उस कार्य को करते समय ही अच्छी तरह गाये जा सकते है। जैसे रोपनी रीति से गाये जाते हैं। इसमें सन्देह नही कि इस वातावरण मे ही गीतों को गाने में आनन्द आता है। परन्तु इस कार्य को करने मे सग्रहकर्ता का बहुत सा समय खराब होता है।

संकुचित मनोवृत्ति

गवैयों की मनोवृत्ति भी सकुचित सग्रह कार्य में कठिनाई उपस्थित करती है। प्राय ऐसा देखा जाता है कि गवैये गीतो को लिपिबद्ध कराने में बडा संकोच करते हैं। वे संग्रहकर्ता को उसका आदर सत्कार न करके किसी भी तरह से उसको टालने की कोशिश करते है। अक्सर वे समझ बैठते हैं कि इन गीतों को लिखवाने से उनके पेशे को धक्का या नुकसान पहुँचेगा अथवा उनका समाज मे आदर सत्कार कम हो जायेगा लोकगीतों के कार्यकर्ताओ के सामने बहुत सी कठिनाईयॉ उपस्थित होती है जैसे इन गीतों के प्रति बहुत अधिक उत्साह अनुराग और अदम्य उत्साह न हो तो इस कार्य मे उसको सफलता नहीं मिल सकती।

लोकसाहित्य संग्रहकर्ता के उपादान

(क) आन्तरिक साधन

(१) **सामान्य जन से तादात्म्य** : लोकसाहित्य सग्रहकर्ताओ के लिए यह आवश्यक है कि जिस स्थान को वे अपना कार्य–क्षेत्र बनाये वहॉ के सपूर्ण सामान्यजन से उनका निकट सम्बन्ध हो। अपने आपको बडा समझना और जिन लोगो से सामग्री एकत्र करनी हो, उनको अनपढ समझकर शिक्षा देने की कोशिश करना हानिकारक होगा। यह आवश्यक है कि सग्रहकर्ता अपने वैभव का उनके सामने प्रदर्शन न करे। उनके साथ मधुर वाणी, कुशल व्यवहार और बहुत ही विनम्र बर्ताव और स्थानीय शिष्टाचार के नियमो का पालन बहुत आवश्यक है। शिष्टाचार का पालन न करने पर उस जगह अथवा उस क्षेत्र के जनसामान्य का सम्मान एवं प्यार सग्रहकर्ता को प्राप्त नहीं हो पाएगा। उस प्रदेश के लोगों के कार्यकलापों में ज्यादा दिलचस्पी लेना भी अच्छा नहीं होगा। वे लोग गीत और कहानियॉ तभी सुनायेंगे सभी प्रकार से वहॉ के लोगों से तादात्म्य अत्यंत महत्वपूर्ण है।

(२) **सहानुभूति**

संग्रहकर्ता की सफलता के लिए जनसामान्य के साथ सहानुभूति आवश्यक है। स्थानीय रीति–रिवाजों, उनके विश्वासों, उनकी प्रथाओं और अंधविश्वासों के प्रति सहानुभूति जरूरी है। सामान्य

जन की हरकते चाहते कितनी भी तुच्छ और कितनी भी व्यग्यपूर्ण क्यों न हो सहन करनी पडेगी। हम उनकी प्रथाओ का सम्मान नहीं करेगे तो वहॉ के लोग सग्रहकर्ता से प्यार की भावना प्रदर्शित नहीं करेगे। उदाहरणार्थ देहरादून के जौनसार भावर क्षेत्र मे बहुपत्नी प्रथा आज भी प्रचलित है। किसी परिवार मे पॉच भाई है तो सभी को एक ही पत्नी होगी जो पॉचो को अपना पति समझेगी। शास्त्रो ने बहुपति प्रथा को गर्हित बतलाया है। यदि कोई भी सग्रहकर्ता अपने कार्य के उद्देश्य से इस प्रदेश मे जाय और वहॉ के लोगो से इनके शास्त्र के विरूद्ध उनके इस प्रथा की आलोचना करके सग्रह करने का काम करे तो वह किसी कीमत पर सफल नहीं होगा। यह गॉठ बॉध लेना चाहिए कि जॅगली तथा असभ्य जातियो के विश्वास तथा प्रथाएँ कितने भी अजीब क्यो न लगे वहॉ के निवासियो की दृष्टि मे सम्मान्य है। अत· आवश्यकता इस बात की है कि उनके दृष्टिकोण से ही उनकी प्रथाओ को समझने का प्रयास किया जाए। सग्रहकर्ता को बहुत सी असुविधाएँ झेलनी पडतीं हैं। उन्हें सामान्यजन की प्रथाओ, रीति रिवाजो और विधि–विधानो को समझने मे बहुत मुश्किलो का सामना करना पडता है। अपनी सहानुभूति प्रदान कर सग्रह कर्ता जब स्थानीय लोगो का विश्वसनीय बन जाता है तभी वे अपने रहस्यो का उद्घाटन करते है।

३. **अनुसन्धान चातुर्य**

लोक साहित्य की इधर उधर बिखरी सामग्री को इकट्ठा करने के लिए सग्रहकर्ता को तीक्ष्ण बुद्धि से काम लेना चाहिए। सबसे पहले उसको यह यह जानना चाहिए कि कौन सी सामग्री कहॉ से प्राप्त हो सकती है। कुछ प्रथाओ का पालन केवल पुरुष करते है तथा अनेक विधि–विधानो को केवल स्त्रियॉ ही सम्पादित करती है। कुछ रीति–रिवाजो, प्रथाओ, पेशो या व्यवसायो के करनेवाली जातियॉ सीमित है। कुलीन घरो या कुलो मे विशिष्ट अधविश्वास और परम्पराएँ सुरक्षित है। सग्रहकर्ता के लिए वाछनीय है कि वह उपयुक्त व्यक्ति से सम्पर्क स्थापित् कर अपने कार्य की सिद्धि करे। उसको बडी ही सावधानी से काम लेना चाहिए। जो व्यक्ति जिस विषय का अधिकारी या ज्ञात हो उसी से उस विषय की जानकारी प्राप्त होनी चाहिए।

सोफिया बर्न ने लिखा है कि "युवती स्त्रियॉ प्रेमगीत, टोटका, शकुनशास्त्र तथा भूत–विद्या के विषय में प्रामाणिक है। बूढी स्त्रियॉ शिशु गीत, लोककथाओं जन्म, मृत्यु और बीमारी से सम्बन्धित विधि–विधानों की अधिक जानकारी रखती हैं। संग्रहकर्ता को पशु–पक्षियों के विषय में किसी शिकारी से बातचीत करनी चाहिए, लकडहारे से वृक्षों के विषय में और गृहिणी से रसोई बनाने और कपडों को

साफ करने के सम्बन्ध मे **पूछताछ** करनी चाहिए।"

नीच कही जानेवाली अस्पृश्य जाति के अनेक व्यक्तियो के पास सुन्दर गीतो के भण्डार है। दुसाध नामक एक अछूत जाति पचरा के गीत गाने मे निपुण है। घुमन्त नट जाति के लोग अनेक गीतो को जानते है। अत सग्रहकर्ता के दिमाग मे अछूत की भावना नहीं आनी चाहिए। उसका यह परम कर्तव्य है कि वह इन लोगो के घर जाए और उनके रीति–रिवाजो प्रथाओ और गीतो का सग्रह करे।

४. जॉच-परखकर ही किसी तथ्य को मान्यता देना

सग्रहकर्ता का यह बात स्वीकार कर लेनी चाहिए कि किसी खास जाति मे अमुक प्रथा का अभाव है अथवा उनमे अमुक गीत पूरी तरह से प्रचलित नहीं है या वे लोग अमुक प्रथा मे विश्वास नहीं करते। यदि कोई बात अनुसन्धान से प्रामाणिक सिद्ध न हो तो इसका यह अर्थ बिल्कुल नहीं लगाना चाहिए कि जाति विशेष मे उस प्रथा या गीत का अस्तित्व है ही नहीं। इसके विपरीत उसे चाहिए कि उस वस्तु के अभाव के साक्षीभूत प्रमाण को लिपिबद्ध कर ले। किसी खास स्थान मे किसी प्रथा परम्परा या विश्वास के अभावो को लिख लेना उतना ही आवश्यक है जितना कि उनकी सत्ता को लिपिबद्ध करना। किसी भी तथ्य को तब तक स्वीकार या अस्वीकार नहीं करना चाहिए जब तक कि उसके पक्ष तथा विपक्ष मे पूरी तरह से ठोस प्रमाण नहीं मिल जाएँ।

५. स्थानीय शब्दों के प्रयोग

जहॉ तक हो सके स्थानीय भाषा मे सकलन–कार्य करना चाहिए। लोकगीतो और कथाओ के सग्रह मे यह बात बहुत ही आवश्यक है। प्रथाओ और रीति–रिवाजो को लिपिबद्ध करते समय वहीं की पारिभाषिक शब्दो का प्रयोग करना चाहिए जिनके पयार्यवाची या समानार्थक शब्दो का हिन्दी भाषा मे अभाव है। विवाह के अवसर पर उत्तर प्रदेश मे पूर्वी जिलो मे बहुत सी प्रथाएँ प्रचलित है – जैसे 'मारी', कोडाई', 'हल्दी लगाई' 'लावा भुजाई', 'नहछू नहावन' आदि ये प्रथाएँ लौकिक तथा स्थानीय है।

६. यथानुरूप लिपिबद्ध करना

स्थानीय लोकसाहित्य सग्रहकर्ता को चाहिए कि वह जिस गीत या कथा को जैसे सुने उसको उसी प्रकार लिपिबद्ध करे। इस सम्बन्ध मे उसका यही सिद्धान्त होना चाहिए कि 'यथा उक्तम् तथा लिखितम्'। यदि लिखा हुआ गीत या कथा कहीं अशुद्ध हो या उसको जान पडे तो अपने विवेकानुसार उसका सशोधन कभी नहीं करना चाहिए। यह सशोधन कभी–कभी खतरनाक सिद्ध होता है और गीत के मूल अर्थ को बिल्कुल खत्म कर देता है। उदाहरण के लिए 'सलबैली' शब्द को कीजिए। इसका

भोजपुरी में अर्थ होता है अनगढी लकडी को छी–छाल कर चिकना बनाना। जैसे 'हम पार सलवली' अर्थात मैंने चारपाई के पैर को चिकना तथा सुन्दर बनवा लिया। एक भोजपुरी गीत मे इसी अर्थ मे इस 'सलवली' शब्द का प्रयोग हुआ है। परन्तु डॉ० सर ग्रियर्सन जैसा सुप्रसिद्ध भाषा–मर्मज्ञ भी इस शब्द के अर्थ के चक्कर में पड गए और उन्होंने 'सकवली' पाठ को अशुद्ध समझकर उसका संशोधन 'सुकवली' कर दिया है और अर्थ बतलाया है 'सुकाया' जो इसके मूल अर्थ से बिल्कुल अलग तथा अशुद्ध है।

कहने का तात्पर्य है कि गीतों और कथाओं में संशोधन खतरे से खाली नहीं है। बहुत सभव है कि जिस पाठ को अपनी समझ मे न आने के कारण हम अशुद्ध समझ रहे हैं, कुछ दिनों के बाद वह समस्या सुलझ जाये और उसका ठीक अर्थ लग जाये।

७. संग्रह की प्रामाणिकता

अपने संग्रह पर प्रामाणिकता का सिक्का लगाने के लिए यह आवश्यक है कि वह जिस व्यक्ति से लोक–साहित्य का संग्रह करे उसको उसका नाम, अवस्था स्त्री या पुरूष, निवास स्थान (पूरे पते के साथ) व्यवसाय और उसकी स्थिति को भी लिपिबद्ध कर ले। यदि किसी व्यक्ति (खासकर स्त्रियों को) नाम बतलाने में आपत्ति हो तो इसके लिए कोई आग्रह नहीं करना चाहिए। गवैये का नाम, पता आदि लिख लेने से पहला लाभ तो ग्रह होगा कि यदि कोई व्यक्ति किसी गीत या कथा की यथार्थता की जॉच करना चाहेगा तो वह उसे आसानी से कर सकेगा। दूसरा लाभ यह है कि जिले या प्रदेश में बोली प्रचलित हो सकती है। किस जाति में कौन सा गीत या कथा प्रचलित है, इसका ज्ञान भी आसानी से हो सकता है। भाषाशास्त्री के लिए ये सभी सूचनाएँ जरूरी हैं।

८. विभिन्न पाठों का संग्रह

एक गीत के जितने भी पाठ मिल सकें। उनका संग्रह वांछनीय है। लोकगाथाएँ उनके प्रान्तों में भिन्न–भिन्न रूपों में प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए आल्हा जो मूलतः बुन्देलखण्डी में लिखी गयी आजकल क्षेत्रीय लोक भाषाओं में उसके अनेक रूप मिलते हैं। इसके कन्नौजी, भोजपुरी, ब्रजी, कौरवी, पाठ आज भी मिलते हैं। राजा गोपीचन्द तथा भरथरी की कथा लोकगाथा के रूप में पूरे उत्तर भारत में गायी जाती है। ढोला मारू की कथा राजस्थान से लेकर भोजपुरी प्रदेश तक गवैयों से सुनी जाती है। यदि इन गीतों के विभिन्न पाठों का सकलन कर अध्ययन किया जाये तो यह पता लग सकेगा कि इनके कथानकों में स्थानीय परिवर्तन हो गये हैं। इसलिए भाषा की दृष्टि से पाठों का संग्रह आवश्यक है।

डॉ० चाइल्ड ने अग्रेजी तथा स्कॉटिश लोकगीतो के सभी पाठो का सकलन किया है। उन्होने लेडी ईसावेला एड दि एट नाइट नामक गीत के नव विभिन्न पाठो का सर फ्रेडरिक शीर्षक गीत के अठारह विभिन्न पाठो को और मैरी हैमिल्टन शीर्षक गीत के अठारह पाठो का सग्रह अपने प्रमाणिक ग्रन्थ मे किया है। पडित रामनरेश त्रिपाठी ने अपने ग्रामगीत मे 'भगवती देवी' गीत के तीन चार पाठो को लिपिबद्ध किया है जिनमे कथा–सम्बन्धी विशेषताएँ भी मिल जाती है।

९. बाह्य साधन

लोक साहित्य सग्रहकर्ता के लिए सैनिक की भॉति बाह्य साधनो की आवश्यकता होती है। लोकसाहित्य के सग्रहो के लिए 'पैन और 'पेपर आदि की भी आवश्यकता होती है।

अपने साथ हमेशा सग्रहकर्ता को नोटबुक रखनी चाहिए। इस नोटबुक मे पेज ऐसे हो कि वे आवश्यकता पडने पर अलग किये जा सके या उसमे जोडो जा सके। प्रत्येक गीत कथा प्रथा रीति–रिवाज विधि विधान, विश्वास तथा परम्परा अलग–अलग पृष्ठो पर लिखनी चाहिऍ। नोटबुक के अतिरिक्त बाल और नीली–काली स्याही से युक्त फाउण्टेन पेन भी होने चाहिए। इसके साथ ही लाल पेसिल और कापिग पेसिल का होना भी जरूरी है। जिन वस्तुओ या तथ्यो का सकलन सग्रहकर्ता स्वय करे उन्हे नीली स्याही से लिखता जाए। दूसरो के द्वारा उसे जो सूचना मिले उसे लाल स्याही से लिखना चाहिए। इससे बाद मे यह पता लग सकेगा कि किस साहित्य का सकलन उसने स्वय किया है और कौन सी सूचना दूसरो से मिली है। लाल कापिग पेन्सिल का भी यही उपयोग है। सभ्यता केन्द्रो से बहुत दूर जगलो तथा पहाडो के बीच मे निवास करनेघाली जातियो के गॉवो मे जहॉ लेखन–सामग्री का नितान्त अभाव है। फाउण्टेन पेन और पेसिल के महत्व का अनुमान होता है।

१०. कैमरा

आदिम जातियॉ प्राय ऐसे स्थानो मे बहुत थोडे है। मानव शरीर क्रिया–विज्ञान के विद्यार्थी के लिए इन जातियो के शरीर, मस्तक की आकृति, उनके रूप रग का अध्ययन आवश्यक है। इनके घरो को बनावट, देवी देवताओ के मन्दिर सामान्य शयनग्रह, टोना–टोटका की वस्तुएँ भूत दूत से आविष्ट स्थान तथा इन जातियो की वेशभूषा तथा अलकार आदि का अनुसधान जरूरी है। इन वस्तुओ के सम्यक अध्ययन के लिए कैमरा आवश्यक है। जिससे उनके चित्र लिये जा सके। ग्रामीण लोग अपना फोटो देखकर बहुत खुश होते है। इस प्रकार उनकी सहानुभूति और सहायता दोनो प्राप्त की जा सकती है।

११. रिकार्डिंग मशीन

लोकसाहित्य के सग्रह का कार्य रेकार्डिग मशीन के बिना अधूरा रहता है। गॉवो मे भी लोक गीतो के गर्वयो की कमी होती जा रही है। कुछ दिनो मे ये गवैये खोजने पर भी नहीं मिलेगे। लोक-गीतो को लिपिबद्ध करने पर उनकी स्मृति की रक्षा हो जाती है। यह कहना आवश्यक है कि लोक-गीतो का प्रमाण सगीत है। सगीत के बिना उनके सुनने का आनन्द नहीं आता। विभिन्न गीतो के गाने लय अलग-अलग होती है। उनकी लय भिन्न-भिन्न होती है। स्त्रियो के सोहर और झूमर की लयो मे बडा अन्तर है। जतसार और रोपनी के गीतो की भी अलग-अलग धुने है। यह आवश्यक है कि गवैयो के गीतो की रिकार्डिग कर ली जाए जिससे गीतो के प्राणो को भी सुरक्षित रखा जा सके। बूढी दादियॉ अपने गीतो और कथाओ को रिकार्ड कराने मे सकोच करती है फिर भी उनकी मौखिक सम्पत्ति को टेप रिकार्ड से हमेशा के लिए सुरक्षित कर लेना सग्रहकर्ता का परम कर्तव्य है।

सग्रहकर्ता अपनी लगन और बुद्धि से सभी कठिनाइयो पर विजय पा सकता है।

विभिन्न क्षेत्रीय लोकसाहित्य विधाऍ

पॅवाडा

वर्षा मे आल्हा और फाल्गुन मे होली गाई जाती है। पूर्वी जिलो मे आल्हा और ब्रज क्षत्र मे रसिया प्रचलित है। पटके (वसत गीत), होली और ढोला पूर्वी क्षेत्रो मे गाए जाते है। ढोला एक पॅवाडा है जिसका अर्थ प्रियतम अथवा पति भी होता है। ढोला मे प्रेम का वर्णन मिलता है। अत तर्ज की लोकप्रियता से आज ढोला स्वतत्र गीत ही बन गया है। रतजगे के बाद अथवा अन्य किसी अवसर पर राह चलती स्त्रियो के द्वारा इस गीत के गाए जाने पर सारा वातावरण मदमस्त हो जाता है।

लोकगीत

पॅवाडो की सख्या नगण्य है, पर लोकगीत अनन्त हैं। ये पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियो ने अधिक रचे है। स्त्रियो की भावनाओ और तर्जो मे न जाने कितने गीत लिखे गए है। इनमे सावन के गीत (मल्हार) बारह मासा और निहालदे हैं। मालवा, मारवाड, ब्रज मे प्रसिद्ध 'चन्द्रसखी' के बहुत से धार्मिक गीत भी यहॉ प्रचलित है। जान पडता है, किसी धार्मिक वृत्ति के लोककवि ने ही स्त्रियो के गीतो की भावना औरतर्जे ही नहीं अपितु उन जैसा नाम, उपमान भी रखकर उन गीतों को प्रसारित कर दिया।

कुरु जनपद के लोकसाहित्य मे भी ऐसे अनेक संकेत मिलते है जिनके द्वारा हम उनका सम्बन्ध सुदूर अतीत की प्राक् आर्य सस्कृतियो से जोड सकते है। ग्राम वधूटियो के कपित स्वरो मे हम सुनते है।

(क) **श्रम गीत**

१. **नृत्यगीत**

आदि काल से ही मनुष्य ने अपने गीतो को श्रम और नृत्य के साथ जोडा है। कुरु प्रदेश मे गीतो के साथ होनेवाले अनेक नृत्य है। पुरुषो का होली नृत्य योद्धाओ के रणकौशल की पुनरावृत्ति मात्र है। तेजी के साथ इधर से उधर तेजी से बढना, उछलना, कूदना बैठ जाना पुरातन काल की सामरिक क्रियाएँ है। पुरुषो के बीच स्वॉग, तमाशो के अलावा होली तथा स्त्रियो के विवाह शादी के अवसरो अथवा धार्मिक पूजा के समय पर भी ये देखे जा सकते है।

२. **मल्हार**

कोल्हू चलाते समय गाये जानेवाले गीत मल्हार कहे जाते है।

३. **ऋतु गीत**

सावन (सावण), होली बारामसा जैसे ऋतु गीत यहॉ बहुत प्रचलित है। सावन के गीतो मे विविधता तथा भावप्रवणता बराबर मिलती है।

(क) **सावन**

सावन के गीतो मे विरह वर्णन अधिक मिलता है। इस क्षेत्र मे सावन–गीत बहुत प्रसिद्ध है।

होली पटका : बसत धरने से ही ढ़प झॉझ, घटा और थाली सवा महीने तक होली राग की टेर के साथ सर्वत्र सुनाई देते है। होली इस क्षेत्र मे ऋतु गान ही नही। यह हमेशा गाई जानेवाली तथा समस्त विषयो को समेटनेवाली तर्ज है।

पटका : स्त्रियॉ रास नृत्य मे घूमती एक दूसरी हाथ मे हाथ मारती गाती है।

त्यौहार गीत : त्यौहारो और उत्सवो पर अनेक गीत गाये जाते है, कुछ मे कथाएँ भी होती है। गणेश चतुर्थी पर एक गीत गाया जाता है।

संस्कार गीत : जन्म, विवाह आदि के अवसरो पर सस्कार गीत गाये जाते है। जन्म गीत को पूर्वी क्षेत्र मे सोहर और ब्याई कहा जाता है।

विवाह गीत : विवाह के मौको पर अनेक गीत गाये जाते है।

धार्मिक गीत : धार्मिक गीत या भज़न अनेक प्रकार से गाये जाते है। गढ–गगा, नौचदी, मूगा बोर गोधन, सांझी, सीतला (विशेष कठी माला) लूमिया, भूरासिह, होली, दीवाली तथा आर्यसमाजी भजन इस प्रदेश के धार्मिक गीत है। इनमे शिक्षित, अशिक्षित, अर्धशिक्षित सभी प्रकार की मानव भावनाएँ प्रतिबिबित

है। यहाँ के गीतो मे बाते बहुतायत से मिलती है। सोने का गडुवा गगाजल पानी।' 'दूध कटोरा । धोली गाय तले' "बछरवा चूखता" "हाथ रकेबी तन्ती जलेबी" आदि।

बाल-गीत : बाल गीत खेल–सम्बन्धी अथवा लोरियाँ है। मनोरजन–गीत टेसू, झाझी और चौपाई है। चौपाई (चट्टो का गीत), चटटा चौथ (भाद्रपद की गणेश चतुर्थी) के आस–पास के दिनो मे पाठशालाओ के बालक लकडी के छोटे डडे (चट्टे) बजा–बजाकर गाते है। इसका रिवाज अब कम होता जा रहा है। टेसू और झॉझी तीनो मे ही भाव सम्पत्ति का अभाव और कोरी तुकबदी मात्र होती है टेसू के गीतो मे तुकबदी और बाल बुद्धि के विलास मे कल्पना का सयोग देखते बनता है।

रागनी : मनोरजन के लिए गाये जानेवाले गीतो मे प्रमुख रागनी है। प्राय चौपाल पर बैठकर सामूहिक मनोरजन के लिए वर्षा को छोड सभी ऋतुओ मे रागनी गायी जाती है।

जोगियो के गीत : कई जातियो के निजी गीत भी है। जोगी कुछ गीतो या पॅवाडो के पेशेवर गायक है। भॉडो की चेरक सूझना उल्लेखनीय है। जोगी जाति प्राय पौराणिक शैव कथाओ, कतिपय ऐतिहासिक धार्मिक चरित्रो पर मिलते है। 'नागिन', अजना दिसौटा', 'गोपीचद भरथरी', 'नरसी का भात' उल्लेखनीय है। गीतो के कथानक लम्बे है। जोगी लोग प्राय ढोला और 'निहालदे' की रगत मे गाते है। स्वॉगो के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हे।

धोबियों के गीत : धोबियो के गीत को 'खड कहते है। ये लम्बे कथानको को लेकर चलते है। एक–एक खड मे कभी–कभी पॉच–पॉच हजार तक पद होते है। नि सदेह आकार के विचार से 'खड किसी भी 'खड' काव्य की अपेक्षा कम नही होते इनकी एक बडी विशेषता यह है कि इनके कथानको को गायको ने हिन्दू मुस्लिम सस्कृति के विचारो और विश्वासो से भर दिया है।

कुरु प्रदेश मे स्वाग रचयिता और कवि काफी सख्या मे हुए है। जो इस प्रकार है

१ नत्थूलाल–मानसिह – जावली गाजियाबाद

२ पडित लक्ष्मीचद शर्मा – सूप मेरठ

३ बुल्ली

४ पडित रघुवीर शर्मा

५ रघुवीर शरण

६ दीना

७ रामसिह

८. आशाराम – सनौली – अपनी तर्ज का अलग ही स्वागी है सगीत के नाम पर एक डडा रखते थे जिसमें घुँघरू बधे होते थे पूरा का पूरा सगीत इसी से बजता था।

९. असलम अकरम – मुजफ्फर नगर

१०. नरेश – बागपत

११ बुन्दू मीर – खानपुर मेरठ

१२ शरीफ मीर– मस्तानखेडा, मुजफ्फर नगर

१३ चन्दर बादी – दन्तनगर, मेरठ

१४. चतरसेन त्यागी – डूँडाहेडा, गाजियाबाद

मैथिली लोकसाहित्य के मशहूर लोकगीत

१ झूमर, २. चांचर, ३. मलार, ४ फाग, ५. तिरहुति, ६. सॉझ, ७. स्याम चकेवा, ८ सम्भरि (स्वयवर), ९. नचारी, १०. ग्वालरि, ११ जट जटिन।

मगही लोक-साहित्य के लोकगीत

१ जॅतसारी, २. बगुली नाट्यगीत, ३. चौहर, ४. चैता, ५. भइया दूज, ६. माता मइया, ७. पोपट पीने का गीत, ८ बरही पूजने का गीत, ९. मुडन गीत, १०. जनेऊ गीत, ११. पूर्व म्लिन, १२ पिता पुत्री सवाद, १३. वर वधु संवाद, १४ कोहबर, १५. दहेज, १६. पराती, १७ गवना, १८ अलचाही।

भोजपुरी

१. आल्हा, २. लोरकी, ३. सोरठी, ४. बिहुला विषधरी, ५. गोपीचन्द, ६. नयकला नजारा, ७. चनैनी, ८. बसुमति का गीत, ९, सोहर, १०. गवना के गीत, ११. कजली, १२. चैता, १३. नागपचमी, १४ बहुरा, १५ गोधन, १६. पिडिया, १७. अहीर बिरहा, १८. दुसाहा पचरा।

अवधी

१ कुसुमा, २. चन्द्रवली, ३. साध, ४ सरिया, ५. रोचना, ६. पसनी, ७. मांडव के गीत, ८. तेल चढाने तथा सिलपोहनी के गीत, ९. पेरी तथा भात, १०. नाखुर, ११. तेलु, १२. गौन्याही अथवा सुहाग, १३. द्वार चार, १४. भॉवर, १५. बाती, १६. गालियॉ तथा ज्योनार, १७. परिछन, १८. बनरा और बनरी, १९. नकटा, २०. शीतला के गीत, २१. कहरवा, २२. पचरा।

जागरोन, जवारा, पाटनि, दिवारी।

बघेली : दादरा, टिप्पा, जनजातिक गीत, करमा, नैनजुगानी, आदि।

छत्तीसगढ़ी : नारी गीत, सुआ गीत, पुरूष गीत, मँडई गीत, करमा, ददरिया, बॉस, नवरात गीत, गौरा के गीत, भोजली के गीत, चुला मारी (मँटकोरा), तेल चढी, मायमौरी, नह डोरी, परधनी, भॉवर आरी, डॉडी पौहा, भौंरा, खडुवा (कबडडी), बीरम गीत, नचौरी गीत आदि।

बुन्देली : सैर, राछरे, ईसुरी, ख्याली, रामारे, बिलवारी, नौरता के गीत, दिवारी के गीत, मामुलिया, सुअरा, कायँ डालना, टहूके, आदि।

ब्रज लोकसाहित्य : रॉझा, जाहरपीर, ढोला, अन्यान्य गीत, घपरी घपरी, अटकन बटकन आटे बाटे, लिरिया, कोड जमाल शाली, चील झपटटा आदि।

कन्नौजी लोकसाहित्य : फुरेला गीत, झुँझिया, टेसू, बन्ना, बरूआ गीत, प्रसव, चक्की गीत, आदि।

राजस्थानी लोकसाहित्य : धूला, पपइया, मणत, कुरजॉ, बनडा, बाना बैठना, बडा विनायक, राती जगा, सती गीत, ओलूँ, जल देवता, सेडल, आदि।

मालवी लोकसाहित्य : लावनी (किलगी तुर्रा), होड पूजन, सती माता, सतियार, सीतला, बीरा भात, महेरा, साजन, आफू, गूजरी, सॉझी, अबल्या छबल्या आदि।

पंजाबी लोकसाहित्य : चरखा, जिज्जा, माहिया, गिद्धा, दिया बाती, खारी गॉव, ललीऑ गॉव के बैल।

डोगरी लोकसाहित्य : कामन (खोडिया), चंबे दिया घाटॉ, सिपाही, गरीबी आदि।

कॉगडी लोकसाहित्य : लोहडी, समूहत, बूटणा, कांगडा देश आदि।

गढ़वाली लोकसाहित्य : जागर, छोपती, तॉदी, चौफुला, झुमैलो, लामज, खुदेड गीत, बाजू बंद, मांगल छूडा आदि।

कुँमायनी लोकसाहित्य : रितुरैणा, छपैली, झोडा, चॉचरी, बैर गीत, मंगल गीत, न्योली गीत आदि।

नेपाली लोकसाहित्य : असारे, रसिया, लैबरी, सोरठि, दँवाई, घॉसे, मॉदले, डफू, बालन, करूवा गत, लोसर, जाडो, देउडा, मालासिरी, बुझाअल, जुआरी, भयाउरे, लाहुरे, पंछी, कर्खा।

कुलुई लोकगीत : छीजा, नाटी गीत, लाहलडी, चूडाकर्म, अरगना, पॉजयौ, आदि।

चबियाली लोकगीत : ऍचली, खजियार की शोभा, गोरखा आक्रमण, चंबे का चौगान मैदान आदि।

२. कुरु जनपदीय समाज-व्यवस्था

कुरु जनपद में बहुत सी जातियॉ है। ये सभी जातियॉ अपने कार्य मे व्यस्त आज भी मिलती है। आज इनकी कार्य–प्रणाली कुछ बदली है। मगर वास्तविकता को यहॉ की ग्रामीण जिन्दगी नहीं बदल पायी। कुरु जनपद में जाति–व्यवस्था इस प्रकार से हैं :

१ ब्राह्मण २. जाट ३ गूर्जर ४ ठाकुर ५. त्यागी ६ गडरिया ७ लुहार ८ चमार ९ धोबी १० सुनार ११. भंगी (मेहतर) १२ नाई १३. धुनिया १४. मछुवारा १५ जुलाहा १६. मिरासी १७ कजड १८ कसाई १९. तेली २० कुम्हार (प्रजापति) २१. मुल्तानी कुम्हारी २२. रांघड २३ माळी २४ हलवाई २५. सिकलीगर २६. ठठेरा २७ तमोली २८. बनिया २९ सक्का ३०. कहार ३१ अहीर ३२ गोस्वामी (गुसाई) ३३. पंजाबी ३४ सिधी ३५. कोजडा (सब्जी बेचनेवाला) ३६. बंजारा ३७ गाढा ३८ मन्सूरी (धुने) ३९ नाई (सलमानी) ४० बिसाती ४१. शेख ४२. सैय्यद ४३ पठान ४४. बिलौच ४५ मल्लाह ४६. मिर्जा ४७. जैन ४८ मिरधा ४९ फकीर ५० बेग (मुगल)।

२.१ कुरु प्रदेश में पारिवारिक जीवन

कुरु प्रदेश मे आज भी सयुक्त परिवारों की अधिकता है। इस प्रदेश मे अधिकतर खेती करनेवाले लोग रहते है अर्थात् अधिकतर खेती पर निर्भर रहनेवाले परिवार है। ये परिवार सब तरह आपस में मिल–जुलकर अपने पारिवारिक कार्य करते हैं। ये परिवार एक–दूसरे के लिए महत्वपूर्ण सहयोगी भी है। परिवार में बाबा या दादी की आज्ञा को उच्चतम न्यायालय की तरह माना जाता है। उसके बाद माता–पिता और बडे भाई की आज्ञा का महत्व है। पारिवारिक जीवन मे ऐसी अव्यवस्था न आने पाये इसलिए ऐसी व्यवस्था की गई है। परिवार के छोटे–मोटे झगडे एवं पारिवारिक समस्यायें सुलझा लेते है। औरतों के बीच कलह हो जाने पर या तो बॅटवारा कर दिया जाता है, या परिवार का बडा–बूढा सबके हितों का ध्यान रखते हुए अपना फैसला सुना देता है। फैसला सभी को मानना पडता है। इस व्यवस्था के फलस्वरूप यहॉ के लोग अत्यन्त परिश्रमी और प्रगतिशील है।

कौरवी स्वॉगों में पारिवारिक जीवन के स्पष्ट चित्र मिलते हैं। ये चित्र अधिकतर राजा और रानी की कथाओं के माध्यम से प्रस्तुत किये जाते हैं। ये स्वॉग लोक–परिवेश को उजागर करने, कुछ विशिष्ट सन्देश देने और पारिवारिक जीवन की कानून–व्यवस्था स्थापित करने का कार्य कर ' हैं।

– संगृहीत सूचनाओं के आधार पर।

२.२ कुरु प्रदेश में रिश्ते-नाते

२.२.१ हिन्दुओं के रिश्ते नाते

ये रिश्ते इस प्रकार है – पडबाब्बा, बाब्बा, बाप्पू, ताऊ, चाच्चा, भाई, पडदाद्दी, दाद्दी, ताई , चाच्ची, बेब्बे, बोब्बो भाब्बी, नान्ना, नान्नी, माम्मा, पोत्ता, पोत्ती, बेट्टा, बेट्टी भाणजा, भाणजी धेवता, धेवती, मोस्सा, मोस्सी, फुफ्फा, फुफ्फी आदि।

२.२.२ मुसलमानों के रिश्त-नाते बाप, आब्बा, अब्बू, वालिद साहब, मॉ–अम्माजान, मोस्सी–खालाजान। मोस्सा – खालुजान, बुआ – फूफी, फुफ्फा – फूफ्फा, बहन – बाजी आपा अप्पी भाई – भाईजान, भाई सहाब, भाभी – भाभीजान, बाबा – दादा जान, दादी – दादी अम्मा, दादी जान पडदाद्दा – दादी अम्मा, दादी जान, पडदाद्दा, पडदाद्दी– पडदाददी, बहनोई – दुल्हा भाई, माम्मा – मामूजान, माम्मी – मुमानीजान, नान्नी – नानी अम्मा, नाना – नाने अब्बा, धेवता – नवासा, धेवती – नवासी, पत्नी – बेगम, पति – खामिद शौहर।

२.२.३ ईसाई रिश्ते-नाते ईसाईयों में अंग्रेजी संस्कृति के प्रभाव के कारण मम्मी, डैडी, अंकल, आटी, ग्रांड फादर, ग्रांड मगर आदि। आजकल पाश्चात्य प्रभाव से हिन्दुओं और मुसलमानों में भी ईसाईयो की तरह के रिश्ते चलने लगे है। किन्तु लोक–कथाओं में इनका प्रयोग व्यंग्य के रूप में मिलता है। वैसे इन्हें लोक–कथाओ मे सामान्य रूप में देखा जा सकता है।

२.३ कुरु प्रदेश के रीति-रिवाज और संस्कार : कुरु स्वॉगों में निम्नलिखित रीति–रिवाज देखने को मिलते हैं .

१. **पक्की (भेंट) तथा गोद भरना :** विवाह की पकावट के लिए हिन्दुओं मे सर्वप्रथम रस्म लडकीवालों की तरफ से लडकेवालों के यहॉ होती है। लडकेवालों की तरफ से लडकी की गोद भरी जाती है।

२. **तिलक, टीका, सगाई :** पुरोहित लड़कीवालों के यहॉं से परॉंत में लड्डू और तरह–तरह की मिठाइयॉं वस्त्रादि तथा अन्य सामान लडकेवाले के यहॉ ले जाते हैं। वहॉ से विदा के समय पुरोहित को नेग दिये जाते हैं।

३. **टेवा :** लड़का या लडकी की जन्म–कुण्डली का सूक्ष्म विवरण जिस कागज पर पडित लिख कर ग्रह आदि मिलाकर बनाता है उसे विवाह सुझाना कहा जाता है। इसे टेवा भेजना कहा जाता है।

४. **लगन :** पुरोहित टेवे की तरह ब्याह की सारी रस्मों को निश्चित करके भेजता है जिसे नाई

देने जाया करता था। आजकल परिवार के लोग जाते है। यह रस्म लडकीवालों की तरफ से होती है।

५. **पीली चिट्ठी** : लडकीवाला पुरोहित से चिट्ठी लिखवाकर लडकेवाले के यहाँ भेजता है। इसमे हल्दी के छींटे लगाये जाते हैं। इस रस्म को मुसलमानों में लाल खत कहते हैं।

६. **मॉडवा** : लड़केवाले बारात जाने के एक दिन पहले अपने सगे–संबंधियों एवं परिचितों को दावत देते हैं। पॉच सरवों में चार सकोरों को बीच में छेद करके दो–दो करवों के बीच गूरी रखकर दरवाजे पर पॉच **मान** इसे बॉध देते हैं।

७. **अगवानी** : बारात के आगमन पर उनके स्वागत के लिए लडकीवाले भेंट लेकर आते है।

८. **चढ़त** : बारात बाजे–गाजे एवं आतिशबाजी के साथ गॉव में होती हुयी लडकीवालों के घर पहुँचती है। इसे चढत कहा जाता है। आतिशबाजी का रिवाज आजकल कम हो गया है।

९. **जनवासा : बारौठी एवं भॉवर** : वह स्थान जहॉ बारात रुकती है जनवासा कहलाता है। बारौठी और भॉवरो की भी रस्में होती है।

१०. **बन्ना बन्नी** : लगन से तीन या चार दिन बाद बरना–बरनी पर तेल चढाने के लिए पॉच स्त्रियॉ चुनी जाती है। इन्हे गौरनी या हथलगुन कहते है। ये गौरनी गेहूँ आगे रखकर हाथ चलाती है जिसे गेहूँ किराना कहते हैं। हल्दी कूटी जाती है। जिसे हलद का नेग कहते हैं।

११. **रतजगा** : ब्याह से पहले यह रस्म अदा की जाती है। इसमें रात को स्त्रियॉ सोती नहीं है बल्कि गीत गाती एव नाचती है।

१२. **कजेतिन** : बरना–बरनी की माता या अन्य कोई सधवा स्त्री, जो नाते में मॉ के समान हो, कजेतिन बनती है। कजेतिन रतजगे के दिन कोरे सरवे में एक सुपाड़ी, एक हल्दी की गॉठ और एक टका पैसा रखकर दीवार पर ओंधा चिपका देती है। ऊपर से हल्दी लगा दी जाती है। बायबन्द में देवी–देवता रहते हैं। देवी–देवताओं को दिया जानेवाला पकवान कहलाता है।

१३. **निकरोसी** : लडकेवाले अपने घर से बारात लेकर लडकी को ब्याहने चलते हैं। उसी दिन स्त्रियॉ लोकाचार मनाती है। इससे पहले फ़ेसोंडा मनाया जाता है, जिसमें बन्ने के बाल सॅवारे जाते हैं।

१४. **बारौठी** : बारौठी लड़कीवालों के दरवाजे की रस्म होती है। लड़कीवाला वर को पॉच बर्तन देता है जिसे पॅचडा कहते हैं। बारौठी के समय स्त्रियॉ बारातियों को गा–गाकर गालियॉ देती है।

१५. **बढ़ार :** लडकीवाला जब बारात को दूसरे दिन रोक लेता है। इसे बढार कहा जाता है। इस दिन बारातियों की विशेष भोजन की व्यवस्था होती है। बारात में बन्ने को बर्तनो मे भोजन परोसा जाता है जबकि बारातियो को पत्त्ल–सकोरों में खाना दिया जाता है। आजकल बढार रखने की परम्परा समाप्त होती जा रही है।

१६. **कँवर कलेऊ :** बारात विदा होने से पहले दूल्हे तथा उसके साथियों को भोजन कराया जाता है। इसे कॅवर कलेऊ या कॅवर कलेवा कहा जाता है।

१७. **नेग्गाचारा :** लडकेवाले के घर पर विवाह के दिन स्त्रियों द्वारा नेग्गाचार किया जाता है जिसे गौरनी कहते हैं।

१८. **चूल्हा न्योत या चूल्हा नोत :** दावत में घर के सभी स्त्री पुरूष तथा बच्चे निमंत्रित किये जाते हैं।

१६. **पलकाचारा :** विवाह के अगले दिन लड़कीवाले के यहॉ वर–वधू मंडप के नीचे एक पलॅग पर बैठते हैं। चलनवाली स्त्रियॉ और पुरुष, वर को टीका करते हैं। बताशा खिलाते हैं और रुपये भी देते हैं। ये जौ (यव्) बोते हुए परिक्रमा करते हैं। हर परिक्रमा पर लडके तथा लडकी के पैर पूजते हैं।

२०. **भट्टी लात :** बारात विदा होते समय वर या बन्ना लडकीवाले के यहॉ बनी हुयी भट्टी में लात मारकर बारात के साथ विदा होता है।

२१. **सिरगूँदी :** विदा के समय लडकी के सिर के बाल गूँथकर बॉधे जाते हैं। उसकी मॉग भी भरते हैं।

२२. **बाइना :** दुलहन के ससुराल आ जाने पर चलनवालों के घरों में जो मिठाई या पकवान बॉटा जाता है वह बायना कहा जाता है। बायना सामान्यतः लडके की ससुराल से आयी मिठाई में–से बॉटा जाता है।

२३. **लाड कोथली :** जब लड़की माइके से ससुराल में आती है तब माता के यहॉ से उसके साथ पॉच थालियों में मिठाई, मेवा, चूडी, कलावा आदि रख दिया जाता है। इसे लाड कोथली कहते हैं।

२४. **भात :** लडके तथा लडकी के ब्याह में मामा जो वस्त्र, धनादि देते हैं उसे भात–भरना कहा जाता है। बहन भाई से नरसी के समान भात भरने की कामना करती है।

२५. **कॅगना एवं छड़ी मार :** दूल्हे के घर में नवविवाहित दम्पत्ति एक दूसरे का कॅगना खोलने के

बाद बन्ना, बन्नी छडी मार खेलते है।

२६. **छूछक** : लडकीवालो की तरफ से पहला लड़का होने पर उपहारस्वरूप कपडे, गहने, मेवा एवं आभूषण आदि दिये जाते है। मेहमानो को भी लड़कीवाले गुंजाइश के अनुसार रुपये भेट में देते हैं।

२७. **मरघट** : किसी मनुष्य के शव को मरघट में ले जाने के लिए बॉस, कफन, कलावा, सामग्री, कंडा, लकडी मँगाई जाती है। इन सभी को मुर्दे का सामान कहते हैं। मरघट में सामग्री, घी एवं लकडियों से मृतक व्यक्ति का सस्कार किया जाता है। मुसलमानों में उसे विशेष प्रकार की चारपाई में लेजाकर दफ़नाते हैं।

२८. **पिंडोती** : जब मुर्दे को ले जाया जाता है तो रास्ते में पिण्ड बदला जाता है। इस क्रिया में आटे का पिंड बनाकर रख दिया जाता है। मुर्दे को रास्ते में मिला देखकर प्रत्येक मनुष्य उसके पीछे पॉच–पॉच कदम अवश्य चलता है या खडा होकर उसे प्रणाम करता है।

२९. **दाग देना** : मुर्दे को बडे या छोटे पुत्र द्वारा बॉस से दाग दिया जाता है। लकडियॉ लगाकर अन्तिम संस्कार कर दिया जाता है।

३०. **फूल चुगना** : शवदाह के तीसरे दिन जल पातर दी जाती है। इसमे मृतक के घर आदमी मिलकर नहाते है तथा पिड और जल चढ़ाते हैं। तीसरे दिन मरघट से मृतक की अवशिष्ट हड्डियॉ चुनी जाती हैं जिसे फूल चुगना कहा जाता है।

३१. **रोवा पीट्टण** : मृत्यु से तेरहवें दिन तक स्त्रियॉ शोक व्यक्त करती है। तेरहवीं के दिन यह रोना–पीटना बन्द हो जाता है। शोक व्यक्त करते समय आप्पा पीटा जाता है। इसे रोवा पीट्टण कहा जाता है। राजस्थान में इस काम को रुदाली करती हैं।

३२. **बरसी** : तेरहवीं के बाद मृत्यु से ११ महीने उपरान्त बरसी की जाती है। इसमें पुरोहित को सम्पूर्ण कपड़े आदि दान दिये जाते हैं। नाती–पोतीवाले व्यक्ति के लिए सोने की नसैनी बनायी जाती है। उसकी अर्थी को सजाकर विमान भी निकाला जाता है।

३३. **तेरही** : मृत्यु के ११वें या १२वें दिन तेरही की रस्म होती है जिसमें ब्रह्म–भोज के साथ–साथ बिरादरी आदि का भी भोज होता है।

लोक-संस्कार

कुरु प्रदेश में आर्य समाजी शिष्ट समाज में भारतीय पद्धति के अनुसार १६ संस्कारों का विधान है। लोक समाज में केवल जन्म, विवाह और मृत्यु के संस्कार किये जाते हैं।

वैदिक परम्परा के सोलह सस्कार ये है

१ गर्भाधान सस्कार

२ पुसवन सस्कार

३ सीमान्तोन्नयन सस्कार

४ जातकधर्म सस्कार

५ नामकरण सस्कार

६ निष्क्रमण सस्कार

७ अन्न–प्राशन सस्कार

८ चूडा–कर्म सस्कार

६ कर्ण–भेद सस्कार

१० विद्यारम्भ सस्कार

११ उपनयन सस्कार

१२ वेदारभ सस्कार

१३ •केशान्त सस्कार

१४ समावर्तन सस्कार

१५ विवाह सस्कार

१६ अत्येष्टि सस्कार

४.६ कुरु-प्रदेश में नर-नारी सम्बन्ध

खेतीहरो एव मजदूरो की सख्या अधिक होने के कारण यहॉ पर पति–पत्नी–सम्बन्ध अधिकतर मधुर नहीं है। इसका कारण धनाभाव या कार्याधिक्य है। कुछ जातियो मे मुक्त साहचर्य देखने को मिलता है। कुलटा स्त्रियॉ अपने प्रमियो से छिप–छिपकर खेतो मे मिलती है। पुरुष भी इसके अपवाद नही। वे भी इसके दोषी है। मुक्तहास और व्यग्य अक्सर देखने को मिलते है। मुक्तहास और व्यग्य जीवन को सरस बनाने मे सहायक होते है। स्वॉगो मे मुक्त–साहचर्य परस्त्री–गमन और परपुरुष सम्बन्ध को पाप कहा है। वे इस प्रथा पर स्वॉगो मे प्रहार करने से नहीं चूकते।

२.४ कुरु प्रदेश की धार्मिक आस्थाएँ

कुरु प्रदेश के लोक–धर्म में ये आस्थाएँ देखने को मिलती है –

१ नियतिवाद

२ अधविश्वास

३ लोक–देवीदेवताओं में विश्वास

४ माई पूजन

५ भुमियाँ–पूजन

६ कुआँ–पूजन

७. टोने–टोटकों में विश्वास

इन सारी आस्थाओं का प्रकारान्तर से विस्तारपूर्वक विवेचन शोध–प्रबन्ध मे यत्र–तत्र किया गया है। यहां आस्थाओं के उदाहरण कुरु जनपद के स्वाँगों मे सर्वत्र मिल जाते है।

२.४.१ नियतिवाद : नियति से तात्पर्य भाग्य से है। लोक मे सदैव भाग्य को महत्व दिया जाता है। लोक मानव जहाँ एक ओर अपने कार्यों के प्रति सजग और सावधान रहता है वहीं भाग्य मे भी उसका पूर्ण विश्वास होता है। वे मानते है कि ईश्वर मानव के गर्भ मे प्रवेश करते ही उसके भाग्य का लेखा–जोखा लिखकर तैयार कर देता है। यही भाग्य उसके जीवन को सचालक कुजिका है।

लोक मानव सहज विश्वासी होता है। तर्क में उसका विश्वास नहीं होता। वह भाग्य भरोसे सम्पूर्ण जीवन–नैया को खेता है। यह भरोसा उसको अकर्मण्य बना देता है। किन्तु यह विश्वास उसे अनेक बुराइयों और आपाधापी से बचा लेता है। 'ऐसा ही होना था' यह सोचकर वह अपने अहित करनेवाले व्यक्ति को भी क्षमा करता है। नियतिवादी भावना उसकी नीयत को भी सरल बनाए रखती है। यह नियति के भरोसे अपने दैनिक कार्यों और मानसिक संवदेना को संयत रखता है। उसका विश्वास है कि निश्चित समय, निश्चित माध्यम से पूर्व निर्धारित कार्य स्वत· सम्पन्न होता है। यह सब अनायास होता है।

कुरु प्रदेश में लोकमानव भाग्य–भरोसे रहता है। यही भाग्य का भरोसा उसको मानसिक सतुलन देता है। कौरवी स्वाँगों में लगभग सर्वत्र नियतिवादी भावना का संकेत मिल जाता है। इसी नियति के कारण लकडहारा राजा बनता है और यही नियति राजा को भिखारी बना देती है।

२.४.२ कुरु प्रदेश के अंधविश्वास

लोकमानव, परम्परा की भावना से ओत–प्रोत रहता है। यह भावना उसे अकर्मण्यता की ओर

ले जाती हैं। परम्परा–पालन के कारण उसमे अधविश्वास की भावना का उदय हो जाता है। अधविश्वास की भावना उसकी प्रगति मे बाधक होते हुए भी वह परम्परा–निर्वाह की शक्ति देती है।

२.४.३ जादू-टोने, भूत-प्रेत में विश्वास

लोकमानव जादू–टोने भूतप्रेत मे भी विश्वास करता है। इस स्तर पर नियति पर उसकी आस्था समाप्त हो जाती है। वह यह विश्वास करता है कि नियति के कारण भोक्ता और कर्ता की भावनाएँ घटना के अनुसार गतिशील हो जाती है।

लोक स्वॉगी, लोक की मिट्टी की भावनाओ का गायक होता है। वह लोक की सूक्ष्मतम सवदेनाओ को आत्मसात् करके उसे वाणी प्रदान करता है। लोक मे परम्परागत भावना का प्राधान्य होता है। युगो--युगो की मान्यताओ को स्वॉगो मे महत्वपूर्ण स्थान मिलता है। ये मान्यताएँ युगानुरूप नही होती इसीलिए इन्हे अन्धविश्वास कहा जाता है। वैसे इन आस्थाओ और विश्वासो के वैज्ञानिक आधार होते है। कालान्तर मे इनकी वैज्ञानिकता सम्बन्धित ज्ञान लुप्त हो जाता है। इसके फलस्वरूप यह धर्मका अग बनकर अध ाविश्वास बनकर रह जाता है।

अधानुकरण के कारण विश्वास को अधविश्वास कहा जाता है। वैसे हर विश्वास का कोई न कोई वैज्ञानिक आधार होता है।

जीव–जन्तू व पशु–पक्षी एव देवी–देवता के दृष्टिकोण से भी लोकमानस वस्तुसत्ता मे देवत्व–भाव का आरोपित करता है। गाय–बछिया मे गौ माता का भाव उपयोगिता की दृष्टि से और सास्कृतिक सम्पर्क के प्रभाव से निवर्तित होता है। धर्म–सम्पर्कज श्रद्धाभाव, लोक मनस्तात्विक भाव गाय मे देवता की प्रतिष्ठा करता है। यह भाव श्रीकृष्ण एव गोलोक से जोडा जाता रहा है। भगवान कृष्ण से गाय का जुडा होना गाय को देवी रूप मे प्रतिष्ठित करता है।

४.७.४ टोटम एवं टेबू : काले कुत्ते का टोटम भैरव की सवारी से जोडा गया है। भारतीय लोक–मानस मे रोगी के द्वार पर काले कुत्ते का बना रहना शुभ माना जाता है। बिल्ली कभी वफादार नही होती। सम्भवत· इसीलिए बिल्ली का रास्ता काटना अशुभ माना जाता है। जिन–जिन पशु–पक्षियो को देखकर भय का भाव उद्भुत होता है उनमे भी लोक मानस देवत्व का आरोपण कर लेता है। सुख के भाव का स्पन्दन शुभ देवता और दुख का भाव–स्पन्दन अशुभ देवता को प्रतिष्ठित करता है।

कुरु प्रदेश की भौगोलिक स्थिति मे विषमताओ के कारण उस परिवेश मे बाघ, भालू, चीते सर्प आदि बहुतायत में मिलते है। इनका विवरण टोटम तथा टेबू के रूप मे स्वॉगो मे सर्वत्र मिलता है।

इनमें से कुछ हानिकारक और कुछ (पालतू पशु आदि) उपयोगी होते हैं। नाग को देवता के रूप मे तथा बाघ को नरसिंह के रूप मे पूजने की परम्परा लोक–मनस्तत्व का परिणाम है। सर्पो को भगवान शिव और कृष्ण से भी जोडा जाता है। सिंह नरसिंह का टोटम भी है। परिणामतः धर्म से संबद्ध लोक–मानस इन पशु–पक्षियों में टोटम के भाव को शास्त्र–सम्मत मानते हुए इनमें देवत्व का ओरापण करता है।

२.४.५ परम्परागत रूढ़ियॉ : परम्परागत रूढियों में कौवा अशुभ का द्योतक है। लेकिन श्राद्ध पक्ष में कौए को पितृ–पक्ष तक नेवेद्य एव सन्देश पहुँचानेवाला देवता माना जाता है। लोक–मानस मनस्तत्व जहॉ–जहॉ दुख की निवृत्ति और सुख के आहरणहेतु उपयोगिता अथवा अनुपयोगिता के भाव से अशुभ देवताओं का सर्जन करता है वहीं सभी देवी–देवता लोक–परिवेश में लौकिक देवी–देवता होते है। कुरु प्रदेश में भी पशु–पक्षी, जीव–जन्तु आदि के सम्बन्ध में व्यापक–भावनाएँ स्वॉगों मे मिलती हैं।

२.५ कुरु प्रदेश के पर्व, त्यौहार एवं मेले

१. पशु मेले
२. घाट मेले
३. छड़ियों का मेला
४. रामलीला
५. मस्तान शाह का मेला
६. बरोली मेला
७. देवी मेला
८. गूगापीर मेला
९. जहीर दीवान मेला
१०. बूढ़ा बाबू मेला
११. जट्टाशंकर महादेव मेला
१२. चंदेश मेला
१३. दशहरा
१४. कार्तिक मेला
१५. जोगीदास मेला
१६. उर्स इमाम साहिब

१७ उर्स जनत शरीफ

१८. पीर बहराम मेला

१९. निसार अली मेला

२० शाकुम्भरी देवी मेला

२१ रथयात्रा मेला

२२ जेठ मेला

२३. गणेश मेला

२४. रामनोमी मेला

२५. उछाव सराव मिया मेला

२६ प्यारे जी मेला

२७ उर्स गरीब शाह मेला

२८. जगन्नाथ मेला

२९ बंगाली मेला (दुर्गा अष्टमी)

३०. बुढ़िया मेला

३१. शाह रुकनुददीन उर्स

३२. जैन मेला

३३. गंगा स्नान मेला

३४. कुन्ती मेला

३५. शिव चौदस मेला

३६. घीसा संत मेला

३७. सारॅगी मेला

३८. कालिका देवी मेला

३९. सती पूजा मेला

४०. उर्स शाह अब्दुल्ला

४१. उर्स मखदूम शाह

४२. भीकौरी मेला

४३. सलीनो

४४ उर्स हजरत सम्सुददीन

४५. चौदस

४६ मकर सक्रांति

४७. सोमवती अमावस्या

४८. दिखौटी

४६. कतकी

५०. उर्स कुतुब आलम अब्दुल कुदुस

५१. मीरान शाह मौहम्म्द मेला

५२. नेजावाले शलार मेला

५३. छत्री जहीर दिवान

५४. भादुई मेला

५५. गुदडी मेला

५६. गुलखा देवी मेला

५७. छिपियों का मेला

५८. उर्स ताज खॉ

५६. नेजा शाह मदार मेला

६०. उर्स हजरत अली

६१. सुखवंती देवी मेला

६२. अन्नपूर्णा देवी मेला

६३. बसंती मेला

६४. बलदेव का मेला

६५. उर्स नबी करीम

६६. उर्स आरिफ अली शाह

६७. पूजन मेला

६८. मेला नरसिंह

६६ मुहर्रम (मुरादाबाद)

७० उर्स बुलाकी शाह

७१. मदार के विश्नोई मेला

७२. पवन–परीक्षा मेला

७३. सरवर मेला

७४. सन्तोषी माता मेला

७५. बाबा देवीदास मेला

७६. सिद्ध बाबा जी मेला

७७. बराही मेला

७८. स्वामी दीनदयाल मेला (फागुन सदी पूर्णमासी)

७६. माता का मेला

८०. मेला बागेश्वर

२.५ मुजफ्फरनगर जनपद

मेला का नाम	स्थान	तिथि	उद्देश्य
पशुओं का मेला	मुजफ्फरनगर	१४ मार्च से २१ मार्च	सांस्कृतिक समन्वय
घाट मेला	वही	बदी चैत द्वितीय से चैत बदी नौमी तक	धार्मिक भावनाएँ आपसी मिलन आदि का उद्देश्य
छडियों का मेला	वही	भादो बदी पडवा से	
रामलीला	वही	अषाढ़ सुदी षष्ठी से दशमी तक	
मस्तान शाह का मेला	सरवट	जेष्ठ माह के हर बृहस्पतिवार	
छडियों का मेला	चरथावाल	भादों बदी नोमी से	
घन्टोली मेला	वही	चेत बदी द्वितीय से	
देवी मेला	वही	चेत सुदी अष्टमी से	

गूगापीर	बुढाना कलॉ	भादो बदी नोमी से
जहीर दिवान मेला	हैबतपुर	जेठ मास के पहले रविवार
बूढा बाबू मेला	अमीर नगर	चैत मास के प्रथम मगल को
छडियो का मेला	पुरकाजी	भादो बदी नोमी को
जटटाशकर महादेव	दयालपुर	फागुन बदी चौदस को
छडी काजी चिश्ती	कैराना	जमद उर्स साहनी १३–१६
छडियो का देवी मेला	वही	चैतबादी नौमी से
चदेश मेला	वही	भादो सुदी चौदस
दशहरा	समरा	जेठ सुदी दशमी
कार्तिक मेला	वही	कार्तिक सुदी अमास्या
दशहरा	शामली	जेठ सुदी दशमी
जोगीदास	शामली	चैत सुदी पडवा
बूढा बाबू मेला	वही	चैत बदी द्वितीया
उर्स इमाम साहिब	बनत	मोहर्रम ११
उर्स इमाम साहिब	झिझाना	मोहर्रम १२
उर्स हजरत शाह	झिंझाना	जिल–हिज्जा २३
गूगा पीर	थाना भवन	भादों सुदी अमावस्या
उर्स जलाल शरीफ	जलालाबाद	रवि उल अव्वल–३
पीर बहराम मेला	बिढौली	अषाढ और जेठ की वृहस्पत
निसार अली मेला	जानसठ	जेठ के दूसरे शुक्रवार को
घाट मेला	जानसठ	चैत बदी द्वितीया
शाकुम्भरी देवी मेला	जानसठ	अषाढ सुदी पडवा
रथयात्रा मेला	जानसठ	भादों सुदी चौदस तथा फागुन सुदी चौदस
देवी मेला	तालरा	चैत तथा अषाढ सुदी अष्टमी
छडियों का मेला	तिसॉगा	सावन बदी नोमी
छडियों का मेला	बुखारी	सावन सुदी अमावस्या

कार्तिक मेला	सुकरताल	कार्तिक सुदी चतुर्थी
जेठ मेला	सुकरताल	जेठ सुदी नोमी
गणेश मेला	मीरापुर	सावन सुदी अमावस्या
उर्स	काकरोली	रवि उल अव्वल – १७
रामनोमी मेला	मीरापुर	चैत सुदी द्वितीया
छडियोंवाला मेला	खतोली	भादो बदी पडवा
उछाल सरा बगियान	वही	चैत मास
प्यारे जी मेला	रायपुर अहरना	चैत बदी षष्ठी
उर्स गरीब शाह मेला	सोरो	सावाल प्रथम
छडियोंवाला मेला	मुजफ्फरनगर	फागुन बदी पडवा मगलवार

२.५.२ जनपद मेरठ

नौचंदी मेला	मेरठ	चैत नया चांद आठ दिन के लिए
रामलीला	मेरठ	क्वार बदी तेरस–१२ दिन के लिए
छडियों का मेला	मेरठ	सावन बदी तेरस १२ दिन के लिए
रथयात्रा	मेरठ	अषाढ बदी तेरस १२ दिन के लिए
दुर्गा अष्टमी का मेला	सदर बाजार	क्वार बदी तेरस १२ दिन के लिए
गडियों का मेला	मेरठ सदर बाजार	सावन बदी तेरस १२ दिन के लिए
देवी का मेला	दौराला	चैत मास बदी तेरस १२ दिन के लिए
शाह रुकनुददीन उर्स	फफूँदा	रवी उल–सानी

२.५.२.२ तहसील सरधना

बूढ़ा बाबू	सरधना	चैत बदी द्वितीया से षष्ठी तक
जैन मेला	औरंगानगर	कोई निश्चित तिथि नहीं है।
जैन मेला	मालसेरा	कोई निश्चित तिथि नहीं है
जैन मेला	सलावा	कोई निश्चित तिथि नहीं है
जैन मेला	मालसेरा	कोई निश्चित तिथि नही है

२.५.२.३ तहसील मवाना

गगा स्नान का मेला	हस्तिनापुर	बैशाख मास
स्नान मेला	हस्तिनापुर	कार्तिक मास
छडियों का मेला	निलोहा	भादों
दशहरा	मवाना	क्वार
कुन्ती मेला	टीकरी	फागुन
छडियों का मेला	परीक्षतगढ	भादों

२.५.२.४ तहसील बागपत

शिव चौदस का मेला	बागपत तथा पुरा मे	फागुन बदी चौदस
बूढ़ा बाबू	खेकडा	भादो सुदी दौज से सप्तमी तक
घीसा संत मेला	खेकडा	फागुन मास में तथा अषाढ में भी
सारंगी मेला	खेकडा	अगहन मास
शिव चौदस का मेला	रटौल	
मखदूम सिराजुददीन चिश्ती	रटौल	

२.६ जनपद गाज़ियाबाद

कालिका देवी मेला	सिकरी खुर्द	चैत बदी सप्तमी से दशमी तक
शाह अब्दुल्लाह उर्स	बेहरा हाजीपुर	रबी उल–सानी
सती पूजा	समाना	वैशाख सुदी पंचमी
दूधेश्वरनाथ मेला	गाजियाबाद	प्रति सोमवार
देवी पूजा	डासना	चैत तथा क्वार मास में
मखूदम शाह उर्स	डासना	मोहर्रम

२.६.१ तहसील हापुड़

कार्तिक स्नान	गढमुक्तेश्वर	कार्तिक पूर्णिमा से
दशहरा	गढ़मुक्तेश्वर	जेठ/क्वार
भीकौती मेला	गढ़मुक्तेश्वर	बैसाख

सलौनी मेला	हापुड	सावन
बसत पचमी	शिवसारी	माघ
हजरत सबुसुददीन	अजराडा	अषाढ

२.७ जनपद सहारनपुर

२.७.१ सहारनपुर तहसील

गोगापीर	सहारनपुर	भादो वदी दशमी
शाकुम्भरी देवी	मुज्जफराबाद	क्वार सुदी

२.७.२ तहसील नकुड

कुतुब आलम	गगोह	जायद उर्स सैनीटर से
अब्दुल कुदुस	गगोह	२२ से २५ तक

२.८ हरिद्वार जनपद

२.८.१ तहसील रूडकी

सलाहउददीन उर्स	रुडकी	रवी उल अव्वल एकादशा
मकर सक्रांति	ज्वालापुर	माघ बदी चौदस
सोमवती अमावस्या	ज्वालापुर	माघ बदी चौदस
होली	ज्वालापुर	फागुन बदी चौदस
दीखअती	ज्वालापुर	चैत सुदी पडवा
सोमवती अमावस्या	ज्वालापुर	जेठ बदी अमावस्या
दशहरा	ज्वालापुर	जेठ सुदी दशमी
सोमवती अमावस्या	ज्वालापुर	क्वार सुदी अमावस्या
कार्तिक अमावस्या	ज्वालापुर	क्वार सुदी अमावस्या

२.६ जनपद बिजनौर

२.६.१ बिजनौर तहसील

रामलीला	बिजनौर	क्वार सुदी दशमी
बूढ़ा बाबू	बिजनौर	भादो बदी दोज
मीरान मौहम्मद	बिजनौर	माह के हर बृहस्पतिवार

मेजा साहब बेरसलार	बिजनौर	चेत के आखिरी बुद्धवार
छरी जहीर दिवान	बिजनौर	सावन सुदी दशमी
छरी जहीर दिवान	सुहारी बुजुर्ग	भादों बदी दशमी
छरी जहीर दिवान	सुहारी खुर्द	भादों बदी नवमी
छरी जहीर दिवान	गजरोला	भादो बदी दशमी
छरी जहीर दिवान	छलारी	भादो बदी नवमी
गंगास्नान	धारा नगर	कार्तिक सुदी अमावस्या
छरी जहीर दीवान	धारा नगर	सावन सुदी नवमी
छरी जहीर दीवान	पडरा	सावन सुदी नवमी
छरी जहीर दीवान	जहानाबाद	सावन सुदी नवमी
मादुईन	सिकन्दरपुर	सावन सुदी दोज
मैजाविल	भमोली	चैत की तीसरे बुधवार को
गुदरी	हलदौर	सावन सुदी तृतीया
देवी का मेला	सिकन्दरपुर	अषाढ के प्रत्येक सोमवार को
देवी का मेला	मनजवार	चैत सुदी अष्टमी
देवी का मेला	मनजवार	क्वार सुदी अष्टमी
नेजा वेल सालार	मडावर	चैत के दूसरे मगल को
छरी जहीर दीवान	मडावर	भादो सुदी अष्टमी तथा भादो बदी नवमी
छरी जहीर दीवान	शकरपुर	भादो बदी नवमी
छरी जहीर दीवान	इन्दरपुर	भादो बदी नवमी
छरी जहीर दीवान	शेमलापुर	भादो बदी नवमी
छरी जहीर दीवान	बादशाहपुर	भादो बदी नवमी
छरी जहीर दीवान	चन्द्रभानपुर	भादो बदी नवमी
कुलका देवी	चन्द्रभानपुर	अषाढ सुदी नवमी
छिपियों का मेला	मुहम्मदपुर	चेत सुदी सप्तमी एवं अष्टमी
छरी जहीर दीवान	मुहम्मदपुर	चेत सुदी नवमी

गगा स्नान	रानौली	मकर सक्रान्त
गगा स्नान	रानौली	कार्तिक सुदी अमावस्या
दशहरा	रानौली	जेठ सुदी दशमी
बूढा बाबू	शाहबाजपुर	भादो सुदी द्वितीया
शिवरात्री	बासी लुहानसी	फागुन बदी त्रियोदशी
रामलीला	चॉदपुर	क्वार सुदी द्वितीया से दशमी तक
छरी जहीर दीवान	सियाऊ	सावन सुदी अष्टमी
छारी जहीर दीवान	पिलाना	सावन सुदी अष्टमी
नेजा साहब उर्स	कीरतपुर	सावन सुदी अष्टमी

२.६.२ नजीबाबाद तहसील

नेजा सहाब मजार	अलीपुरा	साफर–४
नेजा सहाब मजार	रामपुरवाखारी	साफर–५
सुखवन्ती देवी	रामपुर बाखरी	चैत सुदी पंचमी
अन्नपूर्णा देवी	रामपुर बाखरी	चैत सुदी नवमी
दुर्गा देवी	रामपुर बाखरी	चैत सुदी नवमी
छरी जहीर दीवान	रामपुर बाखरी	सावन सुदी अष्टमी
छरी जहीर दीवान	शाहनपुर	सावन बदी चतुर्थी
छरी जहीर दीवान	दाऊदपुर	भादो बदी सप्तमी
छरी जहीर दीवान	फतेहउल्लापुर	भादों बदी अष्टमी
छरी जहीर दीवान	जलालाबाद	सावन बदी अष्टमी
देवी का मेला	छौददी	वैसाख बदी पंचमी
गगा स्नान	चॉद गोयला	कार्तिक सुदी अमावस्या
शिवरात्रि	हिमपुर पछदपुरा	फागुन बदी चौदश
बूढ़ा बाबू	पुरुषोत्तपुर	चैत बदी पंचमी
बसंती	छापरि	आषाढ़ बदी छटी से त्रयोदशी तक
बसंती	छापरि	आषाढ़ सुदी पंचमी

बसती	छापरि	सावन सुदी पचमी
छरी जहीर दीवान	किर्तरपुर	भादो बदी द्वितीय
छरी जहीर दीवान	बनेरा	भादो बदी नोमी
छरी जहीर दीवान	सीकरी	भादो बदी नोमी
छरी जहीर दीवान	कुनेहरा	भादो बदी नोमी
छरी जहीर दीवान	सिकन्दरपुर बाली	भादो बदी नोमी

२.६.३ तहसील नगीना

छारी जहीर दीवान	नगीना	सावन सुदी नौमी
शिवरात्री	नगीना	फागुन बदी चौदश
नेजा बेल सालार	नगीना	चैत के पहले बुद्धवार मे
रामलीला	नगीना	क्वार बदी पडवा से एकादशी
रामलीला	जाटपुरा	क्वार बदी पडवा से दशमी
रामलीला	अनवारपुर चादी	क्वार बदी पडवा से दशमी
रामलीला	टॉडा बैरागी	क्वार बदी पडवा से दशमी
छरी जहीर दीवान	टॉडा बैरागी	भादो सुदी सप्तमी
छरी जहीर दीवान	शेरगढ	भादो बदी सप्तमी
छरी जहीर दीवान	चॉदपुर	भादो बदी द्वितीया
छरी जहीर दीवान	अफजलगढ	भादो बदी नौमी
बूढा बाबू	अफजलगढ	भादो बदी द्वितीया
नेजा वेल सालार	अफजलगढ	चैत के तीसरे बुधवार के
नेजा वेल सालार	स्वाला	चैत के दूसरे बुधवार को
रामलीला	स्वाला	क्वार सुदी दशमी
छरी जहीर दीवान	स्वाला	भादो बदी नौमी
छरी जहीर दीवान	मकसूदाबाद	भादो बदी नौमी

२.६.४ तहसील धामपुर

रामलीला	धामपुर	क्वार सुदी द्वितीया से दशमी तक

नबी करीम उर्स	मिर्जापुर	रवि उल्ल अव्वल – ११
देवी का मेला	फतेहउल्लापुर	प्रत्येक मास की अष्टमी को
नेजा तक सालार	फतेहउल्लापुर	चैत के दूसरे बुधवार को
छरी जहीर दीवान	खुजिस्ताबाद	सावन सुदी सप्तमी
छरी जहीर दीवान	फतेहउल्लापुर	सावन सुदी सप्तमी
छरी जहीर दीवान	शेरकोट	भादों बदी नौमी
छरी जहीर दीवान	हमखेरा	भादों बदी नौमी
छरी जहीर दीवान	मुहम्मदपुर पारमां	भादों बदी नौमी
छरी जहीर दीवान	ऊमरी	भादों बदी नौमी
छरी जहीर दीवान	रसूलपुर मुहम्मद काली	भादों बदी नौमी
छरी जहीर दीवान	मकरपुरी	भादों बदी नौमी
छरी जहीर दीवान	सुहागपुर जाटीयान	भादों बदी नौमी
छरी जहीर दीवान	नवादकेसो मुहम्मदपुर सादात	भादो बदी नौमी
छरी जहीर दीवान	पादली	भादों बदी नौमी
छरी जहीर दीवान	स्योहारा	भादों बदी नौमी
छरी जहीर दीवान	किवार	भादों बदी नौमी
छरी जहीर दीवान	पालनपुर	भादों बदी नौमी
उर्स आरिफ अली शाह	कोशपुर	रविउल शानी – १७
नेजा सेल मजार	निहातार	चैत के चौथे बुधवार को
नेजा सेल मजार	निहातार	सिम्मद उल आवाज –३
छरी जहीर दीवान	धानुपुरा	भादों बदी त्रयोदशी
छरी जहीर दीवान	गादल	भादों बदी नौमी
बूढ़ा बाबू	पुलशांदा खाखम	भादों बदी द्वितीया
पूजन मेला	पाडिला	चैत सुदी चौदश

मेला नटवर सिह	माजाह पुर	भादो सुदी दूसरे रविवार को
रामलीला	मुराना	क्वार सुदी द्वितीया से एकादशी
छरी जहीर दीवान	मुराना	भादो बदी नवमी
छरी जहीर दीवान	असगरपुरा	भादो सुदी नवमी
छरी जहीर दीवान	पियौना	भादो सुदी नौमी से अमावस्या
छरी जहीर दीवान	पुलशादा गगादास	भादो बदी नवमी
छरी जहीर दीवान	मुजाहिद पुर	भादो सुदी सप्तमी

इन पर्वो, त्यौहारो और मेलो के विवरण विभिन्न स्वॉगो मे स्थान–स्थान पर मिलते है। किसी एक पर्व त्यौहार या मेले का सन्दर्भ देकर अपनी बात की पुष्टि नहीं की जा सकती इसके लिए कुरु जनपदीय स्वॉगों का विस्तृत अध्ययन आवश्यक है। परिशिष्ट मे इन्हे सकलित किया गया है। उनमे अभिव्यक्त आस्थाओ से इन तथ्यो की पुष्टि हो जायेगी।

२.१० कृषि उद्योग

कुरु प्रदेश का प्रमुख उद्योग कृषि है। बहुत पहले यह क्षेत्र तराई का क्षेत्र था। खेती के साथ साथ तराई कुछ कम होती गयी किन्तु अपना उपजाऊपन धरती मे बराबर बना रहा। कुरु प्रदेश की लोक कथाओ मे ऐसे सकेत बराबर मिलते है कि पॉडवो ने कुरु प्रदेश के मुजफ्फर नगर जनपद के तराई क्षेत्र मे अज्ञातवास का एक वर्ष व्यतीत किया।

खेती, इस प्रदेश का मुख्य व्यवसाय है। खेती बिना बैलो तथा उपकरणो के सम्भव नही हो पाती। खेती के साथ–साथ जुडे होते है खेत और जगल, नदी, नाले, तालाब, रहट हल बैल नौकर–चाकर आदि। विभिन्न उपकरणो के सकेत कौरवी लोक स्वॉगो मे बराबर मिलते है। खेती के साथ–साथ कुछ अन्य व्यवसायी भी जुडे रहते है – लुहार, कुम्हार, बढई, तेली, नाई, चमार, सक्के आदि।

आजादी से पहले इन व्यवसायो को मजदूरी के रूप मे खेत मे से निर्धारित उपज दी जाती थी। यह अदायगी दुसेरी (दो सेर) पॅसेरी (पॉच सेर) आदि के रूप मे दी जाती थी। मेहनत के अनुसार किसी को एक पॅसेरी किसी को दो पॅसेरी अनाज दे दिया जाता था। इस परम्परा के सकेत कौरवी स्वॉगो में यत्र–तत्र मिल जाते है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति सर्वत्र मूलत एक है। उसके मूल तत्व एक है किन्तु स्थानीय सस्कारो के

कारण स्थानीय सस्कृति मे सूक्ष्म अन्तर हो जाता है। इसी आधार पर लोक–सस्कारो मे भी सामान्य भिन्नताएँ मिल जाती है।

वैदिक काल से ही कुरु–जनपद का वैदिक सस्कृति से सम्बन्ध रहा है। वैदिक सस्कार इस क्षेत्र की लोक–सस्कृति मे सर्वत्र मिल जाते है। काल की लम्बी अवधि मे इनमे कुछ परिवर्तन अवश्य हुए है किन्तु सूक्ष्म सप्रेषणीयता मे विशेष अन्तर नहीं है। यहॉ की स्थानीय सस्कृति के सस्कारो की जडे बहुत गहरी है। ये जडे इतनी विस्तृत और सूत्रोवाली है कि उनका उद्‌गम–स्थल जानना कभी-कभी असम्भव हो जाता है। कुछ भी हो यह क्षेत्र वैदिक सस्कारो और परवर्ती स्थानीय सस्कारो के सम्मिलन की अभूतपूर्व स्थली है। इस सस्कृति के विशेष तत्वो का अध्ययन इस अध्याय मे किया गया है। किन्तु इस और विस्तृत अध्ययन की अपेक्षा है। विस्तार-भय के कारण इन तत्वो पर यहॉ सक्षेप मे विचार किया गया है। स्वॉगों मे उपलब्ध सस्कृति के कुछ उदाहरण विस्तार से परिशिष्ट मे सगृहीत स्वॉगो मे देखे जा सकते है।

३. कुरु लोक-साहित्य और कुरु जनपदीय स्वाँग परम्परा

३. लोक शब्द की व्युत्पत्ति, व्याख्या, प्रयोग-परम्परा

'लोक' शब्द संस्कृत के 'लोक दर्शने' धातु से 'घञ्' प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न हुआ है।

संस्कृत में सामान्यतः इस धातु का अर्थ 'देखना' होता है। लट् लकार में अन्य पुरुष एक वचन मे इसका रूप 'लोकते' है। इस आधार पर 'लोक' शब्द का अर्थ हुआ देखने वाला। वह समस्त जन–समुदाय जो देखता है 'लोक' कहलाएगा। लोक शब्द अत्यन्त प्राचीन है। साधारण जनता के अर्थ मे इसका प्रयोग ऋग्वेद में कई स्थानों पर मिलता है। ऋग्वेद में 'लोक' शब्द के लिए 'जन' का भी उपयोग किया गया है। ऋग्वेद पुरुष सूक्त में 'लोक' शब्द का प्रयोग जीव तथा स्थान दोनों अर्थो में किया गया है।

नाभ्या अस्तिदंतरिक्षशीर्जषर्णो्द्यौः समवर्त्तत।

पदम्या भूमिर्दिदश श्रोता तथा लोका अकल्ययन्।[१]

'लोक' शब्द का प्रयोग उपनिषदों मे मिलता है। जेमिनीय उपनिषद ब्राह्मण में कहा गया है कि यह लोक अनेक प्रकार से फैला हुआ है। यह सर्वत्र व्याप्त है। क्या कोई प्रयत्न से इसे पूरी तरह जान सकता है।

यथा बहुव्याहितो का अम बहुतो लोकः।

क एतद अस्य पुनरीहृतो अयात।।[२]

पाणिनि अष्टाध्यायी में लोक तथा 'सर्वलोक' शब्दों का उल्लेख है। प्रत्यय के योग करने से 'लौकिक' तथा 'सार्वलौकिक' शब्दो की निष्पत्ति होती है।[३]

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि पाणिणि ने वेद से पृथक् लोक की सत्ता स्वीकार की है। इन्होंने अनेक शब्दों की निष्पत्ति बतलाते हुए लिखा है कि वेद में इसका रूप यह है परन्तु लोक में भिन्न प्रकार समझना चाहिए।[४]

वररुचि के वार्तिकों में भी लोक शब्द का प्रयोग है।[५] इन्होंने भी स्पष्ट किया है कि अमुक शब्द का लोक में इस रूप में व्यवहार होता है।

महाभाष्य का पतंजलि ने लोक में प्रचलित गौः शब्द के अनेक रूपों का उल्लेख किया है।

भरतमुनिकृत नाटयशास्त्र, चतुर्थ अध्याय में अनेक नाट्यधर्मी तथा लोकधर्मी प्रवृत्तियों का उल्लेख

---

१. ऋग्वेद–१०–६०–१४
२. जैमि, उप, ब्रा–३/२८
३. पाणिणि अष्टा ५–१–४४
४. वही, १–१२२
५. बहुल छदंति, २६७६ तथा ३४७३

किया गया है।

महर्षि व्यासकृत महाभारत आदि पर्व मे 'अज्ञानतिमिराधस्य लोकस्य' का प्रयोग इस प्रकार मिलता है।

अज्ञानतिमिराधस्य लोकस्य तु विवेष्टत ।

ज्ञानाजन शलाकार्भिउन्मीलन कारकम।।[1]

अज्ञानरूपी अधेलोक व्याधित लोक की ऑखो को ज्ञान रूपी अजन की शलाका से खोलने का कारण है।

महाभारत मे वर्णित विषयो मे लोक यात्रा का स्पष्ट उल्लेख है।[2] आदि पर्व मे अन्य स्थान पर पुण्य करनेवाले लोक का वर्णन किया गया है।

महर्षि व्यास ने एक स्थान पर लिखा है प्रत्यक्षदर्शी लोकाना सर्वदर्शी भवेन्नर[3]

जो लोक का प्रत्यक्षदर्शी है वही व्यक्ति सर्वदर्शी होता है। 'भागवतदगीता मे लोक तथा लोक सग्रह आदि शब्दो का प्रयोग मिलता है।

गीता मे श्रीकृष्ण जी ने लोक सग्रह पर बडा बल दिया है। वे अर्जुन से कहते है

कर्मणवेहि ससिद्धिमास्थित जनकादय

लोक सग्रहे वाणि मेपृश्यकर्तुमर्हसि।।[4]

यहॉ लोक–सग्रह से तात्पर्य साधारण जनता के आचरण व्यवहार तथा आदर्श से है

३.२ लोक-साहित्य

यूरोप मे साहित्य की विधा के रूप मे लोक–साहित्य को आरम्भ से ही नृविज्ञान तथा पुरातत्व विज्ञान मे सम्मिलित किया जाता रहा है। इस सम्बन्ध मे जौन आब्रे का नाम सबसे पहले आता है। जौन आब्रे ने १७वीं शताब्दी मे 'रिमेन्स ऑफ जेटिलिज्म एण्ड जुडाइज्म' नामक पुस्तक मे इस ओर सकेत किया था।' एक शताब्दी बाद जौन ब्रेड ने 'एण्टीक्विटीज' नामक पुस्तक के माध्यम से इस अध्ययन को आगे बढाया। इसके पश्चात् धर्म–ग्रन्थ तथा भाषा–विज्ञान के लिए भी लोक–साहित्य का अध्ययन किया गया। जर्मन भाषावैज्ञानिक ग्रिम बन्धुओ ने इस क्षेत्र मे महत्वपूर्ण कार्य किया। अठारहवीं शताब्दी मे बहुत से विदेशी बुद्धिजीवियो ने इसे नया नाम फोक्लोर दिया। बाद मे विभिन्न देशो के अन्य विद्वानो ने इस क्षेत्र मे व्यापक कार्य किया।

भारत मे लोक–साहित्य का अध्ययन १९वीं शताब्दी से आरम्भ हुआ। १९वीं शताब्दी मे सर विलियम

---

१ सिद्धान्त कौमदि २६७६

२ महा आप १८४

३ वही, १६६

५ गीता – ३ ३६–३ २२–३ ४४

जोन्स ने कलकत्ते में ऐशियाटिक सोसायटी ऑफ बँगाल नाम शोध–संस्थान की स्थापना की १९वीं शताब्दी में कुछ विद्वान अंग्रेज शासकों ने भारतीय संस्कृति को जानने और समझने की दिशा में प्रत्यन्त किया। इन्हीं दिनों भारतीय लोक–साहित्य की नींव पडी। भारतीय लोक–साहित्य के अध्ययन करनेवालों में एक अग्रेज सिविलियन तथा नृतत्ववेत्ता थे तो दूसरे ईसाई मिशनरी। अंग्रेज मिशिनरियों का सम्बन्ध शासक–वर्ग से था जबकि दूसरे धर्म–प्रचारक थे। इन्होंने भारतीय भाषा एवं साहित्य का गहन अध्ययन किया तथा जनता से भी सम्पर्क स्थापित किया।

भारत में लोक–साहित्य के अध्ययन का आरम्भ अंग्रेज़ों ने किया। कर्नल टाड ने सर्वप्रथम राजस्थान की सामाजिक अवस्था, रहन्–सहन, आचार–विचार, वेश–भूषा आदि का अध्ययन करके 'एनल्स एण्ड एण्टीक्विटीज ऑव राजस्थान' नामक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक एक प्रकार से लोक–साहित्य की शुरुआत थी। अन्य पाश्चात्य विद्वानों ने तमिल, तेलगु, कन्नड, मलयालम तथा केरल के लोक–गीतों का अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया। डाल्टन ने डेस्क्रिप्टिव एंथनोलोजी ऑव बँगाल की रचना की। उन्होंने बगाल की विभिन्न जातियों के विषय में भी जानकारी दी। काल्डवेल ने तमिल लोक–गीतों पर तथा एफ०टी० कोल ने पर्वतीय जातियों के सम्बन्ध में पुस्तकें लिखीं।

पाश्चात्य विद्वानों ने बंगाली लोक–कथाओं एवं लोक–साहित्य का संकलन किया। कुछ विदेशी विद्वानों ने पंजाब के वीरों की गाथाओं, दक्षिणी भारत के लोकगीत, लोककथाओं, बिहारी लोकगाथाओं, उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में ख्यात गोपीचन्द का भोजपुरी नामक 'बनइजरवा' गीत आदि लोक–साहित्य सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे।

भारतीय विद्वानों ने भी इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया। इस दिशा में योगदान करनेवालों के नाम हैं : बँगाल में डॉ० आशुतोष मुखर्जी, डॉ० दिनेश चन्द सेन, अवनींद्र नाथ ठाकुर, मुहम्मद नसुरुद्दीन, जासीमुद्दीन, गुजरात में झबरेचन्द्र मेघाणी का नाम उल्लेखनीय है। बिहार में शरदचन्द्र राय तथा मराठी में कमलाबाई देशपांडे एवं पं० रामशरण द्वारा किये गए कार्य उल्लेखनीय हैं।

३.२ लोक-साहित्य सम्बन्धी विद्वानों के कार्यो का मूल्यांकन

इस क्षेत्र में इन भारतीय विद्वानों की भूमिकाएँ विलक्षण हैं : देवेन्द्र सत्यार्थी एवं राम नरेश त्रिपाठी। इन्होंने ग्राम–गीतों का प्रकाशन किया। इन्होंने उत्तर प्रदेश तथा पश्चिमी बिहार के लोक–गीतों, मुहावरों, कहावतों आदि का संग्रह किया। प्रोफेसर शिवकुमार शाण्डिल्य ने कौरवी लोकोक्तियों, लोककथाओं एवं लोकगाथाओं का संकलन सम्पादन किया। अन्य भारतीय विद्वानों ने ब्रज, राजस्थानी, अवधी, बुन्देलखण्डी,

मालवी, निमाड़ी, छत्तीसगढी, कौरवी, भोजपुरी आदि के लोक–साहित्य का विस्तृत अध्ययन किया।

महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन ने कौरवी के लोकगीत, लोककथाएँ एवं लोकसाहित्य एवं हिन्दी के गीत तथा कहानियॉ नामक ग्रन्थ लिखे। कौरवी लोक–साहित्य की दिशा में राहुल जी का यह प्रथम प्रयास था। राहुल जी ने कौरवी बुढिया से सुनकर गीतों का संकलन किया था। डॉ० सत्या गुप्ता ने खडी बोली का लोक–साहित्य नामक अपने शोध प्रबन्ध में गम्भीरतापूर्वक खड़ी बोली के लोकसाहित्य पर विचार किया। सुश्री गुप्ता ने घूम–घूम कर लोकगीतों का संकलन भी किया तथा श्रीमती सीता देवी दमयन्ती देवी ने **'धूल-धूसरित'** के नाम से प्रामाणिक संकलन प्रस्तुत किया। इन्होंने गॉव की स्त्रियो के मुख से सुनकर इन्हें लिपिबद्ध किया। यों तो लोक–वाणी को लिपिबद्ध करना नितान्त असम्भव है लोकवाणी का यह प्रयास काफी हद तक प्रामाणिक है।

३.३ लोक-साहित्य : स्वरूप एवं रचना-प्रक्रिया

यह कहना समीचीन है कि विकसित साहित्य की धारा की परम्परा भारतीय साहित्य में है। इस मौखिक साहित्य में अनेक सस्कृतियॉ सूत्र में मणियों के समान अनुस्युत हैं। इनमें परम्परागत विश्वास, आचार–विचार, प्रथाएँ, हर्ष–विषाद, अतीत–वर्तमान सभी कुछ सुरक्षित है। कौरवी लोकसाहित्य मे कथा एव स्वॉग का स्थान तो महत्वपूर्ण है ही यह व्यापक एवं प्रचुर अथाह निधि है। लोककथा के क्षेत्र में सबसे पहले भारत–भूमि को ही श्रेय जाता है।

भारतीय लोकसाहित्य अत्यन्त प्राचीन है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका प्रभाव ससार के प्रायः सभी सभ्य देशों के लोकसाहित्य पर प्रचुर रुपेण पड़ा है। यूरोपीय देशों में इनके प्रचार–प्रसार का कहानी लम्बी है। सर्वप्रथम भारतीय लोक–कथाओं कहानियों का अनुवाद अरबी और पहलवी भाषाओं में हुआ। इसके पश्चात् यूरोप की विभिन्न भाषाओं में इनके अनुवाद प्रस्तुत किये गये। यूरोप में प्रचलित 'इसाप्स' की कहानियों में भारतीय प्रभाव, स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

समस्त मानव समूह में दो प्रंकार की लोककथाएँ मिलती हैं। एक में तत्कालीन घटनाओं तथा अनुभवों का सलाप शैली में वर्णन किया जाता है। विज्ञान की दृष्टि से इनका अध्ययन जरूरी है क्योंकि ये गतिशील होती है और साहित्यिक सौन्दर्यरहित भी होती हैं। इनका क्षेत्र अत्यन्त सीमित है। लोक साहित्य की कथाएँ आगे चलकर 'मिथ' या पौराणिक कथाओं का रूप धारण कर लेती हैं। लोकसाहित्य अपने तत्वों के कारण साहित्यिक परम्परा की अँग बन जाता है। इसकी विषयवस्तु कलात्मक शैली के कारण साहित्यिक सौन्दर्य प्राप्त कर लेती है। इनका रूप गद्यात्मक तथा पद्यात्मक दोनों प्रकार का

होता है।

३.४ स्वॉग-स्वरूप एवं परिभाषा

साहित्य की प्रत्येक विधा की रचना के निम्नलिखित सोपान होते है

१ प्रत्यक्षीकरण

२ साहचर्य

३ सास्कृतिक–सामाजिक–परिवेशगत मान्यताएँ

पृथ्वी पर मनुष्य के सामाजिक–जीवन के साथ ही लोक–साहित्य का भी जन्म सम्भव हुआ होगा। मानवीय कलाओ मे कहानी कहने की कला तथा मानव द्वारा विचित्र अनुभूतियो को कथा का रूप प्रदान करना ही उसके जीवन की अपरिपक्व और अस्पष्ट जीवनदर्शन की अभिव्यक्ति दो रूपो मे हुयी

१ पौराणिक कथाओ के रूप मे

२ लोक कथाओ के रूप मे

लोक–कथाएँ विश्व भर मे व्याप्त मिलती है। इसमे लोक जीवन नाना रूपो मे प्रकट होता चला आ रहा है। मानव के दुख–सुख, रीति–रिवाज, आस्था एव विश्वास इन कथाओ मे अभिव्यक्ति होते रहते है। लोककथा का सगीतबद्ध रूप लोक–गाथा है। कुरु जनपद मे लोक–गाथा का सामान्य स्वरूप स्वॉग है।

डॉ सत्येन्द्र ने लोक–कथा के विषय मे लिखा है "लोक मे प्रचलित और परम्परा से चली आने वाली मूलत मौखिक रुप मे प्रचलित कहानियॉ लोक कहानिया कहलाती है।"[१]

लोककथा की अपनी परम्परा है। जिसमे लोक मानस के तत्व विशेष विद्यमान रहते है। जिसका उद्देश्य जनमनोरजन के अतिरिक्त प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से ज्ञानवर्धन भी हो वह 'लोक कथा कहलायेगी।

लोक–गाथा के सामान्य स्वरूप–स्वॉग–विषय पर विद्वानो मे पर्याप्त भेद रहा है। लोक–साहित्य के आरभ के विषय मे विद्वानों ने निम्नलिखित सिद्धात सामने रखे हैं ·

१. प्रसारवाद का सिद्धान्त

जिस प्रकार भाषा की उत्पत्ति के विषय मे निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता उसी प्रकार लोकसाहित्य की उत्पत्ति के विषय में भी कुछ नहीं कहा जा सकता। जिस प्रकार भाषा एक स्थान से दूसरे स्थान तक फैलती है और मनुष्य तथा उसके सारे समाजो में पहुँचती जाती है। कुछ विद्वान

---

१. हिन्दी साहित्य कोश, भाग १, पृ० ७४८

लोक गाथाओ का उदगम स्थान भारत या मेसोपोटामिया को मानते है। यहीं से लोक गाथाऐ विश्व मे चारो ओर फैली। ससार की लोकगाथाओ मे काफी तात्विक समानताएँ मिलती है। प्रत्येक देश तथा जाति मे कथातत्व की भिन्नताएँ अवश्य है।

२. प्रकृतिरूपकवाद

इस मत के विचारको का कहना है कि प्रकृति के जितने रूप एव घटनाएँ है कल्पना के माध्यम से उनका रूप पहले लोककथाओ मे और फिर लोकगाथाओ मे साकेतिक वर्णन मिलता है। चॉद का घटना बढना समुद्र का शान्त रहना और पूर्ण पूर्णिमा का मर्यादाहीन होना बिजली का गिर पडना आदि घटनाएँ देखकर मानव इनको अपनी कल्पना का आधार बनाता है। वह इन्हे भी मानव के रूप मे चित्रित करता है एव उनका मानवीकरण करता है। एक कम्बलधारी व्यक्ति के शरीर से कम्बल उतरवाने के लिए सूर्य और वायु की शर्त सूर्य का वायु को इस शर्त मे परास्त करना आदि प्राकृतिक घटनाओ को कथारुप प्रदान करना यह सब कल्पना से ही सम्भव हो सका।

३ मनोविश्लेषणवाद

फ्राइड ने लोक कथाओ का स्रोत मानवीय प्रवृत्तियो को माना है फ्राइड अचेतन मन को हमारी मूल आदिम वासनाओ का केन्द्र मानते है क्योकि काम शक्ति का कोश इस अचेतन मन मे ही है। वास्तव मे अचेतन मन का निर्माण प्रवृत्तिजन्य वासनाओ के दमन से होता है। ये दमित वासनाएँ प्रकाशन के लिए प्रयत्नशील रहती है। अचेतन की काम–प्रवृत्ति, वयस्क दृष्टि से विकृत काम–प्रवृत्ति है जिसकी दृष्टि सामाजिक जीवन मे असम्भव ओर अनैतिक है। वे दमित वासनाएँ स्वप्नो मे दैनिक जीवन की भूलो मे और अधिक प्रबल होने पर मानसिक रोगो मे व्यक्त होती हैं, इसके कारण व्यक्ति विचित्र, असाध ारण व्यवहार करता है पर कारण वह समझ नहीं पाता। विश्लेषण द्वारा दमित वासना–चेतन मानव मे आ जाये तो व्यवहार की विचित्रताएँ दूर हो जाती है। इस प्रकार ये यौन वासनाएँ बाहर निकलने का मार्ग ढूँढती है। इनका रूप बदलने से ही 'लोक' कथाएँ जन्म लेती है। एक राजा के सोलह रानियॉ थी। सोलह ही क्यो ? एक क्यो नहीं ? क्योकि मनुष्य की काम–वासना एक नारी से पूरी नहीं होती। वह अनेक से अपने सम्बन्ध रखना चाहता है। उसकी यही वासना अपना चौखटा बदलकर आती है। मेरी अनेक रानिया न रहकर अपने चेतन मन को छलता है। जब इस प्रकार लोककथा मे सोलह रानियो की चर्चा करता है तो वह राजा की जगह पर अपने को कल्पित करता है। इन मनोविश्लेषणवादियो का यही कहना है कि लोक कथाओ की उत्पत्ति इसी अचेतन मन मे दबी काम वासना से ही है जो

अपने चौखटे को छिपाकर **मुखौटा पहनकर** बाहर आना चाहती है।

ये ही लोक कथाएँ **बाद में** लोक–गाथाओ का रूप ले लेती है।

४. इच्छापूर्तिवाद

फ्राइड मानता है कि अचेतन मन की दमित इच्छाएँ चाहे वे यौनसम्बन्धी हो या अन्य, पूर्ति चाहती है। अपनी इन अपूर्ण इच्छाओं के लिए मनुष्य साहित्य या कला–सर्जन भी करता है। इसी पूर्ति के लिए मानव ने लोककथाओ का सर्जन किया होगा जिनमे राक्षस भूत, पिशाच, परियो आदि की कथाओ का जन्म होता है।

५. व्याख्यावाद

पौराणिक कथाओ की भॉति लोककथाओ एव लोकगाथाओ का कार्य अपने समय की रीतियो व्यवहारो, प्रथाओं तथा सामाजिक रूढियों की मनोरजक व्याख्या करना होता है। चिकित्सा–सम्बन्धी सिद्धान्तो की व्याख्या इन के माध्यम से होती है उदाहरणार्थ चिकित्सा शास्त्र में लहसुन को अमृत माना गया है। इसमे अम्ल को छोडकर सभी रस है। अत सस्कृत मे भी इसे 'रसोन' कहा गया है अर्थात् जिसमे एक रस 'ऊन' (काम) हो। इस सम्बन्ध मे कथा इस प्रकार है। सागर मथन के अवसर पर अमृत निकला तो उसकी प्राप्ति के लिए देवता तथा असुरो मे युद्ध होने लगा तभी गरुड अमृत कलश को उडाकर ले गये। ले जाते समय अमृत छलक कर नीचे गिरता गया। वह जहॉ–जहॉ गिरा वही लहसुन उत्पन्न हुआ। इस प्रकार लहसुन की उपयोगिता के लिए इस लोककथा का जन्म हुआ। इस प्रकार अन्य विषयों की व्याख्या के लिए भी लोककथाओ एव लोकगाथाओ का जन्म होता है।

६. विकासवाद

टायलर के अनुसार संसार मे मानव समाज की आधारभूत मानसिक समानता के कारण सभी मानवो का चिन्तन समान होता है। अत· सभी स्थानों पर एक–सी कथाएँ मिलती हैं। सिंड्रेला की कथा का उदाहरण दिया जा सकता है। सिड्रेला की सौतेली मॉ तथा सौतेली बहनो ने मिलकर उसे बन्द कर दिया और उसके साथ बुरा व्यवहार किया परन्तु उसकी असली मॉ की आत्मा की प्रेरणा से चूहों ने उसके बधन काट दिए। वह वहॉ से निकल भागी और अपने प्रिय राजकुमार से मिली। शादी करके आनन्द से रहने लगी। यह कहानी ससार में अलग–अलग रूपों में मिलती है। बहुत से रूपों में इस कहानी को सर्वत्र देखा जा सकता है।

७. यथार्थवाद

आदिवासियो मे यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है कि वे यथार्थ घटनाओ का वर्णन बार–बार करते है। ये घटनाएँ या कथाए एक से दूसरे, दूसरे से तीसरे के कानो तक पहुँच, अपना रँग रूप बदलकर एक नये ढँग से परिवर्तित हो जाती है। इसमे प्राय अपने देश तथा जाति की बाते जुड जाती है। इसका स्वरुप इतना बदल जाता है कि परिवर्तित घटना का पता लगाना कठिन हो जाता है। कथानक तो बदल ही जाते है साथ ही पात्र तथा शैली तक बदल जाती है। एक नयी कथा ही जन्म ले लेती है जिसका आदि रुप यथार्थ होता है।

८. समन्वयवाद

उपर्युक्त सिद्धान्तो मे से कोई भी सिद्धान्त लोक कथाओ की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे पूर्ण नही माना जा सकता। कुछ गुण–दोषो के होते हुए भी इन चार सिद्धान्तो को प्रमुखता दी जाती हे – १ प्रसारवाद, २ प्रकृतिवाद ३ मनोविश्लेषणवाद, ४ विकासवाद।

३.५ भारत में लोक-कथा की परम्परा

३.५.१ संस्कृत

वेद विश्वसाहित्य के प्राचीनतम ग्रथ है। ऋग्वेद के कई सूक्तो मे (जिन्हे सवाद सुक्तक कहते है) ऋषि शुन शेष तथा अन्य कथाएँ मिलती है। अपाला और आत्रेयी आदि की कथाएँ भी वेद मे सर्वप्रथम मिलती है। इसके अतिरिक्त भार्गव–शुकन्या, च्यवन, यम–यमी आदि की कथाओ का जन्म भी ऋग्वेद से होता है।

पुराण को वेदो की व्याख्या माना गया है। बिना पुराणो के अध्ययन के वेद को समझना असम्भव है। वैदिक देवो की व्याख्या पुराणो मे मिलती है। वेदो की कहानियॉ पुराणो की कथाओ मे आकर विकसित हुयी। 'शतपथब्राह्मण मे उर्वशी और पुरुरवा की प्रसिद्ध कथा है। शुन शेष की कथा ऐतरेय ब्राह्मण मे वर्णित है। 'शतपथब्राह्मण् मे दधिचि की अत्यन्त लोक–प्रिय कथा है। इन कथाओ का उत्स ऋग्वेद है।

संस्कृति मे लोक–कथाओ का अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थ गुणाढ्य द्वारा रचित पेखाची भाषा मे ब्रहत्कथा है। सस्कृत के नाट्यकारो का यह प्रेरणा ग्रथ है। शुद्रक, भाण, हर्ष आदि अनेक साहित्यकारो को इसी ग्रन्थ से कथानक मिले है सस्कृत मे इसके तीन अनुवाद है।

३.५.२ बृहत्कथा श्लोक संग्रह

बुध स्वामी रचित। इसमे २८ सर्ग ४५३६ श्लोक है।

३.५.२.१ वृहत्कथा मंजरी

आचार्य क्षेमेचन्द्ररचित। वृहत्कथा श्लोकसग्रह ६वीं शताब्दी तथा वृहत्कथा मजरी ग्यारहवीं शताब्दी की रचना मानी जाती है। इसमे ७५०० श्लोक है।

३. कथा सरित्सागर

सोमदेव रचित। इसमे कुल मिलाकर २४,००० श्लोक है। इसका अग्रेजी अनुवाद पजर द्वारा 'ओशन ऑव स्टोरी' के नाम से किया गया है। इस 'वृहत्कथा' को पैशाची मे 'बडड कहा' नाम दिया गया है। वास्तव में 'कथासरितसागर' इसका सस्कृति–अनुवाद है। इसमे वासवदत्ता–सुमनोत्तरा ओर चेत्ररथी की कथाएँ है। देवस्मित और गुहसेन की कथा भी अत्यन्त प्रसिद्ध है। वास्तव मे यह लोक–कथाओ का सग्रह है।

४. पंचतंत्र

विष्णु शर्मारचित। पचतत्र भी सस्कृत का एक महत्वपूर्ण ग्रथ है। इसका पश्चिमी भाषाओं मे अनुवाद हो चुका है। इसे भारतीय कहानियो का विशेष ग्रन्थ माना जाता है। कहानियो के माध्यम से इस ग्रथ मे राजकुमारो को नीति की शिक्षा दी जाती है। यह ग्रन्थ पॉच खडो मे विभाजित है। इससे इसका नाम पचतत्र है। लोक–कथा की दृष्टि से यह अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

५. पंचविंशतिका

राजा विक्रम से सम्बन्धित ग्रन्थ है। इसमे २५ कथाएँ है।

६. शुक-सप्तशति

सत्तर कहानियो का सग्रह अत्यन्त लोक प्रसिद्ध है। इसी की चौदहवी शताब्दी मे इसका अनुवाद 'तूतीनाम' के नाम से हो चुका है।

७. माधवानल-काम कंदला

भटट विद्याधर द्वारारचित है।

८. पुरुष-परीक्षा

विद्यापति द्वारारचित। लोक–कथा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

६. कथा-राशि

शिवादासरचित। मूर्ख और चोरों की पैंतीस रोचक कथाएँ हैं

इस प्रकार सस्कृत में लोक–साहित्य की समृद्ध विधा, लोक कथाओं का अक्षय भंडार है।

३.५.२ पालि

कथा की दृष्टि से पालि में जातकों का स्थान महत्वपूर्ण है। जातकों में भगवान बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ हैं। इन कथाओं मे राजा महाराज, सेठ साहूकार, पशु–पक्षी सभी आ जाते हैं। इसके कहने वाले स्वयं बुद्ध हैं। ये कहानियॉ नीति–प्रधान हैं। इनकी शैली पचतंत्राख्यान जैसी हैं। सूत्र पिटक के दोधनिकाय और *'माज्झि धम्म निकाय'* मे कई कथाएँ है। *'थेरगाथा'* तथा *'थेरीगाथा'* में भी कई सुन्दर कथाएँ हैं।

३.५.३ जैन साहित्य : (अपभ्रंश)

इसमें बहुत सी गाथाएँ हैं। 'नायाधम्म' कथाओं में अनेकरुपी कहानियां हैं। पडम चरिय (पदम चरित्र) और **'वसुवहिंडिका'** मे राम और कृष्ण की चरित्र कथाएँ हैं। इसमें प्रमुख कथाएँ जैसे – समशइच्च कहा, उपमितिभव प्रपंच कहा, तरंगवती आदि। फूतोख्यान तथा धर्म परीक्षा भी इसी प्रकार के प्रमुख ग्रन्थ है।

३.५.४ हिन्दी

हिन्दी में लोक का साहित्य अत्यन्त उच्च कोटि का है। डॉ० सत्येन्द्र ने हस्तलिखित ग्रन्थों का उल्लेख किया है जिसमे लोक वार्ता की परम्परा मिलती है। उन्होंने लिखा है – "और जब हम हस्तलिखित ग्रन्थों के शोध के पन्ने पलटते हैं तो हमें आश्चर्य में पड जाना पडता है। अनेक पुस्तकें हैं जो लोक वार्ताओ को स्पष्ट करती हैं"।[1]

डॉ० सत्येन्द्र ने प्रतिपादन की दृष्टि से उन पुस्तकों को साधारणतः सात भागों में बॉटा है।

१. लोक कहानी – इसमें वह पुस्तकें आती हैं जो लोक प्रचलित कहानियों के लिए हैं।

२. धर्म महात्म्य कथा – व्रत आदि से सम्बन्धित कथाएँ।

३. अवदान कथाएँ ।

४. वीर गाथाएँ।

५. साधु कथाएँ।

६. पौराणिक कथाएँ।

---

१. ब्रज लोक साहित्य का अध्याय, पृ० ४२५.

७ जन–कथाओ का वर्ग। इसमें विभिन्न लौलिक संस्कारों का उल्लेख है।

८ विविध

विभिन्न कथा–सग्रह। जैसे – सिहासन बत्तीसी, बैताल पच्चीसी, माधवानल–कामकदला, कथा चार दरवेश, हितोपदेश, माधवविनोद, शुक्र बहत्तरी। इनमें प्रसिद्ध कहानियों के सग्रह है। 'माधव विनोद' मे मालती माधव की कहानी ढोला तथा सेता का ढोला, ढोला मास की कहानी' से सम्बन्धित है। विक्रम–विलास, किस्सा कथा सग्रह मनोहर कहानियॉ, विविध कहानियों के सग्रह है। किसी–किसी सग्रह में सौ तक कहानियॉ है।[1]

इसी तरह कनक मजरी राजा चित्रमुकुट, चित्रावली, प्रेमपयोनिध, चंदन और मलयगिरि, रानी अम्बा, आमिली, सरवर और नीर कथा, मृगावती आदि की कहानियॉ विभिन्न रुपों में प्रसिद्ध हैं। सतकथा सम्बन्धी की कुछ कथाऍ है जिसमे महात्मा के चरित्र सम्बन्धी वर्णन मिलता है। कबीर, नामदेव, पीपा यशोधरा आदि की कथाऍ इसी प्रकार की हैं जिनमें चमत्कार का अधिक वर्णन है। ये लोक–वार्ता के अध है। इसी प्रकार किसी वीर पुरुष के वीर चरित्र का भी वर्णन है। चरित्र जब लोकवार्ता पद्धति मे लिखे जाते हैं। उन्हे अवदान कहते है। हरदौल, पन्नावीर मदे की बात, इसी प्रकार की कथाऍ हैं। लेकिन अधिकाशतः कहानियाँ जैनियो की है जो धर्मोपदेश का भाग मानी जाती हैं।

३.६ लोक-संस्कृति-मान्यताएं –

लोक–संस्कृति की निम्नलिखित मान्यताऍ है .

१ लोक–संस्कृति जीवन का सास्कृतिक रूप है।

२. लोक–सस्कृति की परम्परा मे सस्कृति का सौन्दर्य उस अभिजात सस्कृति से भिन्न है। जिसे पश्चिमी धारणा के अनुसार सस्कृति का एकमात्र रूप समझा जाता है।

३. लोक–संस्कृति ग्रामीण, वन्य तथाकथित पिछड़े समाज में शेष है।

४. लोक–संस्कृति एव धर्म का अद्भुत समन्वय है।

५. लोक–संस्कृति आकाश गगा की भॉति दयूलोक के से गुण प्रदान करती है।

६. लोक–संस्कृति सास्कृतिक रचना का संगम होता है।

७. लोक–संस्कृति में नवीन रूपों की बार–बार वाक्–रचना होती है। इसका साहित्य लिपिबद्ध नहीं होता।

८. लोक–संस्कृति समाज की सम्पत्ति और विभूति है।

---

१. ब्रज लोक साहित्य का अध्याय, पृ० ४२३.

९. लोक–संस्कृति अर्जित होती है।

१०. लोक–संस्कृति मनुष्य तथा समाज के बीच स्थायी रूप से विद्यमान रहती है।

इस आधार पर लोक संस्कृति के निम्नलिखित रूप माने जा सकते हैं ·

१. भिन्नता में एकता

२. आंतरिक स्थिरता।

३. मानवता और सहिष्णुता की भावना।

४. प्रकृति की उपासना।

५. सरल अमर सत्य।

६. सद्विद्या की प्रेरक।

७. आध्यात्मिक विकास में सहायक।

८. महापुरुषों के कथनों में अटूट विश्वास।

९. ज्ञान–पिपासा और ज्ञान का अर्जन।

३.७ लोक-वार्ता

लोक वार्ता में आदिम प्रवृत्तियों का उद्घाटन सहज भाषा में होता है। इस भाषा की विशेषताएँ हैं .

१. लोक–भाषा।

२. लोक–प्रचलित मुहावरों एव लोकोक्तियोंवाली भाषा।

३. ठेठ ग्राम्य एव जनपदीय शब्दावली।

४. परम्परागत पुराण कथाओं एवं मिथकों का प्रयोग।

५. लोक–प्रचलित प्रतीकों का प्रयोग।

लोक–शब्दावली बहुत सीमित होती है। लोक मानव अपनी सीमित शब्दावली में असीमित अर्थों को समाहित किए रहता है। लोक–भाषा में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग व्यापक एवं प्रभावकारी रूप में होता है। लोकवार्ता की विशेषताओं को संक्षेप में इस प्रकार कहा जा सकता है[१] –

१. लोक प्रचलित रीति–रिवाज, देवी–देवता पूजा, अनुष्ठान एवं धर्मगाथा विषयक प्रसंग।

२. क्षेत्रीय अपमान।

३. लोक–नायकों की कथाएँ।

---

१. *प्रो० शिव कुमार शाण्डिल्य, कौरवी लोकोक्तियाँ, पृ० ६–७.*

४ पौराणिक आख्यानो के लोकव्यापी रूपो की अभिव्यक्ति।

५ वैदिक आख्याना के लोक–प्रचलित रूप।

६ लोक–प्रतिपादित दार्शनिक एव सैद्धान्तिक प्रणालियॉ।

व्रत त्यौहार जागरणपूजा अनुष्ठान एव संस्कार आदि से सम्बद्ध गीत, लोककथाओ के प्रमुख विभेद है। इनसे सम्बद्ध कथाएँ अनेक आयामी होती है।

३.६ लोकमानस

डॉ० शिवकुमार शाडिल्य के अनुसार – लोक मानस का स्वरूप इस प्रकार है[1] लोकमानस, लोक प्रचलित आस्थाओ, विश्वासो, मांन्यताओ, समय के चिरन्तन प्रवाह मे अर्जित सवेदनाओ, कल्पनाओ एव अनुभूतियों का आगार होता है या यो कहिये कि लोक मानसलोक की सतत् प्रवाहमान सास्कृतिक मान्यताओ एव भौतिक परिवेशगत विशेषताओ का समग्र चेता होता है। लोककथाएँ तथा लोकगाथाएँ किसी एक कथाकार की रचनाएँ न होकर सतत गतिशील एवं प्रवाहमान लोकमानस की रचनाधर्मी प्रकृति का प्रतिफल होती है। ये कथाएँ श्रुति–परम्परा से एक पीढी से दूसरी पीढी को प्राप्त होती है। इस दृष्टि से इन्हे लोक वेद की सज्ञा दी जा सकती है। इस रचनाओ मे सामूहिक अचेतन मन की रचनाकार को मानसी शाब्दी अभिव्यक्ति होती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से

लोकमानस

क लोक सास्कृतिक परिवेशगत मान्यताएँ।

ख लोक भौतिक परिवेशगत सवेदनाएँ।

लोक-सांस्कृतिक परिवेश

धार्मिक आस्थाएँ – नियतिवाद – उदार मनोवृत्ति – तर्कहीन आस्थाएँ – अधविश्वास आदि।

लोक-भौतिक परिवेश

भोज्य पदार्थ, वस्त्रघर नदी पर्वत मैदान, पशु पक्षी, नौकर–चाकर, पारिवारिक जन, बर्जुआ एवं सर्वहारा वर्ग।

लोक–मानस को प्रभावित करनेवाले उपर्युक्त कारकों के प्रभाव की अभिव्यक्ति निम्नलिखित उपादानों से होती है।

१. लोक-ज्ञान

लौकिक संवेदनाएँ, प्रत्यक्षीकरण, ज्ञान, अन्त स्फूर्ति, स्मृति, कल्पना, सक्रिय, निष्क्रिय ग्रहणात्मक बौद्विक, व्यवहारिक, सौन्दर्यात्मक ज्ञान।

२. लोक-इच्छाएं

परस्पर स्नेह, सौहार्द, आदि मानवीय भावनाओं से प्रेरित क्रियाएँ।

३.८ लोक-साहित्य

लोक–साहित्य लोक–सांस्कृतिक प्रतिबिम्ब है। मनुष्य लोक का ऐसा प्राणी है जो सामूहिक अवचेतना का प्रतिफल अधिक है। लोक–साहित्य धरोहर के रूप में पीढ़ी–दर–पीढी चलता है। इसकी कोई भाषा, रचना–पद्धति और व्याकरणिक नियम नहीं होते। जो चीजें लोकचित्त से सीधे उत्पन्न होती है और जनसाधारण को आन्दोलित एवं प्रमाणित करती है वही लोकसाहित्य, लोकशिल्प, लोकनाट्य लोक कथानक आदि नामो से पुकारी जाती है। लोकसाहित्य शिक्षित समाज से अलग लोकमानस की अभिव्यक्ति का साहित्य है।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने हिन्दी साहित्य के विषय में कहा है कि हिन्दी लोकसाहित्य से मतलब यदि हिन्दी क्षेत्र के लोकसाहित्य से है तो इसमें जेसलमेर से पूर्णिया और केदार खण्ड बदरी से छत्तीसगढ़ी तक का लोक साहित्य आता है। भाषाओं की दृष्टि से इसमें भगही, भोजपुरी, अवधी, छत्तीसगढी, मालवी, मारवाडी, ब्रज, हरियाणी, पहाड़ी एवं बिहारी तथा मध्य प्रदेश की जनजातीय भाषाएँ हैं।

लोकसाहित्य में उस भाषा साहित्य की संरचना का महत्व रहता है। जो विशेष क्षेत्र की असख्य बोलियों के आधार पर भाषा का रुप धारण करती है। यह जन साधारण की भावनाओं, संस्कृति और सम्पूर्णता में विकसित हुआ शिष्ट साहित्य की संरचना का शुभारंभ करता है। लोक–साहित्य के अध्ययन के बिना सभ्यता एवं संस्कृति धर्म एवं रीति, कला और साहित्य, अभ्युदय एवं आकाक्षाओं का सूक्ष्म अवलोकन नहीं कर सकते।

लोकसाहित्य लोक संस्कृति का दर्पण है। लोक संस्कृति और साहित्य का आपस में निकट सम्बन्ध है। लोकसाहित्य लोकभाषा से जुडा है। लोकसाहित्य में सभी देशों का अद्‌भुत सौन्दर्य और माधुर्य रहता है। यह शिष्ट साहित्य का ही परिष्कृत रूप है।

भारतीय संस्कृति का सजीव चित्रण लोक साहित्य में हुआ है। पारिवारिक एव धार्मिक जीवन

सम्बन्धी दृष्य इस साहित्य में मिलते हैं। लोकसाहित्य में समाज के आदर्श सती साध्वी पतिव्रता नारियों का चित्रण तो हुआ ही है साथ ही ऐसे कर्कशा नारियों के चित्र भी मिल सकते हैं जो सुहाग को बचाने के लिए सूर्य भगवान की उपासना तक भी करती हैं। इसी साहित्य में माँ बेटियों के अलौकिक प्रेम का चित्रण भी मिलता है, साथ ही ननद भावज तथा सास बहु के दुष्ट व्यवहार की भी चर्चा मिलती है। भाई बहन के प्रेम का अंकन तो अनेक स्थलों पर मिलता है।

लोकसाहित्य सामान्य जीवन के सर्वांगीण तथ्यों को उद्घाटित करता है। देश एवं जाति का लोकसाहित्य में कई दृष्टियों से विशेष महत्त्व है। मौलिक स्वरूप के कारण इसमें अनेक विशेषताएँ दिखाई देती है जो शिष्ट साहित्य में समाप्त हो जाती है। लोकसाहित्य अपने व्यापक परिवेश में समस्त देश के जीवन की धार्मिक सामाजिक तथा सदाचारसम्बन्धी विशेषताओं को सुरक्षित रखता है। लोकसाहित्य का अध्ययन सामाजिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक, धार्मिक तथा नैतिक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

रासो, भुकरियों, जैन चरित काव्यों, नाथ पंथी रचनाओं, सन्तों की अटपटी वाणियों एवं मुक्तक पदों में लोक–जीवन के सजीव चित्र मिलते हैं।

लोकसाहित्य ने साहित्य को वृहत्कथा, कथासरित सागर आदि की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्रदान की है। यह साहित्य, श्रुतिपरम्परा से ही शिष्ट जनों को प्राप्त होता है। यह साहित्य लोकमानस की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति होता है। लोकसाहित्य की निम्नलिखित विधाएँ हैं .

१ लोकगीत २. लोकगाथाएँ

३ लोककथाएँ ४. लोरियॉ बुझेबल

५ लोकमंच पर खेले जाने वाले स्वॉग, नौटंकी, रास आदि।

६. लोकोक्तियॉ ७. मुहावरे व पहेलियाँ

८ टोने टोटके, ढकोसले, व्रत उपवास इदी आदि।

लोकसाहित्य का पहले रूप टोने–टोटके से मिलता है। प्रत्येक संस्कार, उत्सव तथा अनुष्ठान बगैर टोटके के पूर्ण नहीं होता। इनमें भूत–प्रेत भूतात्माओं (पितरो) संत फकीर, मसान तथा अनेक देवी–देवताओं का स्थान है। इन्हीं के अनुकूल चित्र रचना, मूर्ति–विधान, कथा–कहानी, संगीत–नृत्य, पूजा पाठ, भोजन–वस्त्र तथा ग्रह आदि की साज्जा मिलती है।

भारतीय परिवार में टोना, टोटका, अनुष्ठान, देवी देवताओं, भूत–प्रेत भूतात्माओं आदि का स्थान है। आदिम से लेकर आधुनिकतम मनोवृत्ति में लोक–मनोवृत्ति का संकेत लोकसाहित्य में मिलता है।

३.६ कौरवी भौतिक संस्कृति

कुरु प्रदेश के लोकमानस के सास्कृतिक अध्ययन के पश्चात् यहॉ का भौतिक अध्ययन भी अनिवार्य हो जाता है। लोक–साहित्य, लोक–मानस की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह प्रदेश आरम्भ से ही भौतिक दृष्टि से समृद्ध रहा है। यहॉ के मु नस ने जहॉ एक ओर आध्यात्मिक आधार बनाया, वही दूसरी ओर यहॉ के लोकमानस ने भौतिक ससाधनो का भरपूर दोहन किया।

लोकसाहित्य के माध्यम से भौतिक सस्कृति को भी उजागर किया जा सकता है। परिवेशीय भोज्य पदार्थों , वेश–भूषाओ, वस्त्रो, आभूषण और सौन्दर्य–प्रसाधनो का चित्रण लोक–साहित्य में मिलता रहा है। दूसरी ओर इनमे नौकर–चाकर, मजदूर–वर्ग, पारिवारिक जनजीवन, घर, नदी, जंगल, मैदान पशु–पक्षी आदि सभी का स्थान–स्थान पर वर्णन मिलता है।

३.६.१ भोज्य पदार्थ

कुरु जनपद मे आरम्भ से ही खती को महत्व दिया गया है। यहॉ के मुख्य आहार, गेहूँ, चना और मक्का रहे है। जौ, ज्वार और बाजरे का भी उपयोग होता है। उच्च वर्ग के अधिकतर लोग गेहूँ और चने का प्रयोग करते है जबकि निम्न वर्ग के लोगो मे मक्का ज्वार व बाजरे का उपयोग भी मिलता है।

खेतिहर प्रदेश होने के कारण यहॉ गाये और भैसे बहुतायत मे पायी जाती है। कृषक तथा कृषि से सम्बन्धित व्यक्ति, गाय, भैस पालते है और उससे उत्पन्न आहार पदार्थो जैसे दही, मट्ठा, घी आदि का भरपूर प्रयोग करते है। छोटे वर्ग के लोग आजादी से पहले चने की रोटियॉ कभी–कभी प्याज के साथ खा लेते थे। इनके सकेत लोक–साहित्य मे मिल जाते है। आजादी के बाद देश में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। आज चना निम्न वर्ग एव उच्च वर्ग के लोगो के लिए मुश्किल से मिलता है। पहले लोक मे अतिथि का सत्कार दूध से किया जाता था। आजकल उसका स्थान चाय ने ले लिया है। पहले दूध बेचना पाप माना जाता था, अब दूध बेचना लोक की आवश्यकता है। आजकल घी बेचकर भी धन कमाया जाता है। इन तथ्यो के सकेत भी स्थान–स्थान पर मिल जाते है। गरीब लोग चने की रोटी या टिक्कड खाते है। कभी–कभी तो वे पलोथन लगी रोटी भी खा लेते है वैसे ज्यादातर अलोनी (पानी के हाथ की) रोटी बनायी जायी है।

लोक–साहित्य मे बडे लोगो की दावतो मे दियेजाने वाले इन पदार्थो के संकेत मिलते है – पूरी, कचौडी, सुहाली, पूडे, सक्कर पारे, मठरी, हलुवा, चाट, जलजीरा, टिकिया, पडाके, समोसे, दही–बडे,

सेब, मठ्ठी, गुजिया, मगध के लड्डू गुलदाना। परिशिष्ट में दिए गया स्वॉगों में इन वस्तुओ का जिक्र है। बूंदी के लड्डू, गुलाब जामुन, बालूशाही, रसगुल्ला, मावे की बरफी, सोहन पपडी, गाजर का हलवा, मोहन भोग, जलेबी, इमरती, गुलदाना, मगध के लड्डू, बेसन के लड्डू, सोन हलवा, कलाकन्द, लपसी हलवा, लौंज, पेड़े, इलाची दाना आदि।

उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के भोज्य पदार्थ में जमीन और आसमान का अन्तर देखने को मिलता है। निम्न वर्ग के लोग खिचडी और लस्सी को बहुत बड़ी चीज मानते हैं। खिचड़ी में घी पड जाये तो समझिये कि जीवन भर का आनन्द प्राप्त कर लिया।

३.६.१ वेशभूषा, वस्त्र-आभूषण, सौन्दर्य-प्रसाधन आदि

कृषकों की वेषभूषा में कुर्ता, धोती, पगडी अथवा गॉधी टोपी है। पैरों में चमडे की जूतियॉ भी पहनी जाती थी। (आजकल इसका स्थान प्लास्टिक की हवाई चप्पलों ने ले लिया है।

लोक–साहित्य मे पुरुष तथा स्त्रियों के लिए कपड़े लत्ते का प्रयोग किया जाता है। उच्च वर्ग के लोग मखमली और रेशमी कपडे पहनते हैं जबकि निम्न वर्ग के लोग गाढ़े (खद्दर) के कपडे पहनते है। कभी–कभी मेहमानदारी के लिए किसी उच्च घराने के आदमी से कपड़े मॉगकर ले जाते हैं जिन्हें मॅगेनू कहते हैं। बडे–बूढो को जवान लोग या गरीबों को अमीर लोग पहनने के लिए अपनी उतरन दे देते हैं। गरीब आदमी दो बिलॉद की लॅगोटी और फटे–पुराने कुर्ते से काम चला लेता है। शादी–विवाह के अवसर पर सिर पर पगडी पहनी जाती है तथा गले में दुपट्टा डालते हैं। छोटे बच्चे सुतन्ना (पायजामा) पहनते हैं। बड़े लोगों में भी कहीं–कही पर धोती के स्थान पर पायजामे का रिवाज है। धोती–कुर्ता और अन्य वस्त्र मिलाकार त्यौहार पर अपनी लडकी और लड़की की सास के लिए तीहल भेजी जाती है। वैसे तीहल से तात्पर्य इन तीन वस्त्रों से है : धोती, कुर्ता और ओन्ना (ओढना)। जब तीहल बहुत सस्ती होती है तो उसे दिखावे की तीहल कहा जाता है। शादी के अवसर पर दुल्हे को मोहर (मोड) बॉधा जाता है और अंगरखा तथा पायजामा पहनाया जाता है। आधुनिक लोक–साहित्य में अंगरखे और पायजामे का स्थान पैंट, बुशर्ट ने ले लिया है। टोपी, कुरु प्रदेश में विवाह शादी के अवसर पर अवश्य पहनी जाती थी।

बच्चों को ढ़ीला–ढाला कपड़ा पहनाया जाता है इसे झबला कहा जाता है। झबले के संकेत कई जगह मिल जाते हैं। इस प्रदेश में अधिकांशतः रेशम, पापलीन, मलमल, डोरिया, गाढ़ा और खद्दर के कपड़े पहनाए जाते हैं। छोटे बच्चो को कच्छा पहनाया जाता है। लॅगोटी भी बॉधी जाती है। कभी–कभी

घुटन्ना और जाँगिया भी पहनाये जाते हैं। ओढने और बिछाने के कपडो में दुलाई, दोहर, खेस, दरी, चद्दर, रजाई, गद्दा, लिहाफ, कम्बल, तकिया के संकेत मिलते हैं। बच्चों के नीचे पोतडा बिछाया जाता है। जाड़ों में ऊनी, शाल, दुसाले और कम्बल ओढते हैं, लोई भी ओढते हैं। गले में गुलीबिद बॉध ाते हैं। ठगों से बचने के लिए रुपये कमर में फेंटा में बॉधकर ले जाते हैं। कभी–कभी बटुए, थैली एवं थैले का भी प्रयोग होता है। व्यापारियों के पास लट्ठा, मलमल, मारकीन, धूप–छॉव, नैनसुख और ऊन के कपड़े मिलते है।

शादी के अवसर पर चॉदनी–गलीचों आदि का प्रयोग होता है। औरतें अधिकतर टुकडी–ओढना, ओढ़नी, कमीज़ पहनती हैं। सिर पर कभी–कभी लाल रंग के दुपट्टे भी बॉधती हैं। छोटी बच्चियॉ घाघरी बॉधती हैं। लंहगे में दामन या गोट लगायी जाती है। यह दामन मखमली फूलदार पटटी की होती है जिसे लहस कहते हैं। बडे घरों की औरतों के लंहगे में झालर लगायी जाती है।

इन सब वस्त्रों–आभूषणो के सकेत स्वॉगों में मिलते हैं।

३.६.२ स्त्रियों के आभूषण

कुरु जनपदीय लोक–स्वॉगों में संकेत मिलते हैं कि अमीरों, राजघरानों की स्त्रियॉ गले में सोने की जंजीर पहनती थी। कान में झुमके, झुमकी, झाले, माथे पर दॉई–बॉयी और झूमरवाले कुण्डल बुन्दे कर्ण फूल पहनती थी। नाक मे नथ, बेसर, लोंग तथा गले में गुलुबंद, टीप, कठा हॅसली जयमाला, चम्पाकली, बारह मोहर का झालर पहना जाता था। कमर में कौंधनी, तगडी, पॉव में लच्छे पहनती थी जो इमरतीया या सुतिया होती थी। पैरों में झामर, पैंजनी, कडे, रमझोल, तोड़िए, रेशम पट्टी पहनती थी। सुहागिन औरतें पैरों में बिछुए पहनती थी। विधवा होने पर बिछवे उतार कर रख दिये जाते हैं। कोहनी के ऊपर टट्डे बाजुबद पोंहचों में पछल्ली कड़ा, पहुँची, दस्ताने आदि पहनती थी। अॅगूठे मे हीरे, सोना, चॉदी की अॅगूठी पहनती थी।

निम्न वर्ग की औरतों के विषयों में संकेत मिलते हैं कि उनके पास पहनने–ओढने के लिए कोई खास चीज नहीं होती। तन ढकने के लिए ये केवल फटे हुए लॅहगे कुर्ते आदि से काम चलाती हैं।

बच्चों के गले में कठुला, पैरों में खडुए या पैंचनी, गले में कंठा तथा ताबीज पहनाया जाता था। कभी–कभी बच्चों के कान छेदकर मुरकी भी डाली जाती थी। वास्तव में कान–छेदना एक प्रकार का टोटका है जिस घर में बच्चे लगातार होने के बाद मरते चले जायें वहॉ इस प्रकार का टोटका किया जाता है। बालकों के मुण्डन के अवसर पर अपनी शक्ति के अनुसार बच्चों को आभूषण दिये जाते हैं।

पुरुष के कुर्तों में चांदी, सोने के बटन लगाने की परम्परा भी मिलती है।

३.६.३ सौन्दर्य-प्रसाधन

नाइन बड़े घर की औरतो की चुटिया गुँथती है। बालो में तेल डालकर उन्हे कघी से अच्छी तरह साफ करती हैं। बडे घर की औरते रोजाना उबटन और तेल लगाती हैं जबकि गरीब परिवारो मे उबटन और तेल सिर्फ शादी–विवाह के अवसर पर ही लगाया जाता है। नए स्वॉगो मे पाउडर, क्रीम , लिपिस्टिक, नेल–पालिश आदि के सकेत मिलने लगे है। उच्च वर्ग की औरतें इतर तथा दॉतो मे मिस्सी लगाती थी। आदमियों के साज–श्रृंगार मे अधिकतर मूछों पर बल दिया गया है। नाई दाडी तो साफ करता है। लेकिन मूछो से हाथ नही लगा सकता। वैसे अपने मालिक के हुक्म पर वह उसकी मूँछ से सफेद या काले बाल कैंची से काट सकता है। औरत तथा मर्द दोनो ही ऑखो मे काजल लगाते है। वैसे स्त्रियों के सौन्दर्य–प्रसाधन मे उनके गहनो एव वस्त्रों का ही प्रयोग किया जाता है।

३.६.४ नौकर, चाकर एवं मजदूर वर्ग

मजदूर वर्ग के अन्तर्गत बढई, खराद्दी, छिप्पी, सुनार, लुहार, चमार, भडभूजा, हलवाई, राज या कारीगर, दर्जी, जुलाहे कुम्हार, सिकलीगर, पटवे, ठठेरे, तमोली आदि के सकेत स्वॉगो मे मिलते है। इनका विवरण इस प्रकार है।

३.६.४.१ बढ़ई :

लकड़ी के काम करनेवाले कारीगर को बढई कहते है। लकडी के काम मे अनाडी या बहुत कम जानकर बढई कठबिगरा, ठोट या ठोटुआ कहलाता है। एक ज्वारे (दो बैलो का एक हल को कहते है) पर बढई को मजदूरी के रूप मे किसान के यहॉ से कार्तिक, बैसाख, रबी और खरीफ की फसल के बाद में एक पंसेरी अनाज मिलता है। यह अनाज मजदूरी के आधार पर भी दिया जाता है। यह सेवा विभिन्न औजारों से करते रहते है जैसे गोलची, मुटका, झिरी का रंदा, पतामी, गोजिया गल्तिया, इकदस्ती, कौर का रन्दा, गुज्खा पिया आदि।

३.६.४.२ खराद्दी

अड्डे पर लकडी की कोई चीज चिकनी सुडौल और चमकदार बनाकर खराद, खराद चढायी या खराद उतार दी जाती है। खराद करनेवाले व्यक्ति, खरादी, कुँदेरा या कुनेरा कहलाता है। खरादने मे लकड़ी के ऊपर से जो छीलन गिरता है उसे खरेद कहते है। बहुत बारीक खरेद बुरादा कहलाती है। इसमें निम्नलिखित औजारों के माध्यम से कार्य होता है। मरगला (कोटा), मॉठना (नहॉ) बसोला,

रेगमाल, बोरनी, हथौड़ा, नपत, कालापात, (कम्पास), परकार आदि। स्वाँगों में इनके संकेत मिलते है।

३.६.४.३ छीपी

कपड़ों पर छपाई करनेवाले कारीगर को छपेरा, छिपेरा या छीपी कहते हैं। कपडा रगनेवाला कारीगर रंजरेज कहा जाता है। रगरेज, मुसलमानों तथा छीपी–हिन्दुओं में एक जाति है। ऐसे सकेत स्वाँगों में जगह–जगह मिलते हैं। .

३.६.४.४ सुनार

सोने और चाँदी के आभूषण बनानेवाले कारीगर को सुनार कहते हैं। गहनों को माल, चीज या जेवर भी कहते हैं। लोककथाओ मे सुनारगीरी करनेवाले के लिए एक खास तोल का सोने का डेला अथवा सिक्की की भाँति गोल सोना, पाँसा होता है। पहले एक पाँसे का सोना, २६ तोले आठ मासे होता था। कहीं–कहीं लोककथाओ में यह सकेत भी मिलता है कि तीन मासे से लेकर ५ तोले के पासे होते है 'अर्थात् मूल्यवान आभूषणो को बनाने को सुनार कहते हैं।

३.६.४.५ लुहार

लोहे के औजार तथा लोहे से बनी वस्तुएँ बनानेवाला शिल्पकार, लोहकार, कुहार कहलाता है। हल की फाली, खुरपे, फावडे गडासे और दराँत आदि बनाते हैं। जो हथियार मैथरे हो जाते है तो उन्हें नुकीला बनाने के लिए उन्हे पानी पर चढ़ाया जाता है, उन पर पानी धरना, धार धरना चाँटना या खोटना उनका काम है। ये सारी क्रियाएँ स्वाँगों में बराबर मिलती हैं।

३.६.४.६ भडभुजा

अनाज के दाने भूननेवाला भरभूजा या भडभुजा कहलाता है। बालू और आग से भरा हुआ पोला छतदार चबूतरा–सा, जिसमे स गर्म बालू निकाल कर दानों को जो भूनता है, भडभूजा कहलाता है। वैसे जमीन पर छोटा–सा गड्ढा करके भी छोटे–मोटे लोग यह कार्य कर लेते हैं।

३.६.४.७ हलवाई

मिठाई, पकवान बनानेवाला और बेचनेवाला व्यक्ति हलवाई कहलाता है। हलवाई अपना पकवान कढाई में सेंकता है। कढाई मे उठाने के लिए दो गोल कुन्दे लगे रहते है जिन्हे कान कहते है। इस सम्बन्ध में एक पहेली प्रसिद्ध है

चाच्ची के कान, चच्चा के कानई ना।

चाच्ची स्यानी बड्डी, चच्चा कछु जानई ना।।

इस तरह का संकेत भी स्वॉगों में मिलते हैं। लोक–साहित्य में आजकल हलवाई स्वरुप बदल गया है।

३.६.४.८ राज या कारीगर

मकान बनानेवाला कारीगर राज या मिस्त्री कहलाता है। प्रायः मकान ईटो के बनाये जाते है लेकिन किसान अपनी झोंपडी गोद, गीली मिट्टी के लौंदें से दिवार छापते और बनाते हैं। इस तरह बनायी हुयी दीवार गोंदरी भीत कहलाती है। जबकि एक मूँद (मुश्त) मजदूरी और निश्चित समय म मकान बनाने के लिए तय कर दिया जाता है तो उसे ठेका कहा जाता है। जब रोजनदारी (प्रतिदिन) की निश्चित मजदूरी पर काम कराया जाता है उसे 'अमानी का काम' कहते हैं। इस कार्य के सकेत स्वॉगों में मिलते हैं।

३.६.४.९ दरज़ी और रफूगर

कपड़े नापकर तथा काटकर सीनेवाले कारीगर को दरजी कहा जाता है। काट–छॉंट करने के बाद जो चीर कत्तरें दर्जी के पास रह जाती हैं उन्हें छॉटन, कतरन कहते हैं। लोक में दर्जी और सुनार के विषय में एक कहावत भी है कि सुनार अपनी बहु की नथुनिया में–से और दरजी मॉ की अगियॉ में से भी बचाकर अपने पास रख लेते हैं।

रफूगरी भी दर्जी से मिलाजुला ही कार्य है। यह फटे या अच्छे कपडे मे छेद आदि होने पर उसे धागे से बुनकरों की तरह रफू कर देता है जिससे कपड़े की आयु कम नही होती। ऐसे कारीगर को रफूगर कहते हैं।

३.६.४.१० जुलाहा

कपड़ा बुनने का कार्य करनेवालो को जुलाहा कहते हैं। मुसलमानों में जो जाति कपडा बुनती है, उसे जुलाहा कहा जाता है। कौरी तथा जुलाहों के विषय में बहुत सी लोकोक्तियॉ भी प्रचलित है।

सूत ना कपास, कौरिया तै लट्ठम लट्ठा।

गाढ छोड़ि के बाहिर जाय, नाहक चोट जुलाही खाय।

३.६.४.११ कुम्हार

मिट्टी के बर्तन बनानेवाला कारीगर कुम्हार कहलाता है। हिन्दुओं में कुम्हार एक जाति है। इस जाति के लोग अपने को परजापत कहते हैं ये लोग मिट्टी के बने एक गोल से पाट (चाक) पर बर्तन बनाते हैं जो एक विशेष कारीगरी का द्योतक है। कबीर ने भी कुम्हार के विषय में काफी लिखा है। स्वॉगों में भी इनकी कार्य–कुशलता का विशेष वर्णन मिलता है।

३.६.४.१२ सिकलीगर

लोहे के हथियारो को पैना करनेवाला तथा चमकानेवाला कारीगर सिकलीगर या सिकलगर कहलाता है। ये लोग हथियार विभिन्न रूप से चमकाते थे जैसे मसाण (विशेष पत्थर) से आदि। लेकिन कुरु प्रदेश में कही-कही पर स्वॉगो मे यह भी सकेत मिलते हैं कि जॅगलों में आखेट करनेवाले लोग सिकलीगर कहलाते थे।

३.६.४.१३ पटवा

गले और हाथ के कुछ गहने डोरो मे पिरोये जाते है तब ही वह पहनने योग्य होते है। ऐसे गहनो को डोरों में सजानेवाला कारीगर पटवा कहलाता है। सुनार और सराफो की दुकानो के पास मे प्रायः पटवे अपनी दुकान लगाते है।

३.६.४.१४ ठठेरा

कॉसे-पीतल आदि के बर्तन बनानेवाला तथा टूटे-फूटे बर्तनो को ठीक करनेवाला कारीगर ठठेरा कहलाता है। ठठेरा चार बातो को ध्यान मे रखकर बरतन बनाता है जैसे तपाई, मठाई या परसाई, जुहाई ढलाई आदि।

३.६.४.१५ तमोली

पान बेचनेवाला तमोली कहलाता है। पान की बेल को सस्कृत मे नागवल्ली कहते है। सम्भवत पान, नाग जाति का मुख्य प्रसाधन रहा होगा। इसलिए बेल का नाम नागवल्ली पड गया।

पान के टुकडे पर चूना कत्था आदि लगाकर फुटकर रूप मे बेचनवालो को पनवाडी कहा जाता है। तमोली बिना लगे पानो को थोक मे बेचते है और महोबे (बुन्देलखण्ड मे एक स्थान) और सेकुडे (बांदा जिले में एक गॉव) आदि स्थानो मे जाकर पान की खरीद करते हैं। तमोलों का कहना है कि पान की बेल जिस खेत मे बोई जाती है वह पॉच बराबर के हिस्सो में बॅटा रहता है। प्रत्येक हिस्सा कोणी कहलाता है। प्रत्येक कोणी पलागियो मे और प्रत्येक पलागी कुन्तूसों में बॅटी रहती है। एक कन्तूस मे सौ पान के पौधे लगाये जाते है। खेत की बटौती (विभाजन) इस प्रकार होती है

१०० पान बेले	–	१ कुन्तुस
२५ कुन्तुस	–	१ पलागी
४० पलागी	–	१ केणी

३.६.५ उच्च, मध्य एवं निम्न वर्ग का पारिवारिक एवं जनजीवन

३.६.५.१ उच्चवर्ग

कुरु जनपद मे आजादी से पूर्व उच्च वर्ग मे जमीदार, साहूकार, पटवारी, राजकीय कर्मचारियो को सम्मिलित किया जाता था। ये लोग मध्यम एव निम्न वर्ग के शोषक भी रहे है। वर्ग के लोगो का खान–पान रहन–सहन अत्यन्त विलासी था। ये अपने हित के लिए गलत से गलत कार्य भी कर सकते थे। गरीब लोगों को सताना और बेगार लेना इनका मुख्य कार्य था।

आधुनिक चितक कार्ल मार्क्स का परिभाषा के अन्तर्गत इन्हे बुजुर्आ वर्ग के अन्तर्गत रखा जा सकता है। सामान्य जनजीवन की दृष्टि से ये शान शौकत, बाहय आडम्बर और दिखावे बहुत रखते थे। इसी पर इनका अधिकाश व्यय हो जाता था। इनके घर की औरतें आभूषणो से लदी रहती थी। बेशकीमती चीजें उनके लिए उपलब्ध करायी जाती थी। स्वॉगों मे स्थान–स्थान पर उच्चवर्गीय रहन–सहन का विस्तृत विवरण मिलता है।

३.६.५.२ मध्यवर्ग

इस वर्ग मे जमीदारो के कारिन्दे और राजकीय कर्मचारी आते हैं। ये लोग अपने से ऊँचे लोगो की मदद करते थे। प्राय ये उच्च वर्ग के शोषण का शिकार भी हुआ करते थे। उच्च वर्ग के लोग इनका प्रयोग हथियार के रुप मे करते थे। काम पूरा हो जाने पर इन्हे निकाल फेंक दिया करते थे। अवसर पडने पर मध्यम वर्ग के लोग निम्न वर्ग के शोषक बन जाते थे। इस श्रेणी में गॉव के चौकीदार पचायत के पचो को सम्मिलित किया जा सकता है।

३.६.५.३ निम्नवर्ग

इनमें नाई, धोबी, चमार आदि आते है। उच्च वर्ग के लोगो के द्वारा इनके शोषण की अनेक घटनाऍ स्वॉगों में देखने को मिलती है। इस वर्ग के लोगों का जीवन अत्यन्त कष्टमय हुआ करता था। इनको आज पेट भरा कल की चिता रहती थी। लगातार मेहनत करने के बाद भी दो जून रोटी मिलना कठिन था।

ज़मीदारी उन्मूलन के बाद से किसानों और मजदूरों के जीवन में उन्नति हुयी है। इनका जीवन पिछले दिनों जैसा नहीं रह गया है बल्कि इनमे से कुछ उच्च श्रेणी तक उठ गये हैं और कुछ अपनी अकर्मण्यता के कारण निम्न वर्ग तक पहुँच गये है।

३.६.६ मनोरंजन के साधन

खेलने के यन्त्र, जो हाथ से बजाए जाते हैं – इकतारा, खॅजरी, घंटा, चीमटा, झाझ, चॅग जलतरग, झालर, ढप, इन्दर बाजा, डुगडुगी, ढोल, ढ़ोलक, तबला, नगाडा, धौंता, भेरी, सारगी, सुपरा या फटका, तमूरा, पखावज, बेला, मिरदग, सितार, सारंगी, तंबूरा, मंजीरा।

३.६.६.१ मुँह से बजानेवाले बाजे

अलगोजा, कलारनट, कारनेंठ, टेंगर, तुन्ना या तुरना, तुरई, नफीरी, शंख, पपइया, पीपनी बॉसुरिया, बंशी, शहनाई, सिगी आदि।

३.६.६.२ पांव से बजानेवाले बाजे

घुंघरु, पंसुरी आदि इसके अलावा मढे हुए बाजे, तारों के बाजे, फूँक से बजानेवाले बाजे, अन्य बाजे आदि।

३.६.७ कुरु प्रदेश में खेले जानेवाले खेल

इसमें दो प्रकार के खेल खेले जाते हैं

१. घर मे खेले जानेवाले खेल

२. मैदान में खेले जानेवाले खेल

३.६.७.१ घर में खेले जाने वाले खेल

यह खेल अधिकतर परिवार में खेले जाते हैं। इन खेलों को घर में बच्चे तो खेलते ही हे लेकिन कभी–कभी बूढ़े, जवान आदि भी खेलते है।

१. अटकन–बटकन

२. अठौर गोटी

३. आम–आम

४. इल्ली–ढुल्ली या ऐली–दोली

५. काऊ की चांदि पे चिलमदरा

६. खुल–खुला (कोडियों का एक खेल)

७. गंगाजी को आर–पार (आमने–सामने के दो चबुतरों के बीच में खेले जाना वाला खेल)

८. गंगा में डुबक–डुबक (गलियों में चबूतरों के बीच खेले जाने वाला खेल)

९. दाँई दप्पू

१०. गिट्टू (छोटी लडकियों का एक खेल)

११ गुपक

१२ गोटमार

१३ घपोल (बारे–गोटी)

१४ चउआ डेली

१५ चिडिया–गोट

३.६.७.२ मैदान में खेले जाने वाले खेल

कुरु प्रदेश मे अधिकतर खेले जानेवाले। बच्चे बडी रुचि के साथ यह खेल खेलते है। इन खेलो से कुरु प्रदेश की सास्कृतिक झलक मिलती है जो लोक–साहित्य मे अखण्ड भारत के दर्शन कराती है

१. चॉई–माई

२ चित्त–पट्ट

३. चेमे–चेमे

४ चोर–कॉकरी

५ चोपड या चोफड

६ छह गोटी

७ तास्समार

८ तिक–तिक

९. दस गोटी

१०. दुबक पिछोरी

११. बामन गोटी

१२. भैंसा–बांधी

१३. लठिया चोर

१४. शतरंज

१५. सुई–ढूँढ़नी

१६ सॉप–सीढी

३.६.७.३ मैदान में खेले जाने वाले खेल

१.	अमरुद लपक	२	आती–पाती
३.	ईख–ईख	४	कबड्डी
५	कनकउआ उडानौ	६	कुऑ–भोरो
७.	कोरंट	८	कोडा जगालसाई
९.	गिल्ली डंडा	१०.	गेंद–बल्ला
११.	गेंद बच्ची	१२.	गेंद–तडी
१३.	चील झपट्टा	१४.	चेंटीमार
१५.	चोर–सिपाही	१६	चौकडी कूद
१७	लम्बी कूद	१८	धाई मिचका
१९.	तारी पीटना	२०.	पुलल्ली घोडी
२१.	बग्घी–घोडा	२२.	बारे गोटी
२३.	बित्ती	२४	भिनिन–मिनिन
२५.	मच्छी–मच्छी कितना पानी	२६	मूस बिलडुआ
२७	डीका–लठिया	२८	ऊँची कूद
२९.	लंगडी चाल	३०	टेगडी
	(पहलवानों के दाव पेंचों के नाम)		
३१.	अंटी	३२.	उल्टा
३३.	कडा	३४	कस (भीतरी)
३५.	जघियाँ निखाल	३६	ढाक
३७.	दुहरी टॉग	३८.	धरती पकड
३९.	बन्द	४०.	बगली बैठक मोच (इस दाव से ही गामा पहलवान ने जेतिस्को को कुश्ती मे पछाडा था)

बहुत से लोग हथियार चलाने का खेल भी खेलते थे

१.	चाले के हाथ	२.	बाने के हाथ

३	बनैती के हाथ	४	लाठी के हाथ
५	लाठो के हाथ	६	मदके के हाथ

३.१० कौरवी लोक कथाओं में विचित्र भौतिक संस्कृति

भारत के इतिहास मे आर्यावृत्त का विशेष स्थान रहा है। यहॉ अनेक चक्रवर्ती सम्राट हुए है। यह अनेक ऋषियो की तपो भूमि भी रही है। इस भूमि को प्रकृति का भी विशेष आर्शीर्वाद मिला है। यहॉ पर महाराज हस्तिन द्वारा स्थापित हस्तिनापुर से कुरु वश का इतिहास आरम्भ होता है। यह क्षेत्र प्राकृतिक सम्पदा का आगार है।

इस क्षेत्र के उत्तर की ओर पर्वत श्रृखलाऍ है। इसके पूर्व और पश्चिम की सीमाऍ गगा और यमुना नदियॉ निर्धारित करती है। इस क्षेत्र की कुछ अन्य नदियॉ है – हिन्डन, काली और कृष्णा नदिया। कुछ अन्य छोटी नदिया यहॉ के मैदानी इलाके को अपना जल देकर इसे उपजाऊ बनाती है। गगा नदी से तो भारत का 'म्पूर्ण इतिहास ही जुड' है।

कुरु जनपद के उत्तर पश्चिम की ओर शिवालिक की पहाडिया है। यह गगा यमुना के बीच का मैदानी भाग है। प्राचीन काल से यहॉ कच्चे घर बनाने की परम्परा है। सभ्यता के विकास के साथ- साथ यहा पत्थर के और बाद मे ईट गारे के मकान बनाने लगे। आज सीमेन्ट और ईट से निर्मित मकान यहॉ की प्रमुख शोभा है। यह क्षेत्र अपनी उपजाऊ भूमि ऋषि आश्रमो और चक्रवर्ती सम्राटो के कारण विश्वविख्यात रहा है।

कुरु प्रदेश के स्वॉगो मे महाभारत के पात्रो के नाम मिलते है। यहॉ के लोगो को भीम का नाम अत्यन्त प्रिय है। राम के अनन्य भक्त हनुमान को भी भीम की ही भॉति आदर मिलता है। ऐतिहासिक पात्रो को मिथक के रूप मे भी इन कहानियो मे स्मरण किया जाता है। ये है राजा भोज राजा हरिश्चन्द्र और राजा बीर विक्रमाजीत। राम के विरोधी रावण से यहॉ व्यक्तिगत राग–द्वेष न मिलकर कर्मगत द्वेष मिलता है। ये रावण विभीषण को उनके कर्मो के कारण नकारते है न कि राम–विरोध के कारण। लका यहॉ की औरतों की एक गाली है।

पशु पक्षियो की दृष्टि से स्वॉगो मे गाय, भैस, बैल, घोडे, बैल, घोडे, हाथी, सियार, लोमडी, खरगोश शेर आदि का बार–बार उल्लेख मिलता है। ये अपने कर्मो के कारण आदरणीय अथवा तिरस्करणीय बनते है। तोता, मैना, और कौआ भी कहानियो के पात्रो के रूप मे आते है। परिशिष्ट मे सगृहीत स्वॉगो मे इनके संकेत मिल जाऍगे।

कुरु जनपद उपज की दृष्टि से भारत के अत्यन्त समृद्ध क्षेत्रो मे से है। इसकी समृद्धि का कारण यहॉ की प्राकृतिक सम्पदा है। यहॉ का मनुष्य खान–पान मे अधिक विश्वास रखता है। शारीरिक पुष्टता और अतिथि–सेवा यहॉ के व्यसन कहे जा सकते है। इनके ये विश्वास इसकी भौतिक और लौकिक समृद्धि के साथ–साथ आध्यात्मिक सस्कृति के भी आधार रहे है। कौरवी लोककथाओ मे भौतिक सस्कृति के आध्यात्मिक सस्कृति के आधार रूप मे आने के अनेक सकेत मिलते है।

सभवत उत्तरी भारत क्या लगभग सारे भारत की क्षेत्रीय लोक–कथाओ मे भौतिक समृद्धि का इतना विराट् रूप कहीं देखने को नही मिलता। अपने विशिष्ट भौतिक एव आध्यात्मिक विश्वासो के कारण यह सस्कृति अपना अन्यतम स्थान रखती है।

लोक–साहित्य को श्रुति परम्परा से प्राप्त होने के कारण लोक वेद की सज्ञा दी जा सकती है। इस साहित्य मे लोक की सम्पूर्ण आस्थाओ, मान्यताओ, आशाओ, निराशाओ, विश्वासो अन्ध विश्वासो आदि का सजीव चित्रण होता है। लोक मे इसकी मर्यादा की रक्षाओ के लिए किसी न किसी वृद्ध पुरुष का होना नितान्त आवश्यक है। लोक–साहित्य को उसी वृहद्ध पुरुष के समान माना जा सकता है। अन्तर केवल इतना होता है कि वृहद्ध पुरुष की आयु और यात्रा अनन्त होती है। इस अनन्त प्रवाह मे लोक की सम्पूर्ण मर्यादाओ की रक्षा होती है। स्वॉग लोक–साहित्य की सशक्त विधा है। यह कहना अत्युक्ति नही होगी कि लोक–साहित्य के प्रत्येक कथन को यह आधार प्रदान करता है। वह आधार उसके जीवन को सुचारु बनाए रखने मे महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। स्वॉग की रचना मे किसी एक रचनाकार का हाथ नहीं होता। इसकी रचना एक बहुत लम्बी परम्परा के माध्यम से होती है। रचनाधर्मी कथा के सूत्र आगामी पीढी के लिए छोड जाता है और आगामी पीढियॉ उसे अपने ही अनुरूप ढालती चली जाती है। यही कारण है कि स्वॉग का उददेश्य और उसका अभिप्राय एक होते हुए भी इनमे तात्विक अन्तर देखने को मिल जाता है। लोकसाहित्य की सशक्त विधा होने के कारण इसका अध्ययन परम आवश्यक है। इसके अध्ययन और विश्लेषण के माध्यम से अनेक गुत्थियो को सुलझाया जा सकता है। लोक–सास्कृतिक एव सामाजिक परिवेश के अध्ययन की दृष्टि से स्वॉगो का अध्ययन जरूरी है।

भारतीय लोकमानस का सीधा सम्बन्ध परम्परा से जोडा जा सकता है। यह कहना उपयुक्त न होगा कि लोक का जीवन, परम्परा–जीवन होता है। परम्पराऍ लगातार विकसित हुआ करती है, टूटती नहीं हैं। इस प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि परम्परा का विकास लोक–सस्कृति का विकास है और संस्कृति के परम्परागत तत्व लोक–सास्कृतिक मान्यताऍ है। भारत आरम्भ से ही अरण्य सस्कृति

का नीव पर खडा है। अरण्य संस्कृति का विकास अधिकांशतः नदियों के किनारे और हिमालय और विधयाचल की चोटियों पर हुआ। इस समतल भूमि और ऊँचाई के दोनों गुण लोक–सरकृति में मिलते है। समतल होने के नाते इसमें समद्रष्टा होने का प्रधान गुण और शिखर के उन्नत होने के कारण इसमे लगातार प्रगति की भावना समाविष्ट रहती है। लोक–संस्कृति के पोषक अरण्य पर्वत श्रृखलाएँ रही है या समतल मैदान। इन तीनों का ही सम्बन्ध क्षण–क्षण परिवर्तनशील उदात्त एवं स्थिर प्राकृतिक उपादानों से है। जहॉ एक ओर पेडे अपना सिर ऊपर उठाये रहते हैं वहीं दूसरी ओर सामान्य वनस्पति अपने कलेवर को बराबर बदलती रहती है।

इन बातों को ध्यान में रखकर यदि लोकसंस्कृति के तत्वों पर विचार किया जाये तो इनका यह स्वरूप सामने आता है :

१. प्राकृतिक सम्पदा से अचेतन के धरातल तक प्रेम या स्नेह

२ उदात्त भावना

३ नियतिवादी भावना

४ विश्वबंधुत्व की भावना

५. बज्रादपि कठोराणि, मृदनि कुसुमादपि' वज्र से भी कठोर किन्तु पुष्प से भी कोमल

६ प्रकृति के उपादान इसके टोटम या टेबू

७ परम्परागत विश्वास

८ परम्परागत रीति–रिवाज

६ परम्परागत आचार–संहिता

१० आर्थिक दृष्टि से कमजोर (शोषित वर्ग) के संस्कारों का चित्रण।

३.११ स्वॉग का स्वरूप और कुरु जनपदीय स्वॉंग परम्परा

३.११.१ स्वॉग का स्वरूप

स्वॉग मूलतः लोकनाट्य और लोक संगीत पर आधारित होता है। इसकी कथा परम्परागत लोकगाथा हुआ करती है। स्वॉग रचनेवाला इस कथा में अपने युग के अनुरूप परिवर्तन कर लिया करता है। इस परिवर्तन का स्वरुप परिवर्तन कर लिया करता है। इस परिवर्तन का स्वरुप कभी–कभी विक्रमादित्य, नलदमयन्ती और नरसी जैसी लोक–परिचलित गाथाओं के दर्णन में आधुनिक उपकरणों और उपादानों का भी काफी वर्णन कर दिया जाता है। इस वर्णन में मोटर, कार, पेन्ट, बुशर्ट तक का

वर्णन मिल जाता है। इस वर्णन के कारण स्वॉग का स्वरुप आधुनिकतम हो जाता है। यह लोक–मानस की अपनी आवश्यकता है क्योंकि लोक–मानस इसके स्वरूप को अपने युग के अनुरूप ढाल कर देखना चाहता है।

स्वॉग खेलनेवाला किसी स्टेज का निर्माण नहीं करता। आरम्भ में स्टेज टीलेनुमा स्थान हुआ करता था। बाद में उसके स्थान पर तख्त बिछाये जाने लगे। आज तख्तों पर ही पूरे स्वॉग को दिखाया जाता है। इसमें नाटक की भॉति किसी परदे की व्यवस्था नहीं होती और अंक तथा दृश्य में भी इसका विभाजन नहीं होता।

स्वॉग के सभी पात्र स्टेज पर या स्टेज के आस–पास बैठते हैं। अपनी बारी आने पर वे उठकर अपना पार्ट (रोल) सदा करके फिर अपने स्थान पर जा बैठते हैं। स्वॉगों में नारी–पात्रों का अभिनय पुरुष पात्र ही करते हैं। नौटकी में स्त्रियॉ सक्रिय भूमिका निभाती हैं। जबकि स्वॉगों में स्त्री का प्रवेश वर्जित है। सम्भवतः इसका कारण कुरु जनपद में स्त्रियो के प्रति सम्मान की भावना है। स्त्री का घर से बाहर निकलकर नाटक मे भाग लेना मर्यादा के विरुद्ध माना जाता है। वैसे कुरु जनपद में स्त्रियो को अपने–अपने त्यौहारो में नाचने और गाने तथा मुक्त–हास्य करने की पूरी छूट होती है। किन्तु वह भी मर्यादा के भीतर।

स्वॉगों में सगीत का भी योगदान होता है। संगीत के लिए अधिकतर ढोलक और हारमोनियम का प्रयोग किया जाता हे। ऐसी कोई बंदिश नहीं है। आशाराम कुरु जनपद मे अपनी तर्ज का एक अलग ही स्वॉगी हुआ है। सगीत के नाम पर उसके पास एक लट्ठ हुआ करता था जिस पर घुंघरु बधे होते थे। उसी लटठ से वह संगीत की पूरी भूमिका अदा किया करता था।

स्वॉगो में पात्रों की सख्या पर कोई नियन्त्रण नहीं है। पात्र पॉच भी हो सकते हैं और इससे ज्यादा भी।

आज के सन्दर्भ में स्वॉग को हम नुक्कड नाटक का पूरवर्ती रूप कह सकते हैं। नुक्कड नाटक मे भी कोई स्टेज नहीं होता। सगीत का भी कोई बन्धन नहीं होता और साथ ही साथ पात्रों की संख्या के सम्बन्ध में भी कोई नियम नहीं होता।

स्वॉग का नायक अधिकतर लोक प्रचलित और लोक में आदर–मान प्राप्त लोक वीर हुआ करते हैं। स्वॉगकार इन लोक वीरों की पौराणिक कथाओं में अपनी कल्पना के माध्यम से नये स्वरूप की स्थापना करता है जो लोक सामूहिक अचेतन की स्वीकृत होता है। या यों कहा जा सकता है कि सांगीतकार

अपनी कल्पना के माध्यम से ऐसे मिथक की रचना करता है। जो सारे लोक में स्वीकृत और मान्य होता है।

३.११.२ स्वाँग-परम्परा

कुरु जनपद मे स्वॉग का आरम्भ जावली गॉव से माना जाता है जो इस समय गाजियाबाद जनपद में आता है। यह बताया जाता है कि यहॉ के प्रसिद्ध स्वॉगी नत्थूलाल, मानसिंह थे। इनके यहॉ पर ४०० ढ़ोलक थीं जो एक साथ गरज कर स्वॉग की सूचना १०–१० कोस तक पहुँचा देती थीं। एक प्रकार से जावली गॉव ही कुरु जनपद के स्वॉग का आरम्भिक केन्द्र माना जाता है। इन्हीं स्वॉगियो के शिष्य और प्रशिष्य पूरे कुरु जनपद मे लगभग १९५०–१९६० के बीच जगह–जगह मिल जाते है। जावली, सूप, बागपत, मुज्जफरनगर, सनौली, दत्तनगर, मस्तानखेड़ा, फिरोजपुर, टीला, सरूरपुर, रटौल डूॅडाहेड़ा, खानपुर, खेखडा, घोघा आदि जगहों के स्वॉगी प्रसिद्ध हुए हैं। स्वॉग की यह परम्परा रेडियो के आरम्भ से धीरे–धीरे कम होती गयी और आज दूरदर्शन के युग में यह भूतकाल की एक धरोहर–सी बनकर रह गयी है।

इस धरोहर मे युगीन सस्कृति और समाज का जो चित्रण व्यापक रूप में मिलता है वैसा वर्णन कभी–कभी असम्भव हो जाता है। संस्कृति की सारी मान्यताओं और समाज के सारे उपादानों का जैसा चित्रण स्वॉगों में मिलता है वैसा लोक–साहित्य में अन्यत्र देखने को नहीं मिलता।

४. कुरु जनपद के सांगीतकार और उनका जीवन वृत्त

कुरु जनपद मे स्वॉग परम्परा का आरम्भ जावली गॉव से माना जाता है जो इस समय गाजियाबाद जिले के अन्दर आता है। स्वॉग के आरम्भकर्ता पण्डित नत्थूलाल मानसिह मूलत स्वामी शकर दास जी के शिष्य थे। स्वामी शकरदास की लोक–सगीत तथा लोक–काव्य मे गहरी पैठ थी। अन्त साक्ष्यो के आधार पर स्वामी शकर दास जी के अनेक शिष्य थे जिनमे ठाकुर प्रेमसिह, उमराव सिह, हरसामल किदारनन्द, होरामसिह (ब्रहमचारी), चेतना, आनन्द, गिरधारीलाल, नेतराम, शिवदयाल, लटूरसिह नत्थूलाल, मोहरसिह प्रमुख थे। इनमे शिवदयाल की प्रशिष्य परम्परा मे मुन्शीराम और लटूरसिह की शिष्य परम्परा मे भगीरथ थे इनके शिष्य चेतराम, और चेतराम के शिष्य कल्लूसिह और धनीराम हुए। पडित नत्थूलाल के ५२ शिष्य हुए जिनमे पडित मानसिह, बलवन्त (बुल्ली), दीन्ना, प० लक्ष्मीचन्द शर्मा प० रघुवीर शर्मा आदि प्रमुख थे।

शकरदास जी की कृति बुद्धिप्रकाश सनातन धर्म मे शिष्यो के नाम इस प्रकार दिये है घीसाराम प० जीराम, ठाकुर फूलसिह, डुॅगर सुनार, उमराव सिह, रामसहाय माली, प० रामरतन मिश्र, दुर्गा पहाडी धीरज वाला, प० बलदेवसिह साल्हवासिया, शिम्भू प० दादरीवाला, प० भोलाराम प० श्रीराम जी (हसनगढ) राम प्रसाद ब्राह्मण (सामण्डका), जोतराम नम्बरदार (सागीका), तोताराम जौहरी (गुहाना), सुॅडू ब्राह्मण (माजरा), हरकेस (मऊखास), लखपत सिह (पसवाडा), प्रेम पडित (निस्तौली), रामरीक दास (काटी) नरसिह (जैरपुर), माधोदास (मडोरा), खासाराम (भिवानी), गणेशी (मथुरा) माड्डू, न्यामत, स्योनाथ, जुहारा, रामा चिरजीलाल, सुखराम उदकी, तुलसी, बाबू, चुन्नी, किरपा, बारू, हरद्वारी, सुरजा (रटौल), भोला, कन्हैया, मुसद्दी, जीतन, कुन्दन, हरजस, रामरीक, छोटूराम, रामप्रकाश, हुसैना सारगीया, मालुका मिरासी आदि के भी नाम स्वामी शकर दास जी की कृतियो मे मिलते है।

स्वामी शकरदास जी की निम्नलिखित चेलियॉ भी थी – भखतावरी सेठानी (रामगढ), श्यामकौर (मौथला), गगादेई (भागथला), सारा (भिवानी), पार्वती (सोभापुर भिवानी)। ये चेलियॉ अधिकाशतः हरियाणे की थी और सभी शादी की सालगिरह ना मनाकर विधवा हो गयी थीं। इन सभी को स्वामी शकर दास जी ने अपनी शिष्या स्वीकार किया था। स्वामी शकर दास जी ने बुद्धिप्रकाश, धर्म सनातन प्रकाश ११२ में शिष्यो की गणना इस प्रकार की है .

न्यादर सिंह (तहसील मेरठ), पंडित हरफूल (डीजल), पं० काशीराम (बैरी), अनूपसिंह, जहरूसिह, शीशराम, गंगाराम, लखपत, पतरामा। अनुभव प्रकाश ३३६ पर वर्णित स्वामी शंकरदास जी के शिष्य परम्परा का उल्लेख इस प्रकार है :

हरनाम (जहाँगीरपुर), बलदेव निव्रतानन्द (सालाबास), मोहरसिंह (हसनगढ़)।

जब भी स्वामी शंकरदास जी अपनी पुस्तक छपवाते थे उसमें शिष्य परम्परा अवश्य प्रकाशित करते थे। जब दूसरी पुस्तक प्रकाशित होती तब शिष्य–परम्परा अधिक बढ़ जाती थी।

४.१ स्वामी शंकरदास का जीवन वृत्त

किसी भी कवि का जीवन उसके द्वारा रचित साहित्य में प्रायः किसी न किसी रूप में व्यंजित रहता है। अतएव कवि अथवा लेखक के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन करने के लिए उसका जीवन चरित जानना अति आवश्यक है।[1]

४.१.१ अन्तःसाक्ष्य

स्वामी शंकरदास ने अन्य सन्तों की भाँति अपनी कृतियों में स्वयं के लिए स्वल्प नहीं कहा। बल्कि वे अधिकांश कृतियों मे, जन्मस्थान, जनपद, डाकखाना, पिता, दादा सभी का नाम स्पष्ट करते हैं। यही नहीं वे अपने शिष्यों की गणना भी कराते हैं तथा अपने निवास का वातावरण, जाति, सम्प्रदाय सभी कुछ गिना जाते हैं। किसी रचना में उन्होंने अपनी जन्म–तिथि बतलाई है तो किसी में कृति का रचनाकाल स्पष्ट किया है। उनका सम्प्रदाय, गुरू, जीवन–काल आदि का स्पष्टीकरण स्वयं कवि की लेखनी से हो जाता है।

४.१.२ बाह्यसाक्ष्य

१. स्वामी शंकरदास के समकालीन महात्मा गंगादास रसूलपुर (मेरठ) के निवासी थे जो बाद मे गढ़मुक्तेश्वर में कुटी बनाकर वहीं रहे थे। कहीं–कहीं उनके काव्य में शंकर शब्द का प्रयोग समालोच्य कवि के लिए हुआ है। चूंकि शंकरदास को काव्यशास्त्र का उतना ज्ञान नही था और गंगादास जैसी पैठ तथा अनुभूति भी कदाचित नहीं थी। वेदान्त दर्शन का ज्ञान उनका इतना नहीं था। लेकिन महात्मा गंगादास के पदों की काट करना तथा उनका जीवन–पर्यन्त सतत लेखन उन्हें ज्ञानी कवि सिद्ध करता है। महात्मा गंगादास का जन्म स्वामी शंकरदास से पहले हुआ, और स्वामीजी, महात्मा जी से एक वर्ष पहले गोलोकवासी हो गए। इस प्रकार दोनों ही विद्वान लोक कवि समकालीन थे। महात्मा जी के काव्य

---

१. डॉ० श्यामसुन्दर दास, साहित्यालोचन, पृ० ८५.

में स्वामी शंकरदास के लिए जो उक्तियॉ प्रयुक्त की गई हैं, बाह्य साक्ष्य के रूप मे इस शोध कार्य में उन्हे स्वीकृत किया गया है।

२. बाह्य साक्ष्य में उन लोगों के कथन भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं जो किसी न किसी रूप में स्वयं शंकरदास के सान्निध्य में रहे या जनश्रुतियों के आधार पर उन्होंने प्रामाणिकता को अपनी स्मृति में संजोये रखा। इस प्रकार जिन कवियों से लेखक ने स्वय साक्षात्कार करके उनके बयान सगृहीत किये है, और जो समालोच्य कवि के जीवन में बाह्य साक्ष्य के रूप मे अधिक उपादेय सिद्ध हुए हैं वे निम्नलिखित हैं ·

१. छोटे भगत (६२ वर्ष) सुपुत्र ठाकुर नवलकिशोर जिठोली मेरठ।

२. मुन्शी राम सयासी (८० वर्ष) पोता–चेला स्वामी शंकरदास गॉव जसात, तह० पटोदी जि० गुडगांव हरियाणा।

३ प्रधान हिमंचल सिह ठाकुर, सुपुत्र बब्बे सिह ग्राम मुरलीपुर, जि० मेरठ।

४. ठाकुर चरणसिह भतीजा, ठाकुर रामशरण (७० वर्ष) ग्राम मुरलीपुर जि० मेरठ।

५ श्रीमति सरूपी देवी (७८ वर्ष) पुत्र वधू प० सागरमल शंकरदास की पाचवी पीढी के समकालीन ग्राम जिठोली, जि० मेरठ।

६. बाबा बुद्धादास उदासी (उम्र नहीं बताई) बहुत वृद्ध, उदासीन गद्दी लालपुर, तहसील हापुड, जिला गाजियाबाद (डाकखाना बाबूगढ छावनी)।

७ छोटेलाल भारद्वाज सुपुत्र श्री भीकम देव भारद्वाज (६० वर्ष), गढमुक्तेश्वर, जिला गाजियाबाद।

८. सिपट्टर सिंह, उज्जल सिंह, प्यारे सिंह, मगला (सैनी) जयकरण सिंह तोमर, रामेश्वर सिंह तोमर, "निष्कलंक" सभी जिठोली–मुरलीपुर क्षेत्र के निवासी।

९. जनरल पब्लिशिंग हाउस (अनिल पडचून किरयाना स्टोर) पुरानी तहसील मेरठ।

१०. मनोहरलाल शर्मा सचिव, सनातन धर्म महासभा गढमुक्तेश्वर।

उपर्युक्त सभी व्यक्तियों के लिखित कथन, मौखिक साक्षात्कार तथा पत्र–व्यवहार से लेखक ने स्वामी शकरदास का जीवनप्रासाद निर्मित करने मे सहायता ली है। इन्हें परिशिष्ट में स्थान देकर बाह्य साक्ष्य के रूप में स्वीकार किया गया है।

४.१.३ जीवन वृत्त (जन्मतिथि)

स्वामी शंकरदास के जीवन परिचय के सबंध में उनके ही काव्य में यद्यपि अनेक अर्न्तसाक्ष्य

विद्यमान हैं, जिनसे उनके जीवन से संबंधित पर्याप्त जानकारी मिल जाती है। परन्तु उनके जन्म की तिथि का निर्धारण निश्चय ही विवाद का विषय बन गया है। स्वामी शंकरदास ने अपने जन्म के विषय में इस प्रकार उल्लेख किया है :

उन्नीस से ग्यारह की साल में,
जेठ माह, अरु दसवीं साल में।
शकरदास आ फॅसे जाल में,
लिया जन्म मिली बाटी बूर की[1]।।

इस अन्तर्साक्ष्य के आधार पर स्वामी शंकरदास की जन्मगणना संवत् उन्नीस सौ ग्यारह के ज्येष्ठ माह मे स्वामी जी की उम्र १० वर्ष थी और उसी समय बाल्यावस्था में ही उनकी शादी हो गयी थी। 'आ फॅसे जाल में'। इस प्रकार जन्म का समय संवत् १९११ – १० वर्ष = १९०१ हुआ।

भीष्मपर्व के लेखन की तिथि का वर्णन इस प्रकार करते हैं –

नव वाण नव चन्द्र संवत विक्रम मॉहि।
भाद्र कृष्ण पक्ष द्वादशी, बुध सों लह्यो।[2]

इस अर्न्तसाक्ष्य से १,९,१,९ में चार अंक प्राप्त हुए। नव से नौ वाण से एक तथा चन्द्र से एक की अभिव्यक्ति संभव होती है। जिनसे इस कृति को प्रारम्भ करने का समय सवत १९१९ प्राप्त होता है। स्वामी जी ने महाशक्ति के दो सौ दस नाम की एक स्तुति संवत १९४४ मे लिखी।[3]

संवत १९६१ में उन्होंने वैद्यक के पद पूरे किए थे।

४.१.४ मृत्यु तिथि

स्वामी शंकरदास की मृत्यु–तिथि उनके शिष्य प्रीतमदास के निम्नलिखित दोहे में संवत १९६९ विक्रमी सिद्ध होती है :

सम्वत ६९ कार्तिक, सुदी छठ शुक्र अखीर।
अष्ठ बजे दुपहरे बाद के, शंकर तजे शरीर।।

इस प्रकार वे संवत १९६९ – (संवत १९०१) ६८ वर्ष की अवधि तक जीवित रहे।

लेकिन वृद्ध भक्तजनों से साक्षात्कार के आधार पर स्वामी शंकरदास की उम्र लगभग ७० वर्ष की बताई। जबकि उनके पोते चले ने भी उनकी उम्र ६८ वर्ष के आस पास बताई। स्वयं स्वामी जी द्वारा लिखित उनकी शादी दसवीं साल में हो गयी थी। वे मायाजाल में फंस गये थे। इस आधार पर

---

१. स्वामी शंकरदास, बुद्धिप्रकाश, पृ० १००
२. वही, भीष्मपर्व, पृ० ५
३. वही, ब्रह्म प्रकाश, पृ० २१५

उनका जन्म ज्येष्ठ माह संवत १९०१ ही ठीक बैठता है। इस प्रकार उनका जीवन ६८ वर्ष का माना जा सकता है।

४.१.५ जन्म स्थान

आपके पिता कल्याणदत पिलखुआ "रम्मपुरा" के निवासी थे। आपकी माता दानकौर आपके नाना की अकेली सन्तान थी। इसलिए आपके पिता अपनी ससुराल जिठौली आकर बस गये थे। आपका जन्म रम्मपुरा में हुआ था। आपने इस प्रकार की जानकारी अपने अन्तर्साक्ष्य में इस प्रकार दी है ·

मकसत दुतियाने का निकास हुआ,
पिलखुआ में बसे, बढै अन्न जल प्रकास का।
कल्याणदत्त नाम देह, पिता का विख्यात हुआ,
दानकौर माता, फन्दा टूटा यम–त्रास का।।
आध गौड विप्र और गौत्र वशिष्ठ म्हारा,
मेरठ का जिला, डाकखाना मऊखास का।
गढ की सडक जात, मौजे का जिठौली नाम,
छोटा सा स्थान, जिसमें बना शंकरदास का।।[1]

यह गॉव मेरठ शहर से पूरब दिशा में चार कोस की दूरी पर गढ गंगा को जानेवाली सडक के दाहिनी ओर बसा हुआ है जो चन्द्रवंशी तोमर राजपूतों की बस्ती है। आपके बाबा का नाम ख्यालीदत्त था, ऐसा अन्तःसाक्ष्य से पता चलता है :

मेरठ शहर से पूरब दिशा चार कोस है ग्राम।
गढ़ गंगा की सड़क है बसत जिठोली ग्राम।
ख्यालीदत्त के पुत्र जी, हुये कल्याण सिह महाराज।
तिनके गृह शंकर हुए, हरिजन सन्त समाज।।
ग्राम जिठौली बसत है "चन्द्रवंशी रजपूत।
जिसमें बस कविता करें, शंकरदास अवधूत।।[2]

४.१.६ शिक्षाक्रम

आपकी शिक्षा–दीक्षा नहीं हुई। यह बात आपने स्वयं भी इस प्रकार स्वीकार की है .

सब मुनियों का दास हूँ, मैं मूरख मतिमन्द।

---

१. आचार्य क्षेमचंद 'सुमन', दिवंगत हिन्दी सेवी, (प्रथम भाग), पृ० ५५

२. स्वामी शंकरदास, ब्रह्मज्ञान प्रकाश, पृ० २

पढा लिखा मै हू नहीं, नही रच जानू छन्द ।।[1]

स्वामी शंकरदास स्वय ब्रह्मज्ञान प्रकाश में कहते हैं कि मैं अक्षर भेद में पारंगत नही हूँ। उन्होने गॉव में ही अपने मामा पं० जीतराम से धर्म सनातन की नारदी विधि से शिक्षा पाई थी। उस समय गॉव के आस–पास उच्च शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं था न ही कोई ऐसा साक्ष्य मिलता है कि किसी आश्रम या गुरूकुल में उन्होंने विधिवत शिक्षा प्राप्त की हो। किसी अंग्रेजी स्कूल में वे नहीं पढे क्योंकि उनकी रचनाओं में अंग्रेजी शब्दो का पूर्णतया अभाव है। उस समय पिंगल, धर्मशास्त्र, नैतिक शिक्षा का सबसे बडा पांडित्य स्थल काशी को माना जाता था। वे कभी काशी नहीं गये क्योंकि उन्होंने स्वय लिखा है[2]

"केदारनन्द हरि भजन भक्त हैं उनके हृदय में भक्ति का अंकुर उपजा तब एक शकरदास ब्राह्मण से मिलाप हुआ। परन्तु स्वामी शकरदास कुछ पढे–लिखे नहीं है।

४.१.७ जाति

स्वामी शंकरदास की जाति का पता उनके द्वारा निर्मित धर्मशाला (ग्राम जिठौली) मे आज भी स्थित है। जिसका मुख्य द्वार पूरब दिशा में अन्दर घुसते ही बडे हाल में तीन द्वारों मे से मध्य द्वार पर स्थित मकराने के सफेद पत्थर पर शिलालेख लगा हुआ है जिस पर लिखा है "पंडित कलुराम (कल्याणदत्त) का बेटा शकरदास"। अपनी रचनाओं में भी उन्होंने अपने को गौड ब्राह्मण अभिहित किया है।

४.१.८ परिवार

स्वामी शंकरदास का परिवार पिलखुवा के पश्चिम में स्थित "रम्मपुरा" खेडे से जिठौली मे आया था। आपकी माता दानकौर अपने पिता की इकलौती सन्तान थी। पिता को भी कोई पुत्र न होने से उन्होंने दानकौर को जिठौली मे बुला लिया। इस प्रकार बालक शकर का जन्म पिलखुवा "रम्मपुरा" में हुआ तथा शैशव से निर्वाण तक का समय जिठौली में बीता। स्वामी शंकरदास के वश–वृक्ष के विषय मे स्वल्प जानकारी श्रीमती सरूपी देवी ने दी।

सरूपी देवी अपना कोई दूर का रिश्ता शंकरदास के साथ बताती हैं क्योंकि स्वामी जी के कोई सहोदर भाई भी नहीं था। वे अपने पिता कल्याणदत्त तथा माता दानकौर की इकलौती सन्तान थे। स्वामी शकरदास के दादा–परदादा दत्याने में रहते थे। गढ़–हापुड़ रोड पर वहॉ से इनके पिता भी वचपन में आकर पिलखुवा में बस गये थे। फिर वे बाल शकर को उसके नानके जिठौली ले गये।

---

१. स्वामी शंकर दास, ब्रह्मज्ञान प्रकाश, पृ० ६

२. वही

यह बालक बचपन से ही तुनक मिजाज तथा शौकीन था। अच्छा खाना, अच्छा पहनना तथा प्राचीन पुस्तकें पढना इसका शौक था। १० वर्ष की अवस्था में आपका विवाह गौड परिवार की सुकन्या से हो गया। उसने केवल एक पुत्री को जन्म दिया। कन्या चन्द्र रश्मियों के समान धवल–कांतिपूर्ण थी। चन्द्रकलाओं की भॉति उसकी चचलता से प्रभावित हो स्वामी जी ने उसका नाम "चमेली" रखा। चमेली की शादी किशोरावस्था मे गॉव भूडबराल निकट परतापुर रेलवे स्टेशन जिला मेरठ में कर दी गयी। "चमेली" को पिता ने बध्यापन दूर करने की औषधियॉ भी पहुचाई लेकिन उसकी कोख निपूती ही रही। अन्त में चमेली की भी निःसन्तान इहलीला समाप्त हो गयी और इस प्रकार स्वामी जी के वश–वृक्ष की जडे सूख गयी।

४.१.६ गृहस्थाश्रम -

स्वामी शंकरदास ने पत्नी की मृत्यु होने तक सभी संस्कार–कार्य तथा सुकर्म किए जो एक आदर्श गृहस्थी को करने चाहिएँ। शिष्य–परम्परा के अनुसार यों तो उनका परिवार बहुत बडा था लेकिन निजी परिवार में आप पत्नी सुखपूर्वक रहते थे। उन्होंने अपने पिता के बनवाये हुए घर मे भी वृद्धि की। एक बैठक (अतिथि–सत्कारहेतु) एक बैठक का कमरा तथा छत पर जाने के लिए सीढियॉ भी बनवाई जो कि लेखक ने स्वय देखी है। उनके घर (निवास) का मुख्य द्वार उत्तर दिशा में खुलता है। पक्की छोटी ईटों का गारे के साथ प्रयोग किया गया है। मुख्य द्वार के (फाटक) किवाड नक्काशीदार शीशम की लकड़ी के बने हुए है। कुल मिलकार मकान में ३० फुट + ३० फुट का चौक, चारों ओर पॉच कमरे जो एक दूसरे में खुलते चले जाते हैं। घर में बहुत पुरानी टूटी–फूटी शीशियों के ढेर खरल, डिब्बे क्वाथ बनाने का उपकरण आज भी याद दिलाते है कि स्वामी जी दवाई–गोली का काम भी करते थे। उनके मकान का ताला हर समय बन्द रहता है केवल मरम्मत के लिए ही खोला जाता है क्योंकि सरूपी ने तो बराबर में अपने नये दो कमरे तथा बरामदा बना लिए हैं। मकान में लगे मोटे लोहे के ताले की चाबी हर समय सरूपी अपने ढुंग्गें में खौंसे रहती है और हर किसी को मकान खोलकर नहीं दिखाती। आस–पास के चौबीस गॉव ठाकुर तोमर (चंद्रवंशी, पाण्डवकुलीन) राजपूतों के हैं, वे सभी स्वामी शंकरदास के ज्ञान तथा वाणी से मुग्ध होकर उन्हें अपना कुल पुरोहित मानते थे, क्योंकि इस गांव में एकमात्र यही ब्राह्मण परिवार था। गुरू पूर्णिमा पर तथा यदा–कदा अपना पैदा किया खाद्यान दाद्दा शकर के यहां पहुंचाते थे। स्वामी जी उसे स्वीकार करते थे। परिवारकी रोजी–रोटी के लिए औषधि–व्यापार तथा

मर्दाना सॉग, रामलीला, झडी, भजन, उपदेश करने से जो धन प्राप्त होता था उससे परिवार का खर्चा चलता था।

४.१.१० राजशाही ठाट-बाट

स्वामी शंकरदास ने सेठो तथा लाला वर्ग से अनुनय विनय कर जो धुणा बनवाया उसमें वे बडे ठाट बाट से रहते थे। आस–पास के क्षेत्र मे आठ–दस भैस बधी रहती थी। भक्त उनकी सेवा करते थे। वे धुणें को ही सम्पत्ति थी। दूध, घी की मौज शिष्यों की पूरी फौज के लिए पर्याप्त होती थी। स्वामी जी के पास धूम्रपान के दो उपकरण थे। एक लम्बी गर्दन की कली तथा दूसरा चिलम पोशी हुक्का। हुक्के पर चॉदी की चिलम तथा चांदी का चिमटा था। वे अपने हुक्के को किसी को नहीं पीने देते थे। उनका कोषाध्यक्ष (खजांची) किनापुर का ठाकुर जवाहर सिंह था। जब खजाने मे धन कम हो जाता था तो खजाची की सूचना पर स्वामी जी अपनी गायन–मण्डली को लेकर फिर धनार्जन के लिए निकल पडते थे। भोजन मे अधिक मिर्च खाना उनका स्वभाव था। आगामी भ्रमण तक वे धुणे पर शाही ठाट–बाट से रहते थे। इसी समय वे रचना करते थे। हुक्का पीते रहते और चारों और लेखक (शिष्य) बैठ जाते। उनकी यह विशेषता थी कि यदि चार लिखनेवाले हैं तो वे उन्हें अलग–अलग विषय देकर बारी–बारी से चारों को लिखवाते रहते थे। धुणे पर जब कीर्तन होता तो स्वामी जी मस्ती में आकर खडताल बजाया करते थे। बजाते हए खडताल को हवा में छोड देना तथा दाये हाथ की खडताल को बायें हाथ मे पकड लेना तथा बायें हाथ की खडताल को दायें मे पकड लेना उनके लिए बहुत सरल था। ताल और लय में कोई अवरोध नही हो पाता था।

४.१.११ गुरू व पंथ-सम्प्रदाय

स्वामी शंकरदास के गुरू ठाकुर गोपाल सिह थे। गोपाल सिंह पढे लिखे नही थे। वे भगवद्भजन में अपना समय बिताया करते थे। गौचारण उनकी आजीविका का साधन था। आप गृहस्थी थी। वे ग्राम सिसौली के रहने वाले थे। सिसौली और जिठौली दोनों गांव पास–पास ही हैं। गोपालसिंह के कण्ठ में सरस्वती थी। उनका कण्ठ चक्र स्पष्ट मधुर तथा कर्ण–प्रिय था। जब वे प्रभु भजन गाते थे तो एक–एक मील तक रात्रि में उनकी स्वर लहरी गूज जाती थी। उनकी आवाज पर बाल शकर आशिक हो गए और सहज भाव से उन्हे गुरू स्वीकार कर लिया। तब गुरू ने निर्गुण की आत्मानुभूति से शिष्य को अवगत

करा कर गुरू–मंत्र दिया। स्वामी शंकरदास स्वयं किसी पंथ को नहीं मानते थे। वे सनातन धर्म के कट्टर समर्थक थे और सगुण–भक्ति उपासना में ही अपना समय व्यतीत करते थे।

४.१.१२ स्वामी शंकरदास की धर्मशाला

यह धर्मशाला आज जिस रूप में है। वहॉ वह पहले स्वामी जी का धूणा था। जहॉ शिष्य मण्डली अपनी–अपनी रूचि अनुसार बैद्यक का ज्ञान प्राप्त करती थी या कवि शंकरदास के भजनों को लिखती रहती थीं। सत्संग, भण्डारा, कीर्तन, संगीत अभ्यास भी यही चलते थे। जो शिलालेख धर्मशाला में लगा हुआ है उसका आकार १५" + १५" वर्गाकार है। सफेद रंग का संगमरमर है।

"पंडित कालुराम को बेटा शंकरदास ने ये स्थान धर्मशाला वास्ते, धुणे के आराम के लिए बनवाया है इसमें किसी का दावा नहीं है पुण्य के हेत बना है' ।

"संवत १६५० मिती सुदी दोयज लिखा अगस्त की तारीख २२" !

इस धुणे को सेठ आनन्द स्वरूप मेरठ निवासी ने बनवाया था। जब यह खण्डहर हो गया तो गॉव की जनता ने एक स्मारक के रूप में चन्दा कर, इसका जीर्णोद्धार किया। यह धर्मशाला गॉव के बीचों–बीच है। मुख्य द्वार पूरब दिशा लोहे का गेट, पश्चिम में रिहायशी मकान, उत्तर में रिहायसी मकान, दक्षिण में ४० फुट चौडा आम रास्ता है। जब लेखक धर्मशाला में गया उस समय गाव के कुछ लडके तख्त पर बैठे पुस्तक पढ रहे थे। सुहावना वातावरण है २५ + २५ फुट के बड़े कमरे को सुन्दर बनाया गया है। तीन द्वार कमरे में खुलते हैं। आज भी विशेष अवसरों पर पंचायत सत्संग आदि यहां आयोजित होते रहते हैं। अपने गॉव जिठौली में धर्मशाला बनवाने के लिए उन्होंने अपने पदों को गाते समय भक्तो से यह याचना भी की कि निर्धन ब्राह्मण को सहारा देकर मेरे लिए एक धर्मशाला का निर्माण कराने की कृपा करें। सेठ आनन्द स्वरूप पत्थरवाले मेरठ निवासी ने उनकी यह मनोकामना धन देकर पूर्ण की।

४.१.१३गुरू प्राप्ति

आपकी भेंट बाल्यावस्था में ही सिसौली निवासी श्री गोपालसिंह से हो गई थी जो आध्यात्म के अच्छे अनुभवी थे। यह आपका सौभाग्य ही था कि आपको गोपाल सिंह जैसे सतगुरू ने ब्रह्म की सहजानुभूति करा के आदि और अनादि पद का परिचय दिया –

स्वामी शंकरदास का वंश वृक्ष

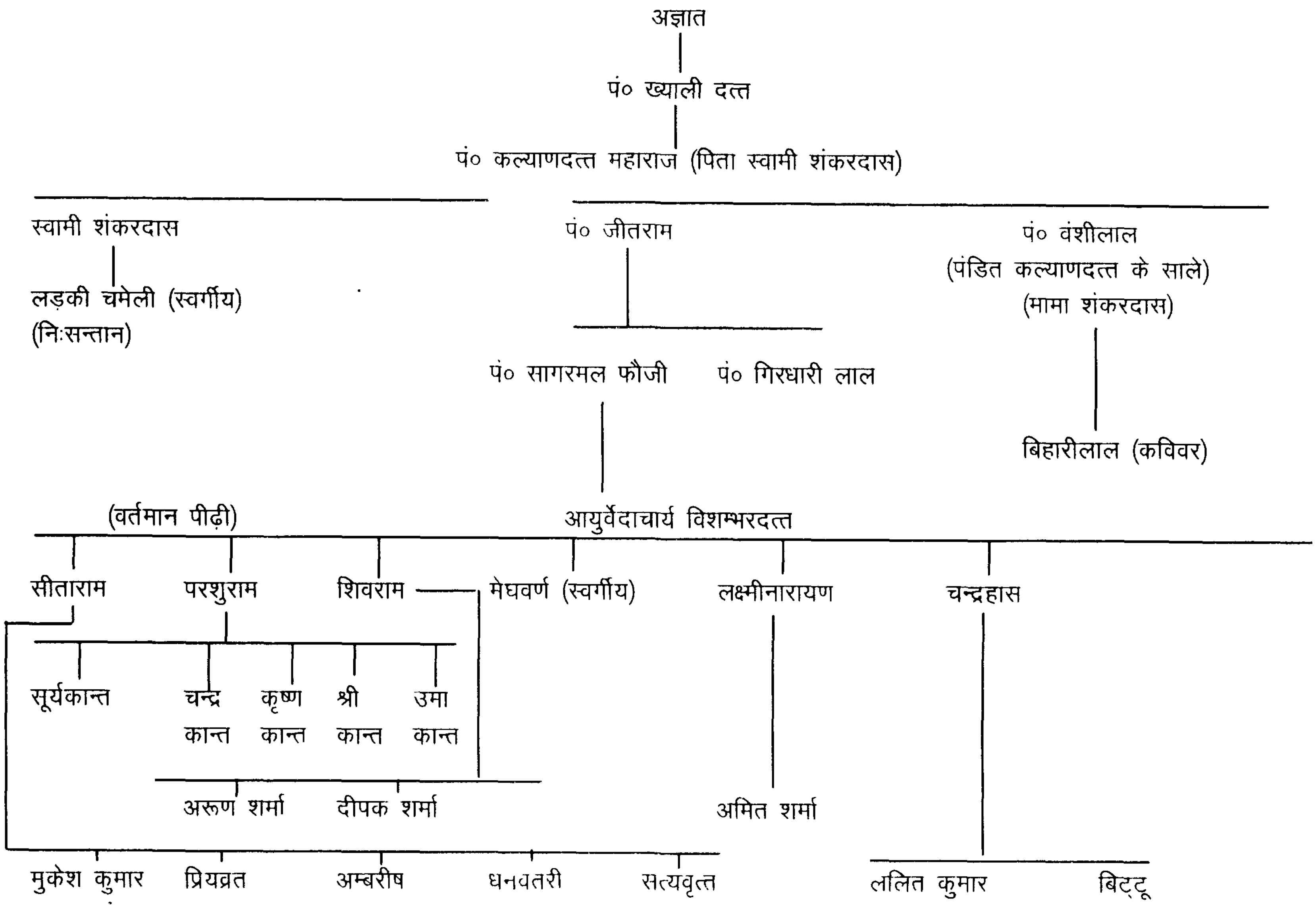

मिले हम बालापनगोपाल से,
सतगुरू गये पाय करम से।
बाल अवस्था में गहि लीना।
अनुभव ज्ञान दया कर दीना
आदि अनादि पदको चीना।[१]

४.१.१४ वैराग्य

४५ वर्ष के लगभग स्वामी शंकरदास को वैराग्य हो गया था। उसी समय उन्होंने मुक्ति प्रकाश बुद्धिप्रकाश, सनातन भजनमाला आदि पुस्तकें लिखी थी। इससे पहले वे कथा काव्यों के लेखन मे ही ''रमते राम'' रहे। शंकरदास की रचनाओं के कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं।

मगन बेबा भई सारी।
सुनी मरियाद ग्यारे की।
बेबॉ की होनी लगी सादी।
खसम चाहने लगी दादी।
भला हो दयानन्द स्वामी का।
भानजा खसम मामी का।[२]

नहीं मक्का मदीना महज कुरान तू है।
नहीं हिन्दू ईसाई तुर्क ईमान तू है।
नहीं मन्दिर शिवाला बस्ती मैदान तू है।
नहीं समझे भेद को कातिल शैतान तू है।[3]
कोई कहै मैं तो ब्राह्मण पूजा करूँ और सेऊँकाशी।
छत्री कहैं हम छत्री पूरे, कर्म तजे है हलके उपासी।
वैश्य कहैं हम धन में बडे हैं, शूद्र भरत अब सबकी हाँसी।
शंकरदास विचार कहैं नित छतीस जात हुए सन्यासी।[४]

---

१. शंकरदास, ब्रह्मप्रकाश, पृ० १२१
२. आर्यसमाज पर्व (पांडुलिपि), पृ० ५
३. ब्रह्मज्ञान प्रकाश, पृ० १२०
४. वही, पृ० १४८

पढे बिन पंडित कहलाते, बिन न्हाये टीका जो लाते।
जिसके घर पाठ करन जाते प्रीत उनकी नारी से चाहते।
कलियुग में कामी और बहुत से हरामी लोग।
मदिरा मांस भक्ष और वैश्या से करे भोग।
पुत्री ऊपर दाम लेते भूखे मरे होय रोग जी।
टोपी तो बनारसी और धोती तो किनारी दार
रेशमी तो बस्तर पहने पैर मे खडाऊँ डार।।[१]

द्वारिका पुरी बद्री केदार मे।
श्वेत उडीसा हरिद्वार मे।।
घर भूली फिरे दरबार मे।
ऐसे खीज हाथ नहीं आवते।।
है तेरा तुझ में प्यारा
अब समझो पते बतावे।[२]

जल थल बन कोई पखान पूजे तीरथ फिरे राम को बूझे।
इतने ना घट आत्म सूझे वह क्या फिरे गॅवार।।

जोगियो का ये ही मत मास भक्ष मदरा पान।
जो जाके चेला होता, लेते उसके फाड कान।।
सर्वज्ञ को अल्पज्ञ बतावे, महापाप जो रहे लवार।
पतिव्रता के धर्म तोड दिये चारो वर्ण कर दिये ख्वार।।[३]

चरणों का हाल कुछ थोडा सा बखान किया।
के वैश्य बेटी बेची और ठीक दाम लिया।
बूढ़े को बेटी ब्याह के बज्र का हृदय किया जी।

---

१. ब्रह्मज्ञान प्रकाश, पृ० १४८
२. वही, पृ० १३२
३. आर्यसमाज पर्व (पाडुलिपि), पृ० ३

वैश्य तो बीसे हुए, जिसमें माना आनन्द।[1]

जो वैद्य बने और आन के गरम गिरावे।
अपस्वस्थ समझे कूं दया न आवे।
फिर पड़ता नरक दरम्यान कठिन दुःख पावे।
कई कल्प नरक में रहे पडा पछतावे।[2]

श्रुति कहें सब संत आज तक, सुध बुध जिनकू पाई है।
सब रोगों की एक जडी है, ना हाथ किसी के आई है।
जो पिछान बूटी को लेवे फिर कैसी दुखदाई है।
हरि नाम से प्रसिद्ध वो बूटी, सतगुरु ने बतलाई है।।[3]

तब तक है अहंकार क्रोध–मद तृष्णा मोद है दुखदाई।
सब विकार मन की उपासना, राग द्वेष इन सग भाई।
परलोभी निन्दक और कामी, लम्पट–लबार हो अन्याई।
"शंकर" कहे समझ के देखों, अब तो समय ऐसी आई।

ओच्छे छलबल त्याग दे, लम्पट लोभी काम।
ममतामय अहंकार तज, जद पावो हरिधाम।[4]

नास्तिक पंथ चले प्रभांसी।
जोगी गुसाई और सन्यासी।
वैरागी, निरमल, दास, उदासी।
लिया धार वेष किस काज कू, यमपुर जाने वालो का।[5]

---

१. ब्रह्मज्ञान प्रकाश, पृ० १८
२. वही, पृ० ११७
३. शंकरदास मुक्तिप्रकाश, चौथा भाग, पृ० ३३
४. वही, पृ० ३३
५. वही, पृ० ५८

साधु हुए माया वाले, गृही भूखे ढोते डले।
कहने मात्र अवधूत रहे, परम हसो ने माल छले।

हैं घीसा पंथी बेनामी।
अजी ऐजी कलजुम में ऐसे हुए शठ स्वामी।
छतीस जात हुए सन्यासी, लम्पत लोभी कामी।[१]

गृहस्थियों को नहीं मिले नमक उधारा।
कल के साधु करें साहुकारा।
मन मंदिर ले, ठाकुर द्वारा।
शंकर कहैं सुन लैचार है।
बने कम से बड भागी जी।[२]

खाते दूध मलीदे अंडे।
खाकर माल बने सब सण्डे।
बांधे सब ताबीज के गण्डे।
ये तो आगे का परमाद है, खोटे उत्पात करे है।
वो संत नही मनुजाद है जो मिल छल घात करे हैं।[३]

कलीयुग में कौन फकीर है, शठ लम्पट पथ चले हैं।
जिस पै घर नहीं जाय कमाया।
उसने भगवा रूप बनाया।
सबसे भला मांग और खाया।
ये छलियां की तासीर है, धोखे से माल छले।१।
चून बेच घर कर लिया भेला।
कौन गुरू और कौन है चेला।

---

१. शंकरदास, चौथा भाग, पृ० ६२
२. वही, पृ० ५६
३. शंकरदास, बुद्धि प्रकाश, पृ० ३३

गीता पढ़े लगाकर हेला।
सुख में आनन्द शरीर है, बुरे काम से नही टले हैं।[1]

अजी एजी कलजुग में नीच हुए संयासी।
जोगी बैरागी, दादू पंथी, सुथरे साई, दास उदासी।

दयानन्द गेर फन्द मोहे सभी नर नार।
आर्या चमार कीने सभी धर्म गये हार।

ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शुद्र अपना धर्म गए हार।
धोबी तेली धुना जाट, गुजर अहीर कुंम्हार।
सानी, माली, उदबुद जाति लिया है संयास धार।
गिरी, पुर, बन परवत भारती तो कहलावें चूहडे – चमार
जाय बसे सब काशी।[2]

श्राद्ध और मूरति का पूजन दुष्ट सबकू तज गए।
नास्तिकों के हुए चीते, दुष्ट दल सब सज गए।
आर्या सब हुए पापी, धर्म नट सठ भज गए।
डूबेंगे इस पंथ वाले, पाप से घट रज गए।
विधवों के ब्याह ठहराए, नही एक कई करवाए।
महापापी अलग कराए, अधर्म तो कुल में छाए।[3]

जो हाल सुनो कलयुग का, अब तुम बैठो आसन मार।
ब्राहमण वेदों से हीन, बिगड गया दीन कर्म की हानी।
भेजी साहुकार के, रोटी करने मिसरानी।
लाला थे धन से अज्ञान, भूले पहचान, कुमत मन ठानी।

---

१. शंकरदास, मुक्ति प्रकाश, चौथा भाग, पृ० ५७
२. शंकरदास, बुद्धिप्रकाश, पृ० ५७
३. वही, पृ० १५१/१५२

किया उसी समय से भोग, प्रिये सम जानी।
बीज बदल ऐसे गया, छाय रहा कलि काल।
वेद विहू ने विप्र कुल, विप्र महा कगाल।[1]

वैश्य वरण गया हार धर्म तज, करन लगे मदपान।
मिसरानी ठकुरानी भँगन चमारी से करत प्यार।
धींमरी तुरकानी देवी, कोई घर में लेय डार।
अगरोहे के अगर वाले, कहते हम सहुकार "जी"।।
आप तो बद फैली करते, घर की छोडे दीनी नार।
सेठ ने दुकान खोली करन लगे ब्यौपार।
सेठानी ने दुखी होके पास रख है कहार।
फिर कहाँ रहा ईमान।[2]

तीस दिन के रोजे रखत, बिना विचार क्यों भूखे मरते।
जीवतन से नावे डरते क्या लिखा है देख कुरान में,
नहीं पावे जरा ठिकाना।[3]

पूजते प्रेम ऊत और पीर, सब भूले लोग भरम मे।
आन देव की पूजा करते।
समझे बिना डण्ड ये भरते।
देख कबर सैय्यद की डरते।
धर धर करत शरीर नहीं अपने रहें धरम में।।१।।
बकरे मुर्गे सैनक देते।
मरे हुवों से परचे लेते।
बिन विद्या मूरख नहीं चेते।
क्या कीजै तदबीर, सुन, सुन छुप हुए शरम में।।२।।

---

१. शंकरदास, बुद्धिप्रकाश, पृ० १२३
२. शंकरदास, ब्रह्मज्ञान, चितामणी, पृ० १२७
३. शंकरदास, बुद्धिप्रकाश, पृ० ६६

भगी चमार धींवर भडभूजा।

स्याने बने, खेल दे बूझा।

कुकरम करें, बतावें पूजा।

लौट गई, तकदीर, दुख दारुन लिखे करम मे।।३।।

चारो वर्ण के चित्र हले है।

नीचो मे मिल नीच रले है।

सहे सहे मौंडो ने छले है।

ठगिया बने गए फकीर, शकर धर ध्यान धरम मे।।४।।[1]

४.२ पंडित नत्थूलाल मानसिंह

कुरु जनपद की स्वॉग परम्परा का आरम्भ स्वामी शकरदास के परमशिष्य नत्थूलाल मानसिह से होता है ये ग्राम जावली, जिला गाजियाबाद के रहनेवाले थे। इनका शरीर अत्यन्त भव्य और कायापुष्ठ एवम् विशाल थी। ये छ फुट से भी लम्बे और बलवान् थे। ऐसा बताया जाता है जब ये गरजते थे तो इनकी आवाज दो–दो कोस तक चली जाती थी। इन्होने अपने समय मे स्वॉग के लगभग ३६० अखाडे तैयार किये थे। यह बताया जाता है कि इनके इन अखाडो मे ७५० ढोलकें थी। इनके स्वॉगो को देखने के लिए लोग दस–दस पन्द्रह–पन्द्रह कोसो से पैदल चलकर आते थे। अपने समय मे शादी एवम विवाह आदि शुभ अवसरों पर इनको अवश्य बुलाया जाता था और इनका आगमन मेजबान की उच्च सामर्थ्य का सूचक होता था। नत्थूलाल मानसिह और उसके अखाडे के किसी भी स्वॉगी को बुलाना वैभव का प्रतीक माना जाता था।

स्वॉग की परम्परा के जन्मदाता नत्थूलाल मानसिंह का स्मरण उनके शिष्य बडे आदर के साथ करते हैं। वे अपने गुरु को नमन करके स्वॉग आरम्भ करते है।

मैंने सतगुरु नत्थूलाल मानसिंह मिले मैं कहु नवाकर शीश

इनके शिष्यों द्वारा निर्मित रागनियो मे गुरु नत्थूलाल मानसिह का नाम बडे मान के साथ लिया जाता है। कुरु जनपद में स्वॉग परम्परा का नाम आते जिठोली, जावली जैसे स्वॉग तीर्थों का नाम स्वत. ही जुबान पर आ जाता है।

---

१. शंकरदास, बुद्धि प्रकाश, पृ० ३६

४.२.१ जन्म तिथि

इनकी जन्म तिथि के बारे मे कोई निश्चित प्रमाण नहीं मिलता किन्तु इनके पुत्र जीतराम शर्मा हीरालाल शर्मा के प्रमाण के आधार पर इनकी मृत्यु ८५ वर्ष की अवस्था मे सन् १६६५ मे हुयी इस आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इनका जन्म सन् १८८० मे जावली गॉव मे हुआ और इसी गॉव मे देहावसान भी हुआ। इतना अवश्य है कि स्वॉग के लिए इन्हे लगभग पूरे उत्तर प्रदेश ओर हरियाणे मे बुलाया जाता रहा था उस समय हरियाणा कोई अलग प्रान्त नहीं था और ये पजाब का ही एक हिस्सा था।

४.२.२ शिक्षा

इनकी शिक्षा के विषय मे कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिलता किन्तु इतना अवश्य है कि इन्हे वैद्यदिक पुस्तको और सस्कृत की पूरी जानकारी थी पडित जी को पूरी की पूरी रामायण कठस्थ याद थी अपने गॉव मे ही वैद्यगिरि करते थे और स्वॉग के बाद ये इनका जनसेवा का कार्य माना जाता था।

४.२.३ गुरु

इनके पुत्र पडित हीरालाल के साक्ष्य क आधार पर यह स्पष्ट है कि पडित नत्थूलाल मानसिह मूँगा गुर्जर के पास गये और उनसे कहा कि मुझे अपना अपन। शिष्य बना के मूँगा गुर्जर ने इनकी जाति के विषय मे जानकर कि पडित जी मेरी जाति से उच्च जाति के है इसलिए पडित जी को अपना शिष्य बनाना उनके अधिकार क्षेत्र के बाहर था। इसके पश्चात वे स्वामी शकरदास जी के पास गये और उनसे निवेदन किया कि वे मुझे अपना शिष्य बना ले क्योकि मूँगा गूर्जर ने उन्हे अपना शिष्य बनाने से मना कर दिया है। इस पर स्वामी शकरदास जी ने मूँगा गूर्जर को आदेश दिया कि वह पडित नत्थूलाल मानसिह को अपना शिष्य बना ले और वे उनके दादा गुरु रहेगे हालॉकि स्वामी शकरदास जी प० नत्थूलाल मानसिह के दादा गुरु या दूसरे शब्दो मे गुरु माने जायेगे।

४.२.४शिष्य परम्परा

पडित नत्थूलाल मानसिह की शिष्य परम्परा बहुत लम्बी है ३६० अखाडे होने से ही यह प्रमाण मिलता है कि प० नत्थूलाल मानसिह के कम से कम ३६० शिष्य रहे होगे इनमे से प्रमुख नाम इस प्रकार

है –

१. पंडित लक्ष्मीचन्द शर्मा, सूप, मेरठ

२ पंडित रघुबीर शर्मा, सूप, मेरठ

३ बलवन्त उर्फ बुल्ली नागल, मेरठ

४. दीन्ना गांधी मेरठ

५ रामसिंह नाई, खेकडा मेरठ

६. जहाँगीरा मीर, रटौल, मेरठ

७. फखरू मीर, रटौल मेरठ

८. शकूर मीर, आलमपुर, गाजियाबाद

९ चतरसैन त्यागी, डूडाहेडा गाजियाबाद

१०. असलम अकरम, मस्तान खेडा, मुज्जफ्फरनगर

११ शरीफ मीर, मस्तान खेडा मुज्जफ्फरनगर

इन शिष्यों ने कुरु जनपद मे स्वॉग परम्परा का अत्यन्त विस्तार किया और ऐसा प्रतीत होता है कि प० नत्थूलाल मानसिह के इन शिष्यो के साथ स्वॉग की यह परम्परा लगभग समाप्त हो जाती है।

आज कुरु जनपद की सस्कृति के उजागरकर्ता स्वॉगो की परम्परा लगभग लुप्त होती जा रही है और सांगीतकार ढूँढने से भी एक दो ही मिल पाते हैं। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि आधुनिक जन–जीवन मे रुचि टी०वी० की ओर अधिक होती गयी है और स्वॉगों मे अभिरुचि लेने वाला जनसमुदाय लगभग समाप्त हो गया है। जीवित सागीतकार अपनी स्वॉग कला का वर्णन करते समय अलौकिक दृश्य प्रस्तुत कर देते हैं और लगता है कि इस कला ने एक समय पूरे उत्तरी भारतीय समाज को अभीभूत कर लिया था। सस्कृति उन्नायक ये स्वॉग आज देखने को भी नहीं मिलते।

पंडित नत्थूलाल मानसिह वस्तु एवम् भोजन के प्रति विशेष रूप से सावधान बताया गया है। ये उस ज़माने के बहुत ही कीमती वस्त्र धारण करते थे और अच्छा भोजन (शुद्ध शाकाहारी) करने दिलचस्पी रखते थे। इन पुत्र प० हीरालाल शर्मा ने बताया कि ये एक समय में आठ लोटे अर्थात ८ पक्के सेर (पक्का एक सेर १ किलो) दूध पी जाया करते थे और रोजाना ८० बादाम खा जाया करते थे इनके पुत्र पंडित हीरालाल ने बताया कि पंडित जी ने लगभग ८० वर्ष की आयु तक स्वॉग किये कमजोर हो

जाने के कारण उन्हें स्टेज पर ले जाकर बैठा दिया जाता था क्योंकि उनकी आवाज की कडक मे कोई भी अन्तर उनके मरने तक नही हुआ ये समर्पित सांगीतकार थे और और ये ही कारण है कि इन्होंने कुरु जनपद को स्वॉग की सुदृढ परम्परा प्रदान स्वॉग करते हुए भी सुने व देखे गये है। अपने पुरुषार्थ से इन्होंने बहुत सी धर्मशालाए और मन्दिर व स्कूल बनवाये।

प० मानसिंह के प्रमुख शिष्यो का विवरण निम्नलिखित है .

४.३ पंडित लक्ष्मीचन्द शर्मा

जन्मस्थान - सूप, मेरठ।

४.३.१ जन्म तिथि

सम्वत १९७६ चैत सुदी तीज वृहस्पतिवार तथानुसार सन् १९१९ अप्रैल माता पिता इनकी माता का नाम सुखदेई और पिता का नाम पं० भरतसिह था। कुरु जनपद में कृषक और जमीदार परिवार के ब्राह्मण अपने नामों के पीछे सिंह लगाते थे। अब ये परम्परा जातिवाद के बढने के साथ–साथ समाप्त होती जा रही है और जाट ही अपने नाम के पीछे सिंह उपनाम का प्रयोग करते है।

४.३.२ पारिवारिक जीवन

पंडित लक्ष्मीचन्द शर्मा के पॉच पुत्र और पॉच पुत्रियां हुयी इन पुत्रों की वंश परम्परा में पंडित लक्ष्मीचन्द शर्मा के चार पौत्री और ७ पौत्र है

४.३.३ गुरु

पं० लक्ष्मीचन्द शर्मा के गुरु पं० मानसिंह जावली वाले हैं। जिनका नाम लक्ष्मीचन्द शर्मा ने अपने स्वॉगों में अत्यन्त आदर और सम्मान के साथ किया है। प्रत्येक स्वॉग का आरम्भ गुरु मानसिंह को शीश नवाकर करते हैं। ऐसा लगता है कि गुरु के स्मरण के बिना उनका स्वॉग नीरस और अधूरा रह जायेगा।

४.३.४ शिक्षा

कुरु जनपदीय सांगीतकारों में पंडित लक्ष्मीचन्द शर्मा सम्भवतः सर्वाधिक पढे लिखे थे। इन्होंने

कक्षा ४ उर्दू माध्यम से और कक्षा ७ हिन्दी माध्यम से उत्तीर्ण किया है। ये आयुर्वेद शास्त्री है और स्वॉग छोडने के बाद से आज तक वैद्यगिरि का कार्य करते है। स्वॉग के दौरान भी ये वैद्यगिरि करना अपना नैतिक कार्य समझते थे।

४.३.५ स्वॉग का समय

पंडित लक्ष्मीचन्द शर्मा अपने सभी सांगीतकारों की तरह दिन में दो बे से छः बजे तक और रात में ११ बजे से दिन निकलने तक स्वॉग किया करते थे। इनके स्वॉगों में हजारों की भीड हुआ करती थी और लोग दस–दस पन्द्रह–पन्द्रह कोस से पैदल पहुँच जाया करते थे। उस समय के गरीब समाज मे स्वॉग मनोरंजन का अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन था और स्वॉगों की रागनियॉ जन–जन की जुबान पर आज के सिनेमा के गीतो की तरह विराजमान रहा करती थी। पंडित लक्ष्मीचन्द शर्मा ने महाभारत के १८ पर्वो को लेकर स्वॉगो की रचना की पूरी की पूरी रामायण के आधार पर धार्मिक स्वॉगों की रचना की इनके स्वॉगों में लोग बडी दिलचस्पी लेते थे और ऐसा बताया जाता है कि ये जिस स्थान पर जम जाया करते थे वहॉ पर अपने गुरु की भॉति ४०–४२ दिन तक स्वॉग करते रहते थे।

४.३.६ स्वॉगों के प्रमुख पात्र

इनके स्वॉगों के प्रमुख पात्र भारतीय पौराणिक मिथक राजा और रानी हुआ करते थे। बादियो का होना आवश्यक था और इंनके स्वॉगों में कम से कम १२ और अधिक से अधिक १५ पात्रो की योजना हुआ करती थी। पं० लक्ष्मीचन्द शर्मा ने आज से लगभग १६ साल पहले सन् १९८६–८७ मे स्वॉग करने बन्द कर दिये थे और अब ये घर पर रहकर वैद्यगिरि का काम करते हैं। प० लक्ष्मीचन्द शर्मा के स्वॉगों मे हारमोनियम, सारगी कलारनेट और नक्कारे का प्रयोग किया जाता था। जिनमें हारमोनियम और ढोलक, सारंगी का महत्व सबसे अधिक होता था। नक्कारे और कलारनेट का प्रयोग बीच–बीच में होता था।

इनके द्वारा खेले गये प्रमुख ऐतिहासिक स्वॉग ये हैं –

१. गोपीचन्द महाराज
२. पिंगला भरतरी
३. दुष्यन्त शकुन्तला

४ हकीकत राय

५ ध्रुव भगत

६ सत्यवान सावित्री

७ नरसी भात

८ कर्ण

९ द्रोपदी चीर

१० सोमनाथ प्रभावती आदि निम्नलिखित है।

४.४ पंडित रघुबीर शरण

ये पंडित लक्ष्मीचन्द शर्मा के बडे भाई थे ये भी सूप जिला मेरठ में पैदा हुए थे। और पंडित जी से पहले स्वॉग करने आरम्भ किये थे। ये अपने समय के अत्यन्त प्रसिद्ध सागीतकार हुए इनका अधिकाश विवरण लक्ष्मीचन्द शर्मा जी के विवरण से प्राप्त हो जायेगा। प० रघुबीर शर्मा भी लम्बी आयु को प्राप्त करके दिवगत हुए और अपने पीछे एक समृद्ध भरा पूरा परिवार छोड गये है। इनके द्वारा खेले गये स्वॉग पं० लक्ष्मीचन्द शर्मा के स्वॉगो से तालमेल खाते हैं। रचनाकार की दृष्टि के कारण भाषा मे थोडा बहुत अन्तर अवश्य हो जाता है। इनके गुरु भी पंडित मानसिह जावली ही हुए है।

४.५ दीन्ना

दीन्ना गाधी गॉव जिला मेरठ मे पैदा हुए। ऐसा बताया जाता है कि दीन्ना पंडित मानसिह के पास उनके शिष्य बनने के लिए गये थ। किन्तु प० मानसिह ने इन्हें काले और कुरूप होने के कारण इनको अपना शिष्य बनाने से इन्कार कर दिया परन्तु दीन्ना एकलव्य की भॉति अपनी जिद पर अड गये और छिप–छिप कर पं० मानसिह के स्वॉगो की प्रतिक्रिया को आत्मसात करते रहे स्वॉग मे पूरी तरह पारंगत हो जाने के बाद इन्होने अपनी अलग मडली बना ली और प० मानसिह को अपना गुरू मानकर उनका स्मरण करते रहे प० मानसिंह ने भी आर्शीवाद स्वरूप इन्हे अपना शिष्य स्वीकार किया।

दीन्ना स्वॉग करते समय इतने एक रस हो जाया करते थे कि दर्शक इन्हीं के भावों के अनुरुप रोने हॅसने और क्रोध करने जैसे आंगिक क्रियाएॅ करने लगते थे। इनके विषय में एक घटना बहुत ही प्रसिद्ध है। ऐसा बताया जाता है कि एक बार उसे गॉव गाधी में ही स्वॉग करना था दीन्ना को उस

स्वॉग में स्त्री का रोल खेलना था। इसलिए उसने अपनी पत्नी से कहा कि तुम आज स्वॉग देखने मत आना लेकिन गॉव की स्त्रिया दीन्ना की पत्नी को जबरदस्ती स्वॉग दिखाने ले गयी। दीन्ना ने जब स्वॉग खेलना शुरू किया। उस स्वॉग मे दीन्ना को वहॉ पर जितनी भी महिलाएँ थी उन सबको अपनी माताओ और बहनो सम्बोधित करके स्वॉग शुरू करना था इतने मे ही भीड में बैठे किसी मसखरे आदमी न कह दिया कि दीन्ना तेरी पत्नी भी भीड मे बैठी है। जो स्वॉग दीन्ना खेल रहा था उस स्वॉग मे किसी के कत्ल करने का भी रोल था। दीन्ना को गुस्सा था ही कि मैने इस पगली को मना किया था। मगर यह नही मानी जब कत्ल करने का समय आया दीन्ना के हाथ मे तलवार तो थी ही भीड मे जाकर दीन्ना ने अपनी पत्नी का कत्ल कर दिया भीड मे भगदड मच गयी और पूरे कुरु जनपद मे हगामा हो गया कि दीन्ना ने अपनी पत्नी को जान से मार डाला इस जुर्म में दीन्ना को फॉसी की सजा हुई फॉसी होने से पहले जज ने दीन्ना से उसकी आखिरी इच्छा पूछी तो जवाब मे दीन्ना ने कचहरी मे ही एक बार स्वॉग खेलने की अनुमति मॉगी उस समय भारत मे अंग्रेजो का शासन था न्यायधीश ने दीन्ना को स्वॉग खेलने की अनुमति दे दी।

दीन्ना ने कचहरी मे जो स्वॉग खेला वहॉ पर जितनी भी भीड स्वॉग देख रही थी वो भीड इतनी मत्रमुग्ध हुयी कि वहीं बैठे–बैठ दीन्ना को रिहा करने की मॉग करने लगी उसके रोल को देखकर न्यायधीश जज को भी लगा कि दीन्ना ने जो कत्ल किया समय के मुताबिक कत्ल करना आवश्यक था तो न्यायधीश ने दीन्ना को बरी कर दिया यह घटना कुरु जनपद मे बहुत मशहूर है।

४.६ शकूर मीर

४.६.१ जन्म स्थान - आलमपुर, गाजियाबाद

४.६.२ जन्म तिथि - सन् १९२२

४.६.३ पिता का नाम - श्री फय्याज मीर

४.६.४ गुरू - पंडित मानसिह जावली वाले

४.६.५ पारिवारिक जीवन

शकूर मीर के परिवार मे उनके चार लडके और ३ लडकियॉ हुयी लडकों से इनके ११ पो और १३ पोतियॉ हैं। इस समय ये दिल्ली सीमापुरी मे निवास करते हैं। शकूर जी को स्वॉग छोडे करीब १८ साल हो गये और आजकल मीर सहाबकव्वाली पढने का पेशा करते हैं।

एक समय मे शकूर मीर का नाम बहुत दूर–दूर तक जाना जाता था। ये उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पहले यह पंजाब का ही एक भाग था। पजाब, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बम्बई आदि बडे–बडे शहरो मे इन्होन अपने समय मे स्वॉग से धूम मचा दी।

४.६.६ स्वॉगों के पात्र

इनके स्वॉगो के प्रमुख पात्र राजा रानी नकलिया (जौकर) हुआ करते थे इनके स्वॉगो मे पात्रो की सख्या कम से कम १० और अधिक से अधिक १५ हुआ करती थी।

अन्य सांगीतकारो की भॉति ये भी रात को ६ बजे से २ बजे तक और दिन मे १२ बजे से रात तक स्वॉग खेला करते थे इन्होने सन् १६४३ से स्वॉग खेलने आरम्भ किये और लगभग १६७७ के आस–पास स्वॉग खेलने बन्द कर दिये। इनके स्वॉगो में सारगी, ढोलक और हारमोनियम का प्रयोग किया जाता थ'।

४.७ अन्य शिष्य

पंडित मानसिह के अन्य शिष्य हुए किन्तु सभी का विवरण उपलब्ध न होने के कारण इनका विवरण नहीं दिया जा सकता है। इनके शिष्यो के नाम से है।

शिब्बी मीर

शिब्बी मीर बुन्दू मीर के शिष्य थे। जिनका अखाडा अलग ही था मानसिह से इनका कोई विशेष सम्बन्ध नहीं था। इतना अवश्य प्रतीत होता है कि पडित मानसिह के प्रति श्रद्धा भाव अवश्य रहा होगा। शिब्बी मीर का जन्म हरसौली, जनपद मुजफ्फरनगर में हुआ था। यह स्थान मुजफ्फरनगर से शामली रोड पर बहारे कस्बे से पूरब की ओर लगभग दो कि०मी० दूर स्थित है। शिब्बी मीर का जन्म सन् १६५५ ई० मे हुआ था आज इनकी उम्र लगभग ४२ साल है। इनके परिवार मे एक लडका और ५ लडकिया है। ये अपने समय में उत्तर प्रदेश दिल्ली, हरियाणा, पजाब, हिमाचल, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि प्रदेशो में स्वॉग करने जाते हैं। स्वॉग के युग मे शिब्बी मीर का नाम बहुत ही प्रतिष्ठित लोगों में गिना जाता है। इनके स्वॉगो में बडा जनान(राजा), जनानी (रानी) तथा नकलिया और साजिन्दों को महत्व दिया जाता है। इनके स्वॉगो में पात्रो की संख्या कम से कम बारह और अधिक से अधिक सोलह होती है। शिब्बी मीर रात में ३ घन्टे और दिन मे ३ घन्टे स्वॉग खेलते हैं। इन्होंने लगभग १२ साल की आयु

से ही स्वाँग खेलने शुरू कर दिये थे। इनके प्रमुख स्वॉग ये है।

१. राजा हरिश्चन्द्र २ पूरण भक्त, ३ रूप बसन्त, ४. गरीब की दीवाली, ५ सरवर नीर और ६ शाही लकड़हारा आदि।

आज के युग मे जब स्वॉग की परम्परा लगभग लुप्त होती जा रही है। शिब्बी मीर जैसे स्वॉगी आज भी इस परम्परा को जीवित रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान कर रहे है।

४.८ चन्द्रलाल बादी

चन्द्रलाल बादी का जन्म लगभग १६२० के आस पास चरखी दादरी (हरियाणा) में हुआ था। इनके पिता का नाम सोहन लाल और माता का नाम चावली था इन्होंने तीन विवाह किये हैं। इनकी पत्नियों के नाम इस प्रकार है – भरभाई, फूलवती, चन्द्रो चन्द्रलाल। ये तीनों पत्नियॉ अभी तक जीवित है इनके चार लडके और चार लडकियॉ है सभी लोग संयुक्त परिवार के रूप में रहते हैं। सभी लोग सयुक्त परिवार के रूप में रहते हैं इन्होंने गुरू मंगलचन्द (हरियाणा) से स्वॉग की शिक्षा प्राप्त की ये अपने समय के कक्षा चार पास है। चन्द्रलाल बादी दिन में एक बजे से ६ बजे तक तथा रात में ६ बजे से २ बजे तक स्वॉग खेलते है। अब तक इनके स्वॉगों की संख्या लगभग ३० है। इनके स्वॉगों के प्रमुख पात्र राजा, रानी, नकलिया आदि होते हैं। चन्द्रलाल बादी बहुत बूढे हो चुके हैं। लेकिन अब भी बराबर स्वॉग खेलते हैं। आज जबकि स्वॉगों का स्थान टी०वी० ने ले लिया है। चन्द्रलाल बादी समर्पित सागीतकार इस परम्परा को जीवित रखने मे महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं। इनके विशिष्ट स्वॉगों में हीर राझा, लैला मजनू, सत्यवान सावित्री और राजा हरिश्चन्द्र का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

४.६ अन्य सांगीतकार

अनेक सांगीतकारो का नाम जिनका कि उल्लेख प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है। उनके अधिक विवरण ना मिलने के कारण उनके सम्बन्ध में जानकारी प्रस्तुत करना कठिन हो गया है। या तो ये सागीतकार अधिकतर मर चुके है या फिर इनके विषय में अधिक जानकारी देने में लोगों को विशेष रूचि नहीं रही है। इनके नाम प्रस्तुत अध्याय में ऊपर दिये जा चुके हैं। प्रमुख सांगीतकारों के स्वॉगों के कुछ अंश यहॉ प्रस्तुत हैं।

ओऽम्

असली सांगीत

पृथ्वीसिंह किरणमइ

प्रणाली :- चन्द्रलाल भाट दत्तनगर निवासी।

वार्ता- सज्जनो किरणमई नटनी का भेष करके अकबर के दरबार मे आती ह।

रागनी इन्दर के समान लगा दरबार अकबर का।
पृथ्वीसिह अफसोस करै अपणे घरयाणे घर का।।टेक।।
आधे माणस पृथ्वीसिह के दु ख मे साझी हो थे।।
मिन्तर दोस्त शेरखा की बातो मे राजी हो थे।
आपस मे माह बहसम बहसा पडित काजी हो थे।
इज्जत आले सोच करे खुश पाजी पागल हो थे।।
बिन इज्जत मुश्किल जीना होसै इज्जत आले नरका।।१।।[१]

असली सांगीत

श्रवण कुमार

हीरालाल शर्मा निवासी जावली गाजियाबाद

वार्ता - सज्जनो श्रवण शरीर त्याग देता है, राजा दशरथ को बडा दुख होता है वह जल का कलशा लेकर अन्धो के पास आता हे और उनसे जल पीने को कहता है तो श्रवण के मात पिता पूछते है कि तुम कौन हो और श्रवण कहा है दशरथ चुप खडा हो जाता है तो श्रवण का पिता कहता है –

गाना तर्ज - डोले के म' सोगी हीरे ताणकै नै चीर

टेक – क्यू ना श्रवण आया पाणी तू लाया है कौण।
उलट पलट जी हुआ मेरा अब होरहे सोणकुसोण।।

कली– अपने आप धडक रहा हृदय डगमग डगमग डोलै।
क्यू चुपचाप खडा है क्यूना भेद बात का खोलै।।
सिर पै उल्लू बोलै आगै स्यार लगे है रोण।।१।।[२]

---

१ पृथ्वीसिह किरणमई पृ० २१

२ श्रवण कुमार पृ० १२

ओम नमः शिवाय

सांगीत नल दमयन्ती

फखरु मीर निवासी रटौल, मेरठ

वार्ता - पारधी दमयन्ती को मारने के लिये तीर साधता है तो वह तीर पलटकर पारधी के सीनेमे लगता है जिससे वह मरजाता है।

रागनी तर्ज फिल्मी – अन्धेर नगरी – एक बेर तो.........

प्राण लगी हूँ तजनं, रहा ना वजन, सजन दिल तोड गये,
हो सोवती छोड गये।।टेक।।

भजन– पिया कारणे इस दुनिया का सारा दुख बिसराया।
भरे स्वयवर मे इन्दर का मान घटा धमकाया।।

तोड– पाया कोयना पता कौणसी खता, बता किस ओड गये,
हो सोवती छोड गये।।१।।
जात बीर की इकली बण में कैसे धीर धरूं।
पता नही इस जिन्दगानी का कितने कष्ट भरू।।

तोड– मरू जहर अब चाट क्यूं साडी काट बाट बुरी दौड गये
हो सोवती छोड गये।।२।।[1]

ओऽम

सांगीत वन पर्व

जहॉंगीरा मीर, निवासी रटौल, मेरठ

वार्ता- अर्जुन ने कहा गूरूदेव यह धर्म की आज्ञा है मैं इसका पालन अवश्य करूँगा चित्र गन्धर्व ने दुर्योधन को छोड़ दिया अर्जुन दुर्योधन को धर्म के पास ले जाता है।

भजन तर्ज – सवा रूपैया मुरदे का कफन कालिया
मैं जुल्म जुवारी अत्याचारी मनुष्य धोखेबाज।
धर्म युधिष्ठिर से मिलने में आवेगी लिहाज।।टेक।।

---

१. नल दमयन्ती, पृ० ३

कर्म करेका दड भरल्यूगा, कोई कुछ कहदे तो मरल्यूगा।
धर्म के चरणो में धरल्यूगा अपणे सिर का ताज।।१।।
घाव मे नूण जलन कर रहा है, मान मेरा नीचे को ढल रहा है।
रेते के मा मिल रहा है आज राजा का मिजाज।।२।।
मै सब ऊँच और नीच तकू हू सच्ची कहू या नीच बकू हू।
तेरे कहे से त्याग सकू हूं हस्तनापुर का राज।।३।।
मानसिह गुरु ज्ञान गाणे को, मन रघुनाथ का समझाणे को।
शब्द का आनन्द पाने को संग में रंग का साज।।४।।[1]

ओऽम्

असली सांगीत

पूरनमल बाग नौलक्खा

असलम अकरम निवासी मस्तान खेडा, मुजफ्फरनगर

वार्ता– सुन्द्रादे का पूरनमल को ले गुरु गोरखनाथ को प्रणाम करके महलो को वापस आना।

रागनी न० १

तर्ज – धरती बेटे की लाश

लेकर पूरनमल को साथ चालदी सुन्द्रा हो राजी।
हाथ जोड के माथा टेका गोरख को प्रणाम करी।।
सतरा सौ फकीरो आगे कर मुजरा सलाम करी।
पूरन रोया गुरू भाइयो को रो–रो जय हरनाम करी।।
आसू भरे आखो के माह बोलना दुश्वार होग्या।
गुरू की आज्ञा के आगे जती फिर लाचार होग्या।।
नीची नाड करके चाला सुन्द्रा का शिकार होग्या।
गोरखा का भरा रज में गात सुन्द्रा की नौबत बाजी।।[2]

---

१. वन पर्व, पृ० २२–२३
२. पूरनमल नौलक्खा, पृ० १–२

श्रीगणेशाय नमः

महाभारत पांडव जन्म

शरीफ मीर निवासी मस्तान खेडा, मुजफ्फरनगर

वार्ता - कुवर की इस प्रतिज्ञा पर दूसरी शका धीवर राज ने बताई कि कुमर सत्य व्रत आपकी प्रतिज्ञा अटल है। किन्तु जरा सोचिय तो आपके बाद आपके पुत्र आपकी गद्दी पर अधिकार करेगे। ऐसी प्रतिज्ञा से सत्यवती को क्या लाभ।

दोहा – सुन धीवर की बात को कहे सत्य व्रत गुनवान।
सब तरिया से सोचग्या आज मेरा इम्तहान।।
आज मेरा इम्तहान कहन लगा साक्षी चाद सितारे है।
सूरज धरती पवन साक्षी गगा जल मात हमारे है।।
जन्म अखड ब्रह्मचर्य का व्रत कुमर ने धारा है।
धन्य २ की धुन गूजी खुश हुया वो धीवर प्यारा है।।[१]

ओऽम्

सां० सांवल्दे राजा कारक

चतरसेन त्यागी, निवासी डूडाहेडा, गाजियाबाद

वार्ता - सावल्दे के आने पर धी ध्यानी आरते का थाल सजाकर गाती बजाती डोली के पास आती है।

रागनी न० १२

तर्ज – तेरा जादू ना चलेगा रे सपेरे
सारी मिलजुल मगल गावे, चलो तारके बहूने छोरी लावे
सखी सहेली कटठी हो चला महल से लारा।
मस्त जवानी खेल करे कोई सतरा कोई ठारा।।
कैसी मस्ती मे नजर घुमावे, कटखाना तोर चलावे।।१।।
जैसे पपीहा बागो मे कोयल आम डाल पै।।

---

१ सांगीत पाडव जन्म, पृ० १२–१३

जैसे हाथी बिन अंकुश जारा मस्त चाल पै।।
जैसे ताल पै मुर्गी ध्यावें, बजे बीन सर्प लहरावे।।२।।
आशिक पागल हुये खडे धडके जिगर चाल पै।
बरमा और कमाणी ले बाढी त्यार साल पै।।
प्यासे खडे लखावे कैसी डोल कुएं मे जावे।।३।।
'रामरतन' तेरी टोली करें बुराई गुण्डे।
घडवा और चीमटा लेके फिरें बणे मुसटण्डे।
इन्हे जयकिशन समझावें हरिकिशन नये रग गावे।।४।।[१]

ओऽम्

राजा हरिश्चन्द्र राज्य-दान

लेखक - शकूर मीर निवासी आलमपुर, गाजियाबाद

वार्ता - अब मुनी विश्वामित्र राजा को रानी, लडके सहित काशी शहर मे घुमाता है और आवाज लगाता है।

रागनी नं० १३

तर्ज – तू कौन रोने वाली

पाछे पाछे भूप चाले आगे ऋषिराज चले।
बरदा ले लो मोल देते आवाज चले।।टेक।।
समय था प्रातः काल, रहे नगर में चाल।
भूप ना मुंह से बोले रहे नीची गर्दन डाल।।
पीछे चन्दा सा लाल बेचने सत के काज चले।।१।।
काशी का भरा बाजार बैठे साहूकार।
सूरज से चमकें धरे हीरे लाल जवाहर।।
ना देखे भूप निहार नगर में भरे जिहाज चले।।२।।
रहा बाज विप्र का ढोल, कोई बरदा ले लो मोल।

---

१. सॉवल्दे राजा कारक, पृ० '१२

साठ **भार सोरन** के दे दो बदले के में तोल।।
खडी **प्रजा बांधे** गोल करन सौदा अन्दाज चले।।३।।
चले लोग छोड के कार नर नारी का ब्यौहार।
चौक चौराहे पर खडे तीनो बाध कतार।।
कहे 'रामरतन' ससार के सारे रस्म रिवाज चले।[1]

ओऽम्

रामरतन का गुच्छा

रामसिह नाई निवासी खेकडा, मेरठ

रागनी नं० १४

तर्ज – उड जारे पछी अब देश हुआ बेगाना (भाभी)

रोवण लागी सावित्री सुन सत्यवान की बाणी।।टेक।।
जन्म मरण सारा बतलावें साची बात मान राखी।
जो पतिव्रता का पति मरजा नहीं किसी ने आन राखी।।
मै जीऊ तुम मरो तो वेद ने कर झूंठी बखान राखी।
पूरा साल हुआ तप करते छोड दिये अन्न पानी।।१।।
इसी बात ने याद करू कैसे सास सबर की भर दूगी।
इन जन्म मरणकी लडियोंकू तप बलसे आज कतरदूगी।।
के तो झूठी सावित्रि नहीं वेद ने झूठा कर दूगी।
दुनिया मे रोशन हो जागी मेरी आज कहानी।।२।।
तपके बलसे ब्रह्मा जगत रचावे विष्णु तपस्याकेबल पाले।
तप के बल से शकर भी तीनों लोक ने सगवाले।।
शक्ति कौन ऐसी जग में जो तेरे जीव ने कढवाले।
लगा समाधी सही बैठगी मेटूं मौत निशानी।।३।।
भरी क्रोध मे भबक अगन सी तेज शरीर मे आया था।

१. हरिश्चन्द्र राज्यदान, पृ० १६

लाल २ झड़ लिकड़ रही थी सूरज सा चमकाया था।

यम का दूत प्राण खीचने बन के अन्दर आया था।

'रामरतन' कह उल्टा भागा बचने मुश्किल प्राणी।।४।।[1]

---

१. रामरतन का गुच्छा कौशिक, पृ० १५

५. कौरवी जनपदीय स्वाँगों का सामाजिक अध्ययन

लोक–साहित्य की अपनी विशेषता यह है कि यह साहित्य लोक की सम्पूर्ण सास्कृतिक परम्पराओ का लेखा–जोखा होता है। इसलिए साहित्य मे आरम्भ से ही लोक और वेद मे भेदक–रेखाएँ खीची गयी है।

भारत मे लोक साहित्य की परम्परा ऋग्वेद से आरम्भ हो जाती है। इस वेद मे साम्यगायक को **गाथिन** कहा गया है और इस प्रकार इसे ऋचा के गायक से अलग प्रमाणित किया है। ऐसा लगता है कि ऋचा का गायक सस्कारयुक्त होता था और गाथिन का गायक लोक–गायक के रूप मे सामने आता है। महाभारत के आख्यान, **बृहत्कथा** (गुणाढ्‌यकृत) तथा **कथासरित्सागर** लोक गाथाओ के अत्यन्त समृद्ध प्रमाण है। कालिदास के नाटको मे भी लोक–भाषा के अनेक प्रयोग मिलते हैं। **अभिज्ञानशाकुंतलम्** के चतुर्थ अक मे नीच पात्रो के माध्यम से युगीन लोक भाषा के प्रयोग को महत्व दिया गया है। कालिदास के उच्च पात्र संस्कृत का प्रयोग करते है जबकि निम्न पात्रो की भाषा प्राकृत और अपभ्रश होती है।

लगभग सभी सत कवियो गोरखनाथ, कबीर, रैदास, दादू, रज्जब, गरीबदास और सूफी कवियो की भाषा लोकभाषा है। लोक–भाषा मे रचित साहित्य साहित्यक भाषा के साहित्य से अधिक सम्प्रेषणशील हुआ करता है। भक्त कवियो की भाषा मे भी लोकभाषा के अनेक प्रयोग देखने को मिल जाते है।

लोक–साहित्य किसी एक व्यक्ति की मानसी शाब्दी अभिव्यक्ति नहीं हुआ करती बल्कि इसमे दीर्घकालीन सामाजिक सास्कृतिक परम्परा को चित्रित करने वाला सामूहिक अचेतन क्रियाशील रहता है। इस साहित्य को काल एव स्थान की सीमाओ मे बाध पाना अत्यन्त कठिन होता है। यह सुदूर सचरणशील भी होता है और स्थान बोध के अनेक आयाम भी इसके माध्यम से खुलते है। इस प्रकार लोक वार्ता या लोक साहित्य सापेक्ष होता है। प्रो० शाण्डिल्य के अनुसार "लोकवार्ता परिवेशगत आकाश अग्नि–वायु–जल–पृथ्वी से शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध प्राप्त अवश्य करती है। किन्तु इसकी मानसिक सास्कृति व्याप्ति सार्वभौमिक एव सार्वकालिक होता है। पीढियो, विभिन्न विचारों एवं स्थानों की विशिष्ट लोक सस्कृति की संपृक्ति के फलस्वरूप यह सामूहिक अवचेतन की कलात्मक शाब्दी अभिव्यक्ति का रूप ले लेती है।

सतत गतिशील होने के कारण इसका स्वरूप भी लगातार परिवर्तित–परिवर्धित होता जाता है।

लोक साहित्य की सशक्त विधा के रूप में कुरु जनपदीय स्वॉग का अपना महत्व है। स्वॉगो में संस्कृति के सभी बिन्दुओं को बड़ा खूबसूरती से उजागर किया जाता है और इस प्रकार यह कहना उचित ही है। कि स्वॉगों में कुरु जनपदीय सामाजिक एवम् सांस्कृतिक परम्पराओं का अत्यन्त व्यापक चित्रण किया गया है।

स्वॉगों में चित्रित लोक सांस्कृति एवम् सामाजिक मान्यताओं को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

क. लोक सांस्कृतिक परिवेशगत मान्यताएँ।

ख. लोक भौतिक परिवेशगत संवेदनाएँ।

क लोक सांस्कृतिक परिवेश = धार्मिक मान्यताएँ अथवा लोक मान्यताएँ नियतिवाद उदारमनोवृत्ति तर्कहीन आस्था अथवा अन्धविश्वास।

ख. लोक भौतिक परिवेश के उपादान = भोज्य पदार्थ, वस्त्र, घर, नदी, पर्वत, मैदान, पशु पक्षी, नौकर चाकर, पारिवारिक जन, बुर्जुआ(राजा रानी) एवं सर्वहारा वर्ग (गरीब आदमी)

लोक की आधार–शिला धर्म होती है इससे लोक के जीवन को बल एव प्राण मिलता है। धर्म की परिभाषा देते हुए कहा गया है – "धारयति इति धर्मः" जिसको धारण किया जाय वह धर्म होता है। धर्म को पहले धारण अवश्य किया जाता है किन्तु बाद में वही व्यक्ति की आत्मा बन जाता है। इसके बिना मानव जीवन असंभव हो जाता है।

भारत आदि काल से ही धर्म–प्रधान देश रहा है। धर्म और अध्यात्म यहॉ की आधार–शिलाएँ हैं। लोक–साहित्य की अन्य विधाओ के अनुरुप लोकोक्तियों एव मुहावरों में भी धार्मिक विचारों एव भावनाओं का समृद्ध रूप देखने को मिलता है। लोक–साहित्य में धर्म की गंध को इस प्रकार समझा जा सकता है। कि जिस प्रकार फूलों की माला में लगे हुए सूत्र में फूलों की गंध स्वतः समाहित हो जाती है उसी प्रकार लोक में धर्म की गध व्याप्त रहती है। जबतक लोक रहेगा तब तक उससे धर्म को अलग नहीं किया जा सकता है।[१]

धर्म, समाज और संस्कृति अभिन्न होते हैं। एक का अध्ययन दूसरे के अध्ययन के बिना पूर्ण नहीं

---

१. प्रो. शिवकुमार शाण्डिल्य, कौरवी लोकोक्तियां, पृष्ठ ५–६.

हो सकता है।

लोक मानव को सघर्ष का सामना, शिष्ट मानव की अपेक्षा अधिक करना पडता है। नगर जन को लगभग सारी सुविधाए उपलब्ध रही है जबकि लोक के सम्पन्न से सम्पन्न व्यक्ति को ये सुविधाएँ जुटाने के लिए नगर का ही आश्रय लेना पडता है। वह लगातार सघर्ष करता है किन्तु यह सार्वजनिक मगल भावना को कभी भी अपने पास से नही डिगने देता।

पारस्परिक आकर्षण से समाज की रचना होती है। समाज का आधार मानव प्रकृति है। मानव प्रकृति वैसे तो सम्पूर्ण विश्व मे एक सी होती है किन्तु स्थान, प्रकृति एव राजनीतिक भेद के कारण सभी एक सूत्र में बंध नहीं पाते है। इनके पीछे निहित स्वार्थ होते हैं। इन दृष्टियों से जिनके निहित स्वार्थ एक से होते हैं उनका एक समाज बन जाता है। समाज का छोटा रूप समुदाय कहलाता है। समाज मे अध धार्मिकता प्रधान होती है और इसी प्रधानता के कारण वह सम्प्रदायिक बन जाया करता है। व्यक्ति समूह जैसे जाति शहर, गॉव, पचायत आदि पर जब सामाजिक संबंधों की दृष्टि से विचार किया जाता हे तब उसे सामाजिक समूह का समाज कहा जाता है। जब इसे व्यक्तिमूलक दृष्टि से देखा जाता हे तब यह समुदाय बन जाता है।

समाज अर्मूत होता है और कुछ लोग अर्मूत समाज के मूर्त सगठन को समुदाय कहते है किन्तु इन दोनों में स्थिति भेद होता है। समुदाय एक भावना है। समाज भाव –समूह होता है। समुदाय मे अध आत्मीयता होती है जबकि समाज में सार्वभौमिक आत्मीयता। सामुदायिक भावना का विचार स्वत स्फूर्त होता है।

जटिल संबधों की समानताएॅ प्रथाओं को जन्म देती हैं जबकि समाज के लिए इनका महत्व नही होता।

समाज के लिए इन बातों का समान होना आवश्यक है .

१ समाज–जीवन–धारा।

२ पारस्परिक रीति–रिवाज।

३ निर्धारित नियमो का समान रूप से पालन।

४. संगठन कार्य।

५. शारीरिक संगठन की समानता।

६. समान रचनाएं।

७. समान हित भावनाएँ।

साहित्य के विश्लेषण के लिए समाज को दो भागों में बाँटा जा सकता है :

१. राजनीतिक समाज (नगर समाज)

२. धार्मिक समाज (ग्राम समाज या लोक समाज)

अभिव्यक्ति से समाज की रचना भी होती है और समाज उसका सर्वकर्ता होता है। व्यक्तियों से समाज का निर्माण होता है। व्यक्ति स्वभाववश समाज में रहना चाहते हैं। इस दृष्टि से समाज को स्वाभाविक और कृत्रिम दोनों माना जा सकता है। समाज व्यक्ति की आवश्यकताओ की पूर्ति करता है। इस कारण वह उसके लिए साधन है। समाज से ही उसे भाषा, शिक्षा और सस्कृति मिलती है।

व्यक्ति का जन्म परिवार में होता है। वहीं वह सामाजिकता का पाठ पढ़ता है। मानव की मूल प्रवृत्तियों की संतुष्टि भी परिवार में रहकर ही होती है। परिवार में जीवन बिताने की भावना को मानव जाति की आदिम प्रवृत्ति कहा जा सकता है।

संस्था के रूप मे परिवार सभी मानव समुदायों में पाया जाता है। वह मनुष्य के लिए नितान्त आवश्यक थे। परिवार मनुष्य का आधार स्तम्भ है। जन्म, पालन, पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा, सस्कृति राजनीति आदि की दृष्टि से भी मनुष्य को परिवार का आश्रित रहना पड़ता है। राज्य सत्ता एवं शासन पद्धति परिवार के सूक्ष्म तत्वो के आधार पर ही विकसित होती है।

परिवार को समाज का लघु रूप माना जा सकता है। समाज के प्राय: सभी अंग परिवार को प्रभावित करते हैं।

प्रत्येक काल का कवि या लेखक अपने क्षेत्र में नैतिकता उत्पन्न करना चाहता है। व्यक्ति का जीवन समाज–सापेक्ष होता है। जिस प्रकार समाज में ही व्यक्ति का व्यक्तित्व निर्मित होता है उसी प्रकार व्यक्ति के व्यक्तित्व से ही समाज और सामाजिक एकता निर्मित होती है। समाज में राजनीतिक आदर्श जितने ही उन्नत होंगे उतने ही वह प्रगतिशील रहेगा।

समाज विज्ञान की दृष्टि से सम्पत्ति की ये विशेषताएँ बताई जाती हैं :

१. स्वामित्व का अधिकार

२ एकान्तिक अधिकार

३. उपभोग और उपभोग के अवसर

४. सामाजिक मान्यता।

सम्पत्ति के स्थूल रूप मे तीन भेद किये जाते हैं :

१. सार्वजनिक सम्पत्ति

२. संयुक्त सम्पत्ति

३. व्यक्तिगत सम्पत्ति

व्यक्तिगत सम्पत्ति को मानव आय भी माना जा सकता है। सत कवि थे उन्होंने निजी सम्पत्ति को विशेष महत्व नहीं दिया। उनके लिए निजी सम्पत्ति उपभोग की नहीं, सार्वजनिक हित की वस्तु होती है। उनके काव्य में इसी भावना क दर्शन होते हैं।

सामाजिक अर्न्तद्वन्द्व का मूल आधार राजनीति परिवर्तन एव धार्मिक दार्शनिक अन्तर्द्वन्द्व एव परित्याग होता है। मध्य युग में वह परिवर्तन बहुत था। यही कारण है कि इस युग के समाज में सामाजिक मान्यताओ एव दार्शनिक सिद्धान्तो मे गम्भीर परिवर्तन हुआ।

सामाजिक नैतिक परिवेश को लोकाचार कहते हैं। हर समाज में ऐसे लोकाचार जातीय संस्कार और शिष्टाचार होते है इनमे नैतिक शिष्टाचार और सामाजिक शिष्टाचार का समन्वय होता है। बुद्धिमत्ता और सामाजिक सद्‌गुण का सम्बन्ध भी सामाजिक नैतिकता से होता है। इससे उसका चिन्तन उसकी भावनाए और उसकी इच्छाए प्रभावित होती है। सामाजिक नैतिकता के इस वातावरण का व्यक्तियो के व्यवहार पर गम्भीर प्रभाव पडता है। जो व्यक्ति लोकाचार का जितना पालन करता है वह सामाजिक दृष्टि से उतना ही अच्छा माना जाता है।

इस सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें विचारणीय हैं –

१ लोकाचार विरुद्ध आचरण, लोक–निन्दा एवं लोकापवाद कारक होता है।

२. समाज के सभी व्यक्ति लोकाचार से प्रभावित होते हैं।

३. लोकाचार अमूर्त होता है। वह अव्यक्त रूप में सारे समाज में व्याप्त रहता है।

४ लोकाचार नित्य शाश्वत एव सनातक होता है।

५ लोकाचार नैतिक परिवेश पर निर्भर करता है।

६ लोकाचार सामाजिक आचरण का आदर्श होता है।

साहित्य सर्जना वैयक्तिक एव विशिष्ट भाषा के माध्यम से होती है। साहित्य सर्जना मे भाषा, शरीर मे रक्त का कार्य करती है। साहित्य यदि शरीर है तो भाषा उसका रक्त। रक्त के बिना जीवन सभवनहीं होता।

सागीतकार लोक की मिट्टी का गायक होता है उसकी रग-रग मे लोक की मिटटी की गध समाय रहती है माटी की यह गध उसके द्वारा स्वॉगो की रचना कराती है। जिस सागीतकार मे यह गध जितनी ही अधिक व्याप्त रहती है उतनी ही उसकी अभिव्यक्ति महान् और प्रखर हुआ करती है। अपने समाज के प्रति पूर्णत प्रतिबद्ध होता है। और यह प्रतिबद्धता उसे सच्चा सागीतकार बनाता है।

सागीत साहित्य मे निम्नलिखित विशेषताऍ मानी जा सकती है

१ परिवेशीय अन्तरग अनुभूति की प्रधानता

२ सरल, सहज, स्वाभाविक वृत्तियो का निरूपण

३ सहज भाषा

४ अतिरेकपूर्ण अभिव्यक्ति

५ लोकोत्तर कल्पना का प्राधान्य (अलौकिक कार्यो, अतिप्राकृत शक्तियो अपदेवता अर्धदेवता आदि मे विश्वास का प्राधान्य)

६ सार्वभौमिक भावना का प्राधान्य

७ आधुनिक सामाजिक मान्यताओ का उपहास

८ लोक भावनाओ का उद्घाटन

९ विशिष्ट परवेशीय अन्धविश्वासो का उद्घाटन

१० परिवार, पारिवारिक जन एव विशिष्ट लोक मे आस्था

११. स्थान विशेष की सार्वभौमिक सास्कृति मान्यताओ का चित्रण

१२ निर्वैयक्तिकता

१३ छंद–अलंकार–बधनमुक्त रचना

१४ मिथको एव प्रतीको का प्राधान्य

१५ कलावधि निरपेक्ष मौखिक साहित्य

१६ सुमंगला तिरिया, पराक्ष आत्माओ, देवताओं, सन्त, फकीरो, लोक वीरों की पूजा

१७. विवरणात्मक पद्धति

परिवेशीय अन्तरंग अनुभूति की प्रधानता :

सागीतकार का जन्म लोक की मिट्टी मे होता है। उसी में वह बढता और पनपता है। अपने परिवेश की आकाश, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी की तन्मात्राओं से उसके जीवन का निर्माण होता है। या यूँ कहिये कि माटी की गंध उसकी रग–रग में इस प्रकार समाहित हो जाती है जिस प्रकार फूल माला के धागे में फूल की गध व्याप्त हो जाती है।

परिवेशीय अनुभूतिया सवेदनशील साहित्यकार को हर समय आन्दोलित करती रहती है उसकी अच्छाइयों बुराइयो से उसका गहन साक्षात्कार होता है और वह चाहता है कि परिवेशीय सारी विसगतियों को दूर करके एक स्वच्छ समाज का निर्माण करे।

लोक परम्परानुगामी होता है उसकी परम्पराओं की जडे बहुत गहरे तक चली जाती है परम्पराओं का टूटना समाज पर बहुत गहरा आघात करता है और यही कारण है कि लोक का सागीतकार भी किसी पापात्मा या दुष्टात्मा को किसी भी स्थिति मे माफ नही करता सागीतकार प० रघुनाथ सिह अपने स्वॉग श्रवण कुमार में दुष्टात्मा पुत्र को ललकारते हुए इस प्रकार कहते है –

लाज शर्म कित थारी गई।
माता के ठोकर मारी–गिरी तड़फ के बेचारी
अत्याचारी पापी चम्पक लाल मै
छोटे बड़े देख रहे, बुढिया नही किसी ने छुटवाई
निर्दयी बेटे ने मॉ बुढिया हाथ पकड़ ऊपर ठाई
आई नहीं दया कोई बुढिया मन–मन में रोई

सदा को सोई, ना रही जग के जाल मे

लोक का व्यक्ति पाप स बहुत बुरी तरह से डरता है और इतना बडा पाप हो जाने पर चम्पक लाल भी अपने आत्मा को कोस बिना नही रहता –

सोधी गई स्वर्ग मे बुढिया नगरी वाले कहन लगे

पापका रग हुआ चम्पक को ऑख मे ऑसू बहन लगे

सहण लगे दुख करने का फिक्र माता।[1]

सागीतकार राजनीतिक चालबाजो से भी बेखबर नही रहता अमरसिह राठौर नामक स्वॉग मे चन्द्रलाल भाट उर्फ बादी इस प्रकार चालबाजी का पर्दाफाश इस प्रकार करते है

वार्ता-

अब सज्जनो अमर सिह हाडी रानी को लेकर घर चला जाता है और प्रेम से रहते चौदह दिन हो गये तो सलावत खॉ ने बादशाह से अमरसिह के बारे मे चुगली खाई तो कहा कि अमरसिह ने बजाय सात दिन के चौदह रोज हा चुके है अभी तक वह अपनी नौकरी पर हाजिर नही हुआ है। गैरहाजिरी का उस पर सात लाख रुपया जुर्माना होना चाहिए। बादशाह ने बात मान ली सात लाख रू० जुर्माना कर दिया उधर अमरसिह ख्याल करता है कि चौदह रोज हो चुके हे दरबार मे चलना चाहिए अमरसिह चलने की तैयारी करता हे और हाडी रानी क्या कहती है।

जवाब अमरसिह का रानी से

दोहा -

एक बात और बन गई जो दुनिया का दस्तूर

छुटटी पूरी हो गई मने जाना पडे जरूर

रागनी अमर कहानी

सात रोज की दरबारा मे गैर हाजिरी लगाई गई

तेरे प्रेम में फस के रानी कुछ ना बता दे गई

सात रोज की छुट्टी लेके थारे घरां गया था रानी

करी खुशामद खूब सहा सखी

---

१. श्रवण कुमार रघुनाथि सिह, पृ० १४

तीन रोज तक थारे घर पे प्रेम के साथ रहा रानी
फेर हम अपने घर आगे तेरे मुँह के बीच कहा रानी
हम तुम बोले ओर बतलाय सारी रात लगाई गई[1]

२. सरल सहज स्वाभाविक वृत्तियों का निरुपण :

सांगीतकार मानव की सरल सहज और स्वाभाविक वृत्तियों से गम्भीर रूप मे परिचित होता है। वह इन वृत्तियों को अपने स्वॉगों में इतना सजीव रूप में चित्रित करता है कि दर्शन उसी वृत्ति के अनुसार बह जाता है। स्वॉग सावल्दे राजा कारक में पंडित रामरतन कोशिक टीला निवासी अपने पति की मृत्यु पर सावल्दे जो विलाप करती है और साथ ही परिवारजनों का जो हाल होता है उसका मार्मिक चित्रण नीचे देखने को मिल जायेगा –

रागनी नं० १० (तर्ज – मर्द बडे बेदर्द बडे)

बिना पति दुर्गति दुखी महाराणी, रखी डोले मे ल्हाश,
टपके आंख्या पाणी (टेक)
गोदी में शीश घटके रखे थी हिडकी भरके
ताला लगा के चला सास ससुर के घर के
कैसे जाऊँ मुँह, दिखलाऊ हुई हाणी
माता करेगी सुनके जिन्दगी की घाणी (१)
कारक की जान खातर, सावल्दे काल होगी
दुख सहूँ किस मुँह ये वाणी
डोले के पास सखी आये याणी स्याणी (२)
हाथों में थाल धरके, आवेगी चाह में भटके
कैसे जीऊंगी जब डोली का परदा सरके
तोड – मुरदा निहार, गिरे सास भर जाणी
रो रो कहेगी बहू आयी माणस खाणी (३)

१. अमरसिंह राठौर चन्द्रलाल भाट, पृ० ६–७

राहू ग्रह मान गया, दुखिया का मान गया
रोते झिंज्जाते डोला आ दिल्ली दरम्यान गया

तोड– गयी खबर भवन, कथे 'रामरतन' अज्ञाणी
काहे का गरुर दुनिया हो हो जाणी (४)

दोहा– रोते–रोते पहुँचेगी सरदारो गढ दिल्ली के पास
डोली रोकी देख के दुनिया मारे थी सास[1]

३. सहज भाषा

लोक सांगीतकार की भाषा ज़न प्रचलित सहज एवम् सरल होती है। इस पर किसी प्रकार का लेबिल नही लगा होता और इस भाषा को हिन्दी उर्दू या अग्रेजी मे नही बाधा जा सकता सागीतकार लोक प्रचलित शब्दावली का भरपूर प्रयोग करता है। वह शब्दावली चाहे अरबी की हो फारसी की हो खडी बोली की हो या हरयाणवी हो।

इस तरह की भाषा के कुछ नमूने यहाँ प्रस्तुत है -

अरबी फारसी मिश्रित भाषा :

शेरखॉ के घरा पठानी खुशी मे ठणी फिरे थी
पृथ्वी सिंह की बीर किरणमई नटनी बणी फिरे थी
कोई कहे खुदा हाफिज मेरा कोई कहे सहारा हर का (२)
मुंशी दीवान कानूगो नाजर अदालत में लिख पढ रहे।
अर्जीनवीस मुख्तयार वकालत पास वकील झगड रहे।
इन्सपेक्टर, डिप्टी कलक्टर जजी में किस्से छिड रहे
पृथ्वीसिंह फासी के मुजरिम कैसे शिशन में लड रहे
वजीर कमीश्नर बादशाह को बहम था इसी फिक्र का
केस लडन मे मुद्दालय के साथ शहादत हो सै

---

१. सांवल्दे राजा कारक कौशिक, पृ० १०–११

मौत सजा के मुजरिम की कहा जमानत हो सै

साँच को आती कभी आंच नायो ठीक कहावत हो सै

सत्य के साथी राम जगत में आखिर में गत हो सै

कहे चन्द्रलाल उस जघां रिश्वती कोय नहीं धन?[1]

अंग्रेजी मिश्रित शब्दावली :

पृथ्वीसिंह रजपूत हरीला बण के चला डिठोरे का

कोट पेन्ट और बूट पहर के ढंग बदलग्या छोरे का

बीस वर्ष का छैला गबरु सौवा में एक छांट वणग्या

जणै थांणै तहसील जिले के अपर अफसर बडालाट बणग्या[2]

ये भाषा इस प्रकार की होती है कि इसे सामान्य से सामान्य जन भी आराम से समझ लेता है इसके लिए उसे किसी पढ़े लिखे व्यक्ति का सहारा लेना नही पड़ता।

४. अतिरेक पूर्ण अभिव्यक्ति :

लोक साहित्यकार और विशेषकर लोक भाषा का प्रयोग करता है। अपने प्रिय हीरो का वर्णन इस प्रकार करता है। कि हीरो सामान्य होते हुए भी अत्यन्त अलौलिक दिखाई पडने लगता है। वह उसके शौर्य का वर्णन बहुत बढ़ा चढाकर करता है। जिससे वह लौलिक व्यक्ति ना होकर अलौलिक लगने लगता है।

हाडी रानी अमरसिह के शौर्य का वर्णन करते हुए सलावत खाँ को उससे सम्मुख बुनगे जैसा वर्णन करती है।

रज बधां के तेरी काया लई बीच सलावत खाँ ने

दरबारा में बखेर दई खट कोंच सलावत खाँ ने

अपनी मौत बुलाली करम के पोच सलावत खाँ ने

बेईमान करणा चाहवे था दिखे दाल में काल (१)

---

१. पृथ्वीसिंह किरणमई चन्द्रलाल भाट, पृ० २१–२२

२. पृथ्वीसिंह किरणमई चन्द्रलाल भाट, पृ० ३४

जाण बुझ के वो अग्नि में खुद पडना चाहवे था

सात लाख का जुर्माना वो तेरे पडना चाहवे था

रजपूतों के साथ नपूता खुद अड़ना चाहवे था

वो गीदड़ को शेर की साहमी पिया भिडना चाहवे था

खुद करा ज्यान का गाला (२)

तेरे आगे सलावत खॉ पिया एक मुट्ठी भर खाक नही

तेरे दरबारा में बेईमान की साख नहीं

थारे होते हुए उस पाजी का इतना ऊँचा नाक नहीं

कहा करे थे रजपूता की शेर तै कमती धाक नहीं

वोरात अन्धेरी तू चॉद शिखर का इतना बीच बिचाला

मगलचन्द धड़कती छाती साजन थारी दहल के में

चन्द्रलाल एकला था ना दूजा थारी गैल के मै

मैं अरधंगी दासी चरण की दासी थारी रहल के में

शतरंज सेज बिछा राखो पिया लाइये लोट महल के में

तन मन की ले काढ पिया सै हाजिर जोवन वाली (४)[१]

५. लोकोत्तर कल्पना का प्राधान्य

लोक सांगीतकार अपने वर्णन का आश्रय लेता है जिससे उसका श्रोता इतना अभिभूत हो जाये कि वह उसी मैं पूरी तरह खो जाये। प० रामरतन **नरसी के भात** में बांके बिहारी की कृपा वर्णन इस प्रकार करता है कि उसकी कृपा से नरसी जैसे कगाल राजा के भात का वर्णन इस प्रकार करता है

रागनी तर्ज (साधू जी थारे बोल)

हरनन्दी करे आरता सांचे हर का

चौकी पै चन्दा खिला रुप नटवर का

मोती हीरे और लाल, मणी का चमकारा

---

१. अमरसिंह राठौर चन्द्रलाल भाट, पृ० १४–१५

भर दिया थाल सोरन से बोझ हुआ भारा
एक हाथ पत्रिका लई एक हाथ रथ मे डारा
जो लिख भेजा सामान सम्भालो सारा
चोली बाली और दिया पिटारा जेवर का (१)
लौ तीनो तोडे जो खत मे लिखवाये
रतन जडाऊ जेवर लौ पहराये
जितने है नर नार वस्त्र पकडाये
चादी सोने की शिल्प समधन को लाये
म्हारा सेठ घना कगाल है टोटा जरका (२)
जो कुछ यहॉ की रीत सब बता देना
जितना जिसका लेग कभी मत सहना
जो लेना हो सो मॉग नहीं मुझे रहना
जाऊं देते ही भात साच यो कहना
लो डूम भाट और नेग नाई विप्र का (३)
दे दिया बहुत धन माल नाथ सम दरशी
पर रहे बहुत नर नार कहन लगा नरसी
दई फेर मेहर बादल से चॉदी बरसी
बदली उठी अम्बर में बूद पडे ककर सी
सोने चांदी की तुरत हीन लगी बरखा (४)[1]

६. सार्वभौमिक भावना का प्राधान्य :

सांगीतकार के मन में सर्व जनहिताय, सर्वजनसुखाय की सार्वभौमिक भावना का प्राधान्य रहता है। पडित लक्ष्मीचन्द अपने स्वॉग गोपीचन्द महाराज में इस भावना को इस प्रकार अभिव्यक्त करते है।

---

१. नरसी का भात कौशिक, पृ० २३–२४

रागनी :

पैदा सोईना पैद जगत में कोई काल कोई आज मरा
बड़े–बड़े वीर हुए दुनिया में उनका सकल समाज मरा (टेक)
प्रिय वृत्त उन्तान पात थे ऐसे ऐसे वीर मरे
दृढ संकल्प करने वाले हरिश्चन्द्र रणधीर मरे
हिरना कुश हिरनाक्षबली भी कर कै अंत अखीर मरे
वीरसैन और नल भी मरगे बुद्धि मन्ता वजीर मरे
कोई धरम से कोई अधरम से कोई लाज वे लाज मरा (१)
साठ हजार सगर के बेटे करी अन्त फेर हार मरे
दलीप भगीरथ रघू रहे ना अज दशरथ सरार मरे
बावन जनक हुए ब्रहमसान्नी कर कै धर्म से प्यार मरे
रामचन्द्र मरयादावादी त्रेता के अवतार मरे
विश्वेसर्वाका बेटा रावण छोड़ अधूरा काज मरा
दुश्यन्त भरत मरे थे शान्तनु कस से अभिमानी मरे
दुर्योधन दुर्मुख दुशासन शल्य करण राज से दानी मरे
कृपाचार्य दोर्णा और भीष्म कुन्ती धर्म ध्यानी मरे
गांडीवधारी अर्जुन मरगे और कृष्ण से ज्ञानी मरे
अभिमन्यु का बेटा परिक्षित छोड विश्व का राज मरा (३)
जो भी आया इस दुनिया में सभी आम और खास मरे
कवियों के सम्राट दयालू शंकर दास मरे
नत्थूलाल जावली वाले पूरे करके सांस मरे
लक्ष्मीचन्द कह गुरु मानसिह गाणों का सरताज मरा (४)[१]

पंडित लक्ष्मीचन्द्र ने बड़े ज्ञान की बात कही है संसार में जो आता है वो चाहे छोटा हो या बड़ा अच्छा हो या बुरा उसे तो संसार से जाना ही पड़ता है। लेकिन अपना जीवन देता है। इसी स्वॉग में

---

१. गोपीचन्द महाराज, लक्ष्मीचन्द शर्मा, पृ० ६३

आगे चलकर वे गोपीचन्द के माध्यम.से गुरु जालधर गोपीचन्द को आदेश देते है कि ह पहले सत्य क सुरो से बीन बजा दे।

सत्य के सुरो से पहले बजा सत्य की बीन दे
बोल पूरे करो सारे पहले यह यकीन दे
मेरा मन मरणे खात्तर गवाह मुझे तीन दे[1]

७. आधुनिक सामाजिक मान्यताओं का उपहास

लोक सांगीतकार लोक की गहरे से जुडा होता है कि वह आधुनिक मान्यताओ को गले नही उतार पाता प० लक्ष्मीचन्द स्वॉग हकीकत राय की पत्नी की ओर से ये क्रोधपूर्ण वाक्य कहलाते हे

रागनी :

पत्नी के प्यार की या तुम्हे गौरना (टेक)
प्यार और मजाक का टम नही सभी बातो का ख्याल करो तुम
मेरे सग दगा करके करे बोरना
माता जी सुन लेगी तू करे शोरना (१)
बेवक्ती क्यू बात करे लक्ष्मी कसे पढाई को भला छोड दे
फाड दूंगी किताब और कापी तेरी लिखने का कलम तोड दू
तेरे बादल मे बिजली कतई धोरना
मोरनी के बिना पिया खिले मारना (२)
बैठा यो निशाना तेरे प्यार का मेरी आके ते अकल हडी
बादल के मोह गर्मी बिना बरसा के नाला गे झडी
कैसे यू पतग उडे धौरे डोरना
प्यार का तू साझी है कोई चोरना
सभी का है जोडा सुनो लक्ष्मी जैसे फूल और खार का

---

१ गोपीचन्द महाराज लक्ष्मीचन्द शर्मा, पृ० ४

लक्ष्मी चन्द साज बिना उठे लोरना

आधा पहर का साझी है तू कोई और ना

हकीकत राय लक्ष्मी दुर्गाजी की आरती १

लोक भावनाओं का उद्‌घाटन :

लोक में सदैव मिल जुलकर रहने की भावना की प्रधानता रहती है। यही कारण है कि वह ससार के माया जाल को बहुत बुरा मानता है। मायाजाल मे फसकर व्यक्ति बुरे काम करता है सागीतकार लक्ष्मीचन्द अपने स्वॉग ध्रुव भक्त के आरम्भ मे ही दोहे मे इस भावना को अभिव्यक्त करते हे

दोहा

माया जाल ससार मे बडे उलटे सुलटे काम

ध्रुव भगत के हाल का किस्सा कहूँ तमाम

सागीतकार प० रघुनाथ सिह अपने स्वॉग श्रवण कुमार मे आज की बढती हुयी अफरा तफरी के बारे मे इस प्रकार लिखते है।

आज मातपिता का घटा कायदा और बेटे बहू अपनी चाही करे

ताब उनकी न हो जो कुछ भी कहे बाप बोल तो बेटे पिराई करे

जब बालक को देती है माता जन्म वो ही जाणे है कितनी तवाई सहे

माता नफरत कदूरत करतीन नही अपने हाथो से मल की सफाई करे

पिता चाहता बेटे की हरदम खुशी सारी दौलत बदौलत इसी की रहे

आब बढती है पूरा रुतबा मिले और कुब्बत से काफी कमाई करे (२)

भला चाहो तो श्रवण का सीखो सबक जिसने सेवा करो अपने मा बाप की

तीर धोके से श्रवण का दम ले गया सुत संग मे मरे सब बडाई करे (३)

जिसने मा बाप का हुक्म टला नही, दुनिया मे फर्ज उसने पूरा किया

करने वाले करे कहने वाले कहे, 'रघुनाथ' कवि कविताई करे(४)[२]

---

१. हकीकत राय लक्ष्मीचन्द शर्मा, पृ० ४७

२ श्रवण कुमार रघुनाथ सिंह, पृ० ५

लोक सागीतकार लोक की परम्परा के प्रति गहन आशक्त होता हे ओर यह आशक्ति उसे लोक की शुद्ध परम्पराओक से गहरे तक जोड रखती है।

६. विशिष्ट परिवेशीय अन्ध विश्वासो का उद्घाटन

लोक सागीतकार अपने परिवेश की सारी बुराईयो को उद्घाटित करता है और साथ ही साथ वह उस परिवेश मे व्याप्त सारे अन्धविश्वासो पर करारी चोट करता हे। वह उनको जड से उखाड फेक देने मे अपनी पूरी सामर्थ्य लगा देता हे वह मगलकारी भावनाओ को सर्वत्र व्याप्त होते देखना चाहता हे। अनमेल विवाह पर करारी चोट करते हुए लोक सागीतकार प० रामरतन कौशिक सागीत पाडव जन्म मे महाराज शान्तनु उदाहरण देते हुए लिखते है

थी शादी बिन मेल वहा फिर कोन करे रग खेल
ना रहा तिलो मे तेल राजा सूकग्या
वृद्धा अवस्था चोथापन था के था ब्याह सगाई
क्षयी हो गया रोग भूप का कुछ दिन मे ही भाई
चित्र विचित्र पेदा हो गय बडी मुश्किल से भाई
होना था तन का व्योपार स्त्री ज्वान वृद्ध भरतार
वन्यू कर मचे खेल ससार सब तन फूकग्या (१)[१]

लोक मे प्रचलित यह अन्धविश्वास भी है कि राजा मरते दम तक भी विवाह कर सकता हे। इस अन्धविश्वास और कुपया पर सागीतकार की यह गहरी चोट है।

१०. परिवार, पारिवारिक जन एवं विशिष्ट लोक में आस्था :

राजा गोपीचन्द के राज पाट त्याग कर फकीर बन जाने के बाद अब वे अपने नगर मे ही भीख मागने जाते है तो भी उनका परिचय जन सामान्य उनके गौत्र वर्ण और माता पिता के नाम से करता है।

---

१ सांगीत पांडव जन्म कौशिक, पृ० १३

कौण बरण से बना तू साधू कहॉ का तू रहने वाला

छतरी के घर जन्म लिया माई मेरा देश बंगाला

कोण गुरु बतला तेरा कौन पंथ की माला

सिद्ध जलंधर गुरु मेरे गलनाद जनेउ काला

थोडे समय के योग रूप में के कुछ पाई पीरी

इतने समय में यू माया मेरी हटगी सब दलगीरी (२)

कौन पिता कौन मात तुम्हारी सब दलगीरी (२)

कौन पिता कौन मात तुम्हारी उनका नाम बताओ

माता पिता का पता बता इन्चे ध्यान लगाओ

सच्ची–सच्ची कहना साधू मन में ना शरमाओ

मैं तेरा बेटा गोपीचन्द माता मुझे भोक दिलाओ

राजमहल के फाटक भिडगे ताला पड़ा जजीरी

छात्ती पे क्यू साप उतर गया क्यू रही पीट लकीरी (३)[१]

स्वॉग दुश्यन्त शकुन्तला में शकुन्तला अपने बेटे भरत को बाण चलाने की शिक्षा देती है। और कहती है कि मेरी जिन्दगी रही तो मैं तुझे पूरा वीर बनाऊगी

आजा भरत मेरे पास बेठ तने विद्या बाण सिखाऊगी रे मेर लाल

मेरी जिन्दगी रहगी तो तने पूरा बीर बनाऊगी रे मेर लाल आजा

जो तेरा वार उकग्या तेरे मुँह पै तमाचा लाऊगी रे मेरे लाल आजा

सच्ची मॉ का क्या कर्तव्य है इस दुनिया को दिखाऊगी रे मेरे लाल आजा

लक्ष्मीचन्द दास गुणियो का गुण सदा उनके गाऊँगी रे मेरे लाल आजा[२]

जब दुश्यन्त हिरन पर तीर चलाकर छोड देते हैं तो भरत को गुस्सा आता है और वो इस प्रकार कह उठता है।

---

१ गोपीचन्द महाराज लक्ष्मीचन्द शर्मा, पृ० ८

२. दुष्यन्त शकुन्तला लक्ष्मीचन्द शर्मा, पृ० ४२

क्यू मारा ते इसके तीर मै न्यू पुच्छू तेरे सै
गर कुछ ताकत रखत हो दो हाथ करो मेरे से
बल के नशे मे कमजोरी के उप्पर हाट बठावै
बाडी की तू कपास भूल मे दही समझ के खावै
बचके नही जाने पावे अब मृत्यु के घेरे से (१)
मेरे भाई के मारा तीर वह पाहरा कितनी काल्ली
उसका बदला लूगा समझ तेरी कजाशीस पै आली
एक मिनट मे सारी लाली झाडूगॉ चेहरे सै (२)
तेरे की तरह जीण है इसके यू भी है देहधारी
कितना होरा जखम तीर की अणी खीच के मारी
दूर रहे दस कोस शिकारी इस म्हारे डेरे सै (३)
सभी की आत्मा हुया करे जो बीज बुरा बोती है
लक्ष्मीचन्द मुक्ति होती है सतगुरु के टैरे से (२)[1]

११. स्थान विशेष की सार्वभौमिक सांस्कृति मान्यताओं का चित्रण :

लोक सागीतकार अपने स्थान विशेष की सारी मान्यताओ का चित्रण सूक्ष्म रूप मे करता है। सोमनाथ प्रभावती नामक स्वॆग मे प० लक्ष्मीचन्द सौदागर के माध्यम से व्यापारिक वृत्ति का सुन्दर चित्रण कराते हुए लिखते है –

सौदागर कहने लगा सुना हमारी बात
पैसे की चिन्ता मुझे मेरा फसा रज मे गात
न्यू कहिये उसने ईमान तै मेरी रकम अदा कर दे
जो सौदागर मल कोय गया तेरे सारे ठाठ विदा कर दे
लेन देन का काम नही और नीत बदि ऊपर धर लो
सिद्धि उगली घी ना लिकडे न्यू तै मेरे भी डर लो

---

१. सोमनाथ प्रभावती लक्ष्मीचन्द शर्मा, पृ० ६२

बहुत शरम अबलो करली वे पिछले ख्याल जदा कर दे (१)

मूल तो न्यारा ब्याज-२ में एक करू बधी सर की

के पडा जेवर सब बिकवा दूं कडकी करवा दू घर की

भीक मंगा दूर-२ की मेरी कैडी निगाई गदा कर दे

इसमें खराबी आ जागी क्यू वेमत लबका वैर करै

मेरा नाम है सौदागर यू जिसतै सारा शहर डरै

भंगी से भीख रैपरै उसे मेरी एक सदा कर दे

गुंडे मानस खुश हो अपनी बाण जेबडी करनादे

समझ ण्यिां की मरसम झांकेगी गुर की शरण मे

लक्ष्मीचन्द सतगुरू के चरणो में अपने प्रेम फिदा कर दे (२)[१]

१२. निर्वैयक्तिकता

स्वॉगों के रचियता लोक सांगीतकार स्वॉग में कही भी अपने व्यक्तित्व को कहीं भी प्रदर्शित नही करते जो कुछ वो कहते है वो सब उनके गुरु की कृपा से निकली हुयी वाणी होती है उस वाणी को ही वे स्वॉगों को अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं उनका स्व विलीन होकर सर्वत्र व्याप्त हो जाता है ऐसा लगता है उनका अपना व्यक्तित्व सम्पूर्ण सामाजिक मान्यताओ का व्यक्तित्व होता है। पडित लक्ष्मीचंद के सोमनाथ प्रभावती स्वॉग का एक उदाहरण यहॉ प्रस्तुत है -

ज़िन्दगीया काटो प्रभा ऐशो 'आराम की

मान ले जो बात मेरी कहूँ तेरे काम की

दुख मुसीबत कगाली ये कट जो सारे घेरे मौ जले शाम सवेरे

तेरे लिये बड़े फायदे के हैं जितने बोल य रे हटके बस जा डरे

अच्छी है रोनक तेरे हड्डी और चाम की (१)

तेरा मालिक चल्यगा यू घर का काढ दिवाला मोट्टा करग्या चाला

भरी जवान्नी मस्तान्नी यू जोवन तेरा कुढाला कर जिन्दगी का उजियाला

---

१. दुश्यन्त शकुन्तला लक्ष्मीचन्द शर्मा, पृ० ४३

भजता सौदागर माला बेटी तेरे नाम की (२)

जिसके घर में धन दौलत है उसकी कभी हारनी बिना इसके नाव पासी

सौदागर को तुझको दिल में चाहिए प्रीत धारनी याचहिये शरम मारनी

बनजा अधिकारिनी हस्ती तमाम की (३)

लक्ष्मीचन्द की बात मान क्यूं खौवे बहु जवानी सब हट जागी परेशानी

यू जीवन है चंद रोज का जैसे बुलबुला पानी हे समय आवणी जाणी

मान्नी तू जा सेठाणी सारे ही गाम की (३)[१]

१३. छंद अलंकार-बन्धन मुक्त रचना

स्वॉग किसी काव्य शास्त्रीय बन्धन मे बधकर नही चलता इसमे रस, छन्द लोक धुन पर आधारित होते है वैसे यह कहना एक दम गलत होगा कि स्वॉगो मे काव्यत्व का अभाव होता है। वास्तव मे काव्य की सारी मान्यताओ को इनमे देखा जा सकता है। स्वॉगों मे छन्द, रस, अलकार, रीतिगुण वक्रोन्ति और औचित्य आदि सभी काव्य शास्त्रीय मान्यताओ का समावेश हाता है। वेसे स्वॉगों में सहज अभिव्यक्ति का प्राधान्य होता है और ये ही अभिव्यक्ति उसे सफलता प्रदान करती है।

स्वॉगो के अनेक उदाहरण ऊपर दिये जा चुके है इसलिए उन्हे यहॉ बार-बार दोहराना उचित नही होगा। विस्तार भय से यहॉ कोई उदाहरण नहीं दिया गया है।

१४. मिथको एवं प्रतीकों का प्राधान्य

स्वॉगों की आधारभूमि पूर्णतः लोक मिथको और प्रतीको पर आधारित होती है सागीतकार लोक प्रचलित देवताओं और लोक वीरों का चित्रण अपने स्वॉगों में अत्यन्त विस्तार से करता है। ऐसे लोक वीरों और लोक मिथकों की कथा सामाजिक मान्यताओं पर आधारित होती है। जो समय-समय पर बदलती रहती है। ऐसे लोक वीरों और लोक मिथकों के नाम हैं –

गोपीचन्द महाराज, पिगला भरतरी, दुष्यन्त शकुन्तला, हकीकत राय, ध्रुव भक्त, सत्यवान सावित्री नरसी, सोमनाथ प्रभावती, कर्ण, उन्तन पात, द्रोपदी, पृथ्वीसिंह किरणमई, श्रवण कुमार, नल दमयन्ती,

---

१. सोमनाथ प्रभावती लक्ष्मीचन्द शर्मा, पृ० ६७

पूरणमल, पांडव, सावल्दे राजा कारक, हरिश्चन्द्र, ऊखा अनिरूद्ध बाणासुर, रूप बसन्त, अजना, गजना गौरी, दुर्योधन भीम, अभिमन्यु, जयद्रथ, अजीतसिंह राजबाला, धर्मपाल शान्ताकुमारी, गौतम अहिल्या, जवाहरसिंह श्यामकौर, संयोगिता, रूपवती चूडावत आदि।

५. कालावधि निरपेक्ष मौखिक साहित्य :

लोक साहित्य को और विशेषकर स्वॉग को काल की अवधि में बॉधकर नही रखा जा सकता इसकी जडें बहुत गहरे मे और बहुत दूर तक फैली रहती है। ये ही कारण है कि साहित्य कभी भी न मिटने वाला साहित्य होता है।

इसकी संम्प्रेषणीयता काल और अवधि को लांघकर अपने स्वरों को लगातार गुजाती रहती है।

१६. सुमंगला तिरिया, परोक्ष आत्माओं, देवताओं, सन्त, फकीरों, लोक वीरों की पूजा :

सागीतकार कुल्टा नारी का गहन विरोध करता है। वह सुमगला नारी को समाज में प्रतिष्ठित करता है। वह लोक मिथको की भॉति नित नवीन सर्जनाएं करता है। वास्तव में लोक देवी देवता, लोक वीर और लोक मिथक ही उसकी अभिव्यक्ति के माध्यम होते हैं। जहॉ वह गोगा पीर और बंजारे के कुत्ते का वर्णन करता है। वहीं साध ही वह लोक प्रचलित सभी देवी देवताओं की आराधना मे अपने साहित्य को समर्पित कर देता है।

१७. विवरणात्मक पद्धति :

लोक साहित्यकार वर्णन और विवरण की शैली का सर्वत्र प्रयोग करता है जिससे उसका श्रोता उसके विवरण को लगातार आत्मसात करता जाये ये शैली दर्शकों के लिए सुगम्य होती है।

सामाजिक अध्ययन पर इन दृष्टियो से विचार किया जा सकता है

१ खान पान की वस्तुऍ

२. वस्त्र

३. जवाहरात एवम् गहने

४. व्यक्तिवाचक नाम

५. सामाजिक राजनीति

६ पेड–पौधे, फल–फूल

७ नदी–नाले

८ खेत–खलिहान

६ रिश्ते–नाते

१० जातिया

११ पशु–पक्षी एव वन्य जन्तु

१२ श्रृगार के उपादान

१. खान-पान की वस्तुएँ

स्वॉगो मे सांगीतकार के वर्णन का आधार अधिकांशत राजा, बादशाह अमीर होते है ये सामाजिक टोटम या टेबु दोनो रुपो मे हो सकते है। वे सामाजिक हित चिन्तन मे रत भी हो सकते है। और सामाजिक विनाश भी उनके हाथो मे सभव होता है।

निम्नवर्गीय समाज का चित्रण स्वॉगो मे यदाकदा ही होता है और इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि वे ऐसे व्यक्तियो को सामाजिक न्याय या सामाजिक विनाशक के रूप मे प्रस्तुत करते है।

कुछ वर्ग के खान पान के उपादान –

छुवारा	–	अजीत सिह राजबाला, पृ० १४
शराब	–	पृथ्वीसिह किरणमई, पृ० ४
दूध	–	पृथ्वीसिह किरणमई, पृ० ६
लड्डू	–	पृथ्वीसिह किरणमई, पृ० १४
पान	–	पृथ्वीसिह किरणमई, पृ० १४
घी, तेल अमृत	–	पृथ्वीसिह किरणमई, पृ० १७
बेर	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० १८
दवाई	–	श्रवण कुमार, पृ० १५
चून, अफीम	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० ८

मिश्री, कुंजे, सुपारी, पिस्ते, गोले, छाक — नरसी का भात (कौशिक), पृ० ६

२. **वस्त्र**

साडी — नरसी का भात (कौशिक), पृ० ४

लगोटा, अलफी, कोपीन — नरसी का भात (कौशिक), पृ० १२

रेशमी कपडे — नरसी का भात (कौशिक), पृ० २४

पोशाक — अमरसिंह राठौर, पृ० २

साफे — नरसी का भात (कौशिक), पृ० १२

३. **जवाहरात एवं गहने**

लालमणी, सोना–चाँदी — नरसी का भात (कौशिक) पृ० २४

हीरे–मोती — नरसी का भात (कौशिक), पृ० २३

कणी–मणी — श्रवण कुमार, पृ० १६

नथ–लोंग, बुलाक, बोरला — पृथ्वीसिह किरणमई, पृ० २३

चूडी कर्णफूल — पृथ्वीसिंह किरणमई पृ० २२

कठी हार — पृथ्वीसिंह किरणमई पृ० २४

नौलक्खा हार — अजीतसिह राजबाला, पृ० २४

४. व्यक्तिवाचक नाम

रावण, लक्ष्मण, अनारसिंह, अजीत सिह, प्रताप सिह — अजीतसिह राजबाला, पृ० ३

सत्यवान–सावित्री — अजीतसिंह राजबाला, पृ० ४

प्रतापसिंह राजबाला — अजीतसिंह राजबाला, पृ० ६

शिवजी — अजीतसिंह राजबाला, पृ० ६

हरनन्दी — अजीतसिंह राजबाला, पृ० ११

हरिश्चन्द्र — अजीतसिंह राजबाला पृ० १७

गुलाब सिह	–	अजीतसिह राजबाला, पृ० १६
जगत सिह	–	अजीतसिह राजबाला, पृ० २३
जसवत सिह, अजीत सिह, अमर सिह		
रामसिह, शाहजहॉ	–	अमरसिह राठौर, पृ० १
चन्द्रलाल	–	अमरसिह राठौर, पृ० ३
पठान नरसेबाज	–	अमरसिह राठौर, पृ० ५
सलावत खा, अमरसिह	–	अमरसिह राठौर, पृ० ६
किशन नाई	–	अमरसिह राठौर, पृ० १२
मगल चद	–	अमरसिह राठौर, पृ० १५
अर्जुन गौड	-	अमरसिह राठौर पृ० १७
भुल्लन सिह	–	अमरसिह राठौर, पृ० २२
मगूमल साहूकार	–	नरसी का भात (कौशिक) पृ० १
मुडियाबाई, रामशरण	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० २
रामरतन, हरनदी, मन्शा सेठ	–	नरसी का भात (कौशिक) पृ० ३
नदलाल, करोडीमल, रुक्मिणी	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० '

व्यक्तिवाचक नाम लोक व्यवहार एव उच्चारण की दृष्टि से युगीन लोक के स्वरुपो को उजागार करते है। इसी कारण व्यक्तिवाचक नामो के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये गये है। इनसे सागीतकार के सामाजिक एव भौगोलिक ज्ञान का भी पता चलता है।

४. सामाजिक, राजनीति

सागीतकार किसी राजनीतिक पचडे मे नही पडता। धर्म ही उसके व्याख्यान का आधार हुआ करता है किन्तु अकारण असामाजिक राजनीति के दलदल मे फसकर वह उससे अच्छी तरह निकलना जानता है। यही कारण है कि अजीतसिह राजबाला के स्वॉगो मे वह इस ओछी सामाजिक राजनीति का पर्दाफाश बडे सुन्दर ढग से कर देता है।

५. पेड-पौधे, फल-फूल

फल, दरख्त	–	अमरसिंह राठौर, पृ० १६
फूल	–	श्रवण कुमार, पृ० १८
चमेली	–	श्रवण कुमार, पृ० १५
बाग	–	अजीतसिंह राजबाला, पृ० ६
सब्जी, फूल	–	अजीतसिंह राजबाला, पृ० ११
फुलवारी	–	अजीसिंह राजबाला, पृ० १६

६. नदी-नाले

स्वॉगों में अधिकतर गंगा तथा यमुना का नाम आया है। एक दो स्वॉगों में कावेरी और कृष्णा जसी महत्वपूर्ण नदियो का भी उल्लेख हुआ है।

गगा–जमुना	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० ६
सिध नदी, गगा–जमुना	–	श्रवण कुमार, पृ० २०
गदी नाली	–	श्रवण कुमार, पृ० १३

७. खेत खलिहान

क्योंकि स्वॉगों में अधिकतर पात्र राजा–रानी और सभासद होते हैं, इसलिए खेतो और खलिहानों का जिक्र बहुत कम देखने का मिलता है। स्वॉगों के लोक–पुरुष मिट्टी में पैदा होते हैं और उसी मिट्टी मे विलीन हो जाते हैं। किन्तु अपने कार्यकलाप के अतिरिक्त उनका अन्य परिस्थितियों तथा वस्तुओं से अधिक संबंध नहीं होता।

८. रिश्ते-नाते

स्वॉगों में रिश्ते नातों का उल्लेख स्थान–स्थान पर मिलता है। कुछ उदाहरण यहॉ प्रस्तुत हैं।

दामाद	–	अजीतसिंह राजबाला, पृ० ६
भाई–बहन	–	अजीतसिंह राजबाला, पृ० १२

ससुर	–	अजीतसिह, राजबाला, पृ० २३
मात–पिता, सास–ससुर	–	श्रवण कुमार, पृ० २
जेठानी, ननद, मां	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० ४
पुत्री	–	नरसी का भात(कौशिक), पृ० ३
समधी–समधन	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० ६
साला–समधियाना	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० १०
सास–ननद	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० १३
पितसरे, साले	–	पृथ्वीसिह किरणमई, पृ० ४
फूफस	–	पृथ्वीसिह किरणमई, पृ० १२
जीजा	–	पृथ्वीसिंह किरणमई, पृ० ४
फूफी	–	पृथ्वीसिह किरणमई, पृ० १३

६. **जातियॉ**

राजपूत	–	अमरसिह राठौर, पृ० २
पठान, हिन्दू	–	अमरसिह राठौर, पृ० ५
ठाकुर	–	अमरसिह राठौर, पृ० १०
मुगल	–	अमरसिह राठौर, पृ० १४
पडित, काजी	–	पृथ्वीसिह किरणमई, पृ० २१
ब्राह्मण, सेठ	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० १
नाई	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० १०
डूम, भाट, नाई, धोबी	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० २४
मल्लाह	–	अजीतसिह राजबाला, पृ० ४
जौहरी	–	अजीतसिह राजबाला, पृ० ७
कसाई	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० १४

१०. पशु, पक्षी एवं वन्य जन्तु

घोडे–हाथी	–	अजीतसिह राजबाला, पृ० १५
शेर	–	अजीतसिह राजबाला, पृ० १८
मोर–पपीहा, घोडा	–	अजीतसिह राजबाला, पृ० १९
हस कबूतर	–	श्रवण कुमार, पृ० ३२
गऊ	–	श्रवण कुमार, पृ० ३०
रीछ सुअर, मृग, जरख	–	श्रवण कुमार, पृ० २८
गीदड शेर	–	अमरसिह राठौर, पृ० १७

११. श्रृंगार के उपादान

साडी	–	नरसी का भात (कौशिक) पृ० ४
मेहदी	–	नरसी का भात (कौशिक) पृ० ६
घडी	–	नरसी का भात (कौशिक), पृ० १०
बुलाक नथ, लोंग	–	अमरसिह राठौर, पृ० २३

सांगीतकार अपने परिवेश मे व्याप्त कण–कण से पूरी तरह से परिचित रहता है। कोई भी घटना अथवा कोई वस्तु उसकी नजर से चूक कर अलग नही हो पाती। वह इस विषय मे पूर्णत सावधान रहता है। यही कारण है कि परिवेशीय अर्तरगता जितनी स्वॉगो मे मिलती है। उतनी लोकगीतो, लोककथाओ और लोकगाथाओं में नही मिलती।

६. कौरवी जनपदीय स्वाँगों का सांस्कृतिक अध्ययन

संस्कृति के विभिन्न उपादान ये है :

१ समाज

२ धर्म

३ दर्शन

४. लोकाचार

५. व्यवहार

समाज के विभिन्न अगो और उपांगो के सम्बन्ध में पिछले अध्याय में विस्तार से विचार किया जा चुका है। विस्तार भय के कारण यहाँ उस सम्बन्ध में दोबारा विचार नहीं किया जा रहा है।

सस्कृति सस्कार सम्यक और सम्यक कृति किसी शुभ चेष्टा या श्रेयकर कर्म को कहा जा सकता ह। यद्यपि पडित हजारी प्रसाद द्विवेदी का विश्वास है कि सस्कृति शब्द का धातुगत अर्थ उसे व्यवहारिक अथ को स्पष्ट करन मे सहायक नहीं होगा। फिरभी हम समझते हैं कि धातुगत अर्थ, व्यवहारिक अथ की ओर संकेत करता है। यह एकान्ततः असम्बद्ध अथवा असम्वृश्त नहीं है।

इसी तरह समाज शास्त्रियो के अनुसार विशेष रूप से आचार्य नरेन्द्र देव के अनुसार -- भारतीय सस्कृति को तीन दृष्टियो से देखा जाता है, प्रथम दृष्टि में उन्होंने उन परम्परा वादियो की धारणाओ को लिया है, जो साम्प्रदायिक दृष्टिकोण की प्राचीर के बाहर झाकना कोई पुण्य कार्य नहीं समझते है तथा दूसरे पूर्णतया इसके विपरीत उन आधुनिकतावादियों का दृष्टिकोण है, जो प्रथम की प्रतिवादात्मक भूमि पर अवस्थित है, जो प्राचीन – परम्न्रावादियो को रूढिवादियों को रूढिवादी मान कर उन्हे घृणास्पद मानते हैं, तथा परम्परागत विचार धारा को अध विश्वास और प्रतिक्रियावादिता ही समझते है। तीसरा दृष्टिकोण है समन्वयात्मक। इसमे प्राचीन तथा नवीन और प्राच्य तथा पाश्चात्य धारणाओ को ऐतिहासिक दृष्टि से समन्वय के धरातल पर रखकर विचार करते है।[1] यही समन्वयात्मक दृष्टिकोण एक वैज्ञानिक तथा असंकीर्ण दृष्टिकोण है।

परम्परागत पौराणिक हिन्दू धर्म का आधार केवल 'निगम या (वेद) न होकर 'आगम' भी है। दूसरे शब्दों में वह निगम–आगम, धर्मो का समन्वित रूप है। यहाँ निगम का मौलिक अभिप्राय प्राचीनतर प्राग्वैदिक

---

१. आचार्य नरेन्द्र देव – भारतीय संस्कृति का विकास (भूमिका) समाज विज्ञान परिषद काशी विद्यापीठ, बनारस प्रथम संस्करण सन् १९५६, पृ० (क)

काल से आती हुई। वैदिकेत्तर धार्मिक या सास्कृतिक परम्परा से है।[1]

वैदिक देवता विपरीत दिशा मे न दौडकर पूर्ण सामजस्य से कार्य करते हैं इसी सन्दर्भ मे डा० मगल देव शास्त्री के अनुसार – वे समस्त बराबर जगत् की न केवल प्राकृतिक अवस्था अपितु नैतिक व्यवस्था (सत्य) के भी पोषक और सरक्षक है। उसके नियम अटल है। उक्त की सारी प्रवृत्ति जगत के भद्र और कल्याण के लिए है। वे प्रकाश रूप में हैं। अज्ञान और अन्धकार से परे हैं। वे सतत कर्मशील हैं इसलिए मनुष्य का वास्तविक कल्याण देवताओं के साथ सर्वथा सापुज्य और तादात्म्य मे ही है।

ऋषियों ने प्राकृतिक शक्तियों को देवताओं के रूप में प्रतिस्थापित करके जीवन मे लोक मगल की कामना की है। सभी देवता वैदिक आर्य ऋषियों के लिए एक ऊँचे आदर्श के रूप मे मान्य रहे है। देवताओं का चित्रण उन्होंने भव्य मानव रूप में मन्त्रों के माध्यम से किया है।

यों तो प्रत्येक पीढी अपने को आधुनिक कहती है, किन्तु इतिहास में कई विशेषताएँ उत्पन्न होने पर ही आधुनिक युग का श्रीगणेश समझा जाता है। पौराणिक परम्परा वर्तमान काल को कलियुग बताती है किन्तु इतिहासकार इसे कलियुग कहते हैं। आधुनिकता का प्रधान चिह्न कलयुगी होना अर्थात मशीनो की सहायता से भारी परिणाम में उत्पादन तथा वैज्ञानिक आविष्कारों का अधिकाधिक उपयोग है।

यह कहना उचित ही होगा कि नवीन शिक्षा और नवीन आविष्कार ही किसी देश में आमूल परिवर्तन करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। प्राचीन और नवीन धारणाओं की समन्वय करते हुए हिन्दू धर्म की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने का श्रेय राम कृष्ण मिशन को भी है। श्री राम कृष्ण परमहस उच्च कोटि के सन्त और साधक थे। उनकी रहस्यवादिता, आध्यात्मिक व्याग्रता और उदारता ने स्वामी विवेकानन्द पर भी अधिक प्रभाव डाला। १८८३ में शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन मे उपस्थित होकर उन्होंने वहाँ ऐतिहासिक विचार प्रकट किये, जिससे समस्त विश्व को पहली बार भारत के धार्मिक महत्व का परिचय हुआ। यह सुधारो की दृष्टि से ब्रह्म समाज की भांति क्रान्तिकारी नहीं है। उनको वेद ही मान्य थे तथा आध्यात्मिकता का विकास ही उनका मुख्य उद्देश्य था। ईश्वर के उपासक के विषय मे उनका विचार था – *"काम के समय तुम एक हाथ से ईश्वर के पैर पकडे रहो और दूसरे हाथ से काम करो।* जब काम से छुट्टी पाओ तो दोनों हाथ से भगवान के पैर पकड़ लो। श्री हरविन्द के शब्दों मे राममोहन राय उपनिषदों पर ही ठहर गये थे, दयानन्द ने उपनिषदों से भी आगे देखा और यह जान लिया कि हमारी संस्कृति का वास्तविक मूल वेद है।[2]

---

१. डा० मंगल देव शास्त्री – भारतीय संस्कृति का विकास (वैदिक धारा) समाज विज्ञान परिषद, काशी विद्यापीठ, बनारस सन् १९५० ई०, पृ० ८

२. डॉ० मंगल देव शास्त्री – भारतीय संस्कृति का विकास समाज विज्ञान, परिषद सन् १९५६ ई०, पृ० ७५ – काशी विद्यापीठ बनारस।

यूनानियो की तरह रोमन भी बहुदेववादी तथा मूर्तिपूजक थे। सम्राटो के शासन काल मे मन्दिरों मे देवताओं की तरह सम्राटों की मूर्तिया बनने लगी थी। प्रत्येक रोमवासी के लिए उस मूर्ति के सामने नमन करना आवश्यक था किन्तु इन सबके पीछे ठाट बाट और सम्राटो मे आत्म पूजा करवाने की भावना थी न कि सचमुच किसी धार्मिक विश्वास से प्रेरित होकर लोग सम्राटो की मूर्तियो के सामन नमन करते है। सच बात तो यह हे कि रोमनवासियो के जीवन का केन्द्र उनके व्यक्तिगत या सामाजिक धर्म देवी–देवता नही थ जबकि उनक जीवन का असली कन्द्र तो थी राजनीति - उनका जनतत्र जनतत्र के प्रति उनकी कर्तव्य भावना जनतंत्र के कानून और सामाजिक जीवन मे अनुशासन और सगठना।[१] जरथुस्त किस काल म हुये यह निश्चित पता नहीं। परन्तु वह मत जिसे पारसी मत कहते हे साइरस नामक ईरानी सम्राट क समय (६०० ई०पू० से ५२६ ई०पू०) ईरान साम्राज्य का राजधर्म बना दिया गया।[२]

समाज का सम्बन्ध सीधा सभ्यता से हाना है। इसलिए यहाँ सभ्यता को ध्यान मे रखकर सीधा विचार किया गया है। सस्कृति और सभ्यता मे पारस्परिक सीधा सम्बन्ध माना जाता है। यह घनिष्ठतम इस पराकाष्ठा पर है कि भ्रमवश अनेक व्यक्ति सस्कृति एव सभ्यता एक ही मान लेते है। सस्कृति शब्द क जितन भी अथ प्राप्त होते है उनमे सभ्यता भी एक है अर्थात समाज भी एक हे।

सस्कृति और सभ्यता शब्द पर्यायवाची है। सस्कृति को सामाजिक इच्छा (कस्टन) भी कहा जाता ह। किन्तु इन दोना शब्दो मे मौलिक अन्तर है वस्तुत सभ्यता मानव की भौतिक विचारधारा की सूचक ह तथा सस्कृति आध्यात्मिक व मानसिक क्षेत्र के विकास की सूचक है। दूसरे शब्दो मे हम यह कह सकते है कि मनुष्य के द्वारा भौतिक क्षेत्र मे की गयी उन्नति का नाम सभ्यता है। सभ्यता समाज मे रहन–सहन वेश–भूषा व व्यवहार के पर्याय है।

किसी समाज व राष्ट्र के मानवो के कार्य, दर्शन ज्ञान–विज्ञान से सबध क्रियाकलाप तथा आदर्श सस्कारो के सामजस्य से है, जबकि मनुष्य का समाज मे मानवीकरण सभ्यता माना जाता है।

मानव द्वारा प्रकृति प्रदत्त पदार्थो तत्वो और शक्तियो का उपयोग कर भौतिक क्षेत्र जो प्रगति की गयी है वही सभ्यता है।

अपनी भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए मनुष्य प्रगति के साधनो का जिस ढग से प्रयोग करता है उससे सभ्यता का निर्माण होता है।[३]

१ हरिदत्त वेदालकार – भारत का सास्कृतिक इतिहास दिल्ली द्वितीय सशोधित सस्करण १९५२, पृ० २६३–६४

२ विश्वेश्वर स्वरुप भार्गव – भारतीय सभ्यता एव सस्कृति इतिहास प्रथम सस्करण १९६८, पृ० १४५

३ हरिदत्त वेदालकार – भारत का सास्कृतिक इतिहास – दिल्ली १९५८ पृ० १९९

'सस्कृति और सभ्यता मनुष्य की सृजनात्मक क्रिया के कार्य का परिणाम है जब यह क्रिया उपयोगी लक्ष्य की ओर गतिमान होती है, तब सभ्यता का जन्म होता है। और जब वह मूल चेतना को प्रबुद्ध करने की ओर अग्रसर होती है।'[1]

इस प्रकार सस्कृति और सभ्यता को एक साथ देखने से यह माना जाता है कि मनुष्य के जीवन मे आध्यात्मिकता का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसके विकास के लिए उसे विकास करना पडता है। मनुष्य भातिक विकास कर अपनी क्षुधा को तृप्त करता है किन्तु उसकी आत्मा अतृप्त ही रहती है। मनुष्य केवल भातिक परिस्थितियो एव उनके विकास से ही सदा सन्तुष्ट नहीं रह सकता। वह केवल भोजन से सतुष्ट नहीं रह सकता। शरीर के साथ मन और आत्मा भी है। भौतिक विकास से शारीरिक क्षुधा की तृप्ति हो सकती है किन्तु मन तथा आत्मा अतृप्त रहेगे। मन एव आत्मा के सन्तोष के लिए किया गया मानसिक आत्मिक विकास सस्कृति है और सस्कृति केवल तब ही सभ्यता मानी जाती है जब उसके पास लिखित भाषा विज्ञान, दर्शन विशिष्ट श्रम विभाग जटिल प्रविधि और राजनैतिक पद्धति हो।

'सस्कृति बौद्धिक पद्धति' पद्धति का पर्यावाची है और सभ्यता भौतिक पदार्थ का समानार्थक है सभ्यता बाहय क्रियात्मक रूप है और सस्कृति विचार धारा का परिणाम है।'[2]

सभ्यता का आन्तरिक प्रभाव सस्कृति मानी जाती है। सभ्यता समाज की व्यवस्थाओ का ही नाम है तथा सस्कृति मनुष्य के अन्दर का विकास मानी जाती है।

सस्कृति और सभ्यता एक–दूसरे के पूरक जाने जाते है। सस्कृति द्वारा मनुष्य के व्यक्तिगत एव सामाजिक आचरणो का सस्कार होता है। इस सस्कार की प्रक्रिया का निष्पादन मनुष्य को सस्कृति बनाने मे होता है जो व्यक्ति सस्कृत है, वह सभ्य है और असस्कृत है, जिस के जीवन के व्यक्तिगत एव सामाजिक पक्षो का सम्यक विकास नहीं हो पाया है वही असभ्य कहलाता है।

सभ्य शब्द का सीधा सम्बन्ध सभी से माना जाता है जिसमे सामाजिकता का भाव निहित है। सभा' मे उठने बैठने एव उसमे समादर प्राप्त करने के लिए सभ्य होना आवश्यक है। जो व्यक्ति की सभा मे बैठने की योग्यता का अभिव्यज़क है, सभ्य व्यक्ति नहीं होता, जिसका व्यवहार सज्जनो एव शिष्टो का सा हो

सभ्य – 'सभा या समाज के लिए उपयुक्त या शिष्ट व्यक्ति।'[3]

---

१ डा० रामेश्वर गुप्ता – मानव की कहानी – कालेज बुक डिपो, जगदुर द्वि० सस्करण १६६८, पृ० १३०

२ कालिदास कपूर – विश्व सस्कृति का विकास – प्र० विद्या मन्दिर चौक लखनऊ प्रथम सस्करण १६४५, पृ० १३

३ डॉ० धीरेन्द्र वर्मा – हिन्दी साहित्य कोश, पृ० ८६८

साधी– सभ्यार्थ सज्जनो·[1]

(सज्जन के चार नाम है – १ साधु, २ सभ्य ३ आदि, ४ सज्जन)

जैसा आचरण सभ्य लोग करते है उसे सभ्यता कहा जाता है।

"तस्मैः सभ्याः समायार्य गोत्रे गुप्ततमोन्द्रियाः

अर्हणामहोऽशर्मनयोन यवक्षु में[2]

सभ्य होने के लिए व्यक्ति के सामाजिक तथा व्यक्तिगत व्यवहारों में संतुलन अपेक्षित है। सभ्य व्यक्ति का व्यवहार समाज सापेक्ष होता है सभ्यता का सम्बन्ध व्यक्ति के बाह्य पक्ष से अधिक है जब सस्कृति की कसौटी बाह्य वैभव तथा रहन–सहन का उच्च स्तर न होकर जीवन की पवित्रता, सच्चरित्रता, सयम त्याग तथा प्राणीमात्र के प्रति मैत्री सहयोग, सहिष्णुता एव उदारता की भावना होती है।

मनुष्य जिस परिवेश में जीता है उस परिवेश की सम्पूर्ण आस्थाएँ उसके चेतन मन से होकर अचेतन की अलग गहराईयो मे स्थित हो जाती हैं। दूसरे शब्दों मे यह भी कहा जा सकता है कि व्यक्ति का अचेतन पूरे समाज की इतिहास का अवचेतन मन में स्थित हो जाता है। अचेतन से उपचेतन तथा चेतन को होकर उसकी उन भावनाओ की अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम से होती है। प्रत्येक भाषा की अपनी सीमाए होतीं है, और उन्ही सीमाओं मे व्यक्ति अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। वैसे यह कहना असम्भव ही है कि हम जो कुछ अनुभव करते हैं, उसे उसी रूप में भाषा में अभिव्यक्त कर देते है किन्तु भाषा अपनी सीमाओं मे उन अनुभूतियों को अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। व्यक्ति के संस्कार उसे वशानुक्रम एव परिवेश से पूर्णतः प्रभावित रहते है। इसी कारण उसी अभिव्यक्ति भी उसके परिवेश से प्रभावित रहते है। इसी कारण उसकी अभिव्यक्ति भी उसके परिवेश से प्रभावित रहती है या यो कहिए कि सस्कृति भाषा को प्रत्येक स्थल पर प्रभावित करती है। यहाँ पर भाषा का सबंध सीधा साहित्य से होता है। इसलिए साहित्य को ध्यान में रखकर सीधा विचार किया गया है क्योंकि भाषा का मुख्य स्वरूप ही साहित्य है और साहित्य का मुख्य स्वरूप भाषा है।

सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य को समुचित पारिवारिक एव सामाजिक परिवेश की प्राप्ति होती है। विभिन्न परिवेश की सस्कृति भिन्न हो सकती है, जिसके परिणाम स्वरूप उस परिवार या समाज के सदस्य की भाषा भी प्रभावित होती है। उदाहरणार्थ एक हिन्दी भाषी परिवार से जन्मे बच्चे का पालन–पोषण यदि एक बंगला भाषी परिवार में किया जाताहै तो उसके आचार–विचार की अभिव्यक्ति का माध्यम हिन्दी भाषा न होकर बंगला भाषा होगी, जो उसे उसके परिवेश की देन कही जाएगी।

---

१. डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार – भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास, पृ० १६

२. डा० देवराज – संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, पृ० १७७

स्थान परिवर्तन के साथ–साथ सस्कृति के परिणाम स्वरूप भाषा के अर्थ एव वाक्य मे भी परिवर्तन होता है उदाहरणार्थ पजाब प्रान्त मे प्रचलित (कुडी) शब्द का अर्थ लडकी से लिया जाता है। जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश मे कूडे का ढेर है। इस प्रकार बृज क्षेत्र मे प्रचलित शब्द कढी खाये एक साध ारण सी गाली के रूप मे है जबकि कूर्माचल मे इसका प्रयोग गाली के रूप में होता है। अन्य स्थानो पर इससे विशेष अभिप्राय नहीं है।

काल अथवा समय परिवर्तन के साथ भी अर्थ एव वाक्य मे परिवर्तन होता है। प्राचीन काल मे प्रयुक्त किसी अर्थ का रूप आधुनिक काल मे भिन्न हो सकता है। इसी प्रकार आज के प्रचलित अर्थ का रूप आगामी काल में भिन्न हो सकता है। उदाहरणार्थ प्राचीन काल मे प्रयुक्त सस्कृत शब्द **पितृ गृह** का अर्थ स्वर्ग माना गया है, जबकि आज पिता का घर से है। इसी प्रकार दिवंगत एव गवेषणा शब्दो का प्रयोग प्राचीन काल मे क्रमश. स्वर्ग को गये हुए (ऋषि, मुनियों, स्वर्ग में पास का मृत्युलोक को वापस आ जाते थे) गायों को खोज खोजने वाले के अर्थ मे प्रयोग हुआ है। जबकि आधुनिक काल मे इन दोनो शब्दो का प्रयोग देहावसान एव किसी भी खोज के अर्थ में किया जाता है।

सस्कृति के परिणाम स्वरुप विभिन्न भाषाओ की बोलियो की शब्दावली मे भी परिवर्तन होता है उदाहरणार्थ हिन्दी भाषा मे प्रयुक्त सम्मान सूचक शब्द नमस्कार, प्रणाम, अथवा नमस्ते प्रत्येक क्षण एव काल में समान है, जबकि आग्ल भाषा के काल एव क्षण के अनुसार विभिन्नता मिलती है जिसके अनुसार प्रात. कालीन सूचक शब्द गुडमार्निंग, मध्यान्तर, गुड नून, अपराह्न, गुड आफ्टर नून साय गुड इविनिग एवं रात्रि को गुड नाइट आदि शब्दो का प्रयोग होता है। जो कि संस्कृति से प्रभावित है इसी प्रकार सस्कृत भाषा का भवान् (पुलिग) का भवती (स्त्रीलिंग) हिन्दी भाषा में तू तुम व आप नमवगानुसार प्रयुक्त है एवं आंग्ल भाषा मे मात्र शब्द यूँ ही प्रयुक्त होता है। चाहे वह स्त्री हो चाहे पुरूष वयवगानुसार छोटा हो या बडा। यही सस्कृति के परिणाम स्वरूप शब्दावली में परिवर्तन का प्रभाव है।

संस्कृति के परिणाम स्वरूप विभिन्न भाषाओं ध्वनियों मे भी अर्थ परिवर्तन होता है। इसी के परिणाम स्वरुप कुछ भाषाओं मे कम अधिक वर्ग प्रयुक्त है। उदाहरणार्थ उर्दू वर्ण माला में अडतालीस अग्रेजी मे छब्बीस एवं हिन्दी भाषा की वर्ण माला मे कुल ३७ वर्ण हैं। इसके अतिरिक्त जो सस्कृति जितने विस्तृत क्षेत्र मे व्याप्त होगी उससे सम्बन्धित भाषा का शब्द–कोश भी उतना ही विशाल होगा। उदाहरणार्थ हिन्दी भाषा कम क्षेत्र में ही व्याप्त है। परिणामस्वरूप हिन्दी शब्द कोश में लगभग १–१/२ लाख शब्द उपलब्ध है, जबकि संस्कृत का क्षेत्र विस्तृत होने के कारण आंग्ल भाषा के शब्द कोश मे लगभग २–१/२

अथवा तीन लाख शब्द उपलब्ध होते है इसी प्रकार अन्य भाषाओ एव सस्कृति के विषय मे मिलता है।

सस्कृति के परिणामस्वरूप मिथक का अर्थ परिवर्तन होता है। उदाहरणार्थ सावित्री एवं कर्ण क्रमश सती एव दानी के रूप मे भारतीय ऐतिहासिक पात्र है, जबकि वर्तमान काल मे क्रमश सौभाग्यवती एव दानी के मिथक के रूप मे प्रयुक्त है। इसी प्रकार विभीषण एव कुम्भ कर्ण, लकाधिपति रावण के भ्राता ऐतिहासिक पात्र है, किन्तु वर्तमान मे दोनो अर्थों के रूप मे क्रमश देशद्रोही या भ्रात दोही एव अधिक देर तक सोनेवाले के अर्थ मे लिए जाते है।

सस्कृति के प्रभाव से काल मे भी अर्थ परिवर्तन माना जाता है। उदाहरणार्थ दुहितृ शब्द का अर्थ प्राचीन काल मे गायो को दुहने वाला के अर्थ म प्रयुक्त माना जाता था। जबकि वर्तमान मे पुत्री अर्थ का द्योतक है। इसी प्रकार हलवाई एव मलेच्छ शब्दो के विषय मे जाना जा सकता है। हलवाई शब्द का प्रयोग सना मे सैनिको के लिए हलवा बनाने के लिए प्रयुक्त था जबकि आज विभिन्न प्रकार के मिष्ठान बनाने वाले के अर्थ मे है। 'मलेच्छ शब्द का अर्थ भी सस्कृत भाषा न जानने वाले व्यक्ति क लिए माना जाता था जबकि आज मुसलमान का द्योतक है। इस प्रकार सस्कृति के प्रभाव के कारण काल क्रम मे अर्थ परिवर्तन भी दखने को मिलता है।

सस्कृति के प्रभाव से मुहावरे एव लोकोक्तियो के अर्थ मे भी परिवर्तन होता हे उदाहरणार्थ ऑखो का तारा हाना सामान्य अर्थ मे प्रयुक्त न होकर अत्यन्त प्रिय के अर्थ मे मुहावरे के रूप मे प्रयुक्त होता हे। इसी प्रकार 'नौ दिन चेत अढाई कोस' 'नाच न जाने ऑगन टेढा आदि का प्रयोग क्रमश दीर्घ रूढि एव कार्य प्रणाली को न जानने वाले के अर्थ मुहावरे एव लोकोक्तियो क रूप म प्रयुक्त किए जाते हे।

सस्कृति के प्रभाव से प्रचलित प्रतीको के अर्थ मे भी परिवर्तन होता है। जो साहित्यिक दृष्टिकोण से इस प्रकार सार्थक है जैसे – चन्द्रमा सौन्दर्य का प्रतीक होने के साथ–साथ अर्थ परिवर्तन स्वरुप कलक का भी प्रतीक है। इसी प्रकार पडित वणिक आदि शब्द क्रमश विद्वता एव अर्थ सम्पन्नता के साथ–साथ परिवर्तित अर्थ, आडम्बर एव कृपण के प्रतीक के रूप मे भी प्रचलित है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर स्वांगो मे अभिव्यक्त सस्कृति के सूत्रो का उद्घाटन इस प्रकार किया जा सकता है।

स्वॉग और समाज एवम् संस्कृति

स्वॉगो मे समाज और सस्कृति का खान–पान, रहन–सहन के विभिन्न उपादानो का वर्णन इनमे

व्यापक रूप से मिलता है। जिनका विवेचन पिछले अध्याय मे विस्तारपूर्वक किया जा चुका है। यहाँ उन्हे फिर से दोहाराना उपर्युक्त नहीं होगा।

जहाँ तक सस्कृति का सम्बन्ध है लोक सस्कृति के सूत्र स्वाँगों में सर्वत्र मिल जाते है। कुछ उदाहरण यहाँ प्रस्तुत हैं।

बेमेल विवाह पर व्यंग्य

थी शादी बिन मेल वहा फिर कौन करे रंगखेला
ना रहा तिलों में तेल राजा सूकग्या।।
वृद्ध अवस्था चौथापन था के था ब्याह सगाई
क्षयी हो गया रोग भूप का कुछ दिन मे ही भाई।।

यहाँ महाराज शान्तनु का धीवर की युवती कन्या से विवाह का वर्णन अत्यन्त व्यग्य पूर्वक किया गया है जो भारतीय संस्कृति का बहुत बडा अभिशाप है :

मैं जुल्म जुवारी अत्याचारी मनुष्य धोखेबाज
धर्म युधिष्ठर से मिलने मे आवेगी लिहाज
कर्म करेगा दड भरल्यूगा कोई कुछ कहदे तो मरल्यूगा।

यहाँ दुष्टात्मा द्र्योधन का पुण्यात्मा युधिष्ठिर के सामने पहुँचने का दृश्य प्रस्तुत किया गया है। पुण्य के सम्मुख पाप आते हुए स्वयं ही ले जाया जाता है। इस भावना का चित्रण सागीतकार ने बहुत सुन्दर ढंग से किया है।

स्थान परिवर्तन के साथ अर्थ परिवर्तन :

सांगीतकार अपने शब्दो का इस प्रकार प्रयोग करता है कि इसके शब्द हर स्थान पर अपने अर्थ को स्पष्ट करते चलते है। इस प्रकार से सांगीतकार शब्दों के प्रयोग का जादूगर होता है।

गोला गीरी छुवारे किशमिश पिस्ते की पुष्टार चास
दूध और चावल मिश्री देवता के मन का बास
पवित्र पुष्टावर भोजन वीर्य से बलका होता विकास
सांस चढ़े ना होकणी हो बलवान शरीर ने जिसने

सागीतकार प० रघुनाथसिह मेवाओ का वर्णन वीर्य को पुष्ट करने के अर्थ मे किया है जबकि इन्ही मेवो का वर्णन नरसी के भात मे दान की चीजों के रूप में किया गया है। दोनों का सन्दर्भ और अर्थ अलग हो जाता है।

ध्वनि भेद से अर्थ परिवर्तन

कुरु जनपदीय स्वॉगो मे कौरवी और हरयाणवी भाषाओं का प्रयोग किया गया है। सागीतकार जहॉ अनुभव करता है कि सम्प्रेषण की दृष्टि से कौरवी उपयुक्त होगी तो वहॉ कौरवी का प्रयोग करता है। और जहां हरयाणवी का महत्व होगा वहॉ वह उसका प्रयोग करता है। कहीं–कही वह फारसी और कही सस्कृत के शब्दों का प्रयोग भी बडे सटीक ढग से करता है। इस दृष्टि से उसे सही भाषा का प्रयोक्त कहा जायेगा।

स्वॉगों में मिथक का अर्थ परिवर्तन

स्वॉगों में जितने भी मिथकीय प्रयोग किये जाते हैं। उस सभी मे अर्थ की छायाये अलग–अलग होती है। प्रत्येक सागीतकार अपने परिवेश की परिस्थितियो के अनुरुप मिथको मे अर्थ का आरोप करता है। यह अर्थ वैसे तो अधिकाशत सामान्य ही होता है। किन्तु उसकी अपनी मनोदशा के कारण अथ छाया मे हलका सा परिवर्तन हो जाना अनिवार्य है। स्वॉगों मे मिथकीय पात्रो में नरसी, भीम कृष्ण हरिश्चन्द्र शैव्या, द्रोपदी, संयोगिता आदि के नाम आते हैं। ये नाम स्थान–स्थान पर अपनी अर्थ छायाओं में हलका सा परिवर्तन करते दिखायी पडते है।

कालक्रम से अर्थ परिवर्तन

सास्कृतिक आधार पर कालक्रम से पुराकथाओ के पात्रो मे अर्थ परिवर्तन लगातार परिलक्षित होता है। कभी–कभी व्यक्तिवाचक सज्ञाए भाववाचक बन जाया करती है। जैसे ममता। ममता दीर्घ तमस ऋषि की मॉ थी जो बचपन से अन्धे थे मॉ ने अपने मरते दम तक उसका पालन पोष्ज्ञण बालक के रूप मे किया कभी–कभी आल्हा और उदल जैसे पात्र शक्तिशाली व्यक्ति के रूप मे सामने आते है। और इस दृष्टि से ही ये भाववाचक सज्ञा बन जाया करते है। इसी प्रकार किसी भी शब्द को ले उसमे अर्थ की छाया सांस्कृतिक परिवर्तन के साथ परिवर्तित होती रहती है।

मुहावरों एवम् लोकोक्तियों में अर्थ परिवर्तन

जो लोकोक्तियॉ सूक्तिया से विकसित होती है। उनमे अर्थ परिवर्तन की सम्भावनाएँ बहुत अि ाक होती है। जो लोकोक्तिया समाज मे दीर्घ काल से प्रचलित है। उनमे अर्थ परिवर्तन की सम्भावना अपक्षाकृत कम होती है। इसक साथ ही मुहावरो मे भी बहुत कम अर्थ परिवर्तन देखने को मिलता है।

प्रतीकों में अर्थ परिवर्तन

सागीतकार प्रतीको के माध्यम से अपनी कथा का विस्तार करता है। ये ही कारण है कि कथा का विस्तार उसकी निजी भावनाओ के अनुकूल होता है और इस दृष्टि से वह उन प्रतीको मे अथ की अनेक सम्भावनाए टटोलता है। पडित वणिक आदि शब्द क्रमश विद्वता एव अर्थ सम्पन्नता के साथ- साथ परिवर्तित अर्थ, आडम्बर एव कृपणता के प्रतीक के रूप मे भी प्रचलित है।

सभ्यता और सस्कृति दोनो ही सस्कार के अन्तर्गत माने जाते है। ऐसी स्थिति मे सभ्यता का अर्थ होगा, मानव जीवन के कृत्रिम तथा ऊपरी सस्कार जिसके द्वारा वह अपनी भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए प्रकृत प्रदत्त साधनो का उपयोग करता है जबकि सस्कृति का अर्थ होगा - जीवन के वास्तविक तथा आध्यात्मिक सस्कार जिसके द्वारा मानव अपनी बुद्धि का प्रयोग कर कर्म और विचार के क्षेत्र मे कल्याणकारी सर्जनाओ के लिए सचेष्ट होता है

इस प्रकार हम सस्कृति एव सभ्यता का अन्तर निम्न बिन्दुओ के माध्यम से स्पष्ट करेगे -

१ सस्कृति मे सन्तोष एव आनन्द प्रदान करने वाली वस्तुए सम्मिलित रहती है आमोद प्रमोद कला, सगीत धर्म और दर्शन आदि। इसके विपरीत सभ्यता मे भौतिक उद्देश्यो की पूर्ति करन वाले साधन सम्मिलित होते है जैसे – प्रेस (मुद्रणालय), गाडी, कार कोठी एव सेवक आदि।

२ सस्कृति का जो रूप प्राचीन काल में था वही आज भी हो सकता है, किन्तु सभ्यता सदैव अनेक नवीन तत्वो को ग्रहण करने विकास पथ पर आगे बढती रहती है।

३ संस्कृति का मानदण्ड देश और काल के आधार पर बदला हो सकता है, किन्तु सभ्यता का माप दण्ड उपयोगिता के रूप मे निश्चित रहता है।

४. संस्कृति मे सचरण नहीं होता, परन्तु सभ्यता बिना किसी प्रयास के स्वय विकसित होती रहती है। मानव अपने जीवन को सुखी और सुविधाओ के परिपूर्ण बनाने के लिए जो प्रयास करता

है, उनसे सभ्यता विकास पथ पर आगे बढती जाती है।

५ संस्कृति को सुगमता से ग्रहण नहीं किया जा सकता है, किन्तु सभ्यता को किसी परिवर्तन या हानि के ही दूसरे देश अथवा पीढिया ग्रहण कर लेती हैं। उदाहरणार्थ किसी का धर्म जो किसी सस्कृति का अग है अन्य व्यक्ति सुगमता से ग्रहण नही कर सकते, परन्तु सभ्यता सूचक कार, हवाई जहाज, रेडियो स्कूटर, तिपइया आदि का प्रयोग कोई भी जाति या देश ज्यो का त्यो ग्रहण कर सकता है।

६ सस्कृति का सम्बन्ध हमारे आचारो से हैं, जबकि सभ्यता का सबध विचारों से है, क्योंकि सस्कृति आत्मा के अभ्युत्थान की प्रदर्शिका मानी जाती है और सभ्यता मानव के मनोविकारों की द्योतक। सभ्यता मानव को प्रगति की ओर ले जाने का संकेत करती है और सस्कृति आन्तरिक एवं मानसिक समस्याओ पर नियत्रण करने में सहायक सिद्ध होती है।

७ मनुष्य का अन्तर्मुखी प्रवृत्तियों से जो कुछ बना है वही संस्कृति है।

इस प्रकार सस्कृति का सम्बन्ध चिन्तन तथा कलात्मक सृजन की उन प्रक्रियाओं से है। जो हमारे जीवन एव व्यक्तित्व को परोक्ष रूप से परिष्कृत एव समृद्धिशाली बनाती है। यद्यपि प्रत्यक्षत: मानव जीवन के लिए उनकी कोई विशेष उपयोगिता परिलक्षित नहीं होती जबकि सभ्यता (समाज) का सम्बन्ध उन अभिनय आविष्कारो उत्पादन के साधनों एव सामाजिक, राजनैतिक सभ्यताओं से है जो हमारे जीवन को सरल एव उपयोगी बनाती है।

कुरु प्रदेश के स्वॉगों में अभिव्यक्त प्रवृत्तियॉ

कुरु प्रदेश का लोक धर्म भी सार्वकालिक लोक धर्म कहा जा सकता है। यहॉ के धर्म में भारतीय सस्कृति के उदयकाल से लेकर आज तक की सम्पूर्ण परिवर्तित मान्यताएँ देखी जा सकती है। यहॉ पर वैदिक धर्म की मान्यताएँ भी देखने को मिलती है और बौद्धयुगीन तथा परिवर्तित तांत्रिक धर्म का भी स्पष्ट प्रभाव दिखाई पडता है यहॉ के लोक धर्म में वैदिक युगीन प्राकृतिक शक्तियों की उपासना भी देखने को मिलती है और साथ ही मध्य युग में मुस्लिम प्रभाव से उत्पन्न नए धर्म को भी स्पष्ट देखा जा सकता है। यह क्षेत्र आदि काल से ही अपने ऋषि आश्रमों और उपजाऊ भूमि के लिए प्रसिद्ध रहा है। महाराजा पृथु ने इसी क्षेत्र में भूमिका कर्षण किया था और इसी कारण उपजाऊ धरती का नाम पृथ्वी भी पड़ा था। इसी क्षेत्र के चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा है इस

प्रकार स्पष्ट ही यह भूमि जहॉ एक ओर वैदिक ऋषियो की आश्रम स्थली है वहीं दूसरी ओर यह वीर भू–शया के भी रही। १६वीं शदी मे यही से स्वतत्रता की एक ज्वाला का उदय भी हुआ था।

कुरु जनपद के लोकधर्म पर यदि परम्परागत दृष्टि से विचार किया जाए तो उसका निम्नलिखित वर्गो के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है।

१ कुरु प्रदेश का सास्कृतिक लोक धर्म

२ कुरु प्रदेश का भौतिक धर्म

१ *सास्कृतिक लोकधर्म के अर्न्तगत स्थूल रूप निम्नलिखित धार्मिक प्रवृत्तियो पर विचार किया जा* सकता है।

१ उदार मनोवृत्ति

२ सर्वधर्म समभाव

३ वसुधैवव कुटुम्बकम

४ असाह्य सहायता

५ सर्वे भवन्तु सुखिन की भावना

६ पारस्परिक स्नेह सौहार्द

७ ऊँच नीच की भावना का त्याग

८ पर दु ख कातरता

इन बिन्दुओ पर प्राकारान्तर से शोध प्रबध मे कई स्थानो पर विचार किया जा सकता है यहॉ विस्तार भय के कारण उसे नही दिया गया है

२ कुरु प्रदेश का भौतिक धर्म – कुरु प्रदेश की भौतिक मान्यताऍ अत्यन्त स्पष्ट है। यहॉ खान–पान और अतिथि सत्कार को विशेष महत्व दिया जाता है। लोक मानव कितना भी हीन स्थिति मे हो वह अपने अतिथि के सत्कार मे कोई कसर नही रखता। यहॉ आदि काल से गाय भैसो आदि पशुओ का पालन होता रहा है और खाना और खिलाना यहॉ का एक प्रकार का मनोरजन जैसा माना जा सकता है। यहॉ ये माना जाता है कि जिस घर मे खूँटा सूना रहेगा वह घर कभी तरक्की नही कर सकता अर्थात घर पर गाय भैस का होना लोकधर्म की दृष्टि से नितान्त आवश्यक है।

इस दृष्टि से भी भौतिक सस्कृति विषय एक अध्ययन मे विस्तार से विचार किया जा चुका है। यहॉ विस्तार भय से उल्लेख करना उचित नहीं समझा है।

विस्तृत विश्लेषण के आधार पर लोक दर्शन का स्वरुप अधिक स्पष्ट नहीं हो पाता फिर भी इस दर्शन का आधार भय भावना माना जा सकता है। और लोकधर्म के सन्दर्भ मे पर सन्त गोस्वामी तुलसीदास की यह उक्ति पूर्णत चरितार्थ होती है

"भय विन प्रति न होई गुसाई"।

लोक कथाओ में सर्वत्र इसी बात को प्रकट किया गया है कि पहले (भयभीत हो) और उसके बाद मैत्री भाव स्थापित करो मैत्री भाव तब ही स्थापित होगा जबकि डरकर सम्पूर्ण समर्पण भाव से पूजा की जाए।

कुरु जनपद मे यदि टोटम और टेबू दोनो दृष्टियों से विचार किया जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि लोक टेबू ही लोक का ब्रह्म है वही माया का दूसरा स्वरूप है। ऐसा ब्रह्म लगातार रूप परिवर्तन करता है और यह रूप परिवर्तन उसे सर्वव्यापी बना देता है।

इस दृष्टि से नीचे विचार किया गया है

कुरु स्वॉगों में ब्रह्म, माया जीव, जगत का स्वरूप

ब्रह्म का स्वरूप – लोक मानव अधिकाशतः सन्त्रास गृहस्थ रहता हैं। वह लगातार सत्रासो को झेलत हुए भय की गहरी भावना से ग्रस्त हो जाता है और सम्भवत यही कारण है। प्रत्येक भयभीत करने वाली शक्ति धीरे–धीरे उसका टेबु बन जाती है। लोक के ब्रह्म जहॉ एक ओर सर्प, सिह है वही दूसरी और भूत, प्रेत आदि शक्तियॉ भी उसके ब्रह्म का रूप ले लेती हैं। यही ब्रह्म अपनी तीनो शक्तियॉ समाहित कर लेता है यही पालक है यही रक्षक है और यही उसका विनाशक भी है। इसलिए इन्ही टेबुओ को प्रसन्न करने में वह अपनी इतिश्री समझ बैठता है। शिवालय में स्थापित मूर्तियॉ भी उसके लिए इसीलिए पूज्य हैं क्योंकि वह उनसे डरता है। खेत पर लगातार रहनेवाले जहरीले नाग की उपासना भी वह इसीलिए करताहै कि वह कही क्रोध मे आकर उसके इह लीला समाप्त न कर दे और उसके परिवार के लिए भीख मॉगने के अलावा कोई उपाय न रह जाए।

माया का स्वरूप

लोक की माया ब्रह्म की माया नयी शक्ति ही है जो मानव को दिग्भ्रमित और लगातार प्रताडित

करती रहती है। स्वॉगो मे रूप परिवर्तन के अनेक उदाहरण देखने को मिल जाते है। प्रेत कभी बेल बनता है कभी नाग बनता है तो कभी जड, वृक्ष पीपल का रूप धारण कर लेता है। एक तरह से यह कहा जा सकता है कि माया विवर्त वादिनी है। वह सब कुछ आच्छादन करके नया स्वरूप उपस्थित कर देती है। ब्रह्म वह नहीं है जो वह है। बल्कि वह होता है जो लोक मानस से देखा जाता है। भय के मनोविज्ञान के आधार पर अँधेरे में सफेद कपडा भी विशालकाय मानव का रूप धारण कर लेता है और भयभीत मानव उस मानस रूप भूत से निजात पाने के लिए लगातार प्रार्थनाएँ करता है। उसका पूरा शरीर कॉपता है और पसीनो से लथपथ हो जाता है। यह ब्रह्म का प्रताप नहीं एक प्रकार से माया की विवरथ वादिनी अतुलनीय शक्ति का परिणाम है। स्वॉगो में माया कहीं भी विद्या माया का स्वरूप नही ले पाती वह अविद्या माया के रुप मे ही अपना प्रताप फैलाती है।

कौरवी स्वॉगों में ऐसी अविद्या माया के दर्शन सर्वत्र हो जाते हैं। ऐसा लगता है कि वह सर्वाच्छादन करके सर्वव्यापिनी हो गई है बल्कि भूत–प्रेत और अमानवीय शक्तियों में इनके संकेत मिल जाते है।

जीव और जगत का स्वरूप

स्वॉगों का विषय जीव और जगत ही होता है किन्तु परम्परागत दार्शनिक दृष्टि से यदि लोक के जीव और जगत की तुलना की जाए तो उसमे बहुत दूर तक साम्य नहीं देखा जा सकता। लोक का जीव निरीह असमर्थ असहाय जीव है जोकि सम्पूर्ण प्राकृतिक आपदाओं और दैवी कोपों का भाजन होता रहता है। इनके कोप से बचने के लिए वह कण–कण में इसी के दर्शन करता है और अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए हर सम्भव उपाय करता है और क्योंकि वह अधिक शक्तिशाली नहीं है इसलिए भाग्यवादी भी हो जाता है। इस प्रकार के जीव के दर्शन सर्वत्र किए जा सकते हैं। दानव के कोपो की भाजन राजा की बेटी हो या आपदाओं से घिरा राजा हो वह निरा निरीह जीव होता है। इस निरीह जीव की रक्षा के लिए ईश्वर विभिन्न रुपों में किसी न किसी को भेजता है और वह कोई आकर उसका उद्धार करता है।

लोक का जगत दार्शनिक दृष्टि से व्याख्या जगत् नहीं है उसका जगत पूर्णतः संसार का पर्यायवादी है। वह संसार जो लगातार गतिशील परिवर्तनशील है क्योंकि ब्रह्म स्वयं भी गतिशील परिवर्तन शील होता है। इसलिए उसका जगत् तो प्रतिक्षण परिवर्तित होने की अपनी नीयत से अलग नहीं हो सकता है। परिवर्तन प्रगति का आधार है और क्योंकि ब्रह्म भी परिवर्तनशील है इसलिए उसका जगत् भी परिवर्तन

पर आधारित है।

स्वॉगों में जगत को ससार का ही पर्याय माना गया है।

इस प्रकार देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि स्वॉगो में ब्रह्म, माया, जीव और जगत से सबधित परम्परागत मान्यताओ के आधार पर विचार करना बहुत बडी भूल मानी जाती है। यह दृष्टि मानक काव्य अथवा मानक दर्शन की दृष्टि है परम्परागत दृष्टि है और यह सुखद आश्चर्य ही कहा जायेगा कि लोक–परम्परानुगामी होते हुए भी सतत् परिवर्तनशील होता है।

कुरु स्वॉगों में मोक्ष का स्वरूप मोक्षोपाय

लोक मानव का मोक्ष परम्परागत दार्शनिक मान्यताओ का मोक्ष नहीं होता। लोक मानव ससार से मुक्ति नहीं चाहता, वह संसार मे सुख–भोग की कामना रखता है उसका सबसे बडा मोक्ष सासारिक दुख और क्लेषों से मोक्ष प्राप्त करना है। सासारिक दुखों से मुक्ति ही उसका सबसे बड़ा मोक्ष है वह कायिक दुख और मानसिक क्लेश से मिलनेवाली मुक्ति को ही मोक्ष मानता है। इस प्रकार से कहना सर्वाधिक उपयुक्त होगा कि कौरवी स्वॉगो मे इस तरह के सकेत पग–पग पर मिलते है। यह प्रवृत्ति पूरे भारतवर्ष में प्रत्येक प्रान्त मे मिलती है।

कुरु स्वॉगों में कर्म, उपासना एवं मानव-सेवा

कुरु प्रदेश कर्म–क्षेत्र है। यह गीता का धर्म क्षेत्र भी है तथा अर्जुन का कर्म क्षेत्र भी है' यहॉ पर धर्म और कर्म एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं। इस क्षेत्र में कर्म की उपासना सर्वथा महत्त्वपूर्ण है। इस लोकोक्ति का यहॉ लगातार व्यवहार होता है।

जागते की कटिया, सोते का कटड़ा।

अर्थात् जो कर्मशील और जाग्रत है वह सब कुछ पा सकता है और निठल्ले तथा निकम्मे को कुछ मिलना असम्भव सी बात है। यहॉ के स्वॉगों में कर्म उपासना सर्वत्र देखने को मिलती है। कर्म ही यहॉ के सुख हैं और कर्म ही यहॉ के मानव का धर्म एवं उपासक स्वरूप है।

मानव सेवा लोक धर्म का अभिन्न अग होता है। वसुधैवव कुटुम्बकम तथा सर्व सम्भाव लोक मानव की आत्मा का अभिन्न अंग होते हैं। कुरु जनपद की स्वॉगों में इन तत्वों का समावेश है।

निष्कर्ष

कुरु स्वॉगो की धार्मिक ओर दार्शनिक प्रवृत्तियो का दर्शन करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस जनपद का धर्म सार्वभौमिक सार्वकालिक और सार्वव्यापी धर्म है। इस धर्म की मान्यताएँ सम्पूर्ण विश्व की मान्यताएँ कही जा सकती हे। यहॉ के लोक का निजी दर्शन है। उस दर्शन की परम्परा और जडे बहुत गहरी है । यह दर्शन परम्परागत दर्शनिक मान्यताओ के आवरण से अवतरित नहीं हो सकता। यह सारे घटा–टोपो स परे सहज दर्शन मात्र है।

७. उपसंहार

कुरु जनपद ऐतिहासिक एवम् पौराणिक दोनो दृष्टियो से अत्यन्त महत्वपूर्ण जनपद रहा है। प्राचीन भारत के बारह जनपदो में से इसका नाम सर्वप्रथम एवम विशेष आदर के साथ लिया जाता है। इस जनपद पर ऐतिहासिक आघात इतने हुए है कि भारत की अन्य किसी भूमि पर इतना ऐतिहासिक सक्रमण नही हुआ है। इस क्षेत्र मे आरम्भ से ही आर्य शक कुषाण तथा हूण जातियो के हमलो के बाद अरबो के हमले भी हुए। इसकी विभिषिकाओ को इसने बराबर झेला। ये ही नही उनको आत्मसात भी किया और नये सस्कार समाज को प्रदान किये।

कुरुलोक विशाल हृदय है इसका सबसे बडा कारण यह है कि यह क्षेत्र आरम्भ से ही अत्यन्त उपजाऊ रहा है। खान–पान और अतिथि सत्कार यहॉ का प्रमुख व्यसन है। यहॉ की सस्कृति मूलत· कृषि सस्कृति है और प्रदेश मे फैली मिटटी के कण–कण से यहॉ के लोक मानस का बराबर साक्षात्कार होता रहा है। इस दृष्टि से भी यहॉ का लोक–मानस विशाल हृदय बना रहा है। दक्षिण भारत हो या पूर्व या पश्चिम भारत सभी लोगो का आकर्षण यहॉ के तीर्थ–स्थल जैसे हरिद्वार, ऋषिकेश कनखल आदि रहे है। प्रत्येक भारतीय यहॉ के तीर्थ–स्थलो के दर्शन करके और पावन गगा मे स्नान करके अपने आपको धन्य मानता है। कौरवो पाडवो की राजधानी हस्तिनापुर यहॉ का प्रमुख ऐतिहासिक राजनैतिक केन्द्र रहा है। यह कहने मे मुझे कोई सकोच नहीं कि यहॉ की धार्मिक राजनैतिक और सास्कृतिक परिस्थितियो ने पूरे भारत को प्रभावित किया है। इस प्रभाव का माध्यम पारस्परिक सम्पर्क हो या लोक–साहित्य।

यहॉ के लोक–साहित्य की विभिन्न विधाओ जैसे लोक–कथा लोक–गाथा, लोक–गीत, स्वॉग, ढकोसले ईदी, चटटाचौथ आदि ने पूरे देश को प्रभावित किया। लोक–कथाओ मे सस्कृति के सूत्र सब जगह एक से है भारत के लोक मे बाजे और गीतो की धुन, लोक–कथाओ के कथा–सूत्र और लोक गाथाओ के लोक–गीत नामातर भेद से एक जैसे है। बाजो की धुन और सस्कार गीत सब ओर एक जैसे होते है।

प्रस्तुत अध्ययन को उपसहार सहित सात अध्यायो मे बॉटा गया है। पहले अध्याय मे लोक साहित्य

की परिभाषा और उसके स्वरूप पर विस्तार से विचार किया गया है। लोक की मान्यताओ और लोक जीवन की अवधारणाओ के आधार पर लोक–साहित्य के अर्न्तसूत्रो को प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। इस संबंध मे विद्वानो के मत ओर लोक–सम्बन्धी साहित्य उनकी अवधारणाओ पर विवेचनात्मक दृष्टि से विचार किया गया है।

दूसरे अध्याय मे कुरु जनपदीय समाज–व्यवस्था के सम्बन्ध मे विचार किया गया है। इस अध्याय मे कुरु जनपद की हिन्दू–मुस्लिम जातियो के नाम सूची बद्ध किये गये है। पारिवारिक जीवन की दृष्टि से कुरु प्रदेश मे सयुक्त परिवारो की अधिकता ही प्रदेश मे खेतिहरो की सख्या सबसे अधिक है। कृषि कार्य पर निर्भर अन्य जातियॉ भी विचारणीय है। कौरवी स्वॉगो मे जाति एवम परिवार व्यवस्था के साथ–साथ पारिवारिक जीवन के चित्र अत्यन्त स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किये गये है। इन कथाओ मे राजा और रानी के माध्यम से ये चित्र दिये गये है। लोक–परिवेश और लोक–राजनीति का उदघाटन भी इन लोक–कथाओ के अॅग होते है। इसी अध्याय मे रिश्ते नातो का विस्तृत विवेचन है। रीति रिवाज और सस्कार (हिन्दुओ के) का वर्णन भी मिलता है। ये सस्कार गर्भाधान से आरम्भ होकर मृत्यु पर्यन्त चलते रहते है।

इसी अध्याय मे कुरु प्रदेश की धार्मिक आस्थाओ का भी विवेचन है। इस लोक की धार्मिक आस्थाओ जेसे –

नियतिवाद

लोक देवी देवताओ मे विश्वास

भाई पूजन

भूमि पूजन

कुॅआ पूजन

टोने–टोटको में विश्वास को देश के सम्पूर्ण लोको मे देखा जा सकता है। ये आस्थाएं लोक–जीवन का आधार हैं जिनकी नीव पर पूरे देश का लोक खडा हुआ है। इस अध्याय मे कुरु प्रदेश के पर्व, त्यौहार और मेलों का भी नाम–उल्लेख किया गया है। ये पर्व, त्यौहार और मेले लोक–आस्था का अभिन्न अॅग होते है और लगभग इसी प्रकार के पर्व त्यौहार और मेले पूरे भारत मे नामातर से मिलते है। भारतीय

संस्कृति के सूत्र मूलतः एक है और इनके मूल कुरु जनपद की लोक संस्कृति में मिल जाते हैं।

तीसरे अध्याय में लोक शब्द की व्युत्पत्ति और व्याख्या और प्रयोग परम्परा पर विचार किया गया है। यहाँ कुछ सीमा तक प्रथम अध्याय की कुछ बातो को दोहराया गया है किन्तु उनका दोहराना अनावश्यक है क्योंकि उसके बिना अध्याय के विषय में वर्णित तथ्यों का उद्घाटन कठिन हो जाता है। इस अध्याय में स्वॉग के स्वरूप और उसकी परिभाषा आदि को प्रस्तुत करके स्वॉगों से सम्बधित तथ्यो को स्पष्ट किया गया है। इस अध्याय में जिस सबसे महत्वपूर्ण तथ्य का उदघाटन किया गया है वह है कुरु जनपदीय स्वॉग परम्परा इस स्वॉग परम्परा के आरम्भिक सूत्र जिठोली के संत कवि शंकरदास तक जाते हैं। इन्हीं संत शकरदास के शिष्य नत्थूलाल, मानसिह जावली वालों से यहाँ की स्वॉग परम्परा आरम्भ होती है। वास्तव मे स्वॉग एक प्रकार का लोक नाट्य ही है। ऐसा बताया जाता है कि मानसिह के बनाए हुए स्वॉगों के ३६० अखाडे थे जिनमे ४०० ढ़ोलकें थी। इन स्वॉगों की गरज कोसों तक पहुँचती थी। लोग कोसों से इनके स्वॉगों को देखने और सुनने आया करते थे। स्वॉगों के स्थलो के नाम हैं-

१ जावली

२ सूप

३ बागपत

४ मुजफ्फरनगर.

५. मस्तानखेड़ा

६ हलालपुर

७ दन्तनगर

८. रटौल

९. हरसौली एवं गॉव सालह खेड़ी, मुजफ्फरनगर

१०. फिरोजपुर

११. टोला

१२. डूँडाहेडा

१३. खेकडा आदि प्रसिद्ध हैं। स्वॉगों में लोकगाथाओं को संजो कर रखा जाता है। सांगीतकार अपनी

मर्यादाओं के अनुसार उनमे परिवर्तन करता है। इसी अध्याय मे भारतवर्ष में लोक–कथाओं की परम्पराओ के विषय में संक्षेप में विवेचन किया गया है। क्योंकि अधिकाश लोक–कथाएँ स्वॉग की लोक–गाथाओ का रूप ग्रहण कर लेती है। इस अध्याय में कुरु जनपद की जातियों पर भी विचार किया गया है। उनका सक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

चौथे अध्याय मे कुरु जनपद के प्रसिद्ध सांगीतकारों का जीवन–वृत्त विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। शोधार्थी ने पूरे क्षेत्र मे घूम–घूम कर सांगीतकारो से सम्बन्धित जानकारियॉ एकत्र की है। यह प्रयास किया गया है कि जानकारी प्रमाणिक हो और उस पर बहुत कम प्रश्नचिह्न लग सके। स्वामी शकरदास का जीवन–परिचय प्रस्तुत करके उनके शिष्यो की सूची भी दी गयी है। इसी अध्याय मे स्वामी जी के ग्रन्थों से उनकी रचनाओं के कुछ उदाहरण भी दिये गये हैं। इसमें पं० नत्थूलाल, मानसिह प० लक्ष्मीचन्द शर्मा, पं० रघुबीर शरण, दीन्ना, शकूरमीर, चन्द्रलाल बादी, फखरू मीर का परिचय प्रस्तुत किया गया है। सांगीतकार पडित बलवन्त सिंह उर्फ बुल्ली का परिचय प्रयास करने पर भी नही मिल पाया। इसी प्रकार कुछ ऐसे महत्वपूर्ण सांगीतकार भी रह गये है जिनके विषय में जानकारी न मिल पाने के कारण उनका परिचय न देकर केवल नाम उल्लेख किया गया है।

पॉचवे अध्याय मे कौरवी जनपदीय स्वांगो का सामाजिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन में समाज की जीवन–धारा, रीति–रिवाज, निर्धारित नियम, सगठन–कार्य आदि के साथ–साथ सागीत साहित्य में चित्रित इन विशेषताओं को भी दर्शाया गया है ·

१ परिवेशीय अन्तरग अनुभूति का प्रधानता

२ सरल, सहज, स्वाभाविक, वृत्तियो का निरूपण

३ सहज भाषा

४. अतिरेकपूर्ण अभिव्यक्ति

५. लोकोत्तर कल्पना का प्राधान्य (अलौकिक कार्यों, अति प्राकृत शक्तियों, अपदेवता, अर्ध देवता आदि)

६. सार्वभौमिक भावना का प्राधान्य

७. आधुनिक सामाजिक मान्यताओं का उपहास

८ लोक भावनाओ का उदघाटन

९ विशिष्ट परवेशीय अन्धविश्वासो का उदघाटन

१० परिवार पारिवारिक जन एव विशिष्ट लोक मे आस्था

११ स्थान–विशेष की सार्वभौमिक सास्कृतिक मान्यताओ का चित्रण

१२ निर्वैयक्तिकता

१३ छद–अलकार–बन्धनमुक्त रचना

१४ मिथको एव प्रतीको का प्राधान्य

१५ कालावधि–निरपेक्ष मौखिक साहित्य

१६ सुमगला तिरिया परोक्ष आत्माओ, देवताओ, सन्त, फकीरो, लोकवीरों की पूजा

१७ विवरणात्मक पद्धति।

इनसे सम्बन्धित स्वॉगो को भी उदाहरण प्रस्तुत किये गये है। इसी अध्याय मे खान–पान के उपादानो का भी वर्णन है। सामाजिक अध्ययन पर इन दृष्टियो से विचार किया गया है

१ खान–पान की वस्तुऍ

२ वस्त्र

३ जवाहरात एवम् गहने

४ व्यक्तिवाचक नाम

५ सामाजिक राजनीति

६ पेड–पौधे, फल–फूल

७ नदी–नाले

८ खेत खलिहान

९ रिश्ते–नाते

१० जातियॉ

११ पशु–पक्षी एवं वन्य–जन्तु

१२. श्रृंगार के उपादान

छठे अध्याय में कुरु जनपदीय स्वॉगों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें

१ उदार मनोवृत्ति,

२ सर्वधर्म समभाव

३ वसुधैव कुटुम्बकम्

४ असहाय सहायता

५ सर्वे भवन्तु सुखिन की भावना

६ पारस्परिक स्नेह सौहार्द

७ ऊँच–नीच की भावना का त्याग और

८. पर दुख कातरता – का उल्लेख करने के बाद स्वॉगों में ब्रह्म, माया जीव और जगत का स्वरुप उद्घाटित किया गया है।

सातवें अध्याय मे प्रस्तुत अध्ययन का सार प्रस्तुत किया गया है। शोधार्थी अपने अध्ययन के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि यदि कुरु जनपदीय स्वॉगों का विस्तृत अध्ययन कर लिया जाये तो भारत के लगभग सभी लोको के आन्तरिक सूत्र स्पष्ट हो सकते है।

अध्ययन की अपनी सीमाएँ होती हैं। शोधार्थी ने अपने समय और सीमाओं के बीच सामग्री संकलन करके जो अध्ययन प्रस्तुत किया है। उससे वह सतुष्ट है और उसे आशा है उसका यह अध्ययन आगामी अध्ययनों को दिशा प्रदान कर सकेगा और विषय के मर्मज्ञों का आर्शीवाद प्राप्त कर सकेगा।

असली सांगीत हरियाणा

चन्द्रहास

अखाडा : पंडित लखमीचन्द जॉटी निवासी

दोहा

ओइम नाम सबसे बड़ा इससे बडा न कोय।
जो सुमरण करे ओइम का शुद्ध आत्मा होय।।
धरती माता तू बड़ी तेरे ते बडे भगवान।
धन विद्या गुण देते हैं मेरे स्वामी सत्यनारायण।।
भौरा लोभी फूल का कली कली रस ले।
कॉटा लागा प्रेम का तडप जी दे।।

दोहा

आरी भवाबी वास कर मेरे घट के परदे खोल।
रसना पै वासा करो माई शुद्ध शब्दमुख बोल।।

भेंट

वो मनै सुमर लिए भगवान
श्री मानसिंह सतगुरूमिले मनै जिनसे पा लिया ज्ञान

वार्ता- *प्यारे भाईयो! कैरल राज के मालिक का नाम मेघालय था उनके एक लडका था जिसकी उम्र ५ साल थी चन्दरहास दुश्मनों ने राज पर चढाई करदी राजा रानी दोनों मारे गए। मगर चन्दरहास को उसकी धा ने छिपा लिया और उसे लेकर राज्य से बाहर निकल गई आगे क्या होता है सुनिये।*

जवाब धा का

दोहा— एक पल छन मे के बने है सच्चे भगवान।
मात पिता ते मर गये पर इसकी बचाइये जान।

रागनी नया रंग

राजा रानी मारे गये राजपाट का हो लिया नाश
बेटा करके पालूंगी तू फिकर करे मत चन्दरहास।टेक
तेरे पिता संग हुई लड़ाई मौत अचानक कितते आई
मुश्किल ते जान बचाई जीवण की तेरे ना थी आस।।४
तेरे बारे में कष्ट भरूंगी बचाती मै तेरी जान फिरूंगी।
दिल ते न्यारा नहीं करूंगी हरदम राखू अपने पास
प्रेम का सच्चा तीर तनादूं तेरा दुनिया में नाम करादूं
लखमीचन्द दिल थाम रहेगा धोरे उमर तमाम रहेगा
तेरा दुनिया में नाम रहेगा इतने रहे जमी आकाश।।

जवाब पनिहारियों का

कौन देश ते आई सै आगे कित जागी
आगे और चलना से अब ठीक ठिकाने आगी।टैक

रज फिकर मे मॉढी–२ हो रही सूख–सूख के भगडी
ठोड ठिकाना छूट गया के बनके बात बिगडगी
भेद बताना चाहिए सारा कुनसी वेदन छिडगी
मरी बराबर हो रही सै के नाग विपत की लडगी
के करमा का चक्कर से तू फिरती भागी भागी।१
के शिवजी की पार्वती तने शिवजी छोड डिगरग्या
के इन्दर की इदराणी तने दिल ते न्यारी करग्या
के विष्णु की शक्ति सैं तू त्याग दई मन फिरग्या
के फिरे पुरजनी पति पुरजन देख २ तने डरग्या
छोड दिया घरबार तने के चोट इश्क की. लागी।२
के नल राजा छोड डिगरग्या तू भीमसैन की जाई
के गौतम की नार अहिलया भरती फिरे तबाई
कै जनक दुलारी जग माता सै राम भूलग्या राही
के सुग्रीव की तारा देवी बाली ने सताई
के तेरे मात पिता ने काढी के तेरे पति ने त्यागी।३
बेरा ना के दुख हो रहा तेरी किस्सय बोदी मे
चलती २ हार लई ना आली सोधी मे
बुरी करनिया आप पडै से अपनी खोदी मे
चन्दरमा सा बालक लेरी किसका गोदी मे
लखमीचन्द कहै बाहर जाणकी क्यू कर राही पागी।४

जवाब धाय का

केरल देश का राज छूट गया न्यू दुख पाई मै
इस छोरे का बाप भूप तो मर या लडाई मे।टेक
परमेश्वर ने कार बनादी छाती मे धडके की
आज मने ना रोटी खाई भूखी सू तडके की
धर्म समझके इस लडके को रहूगी भलाई मे।१
ईसके बाप का राज खोस लिया दुश्मन ने आके
माता पिता और चाचा ताऊ फूक दिये ठाके
बडी मुश्किल ते जार बचा के न्यू भाजी आई मै
जाण बूझ के कौन खुशी हो विष प्याला पीणे मे
बेरा ना के लिख राखी से कर्म लखीणे मे
मै मरने मे ना जीवन मे दुख ने सताई मै।३
लखमीचन्द कहै परमेश्वर ने दुखिया आय सतादी
इस बच्चे के पालन आली आगे मेरे लादी
मन की सोची बात बतादी ना करती अन्धाई मै।४

वार्ता - धाय कुए से पानी पीकर चल देती है और जगल मे झोपडी बनाकर गुजर करती है। एक दिन चन्द्रहास की लडाई एक लडके से हो जाती है चन्द्रहास कहता है कि मैं अपनी मा से कहूगा। वह कहता है कि वह तेरी मॉ नही तू किसका लडका है तो वह धा से आकर पूछता है।

जवाब चन्द्रहास

जन्म भूमि दे बता मेरी और किस जननी का जाया मै

माता–पिता मेरे कडे गए तेरी गैलॉ क्यू कर आया मै ।टेर
मै तने माता कहा करू तू लाड प्यार करती मेरे
आज अडे काल्य उडै सी किरे लावती क्तो डेरे
ठोड ठिकाणा नहीं रहण ने ये किसे भाग बता तेरे
सारी दुनियॉ मौज करे हम मॉ बेटा दुख ने खे रहे
खाण पीण का टोटा सै ना उजले वस्त्र काया मे ।१
कोण मेरी जननी माई थी उसका हाल तमाम बता
मतना करिये ल्हका बात का करके जिगम मुलाम बता
मने पता ना तने पता सैं जित जन्म लिवाया गाम बता
एक लडके ने बोली मारी कटा बात ख्याल मनै
तूरन्त लडोई कर देता बडी मुश्किल डाटी झाल मने
ससय होगी मेरे गात मे पडा हाल मने
मात पिता जित रहै मेरे ईब उन धोरे ले च्याल मने
जननी माई मेरी लाडकरे पुचकार बिठालै छाया में ।३
बेटा दुखी है मात बिन और मातदुखी रहे लाल बिना
रुत बिन कोयल कूके कोन्या हस सरोवर ताल बिना
हस बिना रहे हंसनी सूनी हरियल तोता डाल बिना
सूनी छाड बिच हो सै जगल सूगा स्याल बिना
पुत्र बिना पिता सूना चाहे खेले धन माया में। ।४
मने मात पिता पाल दे हाथ जौडकै अरज करू
नहीं समाई मेरे गात में किसे ते लडके तुरत मरू
बिना ठिकाणे ठोकर खाता बिन जननी का पूत फिरू
एक झाल मे डूब मरूगा दुख कै दरिया बीच तिरू
लखमीचन्द कहैसब छोरॉने तेराबेटा नहीं बताया मै ।५

जवाब धा का

अब मार किते ना खा सकता इसा ज्ञान बतादूं बेटा
पाल पोश कै कुछ दिन तनै जएान बनादू बेटा। ।टैक
निराकार साकार आन के जिस दिन पहर करेगा
टोटा दूर हटे से ने झट धनके ढेर करेगा
राजा पूजे पैर तेरे इसी श्यान बनादू बेटा। ।१
तेरे कुल तने कथा सुनादू सुनले नयासै २
तेरा पिता एक राजा था सब प्रजा का हितकारी
तेरी जननी मां महारानी थीं जाने दुनिया सारी
धन के भरे खजाने पलटन फौज रिसाले भारी
गिणती मे न आवे इसा सामान गिणादूं बेटा।२
केरल देश में राज करे था सब दुनियॉ ने बेरा
एक दुशमन ने राज दबा लिया राज के ऊपर दे घेरा
अडे मोरचे हुई लड़ाह मारा गया बाप तेरा
तेरी माता भी खतम हो गई और उजड होग्या थाराडेरा।
फिकर करे मत तेरी खातर स्थान बना दूं बेटा ।३
फिर मुश्किल तेरी जान बचाई घडी मुश्किल ते पाला सै
मै तेरे मात बराबर लागूं ईश्वर आप रुखाला सै

तनै जननी माँ का सुख नहीं देखा माडे कर्मा आला सै
लखमीचन्द दुख आण पडे तू लाल उमर का बाला से
जे मेरी जिदगी बनी रही ते बलवान बनादू बेटा।४

जवाब चन्द्रहास का

के जतन करू के कुए मे गिरू मै जीऊ के मरू
डारे जान अकेले की।टेक
जाने आगे के दुख सुख बने रक्षा करी दुनियाँ की तने
मने याद करो के बरबाद करो क इमदाद करो
भगवान अकेले की।१
कर्तव्य अडज्या नक्शा भडज्या दुख मे बिगडजा
श्यान अकेले की।२
आज मछलीकी तरियाँ लोचू दुख मे पकड कलेजा बौचू
सोचू कडे जान की लाभ हाण की बाजे खाण की
ना तान अकेली की।३
लखमीचन्द लागगी टुक माता पिताका देखना सुख
हुआ दुग बालकपन मे ना बाकी तन मे रहेगी बन मे
जान अकेले की।४

जवाब नारद जी चन्हास से

ले गोली सालिगराम की राखियो अपने पास
वक्त पे याकाम आवेगी।टेक
तेरे सिर बिपता जूनसीपडी टाल देली सिरते मौत घडी
या चीज से बडी काम की गल मे घलज्या फॉस
मौत ते बो तने बचावेगा।१
जै तू इसने रोज सिम्भाले या तने भक्त समझके पाले
घडी टाले कष्ट तमाम की होज्या पूही आस
फेर तेरा ब्याह करवावेगी।२
ठाके एक मुक ते घरे ना मारा-मारा फिरै
मेहर फिरे घनश्याम की होज्यागे रग राग
वक्त ये असर दिखावेगी।३
मानसिह गुरु करो आनन्द कटेगे जन्म-जन्म फन्द
लख्मी चन्द भी घर गाम की राजपाट रनवास
मिले इसी विधि बतावेगी।४

वार्ता- एक दिन राजा ने बडी भारी दावत की उसमे चन्दहास भी था। उसने पण्डितो से पूछा मेरी इस लडकी की शादी किससे होगी। पण्डित चन्दहास को बतलाते है राजा उसे रोक लेता है और पण्डितो से कहता है तुम्हारी बात सच नहीं है। मैं उसे मरवा देता हू और जल्लादो को सौप देता है कि इसे जगल मे लेजाकर मार दो मगर जल्लाद रहम खाकर उसे छोड देते है वहा से वह चल देता है वह बेहोश होकर एक बिडे के पीछे गिर जाता है कुन्दन देश का राजा उसे उठाकर ले जाता है और पूछता है कि तुम अपने पिता का नाम गॉव बता दो।

जवाब चन्दहास का कुलन्दर से

कई दिन होगे भूखे ने कुछ पीणा खाणा कोन्या

फिरू भरमता दुनियॉ मे मेरे ठोड ठिकाना कोन्या। टेक
घोडे के असवार बतातू कौन सै फिरण वाला
दयावान बडा भागवान बदले मे मरणे वाला
धर्म समझ के बोझ बिराना सिर पे धारण वाला
ईश्वर ने तू भेज दिया मेरी रक्षा करणे वाला
ना किते यारी असनाई किते आणा जाणा कोन्या।१
पुन होगा जैसे पानी प्या दिया गऊ प्यासी मरती ने
इस दुनियॉ ने घणे दिन लिये इसे कुकर्म करती ने
अम्बर ने मैं गेर दिया और ओट लिया तिरती ने
भाई बद परिवार मेरे कुछ लाणा ताणा कोन्या।२
जो मूरख नर उस ईश्वर के ना पे फिदा नही सै
बेशक जूनी मानस की उस केसा गधा नही सै
साच समझ के देखो ब्रह्म से माया जुदा नही सै
मेरे सिरपे कोय धनी रुखाला याया स्याणा कोन्या।३
मनुष्य का चोला धारण कर चुपचाप रहै परदे मे
ऊच नीच ने समझे सब इसान रहै परदे मे
बेटा बेटी जननी मॉ और बाप रहै परदे मे
कदे ना कदे प्रगट हो जो पाप रहे परदे मे
लखमीचद कहै लय सुरबिन कुछ गाणा बजाणा कोण्या

जवाब कवि का

वार्ता- प्यारे भाईयो! कुलन्द का महाराजा चदहास को अपने साथ ले गये और कुलन्द के महाराज के कोई सन्तान नही थी और चन्दरहास को अपना पुत्र समझकर रक्षा की कुछ दिन में चदरहास जवान हो जाता है और राजाने चन्दरहास को गद्दी पर बैठा दिया और धृष्टबुद्धि दीवान राजा कुलन्दसे टैक्स लिया करता था वो चन्दरहास ने बन्द कर दिया और धृष्टबुद्धि दीवान का टैक्स लेने का पत्र आता है तो चन्दरहास क्या कहता है।

जवाब चन्दरहास का

ओ देख पिताजी दीवान भूप की किसी चिट्ठी आई सै
न्यू लिख राखीकर नही भेजा या थारी अघाई सै।टेक
इतना जबर बोझ टेके सै इव कोन्या समय खेण की
बेईमान बेईमानी में भरा पडासै ना करता टाल लेणकी
आज तै पीछे टैक्स देन की बिल्कुल बन्द राही सै।।१
नही जीवना जोडूं उसने जे मेरे हथियाग्या ते
एक मिनट फूक गेरूंगा जे मेरी तरफ लखाग्या ते
जे कर मॉगन आडे आज्ञा ते उसकी करडाई सै।।२
अत्याचार करण आलेकी पिता ध्वजा शिखर ते पडले
ताकत का जब तोल पटे से जब आगा सागी भिडले
लडना हो तो बेशक लडले मेरे नही समाई सै।।३
सतगुरू का ध्या सही सै कहै लखमीचद छद धरके
आज मने उस खातिर लिखदीदो बात गुस्से मे भरके
छोटी रियासत हीणे करकेया लाग किसी लाई सै।।४

जवाब कुलन्द का काफिया

जो मानस का गला काटे से वो मानस नही से

धिगताने ते टैक्स लगावे सब पे उसका हुकम चला से
उस पाजी ने टैक्स नहीं दे मेरी यही सला से

वार्ता- चन्दरहास की चिट्ठी धृष्टबुद्धि के पास पहुंचती है चिट्ठी में टैक्स देने से इंकार है तो दीवान सोचता है और स्वयं चलकर पूछनी चाहिए कि टैक्स क्यो नहीं देते और क्या कहता है।

जवाब दीवान का

चिट्ठी के में लिख राखी कित राजा तेरा ध्यान होड़ा
टैक्स देनतेनाट लियातने इतना के अभिमान होड़ा।टैक
किसने तेरी मत फेरी सै कर देने मे के देरी सै
वृद्ध अवस्था तेरी सै इब के भीम जवान होड़ा।।१
जान बूझ क्यूं विष चाटन लाड़ा लगी क्योंकर नाटे
कर का पूरा कोन्या पाटके कुछतेरा नुकसान होड़ा।।२
मेरे चरण ने नोवा करे था देख–दे मने जीया करे था
सदा–सदा कर दिया करे था इब बता के ज्ञीन होड़ा।३
लख्मीचद सुख पावे कोन्या जे मेरा टैक्स चुकावे कोन्या
लडके बलमें आवे कोन्या तू कौनसा भगवान होग्या।४

जवाब कवि का

वार्ता- अब धृष्टबुद्धि दीवान राजा कुलन्द के पास जाता है और चंदरहास को देखकर सहम जाता है और दोस्ताना तालुक कर लेता है और टैक्स का माल डिसमिस कर देता है और राजा से कहता है आपके यहॉ कोई लडका नहीं था इस गद्दी का मालिक कौन बनाया है कुलन्द यह मेरा पाला हुआ पुत्र है दीवार मैंने एक दूसरे जगह कर चुकाने जाना है और घर बडा जरूरी काम है मै एक चिट्ठी लिखता हूं इस लडके को भेज दो मेरे बेटे मदन को दे देगा राजा चदरहास को भेज देता है और चिट्ठी मे दिवान ले लिख दिया कि बेटे मदन इस लडके को विष दे देना और कह दिया कि चिट्ठी रास्ते मे मत खोलना। अब चदरहास चिट्ठी लेकर कौतलपुर के बाग मे आ जाता है।

जवाब कवि का

चदरहास बाग में बडग्या जल का सुदर ताल
कपडे तार धरे धरती में बुर्जी पर ते मारी छाल।टेक
गसे चाले रहे पाट न्हाण के खूब लग रहे थे ठाठ नहाणके
न्यारे घाट नहाण के मबद का पडे सवाल
मरदॉ आले घाट धोती वीर के पे लंहगा लाल।१
ठण्डा नीर बदन के लाग्या
जल पी लिया फिर आनंद छाग्या
नहा के बाहर ताखते आग्या करताचले चुगरदे ख्याल।१
सामही कमरा बना जोर का देखण खाखिर उठी झाल
सुरगपुरी गैसा धाम बना दिया कारीगर ने करा कमाल।३
मीचे ऑंख कद फिर जागे ठण्डी हवागात के लागे
लखमीचंद कहै कमरे आने मनमें लई सोवण की साल
दीनान ने भेजी मदन ते देनी वो
चिट्ठी रहा गोज में धाल।४

वार्ता- चंदरहास कमरे के बाहर सो जाता है उधर से दीवान की लडकी विश्या अपनी सखियो के साथ बाग मे गुलदस्त

करने आती है और सब सखी इधर उधर घूमनै चली जाती है और विश्या चन्दरहास को कमरे सामने सोता देखकर उसके पास जाती है और देखकर क्या कहती है।

जवाब विश्या का

अपने आप जागज्या ते फिर इलने मेरा ध्यान होज्या
सूते नै जगाऊ कैसे इसकी नीद विरान होज्या।टेक
प्रेम का बणके तीर तणु मै
आज शुभ दिन की घडा गिणु मै
इसे मरद की वीर बणू मै जै राजी भगवान होज्या
फूली नही समाऊ मै मेरी सबते ऊची शान होज्या।१
थाम समूची सती सू बावन तोले पाव रता सू
मै दत्त भूर की पार्वती सू पति सच्चा ज्ञान होजा
कैलाश पर्वत मे शिवजी के सगमेरी भी गुजरान होजा।२
पता ना कडे ते चालक आयाये ईश्वर ने भेज दी माया
उसका भाग सवाया जिसके सग मे पति जवान होजा
इस छल का रूप देखके सबका दिल बेईमान होज्या।।३
लखमीचन्द कर भजन राम का
आज मौका है सुरग धाम का
मेरे पिता के हाथ ते इसके नाम का
सकल्प कन्या दान होजा
सारी जिदगी सुखते कटजा जोडी का मिलना होजा।४

जवाब कवि का

दोहा – फेर चिट्ठी काढी जेब ते पढ यिला सारा हाल
मेरे पिता ने इस जवान का लिखा के भेजा काल

जवाब विश्या का

चिट्ठी पढके वैश्या रोई विष के आगे या बनाया
विष की जगह विश्या होगी
इब होज्या मेरे मन का चाहया।।टैक
इब नही आवेगा यो जन मे
बात सही जचगी मेरी अक्ल म
मेरे पिता आके छल मे इस मानस ने धोखा खाया।।२
पूरी आशा होगी मन की दान थैली मिलेगी धन की
दीवान की बेटी बहाण मन की
अपना विश्या नाम बताया रे।।३
लखमीचन्द कहे मनै भूलगी उमग मे काया ओर फूलगी
इस झगडे मे आँख खुलगी फेर
कुछ भी ना धोरे पाया रे।।४

• **जवाब कवि का**

वार्ता- प्यारे भाईयो। चन्द्रहास चिट्ठी लेकर मदन के पास गया और चिट्ठी दे दी। मदन चिट्ठी को पढता है चिट्ठी मे लिखा था इस लडके को विषता दे दो। पिता की चिट्ठी देखकर उसी समय पण्डित को बुलायाऔर वेदी रचाकर

चन्द्रहास के साथ विश्या का ब्याह कर दिया तो चन्द्रहास की साली चन्द्रहास से क्या कहती है।

जवाब साली का

छोटी साली बोले सै तू जीजीजी सुनिये बात मेरी
विष मिलना था विश्वा मिलेगी खुलगई तकदीर तेरी टेक
तेरे ते नाबात ल्हकोई इसाकर्म थारी ना कोई
भौरा बनके ले खुशबोई फूलॉ केसी मिलेगी ढेरी।।१
तू के आया था ब्याहवण खातर
तेरी जा बचावणखातर विश्या ने करी हेरा फेरी।।२
बेडे ने कर हार पारदू मै भला क्यू कर प्राण हारदू
इसपे अपनी जान वारदू पति समझ के मने बचाया
देखके धरती मे सिर लाग्या मने कितना सुथर बरलाग्या
छोह मे आज्या न्यूए डर लाग्या
न्यू मने सूता कोन्या ठाया।।४
लखमीचद धर्म का डेरा लेट रहा चन्दर कैसा पोरा
सुन्दर शहर गामरू छोरा यो मने ब्याहवण खातर आय

जवाब कवि का

वार्ता- विश्या चिट्ठी और इतनी बात सुनकर अपनी सखियो के साथ मे घर चली जाती है तो लड चन्द्रहास को सुपना आता है और ऑख खुल जाती है और उठकर क्या कहता है।

जवाब चन्द्रहास का

मन राजी होग्या था मेरा इव
इसा सुथरा सुपना आया रे।।टेक
बैठग्या बान उमगचा होग्या रहणे का दुनिया मे रहा होय।
जाने मेरा विश्या से ब्याह होग्या
हसी खुशी से वाण उठाया रे।।१
दीखे आच्छी कुगरदे गीतॉ की लग लगी झडी चुगरदे
साली सपटी खडी चुगरदे
जीजा कहफे मैं पास बुलाया रे।।
सबकी डोरी हरि के हाथ मे जाने के करदे एक स्यात मे
प्रेम का दीप चसे गात मे पनकी होगी दूर अन्धेरी।३
लखमीचन्द प्रेम ते टेरे मन के चाहे होगे तेरे
कमरे मे लाले डेरे एक मिनट ना कर देरी।।४

जवाब कवि का

वार्ता- अब चन्द्रहास विशिया सहित कमरे मे आराम करने चला जाता है। उधर ते राजा दीवान आकर मदन से पूछता है कि वो कामकर दिया (मदन) हॉ पिताजी आपकी चिट्ठी देखकर उसी वक्त कर दिया था (पिताजी) कैसा किया (मदन) प० बुलाकर विशिया की शादी उस लडके से कर दी। ये बात सुनकर राजा दीवान जल जाता है और क्या कहता है।

जवाब राजा दीवान का

गर्मी करी थी होगी शादी क्यो मेरे

दुश्मन के सग विश्या ब्याहदी चाला करा तने।।टेक
नैन ते जल धार बरसती आज मेरी इज्जत होगी सस्ती
तू घर गृहस्थी मीडा कोन्या
मारू ते मरण का ओडा कोन्या
किसे दीन छोडा कोन्या मुह काला करा तने।।१
के थूकेगा जहान बिगडी बनी बनाई श्यान
ध्यान कराना राज नीति मे पड रहा मेरे फरक नीति मे
आज मेरे दुश्मन का जीत मे पाला तने।।२
घमण्ड खोवणा था अभिमाना का
मने पूरा दुख था इस कान्ही का
आज बाप को जिन्दगानी का गाला करा तने।।३
लखमीचन्द ने मेट सक दिया था
लिफाफे के मे पत्र ढल दिया था
विश लिख दिया विशिया पाई किने करी इसी चतुराई
दुश्मन था दिया बनाई ना टाला करा तने।।४

जवाब कवि का

वार्ता- अब दीवान ने दो जल्लार देवी के मन्दिर मे बिठा दिये और उनको कह दिया कि जो कोई मदिर पहले आये उसी का शीश काट दो और उधर चद्रहास से जाकर क्या कहता है।

जवाब राजा दीवान का

ब्याह पीछे म्हारे छोरा छोरी देवी पूजन जाया करे
पीछे छोरी आगे छोरा रीत पुराणी बताया॰करे।टेक
देवी मे सड़ी शक्ति हो सै मरे मे साँस घालदे सै
दुखटोटे और रो सोग की सिरते घडी टाल दे सै
पूरण इच्छा रक्षा कर दे जो इसकी जोत बालदे सै
जोत बालके धोक मारले आरती भी गाया करै।।१
जितने पूजन योग देवता सबसे शक्ति भारी सै
ध्वजा नारियल किशमिश गोले चढावे दुनिया सारी सै
सच्चे मन ते करे धारणा सेवा बीच पुजारी सै
कलश सुनहरी भवन के ऊपर ध्वजा फराकै ठा रही सै
जै हो देवी जै होदेवी न्यू सब कहते आया करे।।२
सेवा कर कोई धन माँगे सै वेवी ते वरदान मिले
कोय बेटा बेटी की इच्छा के झट उसने सतान मिले
गावनियाँ कविजन वर मागे छन्छलय सुर काज्ञान मिले
जा भगत पुजारी सेवा धारी उनको प्रकट शान मिले
बहुत से धन की इच्छा करके पावाँ मे सिर लाया करे।३
ब्रह्मा ते भी हहलम आई न्यू बेद का लेख' पुकारे सै
चारू वरन धाकन करते ठीक अकीदा म्हारे सै
कोय समझ–समझ बिन इसके आके नहीं तुकारे सै
लखमीचन्द ने पूजीणी न्यू डूबती नाव उभार से
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्र ये चार वरण रही धाया करे

जवाब कुलन्द महाराज का

ले एक चिट्ठी लिखदूं मै तू कौतलपुर न जाइये
चन्द्रहास नहीं आया तू उसका बेरा लाइये।टेक
एक मिनट मेरे चैन पडे ना फिकर गात मे ताजा
जिसके घरॉ गया था म्हारा उसका कुछ ना साजा
टैक्स देने के बारे में लिया उसते टूट मुलाहजा
नृष्ट बुद्धि दीवान ऊत से बे बुद्धि का राजा
पहलम मेरा हुक्म बजा फिर पाछे भोजन खाइये।।१
डूबग्या वो राजा चन्द्रहास खदाता क्यूँ ना
चन्द्रहास ने के सोची वो आना चाहिए क्यू ना
कोतलपुर घनी दूर नहीं सै इब तक आया क्यूं न
चन्द्रहास तने मिलज्या ते गेल्या लेके आइये।।२
देख मत्री उस बिन सूना घर हो रहा सै
कदे वो दुश्मन छल रचदे मने यो भी डर हो रहा सै
अन्न पानी तक भावै कोन्या घना फिकर हो रहा सै
खू सूणग्या मेरे गात का सांस अधर हो रहा सै
भीड पडी में प्यारा बनके तु मेरा बफाइये।३
कुछ ने कुछ डके की गैला बन रही सै बात मत्री
उसकी ओढ का फिकर रहे मने दिन रात मत्री
शाम तलक तू वापिस आले लेके साथ मंत्री

जवाब चन्द्रहास का

मदन मरे की खबर सुनी जब अपने जीने खोवण लाग्या
साले बिना सुसराड बिगडगी चन्द्रहास रोवण लग्या
माणस की ना मेरा छूटती सबने आके मौत लूटती
सो–सो मन की झाल ऊठती
आसू ते मुह धोवण लग्या।१
जब इसा पहाड टूट के गिरजा
भला किस तरियॉ पेट भरजा
जिसका पूत गाभरू मरज्या कौन नींद में सोवण लग्या।२
जाने मे मरज्या एक स्यात में बाकी नर से मेरे गात मे
और आदमी नहीं साथ में एकला जल झौवण लाग्या।३
लखमीचन्द कहै छंद गाके
सतगुरू जी को शीश झुकाके
देवी के मंदिर में आके सॉस ल्हास में मै टोहवण लाग्या

दोहा - चन्द्रहास ने बैठेके करी देवी ते अरदास।
जिंदा करदे मदन ने दे घाल ल्हास में सॉंस।।

जवाब देवी का

वर मॉगन की टाला करदे तू बात मानले मेरी
तने पता ना मैं जाणू सू जो थी हेरा फेरी।टेक

जिसकी आई घडी मरण की कोन्या मौत हटे थी
बचे मरणजियॉ मरे बचनियो अपनी तकदीर छट थी
मदन के बदले नाड कटे थी सुन चन्द्रहास थाम की
उसने खटका कोन्या होता जो भक्ति करे राम की
परमशक्ति मनमे राखे मिले राही सुरग धाम की
मेरे भवन मे तेरे नाम की हो रही डूबा ढेरी।२
सतगुरू जी की सेवा करके छन्द लखमीचद ने धर दिया
तेरे आये का आदर करके तेरा सारा पेटा भर दिया
ले तेरा साला जिदा कर दिया तू घाल बैठा जा घेरी।।

जवाब कवि का

वार्ता- प्यारे भाईयो! देवी माई ने चन्द्रहास की अस्तुति से मदन को जिदा कर दिया धृष्टबुद्धि दीवान ने चन्दरहास और ब्राह्मणो से माफी मागी और खुश होके चन्दरहास के साथ विष्या भेज दी और काफी धन द्रव्य देकर विदा किया।

समाप्त

शाही लकड़हारा
पहला भाग

हिन्दुस्तान के बीच मे जोधपुर गुलजार।.
इसी शहरके बीच मे हुए जोधनाथ सरदार।।
हुए जोधनाथ सरदार उन्ही की खूद ये रजधानी थी
रूपवती गुणवान राव के घर रूपाणी राणी थी
सब बातो का ठाठ बाट पर बिन पुत्र हैरानी थी
पुत्र होण का आया समय जब ये छिडी कहानी थी

तोड- राब ने मता उपाया मन्त्री बेग बुलवाया
हो घोड असवार राव झट सैर करन धाया

वार्ता- सज्जन पुरुषो किसी समय का दास्तान है कि राजा जोधनाथ अपने मन्त्री को साथ लेकर सैर करने के वास्ते अपने बाग मे जाता है और पेडो की छाया मे बैठा हुआ था तो राजा की नजर यकायक एक अनार के पेड पर पडी और फलो को लटकते हुए देखकर गलती से मुंह से निकला कि देखो मन्त्री आम कैसे मीठे २ लटक रहे हैं ? मन्त्री चापलूस था उसने भी कह दिया कि हा हजूर आम लटक रहे है। राजा ने अपने दिल मे बडा अफसोस किया कि मेरे तो मुह से गलती मे अनार की बजाय आम निकल गया था लेकिन तुम्हारा फर्ज था कि मुझे बतलाते मन्त्री ने जवाब दिया कि हुजूर मेरा काम तो हा मे हा मिलाने का है जैसे आप कहेगे वैसे ही मै कहूगा चाहे नुकसान हो या फायदा।

जवाब कवि का

दोहा- मन्त्री की सुन बात को दिल ना धरता धीर।
चलके बाग से आए महल मे जडे थी रूपाणी वीर।।
इसी फिकर मे बैठ गया धरके सिर पर हात।
धोरे आकर स्त्री बूझण लागी दिलकी बात।।

जवाब रूपाणी का

थारे किसने या बात जचाई दिलमे हो जचाई दिल मे
सै कौण भरम ने ताडणिया।।टेक
आज पिया किसते करदी खटपट मने भेद बतादे झटपट
थारा लटपट राज फूल फल मे हो फूल फल मे
इसके कोई हो पात झिरोडणिया।।१
पिया क्यो बुद्धि हुई हैरान सोच समझ कुछ करले ज्ञान
चाहे जो पुन्न दान करो पल मे, हो करो पल मे
थारा कोई नही हाथ सकोडणिया।।२
बात का तोड काढ लो ऐसे तुम हुए बेकल कैसे
जैस विष्णु ने सागर जल मे सागर जल में
बुलवा लिए रई के घमोडणियां।।३
लखमीचन्द टहल करे सतगुरू की
जो तने पता बतादे धुरकी
पीठ सुरकी पौध पाक रही बलमे हो बल मे
इसका कोई २ शहद निचोडणिया।।४

-ज० जोधनाथ का-

दोहा- के बूझेगी के हू कैसे करियो यकीन।
बजसे ऐसे लडफता जैसे जल बिन यीन।।

रागनी

मेरी कौण सुणणिया मनकारे प्यारी वक्त आखिरी आली
मै सौ बार तो समझाली पर तेरी यही समझ मे आली
गुलाला उडेगी तब कारे गोरी सभी बदन कुमलालिया
राजा यू रोबे शीश धुणेसै कर्म धर्म ने ना कोए छिणेसै
आज काल बात बणे सै धनकी रे
गौरी पीछे नै जुल्म कमा लिया।।२
आज परी सारा भेद बताऊ अहलकारो का हाल सुनाऊ
जैरात बताऊ अहलकारो का हाल सुनाऊ
सब छुटगे ऐश आनन्द मालिक सबके काटे फन्द
लखमीचन्द मुक्ति होगी उनकी रे गोरी
जिसने कपट का भेष बना लिया

-जवाब रूपाणी का - काफिया-

धन पुत्र और स्त्री मनुष्य ने करमा करके पावैं
हो पिया सुण–२ तेरी बाता ने घणा अचरजयू आवे
इसा कोण हिएका अन्धा जो पिया दिन को रात बनावे

-जवाब जोधनाथ का-

का०- जौ नहीं अकीदा आवे तो तेरे दिलका भर्म मिटादू
एक वर नही राणी सौबेरे तेरे आगे बात बुझादू
जेमेरी बात निकलजा साचीतो तने घरते बहार कडादू

-जवाब रूपाणी का-

दोहा- जो कह दिया सारी ओट बात।
बेशक घरसे ताहदिए पर कहादे दिनकी रात।।

वार्ता- सज्जनो! राजा वजीर को उसी वक्त हलकारे को भेजकर बुलाता है तो वजीर फौरन आ जाता है और राजा उससे सवाल करता है कि वजीर इस वक्त सूरज कितनी तेजी से चमकता है कि आखे नहीं जोडी जाती वजीर ने झट हा मे हा खिलाई कि हुजूर मारे गर्मी के पैर जलते हैं तो वजीर को तो भेज देता है और रूपाणी से क्या कहता है।

जवाब जोधनाथ का

ईब गई शरत ने हार जईये नार दिसोटे मे।।टेक
इब तेरा करना ठीक सोग ना बिन जाए कटे रोग ना
अलबत पडे भोग भोगना जो लिखदिया कर्मतेरे खोटे मे
राम ने शर्त पूरी करी सै जाणा पडैगा सासरी से

होड मारणकी मार बुरी सै दुख पडजा बालक छोटे मे
पीट पाणी क्यो बचा पारगी मन मे बोदी बात धारगी
इबे तो बचना ते हारगी न्यो पडी चक्कर मोटे मे।।३
म्हारा तेरा बधा बैररी लखमीचन्द ओटा कहरारी
एक घडी मत घरमे ठहर री नफा के बात खसोटेमे।४

जवाब रूपाणी का

गर्भवती का क्यो त्यागकरेसै मेरेया भारी विश्वास सै
वरना पालीका खडका दिलका करदेदर पिया धडका
ज्योतिष लोगो ने बतायालडका मरेछ महीनेकी आससै
तने मेरे साथ लिए थे फेरे पिया क्यो करे बणा मे डेरे
उडे हाडे बघेरे बडा भयकारी बनवास सै।।२
कर्माकी रेख टलेजा बोलमे बोल मिले जा
मैचाहू तेरा दोबाव लेजा औरना चाहती भोगनिलाससै
बालक घूट सबरकी भरने अपने दिलमे धीरज धरेने
सतगुरू की लखमीचन्द टहल करन जिसने
साग करन की चास सै जी।।४
जो जीवती रहे मेरी बीर उल्टा चाली आईये रे
आखिर तेरा घर सै।।टेक
खालिए माग २ भिक्षा तेरी ल्यूगा बदन की परीक्षा
भला करे रघुवीर ध्यान परी हरते लाइए रे
पालन वाला हर सै।।१
पडे जाणा चाहे कितनी नाटले इस जोबन झाल डाटले
बरछी लेके चाहे काटले शरीर टुकडे तीन बणाये रे
ना तेरे मरण का डर सै।।२
साठा सारा सठे वर पीछे बीयावान मे डटे बर पीछे
कष्ट की कटे वर पीछेजजीर फिरतो मौज उडाए रे
तेरे जुम्मे फिरना कर सै।।३
मानसिह भोगे ऐश आनन्द कटजा भासी जमके फन्द
छन्दा के लखमीचन्द फिर तीर सुखा दुनियामे चलइयेरे
गाणे बाजे की सुर सै।४

जवाब कवि का

दोहा - हाडे बहुत से खालिए मानी ना एक बात।
बनखड को राणी चली सुमर लिए रघुनाथ।।

जवाब रूपाणी का

चलदी करके बनकी त्यारी हेमालिक तेरीलीला न्यारी
रख सिरपर योविपदा भारी तेरे बिन कौण रूखालारी
छुटगी मुहपे लाबखी बेशर थी मै क्यारी केसर
हे ईश्वर मने तेरी शरना मुश्किल कजली बनमे फिरना
कदी जानते होगा मरना जीवनथा ते इकटाला सै।१
मने शरीर पडया खोना बिन मतलब का होगा रोणा

होगा मुश्किल रैनबसेरा कोए खालेगा किते शेर बघेरा
बनखण्ड मे कडे लाऊ डेरा आज जानका गाला सै।२
मुक्का लिया सबरका मार घरते चली रूपाणी नार
साच किसेकी नहीं जचेगी दुनिया सहम तकरार करेगा
एकलो बनमे आज फिरेगी कित सुख महला आला सै
बदनमे फर्क आवेसै पढता छन्द लखमीचन्द न्यू घडता
विप्ताका कुछ दोष नहीसै न्यो करके घणा चालासै।४

जवाब कवि का

रोतीजा आसू भातीजा दुखिया पहुची बियाबान मे जी
पता कोन्या रात का दिन सै मोटा हुआ बिघन
हे ईश्वर यो भयकर बनसे मेरी जान रहीना जानमेक जी
राम बिन कौण विपत टालेगा होणी आगे
ना कारा वो लेगा
तेरे बिन कौण सभालेगा मेरी सुरत लगी
भगवान मे जी।।२
मुझ अबला को देणा साथ भला करना हे रघुनाथ
आखिरतेया बीरकी जातसै भूलगई औसाने जी।।३
चेहरे की लाली उडगी लखमीचन्द कहै शान बिगडगी
फिर नजर कूली एक पडगी बढगी ऋषि के स्थानमेजी

दोहा- ऋषि बैठे थे ध्यान दे देखे खडी हो ओट।
देखी शकल मुनिराज की गई चरणो मे लोट।।

जवाब ऋषि का

का०- ऋषि हाथ पकडके लडकी चरणो मे से उठाई
ऋषि ने देखी सूरत नार की सै भले घरा की जाई
बेटी कोण तेरा नाम किस कारण बन मे आई

जवाब रूपाणी का

रागनी

ऋषि के बूझोगे बातने कहू कही जाती नहीं जी।टेक
बन्दा सौ सौ दोष धरे ईश्वर सब कुछ आच्छी करे
जोफिरे घूमती रातने और इसी बीराकी जात नहीजी
विपता की फुलवारी खिली घरते आई चली
सब भलीकरा भगवानने कोई दुखिया का साथी नही जी
बिना खोट मेरे पे तथा जोधनाथ मेरा पति हो सुणा
घणा दुख पायासै पावत दोदिन हुए रोटी खाई नहीजी
लखमीचन्द दोष धर जाती निधि से पार हो जाती
मरजाती करके घात थारी जो कुटी पे आती नही जी

वार्ता- सज्जन पुरुषो राणी बनमे फिरती फिरती एक ऋषि की कुटी पर पहुचती है और ऋषि को अपना सारा हाल सुना देती है तो ऋषि रानी को अपनी पुत्री बनाकर अपने पास रख लेता है और रानी को जब छ मास रहते–रहते

गुजर जाते हैं तो रानी के लडका पैदा होता है तो ऋषि और रानी बहुत खुशी मनाते हैं उस लडके का नाम वीरेन्द्रसिह रख देता है और जब लडका पाच बरस का हो जाता है तो ऋषि ने उसको पढाना लिखाना शुरू कर दिया और इसी तरह पढाते लिखाते लडका दस वर्ष का हो जाता है तो ऋषि एक दिन कहने लगे।

जवाब कवि का

दोहा- सुन बेटी है आज मेरा अखीर।
अब बाकी जिंदगी नहीं मरना चाहे शरीर।।

जवाब कवि का

इतना कह ऋषिराज ने दीना त्याग शरीर।
मरा ऋषिको देखकर रूपाणीके भरा नैनमे नीर।।

वार्ता- सज्जनों! ऋषि के मरने के बाद रानी ने बनमें रहना मुनासिब नहीं समझाती वहा से वीरेन्द्रसिह को साथ लेकर चलती है तो कहां आती है कि शहर माधोपुर या उससे कुछ दूर पर जंगल में एक झोपडी बनाकर वहा दोनों मां बेटे रहने लगे और जंगल से लकडियां तोडकर बेचन का काम करते हैं।

जवाब रूपाणी का

सिर पर भरोटा धर लिया चली रूपाणी नार
आग बुरी पेट की हो सै।।टेक
छूट गए राज अमीरी ठाट बिखाने करदिए बाराबाट
काअ लाकडी करलिया गरमी में होगी लाचार
धूप बुरी जेठ की हो सै।।१
मिटेगा छाती का दर्द लगरी से जिगर में करद
वो मर्द जला बिस्तर क्या बनू करेजो घरसे बाहर
बात घणी डेठ की हो सै।।३
दुखियाने गुजरगए कई मास
पति ने बिना खोट दिया बनोवास
फिर सांस सबर का धरलिया राणी रोई जार बेजार
दिशा पेट की हो सै।।१
गुरु मानसिंह काटे फन्द भोगे सुख मौज आनन्द
लखमीचन्द राम सुमर लिया गरदिश माटी करदेख्वार
आबरू के सेठ की हो सै।।४

जवाब कवि का

दोहा - आसपास की कामनी सुन-सुन भरी पुकार
घर-घर से आई निकल इकटठी हुई सब नार

जवाब औरत का

दोहा - लकड़हारी एक बातका दीजे मुझे जवाब।
ना दुखिया दीखे तो जनमकीसै मोती कैसी आब।

जवाब रूपाणी का

दुखिया भूकी टूककी थारा ना चाहता घन माल

ल्यो कोई लाकडी ल्यो मोल।।टेक
घर कुनबेका छुटा मोहसै थारे ते के बात ल्हको सै
बुरी बिपता होसै भूक की हो गया हाल बेहाल
उतरग्या मुह बटवासा गोल।।१
मै दुख जजीरो ने जकडी जणू जाला पूरदे मकडी
लकडी सै सूखे रूख की लियो राजी होके बाल
पाट जाणा बालसी बर तोल।२
मने खता कोन्या कीनी ऊक के थी सिहकी सिहनो
कदी होणी थी मै कूखकी आज टोटे मे किसा हाल
ल्यो कोई लाकडी ल्यो मोल।।३
कदेते भोगू थी ऐश आनन्द आज पडा विपता का फद
लखमीचन्द कली कहे ना चुक की नई रगत सुरताल
लियो कोई लाकडी लियो मोल।।४
के इन्द्राणी के ब्रह्माणी के बिन पाणी
डूबा बडगी हे लकडहारी।।टेक
दिए खोल शरीर के तिसन बहाण क्यू पीके मरे सै
विषने किसने पाली खूब सभाली तू नागण काली
लडगी हे डक टारी।।१
मै समझाऊ सू तने क्यो रो-रो के शीश धुने
मन कुछ ना भाता है मेरा दाता तने बेहमाता
बैरण बैठ गडगी न्यारी।।२
दुखकी ताली बजली कर सिगार इसी क्यो सजली
जणू बिजली घनमे चढी बोल पवन न कजली बन मे
लाली झडज्ञी है क्यो दुख पारी।३
लखमीचन्द झूठ न बोले क्यो दिलकी घुण्डी खोले
परदे ओल्हे रहा करती पडती विपता हरती फिरती
की स्थान बिगडती हे क्योहे की मारी।।४

जवाब औरत का

नित आयाकर हस खायाकर लेजाया कर
टुकडा पाणी हे।।टेक
बुरा हुआ तेरे साथ दुख पाया तेरा गात
बात कहदे सारी सुणले म्हारी बात
लकडहारी से कोए राणी हे
रूपका किया हडा सा चसा जोबन म्हारे मन मे बसा
तेरा किसा पतिना अकल किसी नार सतकी
कदर करना जाणी हे
यो लकडी लेके डोले मतलब नही बात का खोले
बोले आसू भरके डर डरके मेहनत करके रोटी खाणी हे
गुरु मानसिह को शीश नवाके लखमीचन्द कहै गाके
अन्नपाणी ले जाके भरा करे नापेट हब धणे सेठये वैसी
ना हट ना कोय और वीरबानी है।।४

दोहा - लकडी बेची गुजर की कार हरिं का थाप।

रूपाणी के एक दिन चड गया सज्जनो ताप

जवाब रूपाणी का

दोहा- तो बेटा मेरा लाडला तने प्यारा राखू आप।
हालत मेरी बिगडती चढता आए ताप।।

रागनी

बीमारी ने घर घाले हे परमेश्वर रूपाणी के ताप चढा
बचाले प्राण मरती के सास लिकडे दुख धरती के
तखते धरती के हालेहे परमेश्वर छाती मे हुआ आयखडा
पौणिया लिपटण ले केरामें इब कितजारहू गैरा में
पैरोंमे पडगे छाले हे परमेश्वर किसा काया तीर बढा
चलते मन्थे कती काट दिए गुण औगुण कती छोट दित
बिधनाने काट डाले हे परमेश्वर कोएदिन मीना लडा
लखमीचन्द भोकेना नयनी वारिया
सूखे भोजन खासे बिरिया
किस तरयां ढंग संभाले मैं परमेश्वर
दुख बिण्ता आयदा पडा

दोहा- या चौकस मेरे जंचगई बचने नहीं अब प्राण
ला तेरे गलमें बांध दू मेरे बेटा एक निशान

जवाब लकडहारे का

अरी तेरी तो माता मेरी बोलिए तेरा बेटा रोवे सै
तेरे बेटे की बात बिगडी मेरे चेहरे की लाली झडगी
मातातो धरणीमें पडगी अरी ऐरी तो और तडकेने सोलिए
तेरा बेटा रोवे सै।।१
मेरा शरीर गया सै सूक बालक सू घने लग रही भूख
लाड करले देदिएमने टूक अरीऐरी तेरा
बालकका मुंह धोलिए तेरा बेटा रोवे सै।।२
अरी कि तरियां बाधल्यू ठाड बदन को कढती आवेबाड
मेरे रोज करेथी लाड अरी तो मीठी-मीठी बोलिए
तेरा बेटा रोवे सै।।३
लखमीचन्द की किस्मत खोटी कदे ऐरी विपताना ओटी
मै मागू सूं रोके रोटी अरी तो मीठी बोलिए
तेरा बेटा रोवे सै।।३
लखमीचन्द की किस्मत खोटी कदे ऐरी विपताना ओटी
मै मागू सूं रोके रोटी अरी तो मीठी बोलिए
तेरा बेटा रोवे सै।।४
माता मैं देखूं तेरी कानी करमां की पडगी हानी
तेरी छूटन लगा प्राणी ओएरी अख्यिाने जननी खोलिए
तेरा बेटा रोवे सै।।५

जवाब रूपाणी का

मेरे जीने की आस नहीं सै मेरे चांद घणा मत रोवे

सेठ करे ना मन मालिक के करदे छन मे
तेरा बनमे वास नहीं सै इकला ना सुखसे सौवे।१
मेरी परची की मौत आई ये चढा हुक्म रघुराई
इसी दवाई पास नही सै जितते फायदा होवे।।२
मतरोवे मेरे करजा लाल समाई तेरीमाता घिरती–घिरती आई
पडो तबाई सास नही से मेरा बेटा कित टोहवे।३
लखमीचन्द तीर ताणे बेटा न्यू स सास घिगताणे
ठिकाणे होश हवास नही बणू छाती मे सेल गडोवे।।४

जवाब लकडहारे का तर्ज - इश्क जवान

हे मेरे दाता पता नहीं पाता बोलती ना माता
बनमे चाद गहण लाग्या।।टेक
तेरा बेटा घाट मौत के सोया उसे काट जिसे पहलम बोग्या
होगया दुख भरना अबके करना सुना तेरा मरना
आखते नीर बहन लाग्या।।१
घर चलो सिरपे दुखने दुखिया रोवे अपने सुख ने
तो मुखेन खोलिए होश मे होलिए फेर बोलिए
तेरा बेटा तेरे ते कहन लाग्या।।२
अरी सास शरीर मे टोहू आसू ते मुखडा धोऊ
न्यू रोऊ मनमे बालकपन मे ऐसे मा बन मे
अकेला कौण रहण लाग्या।।३
गुरू मानसिह कोन्या आनन्द इसकी जवानहुई अवबद
लखमीचन्द छन्द धरता घणा न्यू मस्त जिसमे रहाकरते
रहण का महल ढहण लाग्या।।४

जवाब कवि का

दोहा- वाहे प्यारी रामने जो प्यारी माणसने वे चीज
माता सुरग सिधारगी दिया लडके के बाघ ताबीज

जवाब शही लकडहारे का

दोहा- इतने माता रही जीवती मने खूब उडाई मौज,
इब दुख होगया खानने पडा ढोवणा बोझ।
कोण सुणय मेरे जिगरने लाकडिया के फिकर ने ।।टेक
भूखा प्यासा मरलिया बाधके सिर धर लिया
भरोटा टोटा खोटा झुका रहा सरने।१
लाकडिया के लाए बिना अन्न पाणी खाए बिना
नहीं सरता डरता मरता पराए घर ने।।२
चल भाई राही पाई माधोपुर ने।।३
लखमीचन्द कहे यों परण सै बुरी मजदूरी करण सै
सिद्ध करे काम तमाम राम ठाले दुखिया नर ने।।४

जवाब कवि का

आज मने रंजहोगया सारा लुटगया माल लखीणा सारा

क्योकर बनमे करू गुजारा रहणासै बीयाबानका।टेक
के रची मेरे दाता ने कौण करे किसके साथ ने
मेरी जनी माता ने फेर लिया मुखडा
सिरपे पूरा पड गया दुखडा
कौण मने देगा रोटी टुकडा भारा दुख होग्या खाणका
शरीर की हो गई ढेरी मने सहली विपता भतेरी
बीमारी ने बडे घर घाले मा मरगी होगे चाले
इस दुखते राम उठाले के जीणा अकेली ज़ान का।।२
ऐश करेथी जब माता किस्मत फूटी इब मेरी
इब तकदीर पकडकर सोगी खोड मेरी माता की खोगी
मेरी मातामने जगते खोगी बिन कुणबे वोके इन्सानका
लखमीचन्द के विपत पड गई करमा की लाय जिडी
सहमको सिरमे पडी ताबई जग परलो सी होती आई
मैं जाणू ना रस्ता राही सू बालक उमर नादान का

जवाब लकडहारे का

तर्ज–आ रहा सै म्हारे बाग मे
बाध भरोटा धर लिया करता सोच विचार
माधौपुर शहर ने चाल्या।।टेक
मात पिता ना भाई घरमे जणू ल्यू मार कुहाडी सिरमे
नूए फिकरमे झडया है सच्चे करतार
न्यू मेरा गात सा हाल्या।।१
ध्यान धरलिया हरमे जाके बेचू माधौपुर मे
इस रज फिकर मे घर लिया होग्या घणा लाचार
कष्ट यो राम ने घाल्या।।२
मेरे सब ते माडे भाग गई चोट जिगर मे लाग
मेरे नाग बिपतका आ लडा गुण्डी हुआ हजार
न्यू मने सास सा घाल्या।।३
सास सबर का घाले देख विपता ने काया हाले
लखमीचन्द चाले कदे हो खडा रोवे जार बेजार
अमर का था घणा बाला।।४

जवाब कवि का

दोहा- छोरा आया शहर मे फिरता बीच बजार।
लकडी बेचण का ढग कर रहा चौतरफा निहार

सवैया

शीश भरोटा धरके छोरा माधोपुर मे आयो जी
आखो मे आसू थे जारी बहुत घणा दुख पायो जी
रज बहुत था इस लडके को सूकी फिकर मे कायाजी
लोभीलाल एक सेठ वहा था उसने उसे बुलाया जी

जवाब लोभी लाला का

लडके इनका मोल चुकावे जोतो शीश भरोटा धरारे
मने सै लकडियाकी चाहना मत अपणे दिल मे घबराना
छोरे तू इनकामोल चुकाना लकडी लेणने जी कररारे
ज्सिपे हर दया करे सै वो विपता ना सहा करे से
कोणसी जगह रहाकरे से बतादे कुणसे शहर ठेररासै
तने दुख ओटयाणे ने जब देखू तेर बाने ने
दो रोटी दे खाणे ने मने तरस भतेरा आरा रे।३
लखमीचन्द उमर नादान सीख लिया मानसिह ते ज्ञान
माडी हुई सूक जान के दिया गरदिश ने घेरा रे।।४

जवाब लकडहारे का
तर्ज-गरीब आदमी

बेच लाकडी करू गुजारा दुख विपता मे फिर रहा
मात पिता जो भाई बन्धु न्यू है रीशशरीर मे भर रहा
किस्मत का खेल ऐसा है चाले ना घिगताणा
बिपता पडे आणके ऊपर छुटज्या पीणा खाणा
सब लुच्चा बदमाश कहै जब होज्या दुर्बल बाणा
ईश्वर की ये मरजी फिरगी यो रे लागा लागा
जगल से लाऊ लकडी शीश भरोटा धर रहा।।१
बेहमाता मेरी कदकी बैरण कोणसा बैर विसाया
जीणे लायक के मे नर था खोटा भाग लिखाया
कई दिना का मै भूखा प्यासा खाणा तक ना खाया
बाली उमरमे मा मेरी मरगी ना कुछभी लाड लडाया
लालाजी के हाल बूझे से आस टूक की कर रहा।३
पिता मेरा तो पहलम मरग्या कदे शक्ल ना देखी
हे ईश्वर के करा जो छुरी घीटी पे टेकी
घर कुणबा मेरे आवे कितने क्याहे को मारू सेकी
निर्धन करके मै मारा सू चन्दा मैखी
के बूझोगे हाल ने कतई कलेजा हिल रहा।।३
परमेश्वर जब दुखी करे माणस की पार बसावे ना
जो मै रोवण लगू अडे तौ मेरे कुछ भी हिय्यावे ना
जैसी मुसीबत पडी है मुझये राम किसी पे ल्यावे ना
जैसे छन्द लखमीचन्द गावे और कोए गावे ना
इन्ह्ले की पार बसावे दुख बिपता मे घिर रहा।।४

जवाब कवि का

स०- दो रोटी दो लोगो नाराजी होके खाई थी
कई दिनो से भूके मरते दो रोटी आज हथियाई थी
मातावो भी सुरग सिधार गई जो घर मे जननी माईथी
लकडा ल्यावण की लोभीलालने लडके से रोजठहराईथी

वार्ता- हे सज्जनो वीरेन्द्रसिह उर्फ शाही लकडहारा माता रूपाणी के स्वर्ग सिधारने के बाद दोरोटियो पर माधोपुर मे सेठ लोभी लाल जी के यहा छ साल तक जगल से लकडिया काट कर भरोटा बाध डालता रहता है। अब आपको उस जगह का दास्तान सुनाया जाता है कि इसी शहर का राजा रायसिह जिसके दो लडकिया थी एक का नाम था बीना और दूसरी का बेला लेकिन बीना लडकी राजा के पहली रानी से थी और बेला मौजूदा रानी से थी बीना का ध्यान हर समय धार्मिक पुस्तको के पढने.मे रहता था और बेला का ध्यान हर समय खेल कूद मे रहता था।

जवाब कवि का

दोहा - इससे आगे का जिकर सुनो लगाकर ध्यान।
कौतुकपुर एक ग्राम था थे दो डाकू बलवान।।
थे दो डाकू बलवान एक का नाम विजयसिह बलदाई
दूजे का नाम था जालिमसिह इनके दिलको बेला भाई
बेलाको उडाने की उसने अपने दिल मे ठहराई
बस चाल चली इसने ऐसी जिससे बेला इनको हथियाई

वार्ता- सज्जनो! एक समयका जिक्र है कि जालिम और वहा का धमलू माली था इसको राजाओ जैसी पोशाक पहनाकर बाग मे बिठा दिया और राजा रायसिह को खबर कर दी कि आपके बाग मे जोधपुर का शहजादा ठहरा हुआ है। रायसिह अपनी औरत को साथ लेकर बाग मे आता है और जोधपुर का शहजादा समझकर अपनी प्यारी बेटी बेला का डोला देना मजूर कर लेता है और घर आकर ब्याहकी तैयारी करता है और बेला अपने पति को देखने के वास्ते बाग मे जाने की तैयारी करती है।

जवाब बेला का बीना से

दोहा- वह न यह दुनिया मे असल दिल लगताना साथ दिन
पोथी के बाचके धरा क्यो सिर मारे रातदिन।।

जवाब बीना का

सारी सखिया बोले चाले रग चा की बात करी
हे बेहूदी बीना तो बहुत गुमान भरी।।टेक
माता पिता की आज्ञा लेके काम करे ना शिव का
ओढ पहर सिगार ले लागे बिजली केसा चमका
तले घाघरा बावन गजका ऊपर चूदडी हरी।।१
हम चाहे दो घडी खेल ले तो एक नही मानी
तेरे कैसी बेहूदी ना और कोए बीर बानी
हे चन्दा की सी शानी क्यो डिब्बे मे रोक घी।।२
खेलकूद मे सबका साझा तो क्या है ते डर रही सै
याणीसी की मां मरगी के रोसे मे भररी सै
हे तो केकर रही सै पाटी ना थाह तेरी।।३
लखमीचन्द सतगुरु की टहलबिन न्यू हे भिरे नाहर–नाहर के
रात दिनाका पढना होगा पिजर हो हार–हार के
कागज मे सिरमार के ज्योही मर जागी सोक मेरी।।४

जवाब बीना का

हे बेला मुह दबको लिए नीद आनन्द की सोलिए
मेरी शौक परदेश ने होलिए मै डरती मरती गिरती

है आवे सै तिवाला।।टेक
के फेंकण लागी साथ हे रग सूके झडने पात हे
के कहण लगी इसी बात हे ये लूटजी पिटगी कटगी
हुआ के चाला एक।।१
क्यो बिजली की तरिया पाटरी धरती ने खुरिया काटरी
इसीके वनती लाटरी क्यों फूके दुखे सूके
मेरा जोबन बाला।।२
क्यों घूर–२ खा रही क्यो कडवी–कडवी लखा रही
मेरी बेशक जवानी जा रही ना टोहू खोऊं रोऊ
तेरा हो मुंह काला।।३
जा मेरे धोरे ते उटले या तेग नाड पे छुटले
मरद जती हो लुटले दो बिन मोह बिन
सै जोबन वाला।।४

जवाब बेला का

स्याही घालो बदन सजलो रलमिल चालो सारी हे
मद जोबन का बाज लिया ढोल पेडे ओली सेली झाल
थारा बोल अंगेजी ल्यो शीढी नेजू स' रूप दहेज
झूले न्यारी हे।।१
हे चाले जब आवे जो सा मध जोबन का बरसे मेहसा
काया में घी सा घल गया दीपक बल गया
अग जणूं खिल नया फूल हजारी हे।।२
इसमें काम नहीं छोहका स्हारा
थारा साथ बणा सै चोखा
क्यों मौका ऊको बहन मैं सूकी कालजे फूंकी
दबी अंगारी हे।।३
कुछ चालन का करदो डग के काया मे भरी उमग
मानसिह ऐश आनन्द काटिए फन्द
लखमीचन्द, मेव रन छारी हे।।४

चतुर सुजान

दोहा- ब्रह्मा विष्णु सुरेश शिव व्यास आदि अवतार।
जग जनतो तेरे भाव का ना जाने ससार।
तीस कोस करनाल से गुरु का अनौखा स्थान।
माई राई सत गुरु मिले गुरु कहैव के भगवान।

वार्ता- दीनानाथ डमरु गढ के निवासी की एक रुपकला नाम की अति सुन्दर स्त्री उसकी दोस्ती एक जादूखोरी मनियारिन से थी दोनो अग्निवोट मे बैठकर बृहमपुत्र नदी मे सैर करती थी। दोनो का नाम जादूखोरी पड गया। रुपकला की सगाई रगूग में परमानन्द के पुत्र चतुर सुजान से हो गई। रुपकला की माता तथा चतुर सुजान के पिता मर जाते है चतुर सुजान की माता रुपकला के चाल चलन का पता लगाने के लिए डमरुगढ मे एक नाइ को भेजती है।

दोहा- पण्डतानी की बात सुनकर आया ज्ञानी नाई।
झट पट घल पडा था डमरुगढ की राही।।

ज० प्रेमवती का ज्ञानी से

मै कहरी सू नाई के तू डमरुगढ ने जाइए
रुपकला ने कद ब्याहवेगे जाके खबर ब्याइए।। टेक
चतुर सुजान मेरे बेटे ने करली खूब पढाई।
रुपकला के मात पिता से जाके कह दिए नाई।
कदसी ब्याह भेजे भाई सारी बूझ के आइए।
रुपकला ने कहे लोग जाणु सै ब्रह्मा की पुत्री
रूपकला` कहै लोग जाणु सै हूर स्वर्ग से उतरी
चाल चलन में कैसी सुथरी आके मने बताइए
माणस ऐसा जिदगानी जैसा बुलबला जल का
मै मरज्या मेरा बेटा रुलज्या नही भरोसा पलका
जणसा काम हो रहा कलका आज बनाना चाहिए।।२
जल्दी से जल्दी विवाह भेजा क्यो कर रहे सा रासा
नाई कर दिए तोड खुलासा बिल्कुल ना शरमाइए।।३

वार्ता- प्रेमवती की बात सुनकर नाई डमरुगढ जाकर रुपकला के चाल चलन की बात पनिहारियो से पूछता है।

दोहा- कुवे को पनिहारिन साची साची बात बताइए।
रुपकला के चालचलन का सारा हाल सुणाइए

ज० पनिहारिन का नाई से तर्ज - बरसात में

म्हारे गांव में रुपकला छोरी से जादूखोरी म्हारे गाव मे
रुपकला का रूप जणो जल लिकड धूण मे
माणन की माखी करदे चेप कणे मे
जादू और टण में रुपकला नामी होरी।१
रूपकला जानो लक्ष्मी का अवतार होरी से
देखण में सावित्री जानो ब्रह्मा की पुत्री सै

श्याम सकल की सुथरी सै वा रग मे गोरी।
रूपकला न परी समझ चाहे मेम विलायत की
अदा कसूती गांत की मटके पोरी परी।२
रामकिशन कहे रूपकला वा छोरी सै बदमाश
जादू टूणे सीख राखे जाखे जा मनिहारी के पास
नार लौट वाले व्यास की बात राखी ना चारा।४

वार्ता- तब ज्ञानी नाई रूपकला के पिता के पास जाकर कहने लगा आप ब्याह कब भेजोगे ता रूपकला का पता दीनानाथ ब्याह के लिए नाई के साथ रगून आ गया।

ज० प्रेमवती का

हम तो कन्या ब्याह लेते गिरकाणी का
छोरी ने ब्याह और किसे देश सरा गिरकाणी का। टेक
छोरी चाले खोटे रास्ते जा कर दी टाल मने
जादू टूणे सीखे वा दीखे चण्डाल मने
जा तेरी बेटी तै ब्याह ले देय जमामा गाल मने।
मुँह माथा कोन्या देखूं तेरी रूपकला मरजाणी का।१
सुना ब्राह्मण में ना चाहती ऐसा रिश्तेदारी ने
रूपकला तेरी जाती क्यू मनिहारी ने
पोहर में जादू सीखे ना आई शरम क्वारी ने
म्हारी ब्याह कोटाल भेज दितो म्यारे रग पिटारी ने
तेरी इज्जत खोवेगी तू कहा मान पण्डतानी का।।२
हाथ जोड के अर्ज करूं दूसरी म्हारी रिपोट नहीं
मनिहारी तै प्यार करा उसने देखो बड झोट नही
रूपकला और मनिहारी को मने सुहाबे जोट नही
तेनी बेटी रूपकला मे दूसना खोट नही
मनिहारी के गैल रहै यो धरम नही मिसराणी का।।३
अपने हाथी अपनी बेटी कर राखी बदमाश तने
अपने घर की इज्जत का क्यो कर लिया सत्यानाश तने
हाथ जोड के कह रहो कुछ करना चाहिए ख्याल तने
के थूकेगा रामकिशन वा नारनौद वाला व्यास तने
सतसंग करना ठीक नहीं बेटी बहू विराणी का।।४

दो० पण्डितानी की बात सुन पण्डित हुआ उदास
डमरुगढ़ में आ गया उस रूपकला के पास।।

ज० रूपकला का पिता को देखकर मिलमों

बेटी- चेहरा हुँआ उदास पिता का होग्या मो घोला
पिता- क्यों कर काला मुह होग्या तू खोल सुना दे सारी
सुनले नाश गई तने डोबेगी मनिहारी
मनिहारी का खोट बताके जलम किया सै भारी
पिता- मनिहारी के कारण होगी ब्याह की टाल तुम्हारी
बेटी- चतुर सुजान मेरा बालम सै थारा देखा भाला

पिता- उसकी गैला तेरे विवाह का आज होलिया टाला।१
बेटी- चतुर सुजान बना बालम मने और किते ना ब्याहिए
पिता- उससे अच्छा वर टोहूगा मत बेटी घबराइए
बेटी- पतिवृता का एक पति ना तू सौ खसम बणाइए
पिता- बस कर बेटी चुपना होजा मतना शोर मचाइए
बेटी- चतुर सुजान को पति बना कर चालूगी बर माल
पिता- उसके माला क्यो डाल वोतेरै लागे साला।।२
बेटी अब कहे सुसरा साला क्यू पहले करी सगाई
पिता- भूल करो मने ठोकर खाकर पीछे सोधी आई
बेटी- तेरा कुछ ना बिगडो बाबुल मे तने मोसे बिहाई
पिता- तेरी सासू तेरे ब्याह तै नाटी ना मेरी पार वसाई
बेटी- बिन माली के उजड मे सू मेवा की डाली
पिता- मारे खच गूबेल इसी टाह दू रुखाला।।३
बेटी- पतिवृता का एक पति क्यू बात 'करे षै आली
पिता- रुपका तू रही सती न्यू स बाबल घाली
बेटी- सारी छारी गई सासरे म लुट गई दिन धौली
पिता- मतना जिन्दगी खोइए त्यारा करदू ताला
बेटी- कदले जागा रामकिशन का ब्याह नारनोद बाला
पिता- के ले जागा ब्यास तने नही करु उपराला।।४

दो० बाबुल का वाणी सुना रुपकला ने आप।
रो रोके ने सास को देने लगी श्राप।

टेक - क्यू मेरे दोष लगाया के बिगाडा मेरी सास तेरा
कुष्ट लगाजा काया मै हो सै सत्यानाश तेरा
मेरे सास की ढाल जुल्म कोई और न करियो
यह बेटी सर पे झूठा दोष न धरियो
कीडे पडके मृरिए होवे नर्क पापी वास तेरा।१
रेत के माह रुलादे चन्द सो शाज मेरी
विन बालम कैसे काटूगी उमर जवानी
जो सुनले भगवान मेरी उजडे रजवाडा तेरा।२
हे ईश्वर मने ठाले रस्ता मरणे का टोहू
सारी छोरी मौज करै से सास मार के साऊ
सासू री मै रोऊ के बिगडा बदमाश तेरा।३
मारे तै मरज्या वैरी कासे तै नही मरे
सारी दुनिया जाने ना गीदड पे शेर डरे
रामकिशन इतवार करे ना सासू व्यास तेरा।४

वार्ता- भाईयो! रूपकला ने शाप दे दिया। उधर चतुर सुजान की माताने कुष्ठ निकल आया। रूपकला ये सोचती है कि सासू के कुष्ट निकला या नही चलके दे ना चाहिए।
टेट–रूपकला जादूखोरी झट बनके चलो फकीर
सासरे मे पहुँचगी और छोड चली पीहर
मेरे तो तमाम याद सै वेदगाई का

कोय कटालो रोग काट दूँ मरद लुगाई का
कुछ ना लेऊ दवाई का मी साधू धणा अमीर।१
बेद बिना रोगी सूने दुनिया मे बहुत फिरे
जैसे जल बिन मछली न्यू मोती बिन हंस मरे
कहा करे मेरे बादशाह रुलते फिरे बजीर।२
जिस पर महर राम की हो चिडिया ते बाज बणे
करमा ते लकडहारा राजा महाराज बण
उसका नहीं इलाज बणे जिसकी माडी तकदीर।३
रगून शहर में रोज फिरू खाक रमा तन पे
कोए साधू बणया फिरे कोए राज करे धन पे
इतना सुख रामकिशन पे जुडे मरद जोर वीर।४

वार्ता- उधर चतुर सुजान पाडुवा घाट में ब्याह के लिए गया हुआ था। अब चतुर सुजान की माता रूप कला फकीर से अपनी मरज की दवा कराती है।

दस दिन होंगे कष्ट लगे ने हो रही सू बीमार बाबा
नाडी देखके आज मेरी तू दे करडाई का तारा बाबा
मनैं बतादे हो बाबा जी के कुछ तू लेणा चाहवे सै
जो मांगेगा सा दूंगी बाबा जी मत शरमाबे सै
मन दुख के दुखराव से सारा मेरा परिवार बाबा
मेरी किसी का दुनियां में जीणा सै बेकार बाबा
खोंटा कर्म करना बाबा क्यूं मेरे कोड लाग रहा तन में
बालण तक की सरधाकन्या मरलूगी दस पन्द्रहदिन में
मेरी कैसी रूप हुश्न में और नही थी नार बाबा।
मेरा ऐसा चेहरा चमके था लाल अगारे बाबा।२
सेबडे और स्याणे ते बूझा करवाली दर्द मिटाया ना
वैद्य हकीम आलिए सारे मेरा मरज का भेदपटायाना
मेरी कैसी रूप हुश्न मै और नही थी नार बाबा
मेरे काटे की दबा मिली ना होगी सू लाचार बाबा।३
मेरी दबाई कोन्या पाई यो हो रहा मोटा चाला
में दखियारी नारि मेरी करेगी मेराजान का गाला
रामकिशन कहै नारनौद बाला मतलब का संसारबाबा
बिगडा के ना बणे भणोई चलती सौ यार बाबा।४

रागनी जवाब फकीर का

रूपरूगढ में चालीजा तने खोल सूणादू सारी।टेक
रूपकला के जादूखोरी तेरी काटेगी बीमारी
रूपकला के धीरे बबे मुश्किल जाया जाबे
रोग कटेगा रूपकला जब आके तने नहाबे
उसके हमला के सौगिरदे को पहरा से सरकारा
उसके धीरे मिले दवाई तेरे मर्ज और खाव की
मगवाई जा तो मगवा मने लादो खबर दा का
उसके पिता ने उसके ब्याह की सौ–सौ करली न्यारा

वा यू बोली सुणौं पिताजी घर पर रहुँ कवारी
रूपकला जब चाले हाबे लरज लागे धड में
सिरके केश लगे ऐडी जाणू विरण फूट रही बड मे
आक महलों को जड मे एक बडा समुद्र भारी।२
अग्निवो में सैर करेवा श्यामा, सुबह, दोपहरी
रूपकला मनियारी दोनों हरदम रहै जोट में।३
रामकिशन जब सैर करे जब होज्यों मरद ओट में
रूपकला के अग्नवोट में दो बैठ असवारी।४

वार्ता - भाईयों! रूपकला येहाल बातके डमरूगडकोआ जाती है उधर से चतुर सुजान पड़ूघाट स विद्यावती से ब्याह कर लाता है। तो घर आते ही चतुर सुजान की मां क्या कहती है।

जवाब माता का मिलमा रागनी

चतुर सुजान मेरे तू डमरूगढ़ ने ज, चाला।।टेक
बेटा - क्यूं भेजे से डबरूगढ़ ने मन बताइए माँ
माता-मतना पूछ रे मेरे बेटा तावल करके जाइद तू
बेटा - क्या की खातिर भेजे से सारा हाल सुणाइए तू
माता - ब्राह्मण की बेटी है उसका जाके लाइएतू
माता- दीनानाथ की बेटी से तू रूपकला ने जा केला
बेटा रूपकला ने लावण की तू माता मने बताइएराह
माता–रूपकला की पहले तेरे साथ में हुई सगाई थी
माता-रूपकला जादूखोरी सबने बदमास बताई थी
बेटा – माँ री ततै रूपकला में के बदमाशी पाई थी
मात्ता - कुछ भी ना बदमाश माई दुनियाँ ने बहका दी
बेटा - उसका साँस से लग्या मातज्याँ तेरे कुष्ट लाज्याँ
माता-रूपकला जादूखोरी काठे जो बीमारी सै
बेटा-उसे क्यूं कर लाऊ मां वो जादू खौरी नारी सै
माता-तेरी खतिर जादूखोरी इब तक फिरे कवारी सै
बेटा- भरी खाटपेखाट मातारी मनै कौन दूसरे देगा ब्याह
माता-रूपकला ने ब्याहिए तो दो हो ज्याग तेरी नार
बेटा- जिसके होज्या दो तिरियां घर रोज करे तकरार
माता-चतुर सुजानदौनबा सेती करिए लाड़ त्यार
बेटा-सुनिए माँ एक म्यान में नहीं खटाबे दो तलवार
माता - रामकिशन उस रूपकला ने मेरी छाता में कर दिया
बेटा - व्यास कहैं माँ झूठ साँच का परमेश्वर से न्याय
दोहा - मात को सुन बात को मन में हुआ उदास।

चतुर सुजान झट का विद्यावती से

सुन ले प्यारा, माँ का दे काट बिमारी।टेक
रुपकला व्याला सै नारी डमरुगढ़ मे जाऊँगा
कर लिया कौलकरार परी मैं लाऊ कोन्या वी परीमें
आकर न्यू तेरा प्यार करूँ मैं ना बेरा कद आऊंगा
होगा देश मैं फिरणा माँ का कहा जरूर कारण

डरना चाहिए करडाई ते वक्त काटिए नरमाई ते
रूपकला जो ना पायो तो कोन्या शान दिखाऊगा।२
मरी मा जिदगी खोरी न्यू मने पल मुश्किल होरी
गोरा ध्यान लगाले हर मे मतना पडिए साच फिकर मे
रूपकला जो आगई घर मे सब का रोग कटाऊँगा
दुणिया मे जीना दो दिन का के समझण मूर्ख मन का
रूपकला और रामकिशन का हटकर मेल मिलाऊँगा

रागनी - जवाब विद्यावती का

डमरूगढ मे मतना जइए मेरा कहाना मान पिया। टेक
बिन बालम दिन क्यू कर काटू घर मे वीर जवान पिया
तेरे बिना इन महलो के माह हो जायगा मै काल पिया
सूनी सेज खा ने आबे उठ बदन मे झल पिया
क्यू कर मन पर चाऊगी मेरी ना गादी मे लाल पिया
तेरे बिन जी कोन्या लाग मने सग ले चाया
करडी कर चाहे खुली छाड तेरी मुटठी मे मेरी जान पिया
वह दिन क्यू कर करटे जिनके बिछडे दिल के प्यारे पिया
बिन बालम गोरी ने लागे सुने महल चुवारे पिया
घडी–घडी मुश्किल ते काटू हारी रात गिन तारे पिया
बिन बालम की गोरी दुश्मन होजा सै जहान पिया
मेरी बात जो ना मानो ताके चाले जोर पिया
भटक–भटक मरजा गोरी तेरे कालेज की कोर पिया
जैसे झुर झुर मरै मोग्नी जिसका बिछड मोर पिया
के बूझेगा सो सौ मण की उठ रही सै लोर पिया
नीद न आये इश्क सतावे जीवन करे विरान पिया
वीर लिबावण धरा अकेला क्यू कर धरले धीर पिया
बिन बालम की गोरी का हा सूना सासरा पीहर पिया
जिनके बालम घरा नहीं उनकी फूटी तकदीर पिया
रामकिशन कहै नारनौद वाला बुरी प्रेम की जजीर पिया
उड–उड मरे चकोर चॉद से जान करे कुर्बान पिया।४

जवाब सास का मिलमा

मने बतावे सास तने बेटा कडे खदाया।।टेक
सास–डमरूगढ मे गया लाल मेरा सुनले मेरी माया
वि–डमरूगढ ने क्यू भेज्या सै खोल सणादे सारी
सास रूपकला ने ल्यावेगा वो जादूखोरी
वि–रूपकला बनावे या सोगण राड हमारी
सास–चतुर सुजान विन बेटी बा इव तक फिरे कवारी
वि– तेरा बेटा रूपकला ने क्यो ना ब्या के लाया
सास– रूपकला का चाल चलन दुनिया ने बुरा बातया
वि– तेरे बेटे बिना सासूरी मेले उचाटा तन मे
सास – मेरा लाल इब आज्यागा तू राख शॉति मन मे
वि– जिसके बालम घरा नही के रहज्या केसर विघ्न मे

सास– मेरा बेटा आवेगा वह पॉच सात दिन मे
वि– पद्रह दिन की कह गया था वो इब तक ना आया
सास– को लागगी ओट वकत पे न्यू न आने पाया।२
वि– सासू जी मने सॉच बता बेटा आवे तेरा
सास– ग्राम गए माणस का बेटी के पाटे से बेरा
वि– सून्यॉ महल दिखाई दे जी नही लगता मेरा
सास–मने भी बेटे बिन हो रहा अन्धरा
वि–इव अधेरा दीखे कयू तने बेटा दूर खदाया
सास–भूल करी मने भेज दिया मेरी दख रही सै काया
वि–सासू रा तने अपने हाथोक बेटे को जड काटो
सास–बस कर चुपका हो मेरा मतना करे माटी
वि-बालम आवे याद रोज मै जागू पीली पाटी
सास–सुण–सुण के ने बात तेरा मेरी मनमे लगी गचाटी
वि–नारनौद वाले ब्याह बिना घर उजडा वसा बसाया
सास–रामकिशन का न्याणा धौणा मने छुटग्या।३

दोहा- डमरूगढ पहुच गया वो चतुर सुजान।
पनिहारी ते जामिया वूझके नाम निशान।।

वार्ता- मनिहारी सोचती है कि तेरे कोई सतान भी नही है तेरी तबीयत भी तभी लगेगी दिन आसानी से पास होगे तो अपने साथ ले जाती है चूडी पहनाना सिखाती है एक रोज चतुर सुजान चूडी पहनाता हुआ रुपकला के सामने जा आवाज लगाता है।

बणले से मनिहरा चूढी बेचन चतुर सुजान गया। टेक
रूपकला खडी छज्जे पर मनिहारे का ध्यान गया
रुपकला ऐसे देखे जाणू शिव शकर की पारवती
चन्द्रमा का र हिणो से जाणू कामदेव नार रता
सावित्री ब्रह्मा की गौरी जानू सुलोचना बिन सती
जाणू लक्ष्मी छोड दई न्यारा विष्णु भगवान गया
के दुष्यन्त बिछड गया न्यारी खडी अकेली शकुन्तला
नल राजा जानू दमयन्ती जोड अकेला चला गया
रानीरुकमनी कुब्जा दीखे श्रीकृष्ण जी नही मिला
इन्द्र का इन्द्रान जैसी रुपकला
हुआ अन्धेरा मुंह जाणु बादल मे लुक गया।।२
के यो योजन गंधारी सै धून्ध ऋषि जी मोइया था
के या अश्वपति की बेटी सत्यवान टाइया था
तारा ने गया छोड जल भगा का ढाया था
दीक्षे नार द्रोपती जिस ते भारत गारत होया था
अहिल्या जाणू अकेला सै गौतम करने स्नान गया।३
के या हूर मेंनका सै विश्वमित्र भरमाया था
के या विश्व मोहनी सै नारद का ध्यान डिगाया था
रामकिशन या नारि सुकन्या बालम चमन बनाया था
नारद नारनौद बावे व्यास कहे केहो काफी पर लदु गए

रागदी मिलमा -जवाब रुपकला

मनिहारी आ मेरे पास मैं कद को तने बुलाऊ मै। टेक
म– राह पावे ना रुपकला क्यू कर ऊपर आऊ मैं
र– तेरे मुंह के स्यामी सै जीने का दरवाजा
स– ऊपर चढना मुश्किल सै तू रुपकला नीचे आ जा
र– आना हो तो चूडी मुझको दिखलाजा
म– लेके बांझ चढ ऊपर कदे मेरा तन झोका खाजा
र– जाते पडग्या मनिहारी तने हाथ पकड उठवाऊ मैं
म– फेर उठाय के फायदा नहीं पडके तुडाऊ
र– जल्दी आज्या मने दिखाज्या कैसी चडी स तेरी
म– खाके पड लिवाला जिब तू चूणी देखेगी मेरी
र– ऐसी चूडी मने पहनादे बोल तने दे रही
मने बूला के रुपकला करदे सहम करे डूबा डेरी
र– ढवा ढेरी क्यू होगी मुह मागे दाम चुकाऊ मै
दमा की कोई लोड नही तने चूडी मुफ्ती पहराऊ मैं
र– मुफ्ती चुडी कौन्या पहरु दूगा दाम करारे मैं
म– सारी चुडी देख लिए तू गठरी खोल चाबारे मै
र– चुडी देखुगी जो धरती पेरी पिटाई मै
म– चुडी दिखलाऊ जा ऑख छट चमकारे के
ऐसी चडी ना देखी पर आज देखना चहाऊ मैं३
म– मदेबाबली होजा जबये चुडी तन दिखाऊ मै
र– चुडी देखके कोई बाबली होती देखी नार नहीं
म– मेरे कैसे चूडी राखे ऐसा कोई मनिहार नहीं
र– रामकिशन कहे ऊपर आज्ञा करणी चाहिए वार नही
भ– व्यास कहे सन नाश गई हमन तेरा इतवार नहीं
र– रुपकला तने वेरा पटग्या इव तेरे पास आऊमै

वार्ता- मनिहार रुपकला से पूछता है तेरी शादी हुई या नहीं रूपकला ने कहा मेरी शादी नहीं हुई तो चतुर सुजान कहा मैं कुवारी को चुडी नही पहनाता

जवाब मनिहार - रुपकला से

जादूखारी रुपकला क्यू अब तक फिरे कुवारी।टेक
किसकी खातिर फिरे कवारी ना मेरी समझ मे आई
माता पिता तेरे डूब गए तू फिरे क्वारी
र– रगून शहर में तेरे पिता ने कर राखी सगाई
मेरी सास ब्याह ते नाटी ना बावली की पारवसायी
म– क्यू तेरा साह ब्याह ते नाटा के सनली तेरा बुराई
के तने चोरी जारी करली गैर मरद पे नीति डिगाई
र– चारो जारौ नहीं करी मेरे शिर चढगी करडाई
चोर जार में जादूखोरी सासू ने बदमाश बताई
म– तेरे पिता ने भूल करी तेरी क्यो ना ओरत जाट मिलाई
आड कंवारी घरां बाप के विन बालमदे जहर दिखाई

होगा तेरा कड भला तू बिन पति की नारि।१
रुपकला सुण मेरे साथ अपना ब्याह करवाइ एतू
घर मे ना माया तोडा मोज उडाइए तू
घर मे ना माया का टोटा बैठी मौज उठाइए तू
र– बेटी बेगाने पे मन अपना ध्यान डिगाए तू
के तेरी मरगो बुआ वबे उनका बहू बणा तू
म– बुआ बहन का चाहनाकोन्या रुपकला बने चाहिएत
मेरा तेरा जोड मिलग्या मतना नाक चढाइए तू
र– पराई नार हो बुरी जगत के मतनाइश्क कमाइए तू
मारा जागा विन आई मे अब घर ने जाइए तू
म– यह आशिक मारा जागा ऑख नाक मटकाइ तू
मेरी गला आख मिला मेरे खटक लागगी भारी
तू सोल की अठारा को जोगम जीम मिला
मेरे कैसा पति मिले ना कहा मानजा रुपकला
र– तेरी गेला बात करण का कान्या मेरी सलाह
चल्ला का बदमाश तेरे नही गल मे फासी देऊ घला
म– चाहे मारदे शीश तारदे फिर भी सोचू तेरा भला
गोडे टूटके तने देख के हमसे नही जाता चला
र– बिन आई मे जान चलाजा क्यू रहा जादा फला
फेर कहे सै मर जाण मतना मेरा लहू जला
म– मतना लहू जलावे गोरी चाहे लिए बुला
मरदा बिन लुगाई सूना मरगाई बिन रहे तला
चाहे गला काटले मेरा ना तयाया जान उधारी
हुश्न जवानी जोवन का पीहर मे कर लिया नाश तने
रहे कवारी नर नारी के थूके बोस पचास तने
र– सौ बार कहला चप होजा देशा के बदमाश
कामदेव ने पागल कर दिया करना चाहिए ख्याल तने
म– ख्यास करण की सुधी कोन्या रखना चाहिए पास तने
पीहर के माह रहे पति का ना देखा रणवास तने
मने सतावे के पाबेगा नारनौद वाले व्यास तने
म– बात माणजा मेरे साथ कहणा चाहिए इकलाश मने
लाड लडाऊ रोज खिलाऊ शतरज चोपड ताश तने
रामकिशन दे तने खिला तू रुक रही नाग पिटारी

वार्ता- सज्जनो! रुपकला मनिहार सै कहती है या ता मुझको चूडी पहना नहीं मारा जायेगा। मनिहार रुपकला तेरा रूप देखके आस जीवन की टूट गई।टेक
पडातिवाला खाके एक दम सारी चूडी फूट गई
रुपकला तेरा रूप गजब का तेरा मेरा ठाक मिजान
तू मेरे लेख बना लक्ष्मी मै तेरे लेखे भगवान
रस का भरा जवान श्याम तरी मनियारे ने लूट गई
तेरे रूप ने देखके इश्क मेरे तन छाया
तेरी मेरी आख लगी मै सहम खडा चढकर लाग्या
जीवन का धडका लागा जाण पडके बिजली उठ गई

चाहे मारदे बचादे सोचू सू तेरा भला
तेरी शान पर पागल होग्या कुछ ना मरा जोर चला
हेहमाता भी रुपकला तेरी शान पे टूट गई।४
तेरे कैसी इस दुनिया में हूर नही देखा माली
रामकिशन बेखटके रही तेरी गाल पुतला दो काली
तेरी आख्यॉ की रफल दुनाली कर रामकिशन ने शूर गई

दो०- मनिहरो मानो नहीं जब रूपकला की बात।
झटपट पुलिस बला लई बोल दिए छह सात।

वार्ता- सज्जनों! मनिहार को पुलिस ने आते ही पकड लिया तो मनिहार ने कहा रूपकला में तेरा पति चतुर सुजान हूँ यह सुन रूपकला को गुस्सा और भी तेज हो गया और पुलिस से कहता है इसको बहुत जल्दी ले जाओ पुलिस ले जाना चाहती है तो मनिहार कहता है।

घरा बुलाके रूपकला नै पकड्वाया मनिहार
तिरिया कारण कितने मरगे मुतला सब नर-नार
सत्यवती पर पारासर ने नीति डिगाई थी
तिरिया खातिर नावण मरग्या हुई लडाई थी
चन्द्रमा ने तिरिया खातिर त्यागी स्याही थी
सहरभाग इन्दर के होगी जाण सब ससार।२
विश्वामित्र ने मेनका पे सहज डिगाया ध्यान
नारद ने विश्व मोहिनी खातिर करी बन्दर की शान
सुन्दर अप सुन्दर भरथरी तिरिया कारण हुए विरान
विश्व मगय अघा होग्या था चितामणी जवान
द्रोपती कारण कीचक दाना दिया भीम न मार।
चन्द्रावती पर उदालक ने नीत डिगाई थी।
भस्मासुर ने अपनी काया भस्म कराली थी
दुर्वासा ने उर्वसी ते प्रीति लगाली थी
एक आशिक सजनूं ने तन पर खाक लगाली थी
तिरिया खातिर बटों-बटो के उजड गए घरबार।३
रुपकला कारण पकडा मनिहारा जावै सै
रुपकला ते फिर मिलूं मनमे आवे सै
रुपकला अपने आशिक ने आप मरवावे सै
नारनौद वाले व्यास चाद पे मरे चकोर हजार।४

वार्ता- भाईयो! पुलिस मनिहार की तलाशी करती है तो मनिहारे पर कोई माल न मिलातो पुलिस छोड देती है और मनिहारा अपने घर आता है और जोमानहारी माता बनाई थी उससे कहता है माता आप रोज कहॉ जाती हो तो मनिहारी ने कहा मैं रुपकला के पास जाती हूँ यह सुन मनिहार ने कहा माता मैं भी रुपकला को देखना चाहता हूँ मनिहारी बोली बेटा तू जनाना रुप कर लती मै तुझको भी उससे मिला दूंगी।

दो०- मनिहारी न डेड छैल को बार बनालो खास।
देर घडी को ना करी गई रुपकला के पास।।

रागनी जवाब रुपकला का बनिहारी से

मनिहारी तू नई बहीडिया आज कडे ते ल्याई।टेक

मेरी दौराणी तने रुपकला मेटण खातिर आई

र– तेरी दौराणी का मनिहारी साके पाड डिटौरा

म– इससे सुथरा मेरा देवर रूप रग मे गोरा

र– इसका गात जाणु के ऐसे चन्दन का पोरा

म– मेरे देवर कैसा दनियॉ मे ना छोरा

र– बेहमाता ने जोट मिलादी करदे का कौनबराई

म– इस कैसी दुनिया मे कोन्या और लुगाई

र– मडे बिठा बहू ने मतनादेर लावे

म– बैठन की फुरसत कोन्या या अपने घरन जावे

र– नही जाण दूँ आज किसी मने फर वखत ना पावे

म– नही गई तो इसका बालम इसको छा मे आवे

र– जिव वह छोह मे आवेगा यह कर ज्यागी नरमाई

म– मॉ नहि पाने बात जाबते घर मे करे लडाई

र– आज रहेगी मेरे पास मे तडके जगी चाली

म– रुपकला इसने जावण दे क्यो रोके सै खाली

र– क रोवे सै इसके बाबक गोद पडी स खाला

म– छोरा छोरा हो ज्यागे इब आई सै गोनाली

र– बच्चा बणके गूए पजीरी इसने कोन्या खायो

म– रुपकला या मेरी दौराणी मद मे भरी भराई ।३

र– तेरी बहू ते मनिहारी मै आज मौहब्बत प्यार करू

म– मेरा लेख प्यार करो कोन्या इन्कार करू मै

र– इसके खावण की खातिर खाण तइयार करू

म– पन्खा झील जिमाने बेशक के तकरीर करू मै

र– रामकिशन कहै तेरी दौराणी करमा करके पाई

म– नारनौद वाले व्यास तू काले मन की चाही ।४

वार्ता- सज्जनों! रुपकला के कहने से मनिहारी अपनी दौराणी को वहा छोड जाती है। रुपकला उससे नाम पूछती है तौ दौराणी कहती है मेरा नाम नखरो है मै अग्न वोट अच्छी तरह चलाना जानती हू एक दिन नखराने रूपकला से कहाचली अग्निवोट मे सैर करेगे तो अग्नि वाट मे बैठ जाती है। नखरा चलता है रफ्तार तेज कर देती है।

ज० रुपकला का नखरों से।

रागिनी ठस की मिलमा अगनवो डाअ लिएयू मेरा जी दुख पा रहा। टेक

न– क्यू कर डाटू अगनवोट कोयो दीख ना किनारा

र– घिरणी चढगी चक्कर आवे जी घबराया मेरा

न– तने भूलाबे रुपकला कुछ नही बिगड रहा तेरा

र– कित ले आई मेरे ना का होग्या घना अन्धेरा

न– मतना बूझे रूपकला तने सब पढ ज्यागा बेरा

र– यो बूझूं सू अगनवोट मनिहारी कितस जा रहा

न– आख खोल के देख लिए तने बेरा पाटज्यासारा

र– मै तेरे ते बूझो नखरा मने कूडे लेजा सै

न– मेरे साथ रह बेफिकर तने रूपकला के खा सै

र– मतना बूझे नखरा मेरी छाती के मै घाव से

न– तेरे घाव की रुपकला सुण मरे पास दवाई सै

र– जल्दी स लेचल मने मेरा सूना पडा चौबारा
म– तौ नाम का रुपकला आज ढूड उखड लिया सारा
र– मै मरज्यागो अग्निवोट मै तने के मिलजा
म– तू मरजा तो रुपकला मेरे भी सा घलजा
र– नरनौद वाले व्यास तू धोके बाज लुगाई
म– जिसने कहै लुगाई या से तेरी नणद का भाई
र– इतनी सुनके रुपकला ने सिर धरती मै मारा
म– रुपकला तने पकडाया मै वा हों सू मनिहारा

जवाब मनिहारे का रागिनी मिलमा

मै तेरा भरतार ना तू सुणले कान लगा के।टेक
म– शान लकीवे जिदगी खोवे क्यो रोबे सुबके टसके
खडा अकेला करे झमेला मरा गैला बोलो हसके
रुपकला तेरा हावे भला तू आन मिलो बिजलासोलागके
र– लई सूमा तू पता बताबे कौन नगर घर गाम तेरा
कहॉ से आभा पन्च कमाया नाम तेरा
म– बचो गैर कहू पहर ते रगून शहर चलकर आया
हो आनन्द करेगे फन्दे मै सू परमानन्द का जाया
मै चतुर सुजान तू मान लिए मने भेद बताया
र– दाग लागजा काग हस तू वणा चाहबे मोती
शान ल्हाक के झगडा झाके जिदगी खोती
धाखा तेरे आखिया फेरे मेरे नही तसल्ली होती
म– दया दब्बा हुआ खराब बाबाजी तेरा भेद बताग्या
सुणिये आके कान लगाके कोढ लग्या
मत घबराबे कोढ हटाइए तने लेण आया
मेरी माता बडी बिमार नार तू कष्ट तारदे जाके
र– से मरजाणा या गिल्काणी माणस खाणी माताके
म– करा पाप मने आप श्राप मा तेरी के हुई विपार
र– मुश्किल होरी सै मै चाहे जादूखोरीनारी
म– विपता मेरी मा पे बाप ने करी साई माई
होग्या था विश्वास खास त दुनिया ने बदमाश बताई
राम सुमर के बालू डरके मने दूसरी ब्याही
र– करिये ख्याल कृपाल करे तने अपना हाल सुनाना था
म– म्हाराथारा मनिहारे बन के दगा कमाना था
ये– सर पे दर ते म्हारे पे फिकर ते आना था
म– हाल सुणा तब छोडा नाता शरम थारे घरा बडाना
प्रेम प्यारी रिश्तेदारी का भी कुछ बिगडा ना
फिर मेरा तेरा बात करण का सोच झडा ना
आया बण मनिहारी नारि तने घरा बुलाके
र– मिटा पाप दिल हुआ साफ करये माफ कसूर पिया
दिल को ले ने टाट नाड चाहे काट पिया
रुपकला ने आज मिला मेरा लिखा सवरिया नर पिया
म– होग्या चाला तरा रख वाला नारनौद बाला व्यास गौरी

थारे म्हारे दिन कट जागे रहा हमारे पास गौरी
कोन्या बोबे टोहवे बरी इस्क चास गोरी
है भगवान तेरी खबर ले मरद बीर मिलाबे दोनो
इति सागीत रुपकला जादूखोरी

सांगीत पन्ना धाय

लेखक - जयकरण सिह ग्राम – शेरपुर सूबा दिल्ली–२४

दोहा- परम पिता परमात्मा कर जन का कल्याण।
गुरुशरनदास गरू देव के नित्य रहे चरण मे ध्यान।।

दोहा- नमो–नमो श्री भगवती जय लता हस वाहनी मात।
बीणा पुस्तक धारणी माई लज्जा तेरे हाथ।।
जल की शोभा कमल कहे थल की शोभा फूल।
राग की शोभा सभा कहे अगर ढग से करे कबूल।।

काफिया

परम पिता परमात्मा दुष्टो का करदे खातमा।
वे भाज उसकी आत्मा जो सचाई का सेर है।।
प्रभु तेरे ना चले कही निर्धन के हाले किले।
ताज कागो पर खिले हसो की हिम्मत जेर है।।
बिना पच का गाव हो ? और राम का ना नाम हो
के बसने का काम हो जहा राम की ना मेर हो ?
भारत माकी नाम की कब बन्सी बजेगी शम की।
म्हारे खास शेरपुर गाव की अब जयकरण ये टेर है।।

भेंट
(मेरा रंग दे बसन्ती चोला)

जय दुर्गा महा काली।
भगत जनो की अटकी नैईया पार लगावन वाली।।टेक
जल मे थल मे अतल वितल मे तेरा ही प्रकाश मा।
असुर सहार रण भूमि मे करा एक दिन नाश मा।।
जिन्हे तेरा विश्वास मा तने गिरती बात सभाली।।१।।
तुक्लाबाद पहाड पै मैईया भवन तेरा गुलजार मा।
बाझ लुगाई बेटा मागे भरा रहे दरबार मॉ।।
धावे सब ससार, बजावे सन्त मुनी जन ताली।।२।।
तुम्हे मनावे जब गावे दे गाने का वरदान मा।
बिना तुम्हारे खडे लखावे हम मूर्ख अज्ञान मा।।
धरे तुम्हारा ध्यान मा बाकी रहे जगत मे लाली।।३।।
ज्ञान की दाता ज्ञान की भिक्षा माग रहे कर जोड कै।
कहे 'जयकरण' छन्द बने ना ध्यान आपका छोड कै।।
गई दौड बनमे मझा मरती हुई बचा ली।।४।।

भेंट
(मेरा नाम है चमेली)

तेरी महिमा वेद बखानी भगतो के काज बनाती
मेरी सुनियो टेर भवानी माई कालका।।टेक।।
ऊँचा सितारा असुरो को मारा पृथ्वी का तारा भार तने।

मझा ने तेरी दर्दो ने घेरी किया था केहरी तैयार तने।।
किया प्यार पहुचगी छन मे बनी बाई पूत जनन मे।
नल पदा होंगे बन मे माई कालका।।१।।
धजा है शिखर में हले अम्बर मे,
मन मंदिर मे जोत जगी।।
तू सभी भगत की होती ना चहिएये हीरा मोती।
दे जला ज्ञान की जोती माई कालका।।२।।
थारा मान से फूल पान सै हिरदा ज्ञान से भर मईया।
गाने का ज्ञान नही सुरो की पहचान,
नही ताल कन्ठ दे सुर मईया।।
तुम्हे सभी गवईया धाते बिन धाये सभी लखाते।
कवी होके कलम उठाते माई कालका।।३।।
बाधके परन ये सेवक 'जयकरण' ये लेके शरण।
नये छन्द धरे गावेगो नये छन्द ब्रह्मसिह दयाचन्द।।
रणजीत करै गुणगाण, माता कर सेवक का ध्यान।
मेरा राख सभा मे मान माई कालका।।४।।

वार्ता- प्यारे भाईयो हमारे भारत देश मे बडे वीर पुरुष तथा साहसी और पतिव्रता औरत होती रही है। और खासकर चित्तौड और आसपास के इलाको मे बहुत पराक्रमी वीर होते रहे है जैसे कि महाराणा प्रताप अमरसिह राठौर पृथ्वीसिह ज्जवन्त सिह बहुत पराक्रमी वीर हुए? इस तरह झासी वाली रानी, लक्ष्मीबाई गुर्गी, कुरमदेवी पदमवी तथा और बहुत सी वीरागनाऐ हुई हम आपके सामने वहा क़ा इतिहास लिखकर पेश करते है चित्तौण में राजा सग्राम सिह राज करते थे ? वे लडाई मे मारे जाते है। तो उनकी धर्म पत्नी उनके पुत्र उदयसिह को पन्ना धाय को सौपकर सती हो जाती है।

विक्रमाजीत महा शासन करने लगा बहुत अत्याचारी होने के कारण प्रजा व्याकुल हो उठी और गद्दी से उतार दिया बालक उदयसिह को छोटे होने के कारण राज्य का प्रबन्धक बनवीर बना दिया जो वही उनके दरबार मे काम करता था। राजा बनके क्या सोचता है।

रागनी
(तर्ज - तेरे भेजे चले गये)

मूजी नर धन जोड मगन और दान करण मे दानी।
पापी के दिल बसी मिलेगी परनिन्दा बेईमानी।।टेक।।
सोचे था बनवीर अगर ये वक्त हाथ से जावेगा।
राज रहे ना मे रहना ये वक्त हाथ से जावेगा।।
प्रजा ने दिया तार आपना आग आगे कदम बढावेगा।
उदयसिंह हो ज्वान एक दिन राजा तुरत बन जावेगा
कौन सामने आवेगा खादू दोनो की जिन्दगानी।।१।।
कदे कहे घने पाप करे नईया पार नही होती।
जो वसी करन लगा इसके राजा की कार नही होती
कदे कहे वे दुष्ट विक्रम वरना हार नही होती।
सबका होता भला अगर तो गल तलवार नहीं होती
जिन्दगी खुवार नहीं होती जो तज देता शैतानी।।२।।
पापी मानस और ने भी चोर जार जाने सै।
प्रेमी मानस सुख दुनिया मे बना प्यार जाने सै।।

वैसा नारी और को सदा बुरी नार जाने सै।
गुनी मनुष्य ही दुनिया के मे हार मार जाने से।।
काई सार जाने सै कविता दुनिया जाने गानी।।३।।
ले तलवार चला पापी ना रहम गात मे लाया।
सोवे था बेधडक विक्रमा धड सै शीश उडाया।।
फिर उदय के मारन का दिल मे अन्दाज लगाया।
गई शामली पन्ना धोरे सारा हाल सुनाया।।
छन्द 'जयकरण' कथ गाया फिर राम गा धर्म कहानी।।४।।

वार्ता- प्यारे भाईयो पन्ना धाय थी लेकिन उदयसिह को अपने पुत्र चन्दन सिह से अधिक प्यार करती थी। और परम पिता परमेश्वर की रात दिन प्रार्थना करा करती थी। कि हे भगवान चाहे हम मा बेटे मारे जाय परन्तु राना कुल का चिराग हमेशा जलता रहे। क्योकि उसे देश धर्म का पूरा ज्ञान था। तो मेहरबानो आगे क्या होता है।

ये तो आप समझते है कि मनुष्य सत्यवन्ती नारी इन्ही पर मुसीबत पडा करती लुच्चे गुन्ड बेईमान हमेशा हर प्रकार का आनन्द प्राप्त करते है। लेकिन सत्य की हमेशा विजय होती है।

रागनी
(तर्ज-बावले हद करदी)

चित्तौड की मिटटी नमस्कार कवि करते शीश झुकाकै।
तिलक माथै त्याकै।।टेक।।
कैसी करामात वहा हर बच्चा बलवान था।
इतिहासो मे लेख उनका जैसा बलिदान था।।
स्वर्ग पुरी सामान था लिया ढग देख सब जाकै।।१।।
वही का सग्राम राजा हुया बली महान था।
लडाई मे खपग्या बेटा उदयसिह नादान था।।
विक्रमसिह शैतन था वानै देखा राज चलाकै।।२।।
विक्रमा सै गद्दी छीनी प्रजा तग सारी थी।
रजधानी चित्तौड वाली उदयसिह पै वारी थी।।
सवारी थी बनवीर नै गया वो भी पाप कमाकै।।३।।
पन्ना को नही थी बेरा राजा चडाल है।
चदन की ज्यू पालू सोची भारत मा का लाल है
अपना अपना ख्याल है सुना छन्द जयकरण गाकै।।४।।

रागनी

पन्ना लेकै चली उदय नै ना समझा पूत बिराना।
सब धर्म जाणकै शुरू कर दिया दूध पिलान।।टेक।।
पूत विराना पालन करती कोई छोटी बात नही थी।
किस तरिया सै पाला जागा कोई चिता गात नही थी।।
पन्ना उदय की मात नही थी
पर चाहया परण रखाना।।१।।
ओर के बालक देख किसी की के छाती ठन्डी हो सै।
कोई कोई त्रिया चन्डी हो सै वासै नफरत करै जमाना।।२।।
सुबह शाम बा उदयसिह वो लाड लडाया करती।
चन्दन सुत रो ज्यादा पन्ना उदयसिह नै चाहया करती।।

करकै हवा सुलाया करती हो याने सै कदै स्यान।।३।।
न्यू साची फेर राना कुल का कदै हट दीपक जल जागा
हर का भजन करै अठाहरी वाका बुरावक्त टल जागा
आसू 'जयकरण' ढल जागा तेरा ठीक चाहता दुनिया।।४।।

वार्ता- प्यारे भाईयो शामली नामक लडकी एक लडकी जाकर पन्ना को बता देती है। की बनवीर ने विक्रमा का मार दिया और उदयसिह को मारने की प्रतिज्ञा करली है। पन्ना अपने पुत्र चन्दन से ज्यादा उदय को प्यार स रखती है। सुनकर उदास ही हो गई इतने मे कीर्ति नामक एक नौकर आकर क्या कहता है।

रागनी

(तर्ज - गम के गीत)

हसती खिलती रहा करै थी, बैठी धीरी विचारो मे।
रो रो पल्ले मे राखे क्यू आसू की धारो मे।।टेक।।
पन्ना मा तेरे दर्शन को मेरी आखे रोज तरसती है।
तेरे अनोखी बातो सै मुर्झाई कली सर सती है।
कौन से गम की घटा शीश पै तन पै आज बरसती है।
थारी सकट पडा हुआ मेसे मन मे दरसती है।
अमृत जैसे शीतल वाणी बदली ओट अगारो मे।।१।।
कौन सा फन्दा घला हुया जो ना काटा कटता है।
कहे सुने बिन और को कुछ तोल नही पटता है।।
देख उदासी चेहरे पै मेरा हृदया सा फटता है।
पडे बताना और को दुख आप नही घटता है।।
पापी डूबे धर्म भी मानस छिपती नही हजारो मे ।।२।।
चोड विपत मे बिरला मानस दुख मे हिसा किया करै।
खुद आपे मे खोट परन्तु और का किस्सा किया करै
जब आपे पर ऱ्सट पडे वा घोलके शीसा दिया करै।
उसकी मुक्ति ना होती जो कहके घीसा दिया करै।।
धर्म की जय पुलती रहती या धर्म भरे दरबारो मे।।३।।
सुन कीरत की बात एक दम हिडकी दे पन्ना रोई।
किसे सुनाऊ कौन सुनेना और सहारा कोई।।
राना कुल की धरी अमानत जाती नहीं लकोई।
अगर उदय दियामार समझ चित्तौड की किस्मत सोई
कहे 'जयकरण' मतलब वै ही कहजा चमन इशारो मे।।४

वार्ता- प्यारे भाई पन्ना ने कीरत को सब हाल कह सुनाया तो किरत ने कहा कि मैव हर सेवा करने को तैयार हूँ तो पन्ना कहने लगी कि तुम उदयसिह को पत्तलो की टोकरी मे छिपा कर ले जाओ कल मुझे वरीस नदी पर मिल जाना इस बात को सुनकर कीरत उदय को निकाल कर ले गया और पन्ना ईश्वर की प्रार्थना करती है और क्या कहती है।

रागनी

(तर्ज - भारी भीड शाहदरे)

हे पणमेसर आज बचादे आण पन्ना की।
उदयसिह के प्राण बचा रहे शान पन्ना की।।टेक।।
हत्यारा बनवीर बना और दूजा घाती कोन्या।

तेरे बिना भगवान आज मेरा और हिमाती कोन्या।।
कुछ भी होता रानी सुत को सौप के जाती कोन्या।
राज कुंवर को जान बचे धन माया चाहती कोन्या।।
हग तरियां हुई जिन्दगी आज बिरान पन्ना की।।१।।
रोते रोते दुखियारी को आधी रात गई थी।
सुरगों सै भी गाली दे याकी सौपके मात गई थी।।
मरते दम तक भूलूंनाजो कहके बात गई थी।
अपना करके लियो असर धरके हाथ गई थी।।
जग मे निन्दा हो जागी पाशान पन्ना की।।२।।
कहके बात लौट जाने सै जग मे भ्रम नही रहता।
उस मानसका के जीवना जाके धोरे धर्म नही सै।।
आखो का पानी ढलने सै तेरा धर्म नही रहता।
हत्यारे मानस के पास कर्म नही रहता।।
कहके मां आज घिरी सै जान पन्ना की।।३।।
ना दुखिया की पेश चलेगी रोना बाकी रहग्या।
गम से जोवे कीर्त मेरा सोना बाकी रहग्या।।
इसते आगे भाग चाहत के टोहना बाकी रहग्या।
पन्ना को न्यू खबर नही सुत खोना बाकी रहग्या।।
कहे 'जयकरण' लाग्या धीर बधाणा पन्ना का।।४।।

वार्ता - प्यारे भाईयो तलवार लेकर बनवीर वहां आ गया और किस प्रकार कहने लगा।

रागनी

सनी हुई तलवार खून मे दुष्ट हिला के न्यू बोला।
उदयसिंह लिया छिपा कहा तने,
पनचा करके घाव छोला।।टेक।।
खडी हुई चुपचाप आप जन कितनी भोली भाली है।
डस के बिल में बढा करे तू बोही नागना काली है।
तेगा मांग रही खून मेरी तू चाले चाल कुढाड़ी है।
उदयसिंह से पहले पन्ना खुद तू मरने वाली है।।
धर्म तराजू में धरके अब नैम का सौदा जा तोला।।१
लाखो करले यतन परन्तु उदयसिह मारा जागा
तेरे सामने देख लियो इब फौरन सर तारा जागा।।
ब्रम्हा तक रक्षक होजा पर परन नहीं हारा जागा।
जो भगवन नै लिख राख्या वो लेख नहीं टारा जागा
दुश्मन मेरा छिपा के पापण अमृत के मां विष घोला।।२
उदयसिंह ना मारा जा मेरा के जीना रह जागा।
परन करा बनवीर ने पूरा सारा जग कह जागा।।
जिस कर्तव को करती सै तने पन्ना वो ढ्ह जागा।
साफ कहे ना बात मनुष्य तन पै दुखडा सह जागा।।
जल्दी उत्तर दिये बैठग्या काहे का दिल मे हौला।।३
नहीं बताया राजकवर तेरा खूनो सै मुह भर दूगा।
कहे 'जयकरण' धन सै मेल मुलाजा कर दूगा।।

चाहत हसकै गावेगा मैं छन्द नित्य ताजा धर दूगा।
कहना चाहवे थी पन्ना पर मोह में घिर हिरदा डोला।।४

वार्ता- प्यारे भाईयो पन्नादे ने काफी खुशामद की वो समझाती थी कि शायद तेरा खून और उदय दोनो ही बच जाय तो क्या कहती है।

रागनी
(तर्ज - खुदा नाम पर)

हाथ जोडकर कहरी सू मेरी मत फोडो तकदीर।
जिंद छोडो अपनी ओ राजा बनवीर।।टेक।।
बुरे नै बुराई मिलती भलाई मे ऊचा नाम।
ना चहिये जागीर तेरी तू कितना कहले शुबह शाम।।
उदयसिह के बदले में मेरा बेशक तू तारले चाम।
कोन्या हाथ लगावण दू मेरा जब तक जीवित शरीर।।१।।
इतना घात करे सै मेरी नरको अन्दर जेल होगी।
पूछेगा कलंक मेरे जो बात बिना मेल होगी।।
किसके बेटे नै मरवाई क्यू थारी बुद्धि फेल होगी।
जीते जी कोन्या तोडूं मरियादा की जजीर।।२।।
जिस जन्नी का जाया सै वा सुरगों में डकरावैगी।
उदयसिह के मरने पै क्या प्रजा मनै सराहवैगी।।
गैर के सुत नै खो बैठी मुझे दुनिया डाण बतावैगी।
एक दिन सबने जाना हो चाहे राजा चाहे फकीर।।३।।
मिले स्वर्ग बिन सोच कोई भी धर्म कर्म पै डट देखो।
किस में कितना आनन्द है कोई पणमेश्वर नै रट देखो।।
सारी मालूम पड़े चाहत खुद अपने ऊपर घट देखो।
'गुरूशरणदास' की रहे जयकरण हिरदे में तसबीर।।४।।

वार्ता- प्यारे भाईयों उदयसिंह को कीरत पहले पत्तलों के टोकरे में छिपाकर ले गया था बवरी ने पन्ना को तलवार से सर काटने का भय दिखलाया परन्तु वह पत्थर की मूर्ति के समान चुपचाप खडी रही तब बनवीर धन का लालच देने लगा तो पन्ना क्या कहती है।

रागनी
(तर्ज - बांदी आई ढूंढ)

जिसकी तुझे तलाश यहा बाजार नही सै।
बच्चे बेचन का न्यारा व्यौपार नही सै।।टेक।।
हट दूर परे नै पापी न्यू कह पन्ना बरजै थी।
कर लेली तेग दुधारी वो सिंहनी सी गरजै थी।
ममता की टक्कर लग लग बाकी छाती सी लरजै थी।।
बेशक जिन्दगी खपा जान सै प्यार नही सै।।१।।
चित्तौड़ का दीप बुझावै आज देकै लोभ माल का।
छल सै बण बैठा कागा तू मालिक हस ताल का।।
कद चौड़ कल्लर फूटै यो भान्डा थीरी चाल का।
क्या अमर रहेगा जग में सर डंका बजै काल का।।
लालच में दे धर्म त्याग सती नार नहीं सै।।२।।

भारत की राजपूतानी मरती है आण बाण पै।
वो मरे बरोबर हो सै जाकै बट्ठा लगा शान पै।।
ना कहकं बात बदलती चाहे आरा धरी जान पै।।
कागज की किशती होती कदै पार नही सै।।३।।
बनवीर कहे था पन्ना क्यू हदसै घनी बोलगी।
कह कहकै कडवी बानी घर घा पै नमक छोलगी।।
उत्पात देख पापी का फेर धरती तलक डोलगी।
'जयकरण' तेरे चेलों की पब्लिक करामात तोलगी।।
वी कविता ना होती जापै कोई सार नही सै।।४।।

वार्ता- प्यारे भाईयो जिस पलग पर उदय सोया करता था उसी पर चन्दन सो रहा था पन्ना देश लाज देश धर्म और अपने फर्ज को चुकाने के लिये अपने पुत्र चन्दन की ओर इशारा करती है कि यही वो उदयसिह सो रहा है वा पापी तेग ले किस प्रकार बच्चे का सर काटता है।

रागनी - जवाब कवि का
(तर्ज - हरियाणा छोटा रंग)

कर ठाकै सकेत किया जहा सोवै था सुत प्यारा।
उदयसिंह लिया जाण बडा वो कमरे मे हत्यारा ।।टेक।।
मा देखे और पूत मरै यो कैसी बुरी घडी होगी।
लाड करे चन्दन सुत के आज फेरकै पीठ खडी होगी।।
होनहार बलवान होय आज पासग गैल घड़ी होगी।
पहाड सै बात बडी होगी ना चाला मा का चारा।।१।।
हे भगवान क्या रची तनै वा कर मन ही बात रही।
उदय बचै चन्दन मरजा वा जोड राम का हाथ रही।।
मजबूरी थी आंखों आगै होते लख उत्पात रहा।
देश धर्म का नात फेर करै पन्ना धा के साथ रही।।
सर पै खोटी स्यात रही वाका सुत जावै था मारा।।२।।
नैन कमल से मुंदे नीद मे बेसुद चन्दन पडा हुआ।
बेदर्दी बनवीर तेग ले पलग की जड मे खडा हुया।।
करडा ढेट भतेरा फेर भी नूर गात का झडा हुया।।
कौण जगत मे बड़ा हुयाजो मानस हो हत्यारा।।३।।
पापी नै दी तेग मार सब हया दया बिसराई।
बच्चे वाली चीख मात के हिदे मे टकराई।
चाल पडा बनवीर चाहत ना पन्ना जरालखाई।
कहे 'जयकरण' कुछ अरसे मे ल्हास पूत की ठाई।।
रात अन्धेरी में धाई वा सह करकै दुख भारा।।४।।

वार्ता – प्यारे भाईयों पन्ना चन्दन सुत की ल्हास को एक पुराने वस्त्र में लपेट रही थी इतने मे एक शामली नामक लडकी आ गई और किस तरह पन्ना विलाप करती है और किस प्रकार वो लडकी समझाती है आग रागनी मे पढिये।

रागनी
(तर्ज - मुझे लूट लिया सरे आम)

तेरा जईयो सत्यानाश सास वो गम के भर भर रोई।
कभी ल्हास पै लेटै थी कभी हाथ पकड ठावै थी।।टेक

जो आया सो जावेगा मन समझावै थी।
मन मन्दिर मे दीपक पन्ना गमो के जलावै थी।।
रात रोते दुखियारी को बीत गई आधी रात।
न्यू बोले कित चला लाडले रो रोकै मरे गी मात
कदै शीश नै ठावै थी कदै धड के ऊपर धरती हाथ।।
फेर गई थी शामली पास नाश वो कर गया देशद्रोही।।१
ल्हास देखकै उस लडकी नै मन मे भारी किया क्लेश।
कैसा भारी जुल्म किया क्या पापी जग मे रहे हमेश।।
धीर बधावै थी पन्ना की दे देकै सत का उपदेश।
जुग-जुग जीवो जग मे पन्ना देश धर्म किया ध्यान।।
उदयसिह के बदले मे तनै खुद अर्पण करदी सतान।
सुत मरग्या चाहे तू पर जा कर जग मे होजा नाम महान।।
तेरा अमर रहेगा इतिहास चास मे
पढ लेगा हर कोई।।२।।
गई शामली अपने घर पे पन्ना की बधा कै धीर।
कुछ गम था कुछ रात अन्धेरी थर थर कापन लगा शरीर
ले बेटे की ल्हास भली फेर बैरिस के पहोचगी तीर।
बैरिस नदी पै जाकै वा नजर नै घूमावै थी।।
कीरत बैठा देख लिया उसे मन ही मन सराहवै थी।
मिलने सै पहले बेटे की ल्हास नै बहावै थी।।
फेर मन मै हुई उदास निराश हा गफलत के मा सोई।।३
पन्ना की बेहोश देखकै कीरत न्यू बालन लाग्या।
काया थी बैचेन बैठ कभी चौगरदे डोलन लाग्या।।
होशकराया पन्नाको हवा कपडे सै झालन लाग्या।
पन्ना को जब होस हुया तो उदयसिह को गोद लिया
चन्दन सिह का मरन सुना तो कीरत नै भी सोग किया
धन्यवाद पन्ना तुझको तनै डूबे का सहारा दिया।।
छन्द लिखगा 'जयकरण खास
ल्हास वानै जल मे बड बड टोही।।४।।

वार्ता - प्यारे भाईयो देश धर्म के कारण पन्ना दुख भरती हुई उदय का किस प्रकार पालन करने लगी।

रागनी

उदयसिह को ले गोदी मे पन्ना दू लिकडगी।
कदै पापी को खबर लगै वा हो मजबूर लिकडगी।।टेक।।
कदै उदय का प्यार करै कदै पूत याद आवै था।
उदयसिह रोया करता कहीं चन्दन रह जावै था।।
बिन चन्दन के उदयसिह कदै ना भोजन खावै था।
न्यारी न्यारी मा होगी कोई कोन्या बतलावै कार।।
रहियो अमर शामली मुझवो देखै सहूर लिकडगी।।१।।
गन्दा कर्तव करने सै ना जग मे ऊची शान रहे।
उसका भी के जीना जो ना देश धर्म का ज्ञान रहे।।
पशु बरोबर होय जिसै ना समय की पहचान रहे।

सूम जोड़ धन धरा करै और दानी करता दान रहे।।
चित्तौड़ भूप महावीरो की मैं बिना कसूर लिकडगी।।२।।
उदयसिह बच गया रज ना चन्दन के मरने का था।
राव उदय चित्तौड का हो बस ध्यान बडा करने का था
तिल भर फिकर गात मे उसको ना बिपत भरने का।
कदै टाहले ना बनवीर फिकर,
बाकी मृत्यु सै डरने का था।
उदय बचा आधी सी चिता हो मजबूर चूर लिकडगी।
जब तक चाद सितारे है पन्ना का जब तक नाम रहे।।
धम की कदर करे बिन नर की इज्जत नही छदाम रहे
कोई करके भी छिपा रहे कोई बिना करे बदनाम रहे।।
कहे जयकरण' कुछ भी हो पर सत का साथी राम रहे
चाहतसिह भर ज्ञान मे टोली हो भरपूर लिकडगी।।४

वार्ता - प्यारे भाईयो पालन पोषण करके पन्ना ने उदय को बडा किया तो क्या होता है।

रागनी
(तर्ज - मेरा रग दे बसंती)

लिया समझ उदय सुत प्यारा।
तन पै दुख सुख ठाकै पन्ना लागी करण गुजारा।।टेक।।
ना मेहन्त सै घबराई उसे देश धर्म का ज्ञान था।
राना कुल का दीप जलै चित्तौड के ऊपर ध्यान था
उदयसिह नादान था पर ज्ञान पढा दिया भारा।।१।।
कदे पहाड कदै जगल मे वा डोलती थी पन्ना धा।
राना कुल को पालन का वाके गात मे था भारी चा।।
उदयसिह कर दिया बडा ना दिल सै धर्म बिसारा था।।२।।
लगी उदय ने खबर परण पै पन्ना मात फकीर है।
चन्दन भी दिया मार हमारा शत्रु वा बनवीर है।।
कर्म सै खिची लकीर सै नर का कोन्या चालै चारा।।३
उदयसिह था चतुर घना और निर्भय बलवान था।।
कहे जयकरण' पन्ना मरगी याद रहा एहसान था।
गुरूशरन' भगवान है दूजा जिनका हमे सहारा।।४।।

वार्ता - प्यारे भाईयो धर्म की जीत हुया करते है। जब तक चाद सितारे रहेगे तब तक पन्ना का नाम भी रहेगा क्योकि अपने पुत्र को मरवाकर और दूसरे के सुत को बचाकर लेकिन उसके दिल मे वह दूसरे का पुत्र न था। पन्ना गूजरी का इतिहास भारत मे अमर रहेगा हर बच्चे को अपने देश धर्म का पूर्ण ज्ञज्ञन होना चाहिए क्योकि भारत के ऊपर विदेश लडते झगडते रहे हमारी आपसी कमजोरी के कारण राज्य करते रहे इसलिए की ऐसा श्रेष्ठ देश काई नही है। उनको भी न भूलिये जिनकी बदौल्त आज आजाद हुये बैठे है वो देश पर कुरबान हो गये। जैसे भगतसिह, चन्द्रशेखर सुभाषचन्द्र बोस राजगुरू, सुखदेव इत्यादि। नमस्कार

वार्ता- प्यारे भाईयो एक रागनी इसमे आगे सत्यवान सावित्री की दी गई है प्रेम से पढे जिस समय यमराज सत्यवान के प्राण लेकर चल दिये तो सावित्री किस प्रकार अपने पति को जिवाती और क्या कहती है।

रागनी
(तर्ज -मुझे लूट लिया)

सुता मांग लियो वरदान,
मान कभी सतियों का घटना ना।।टेक।।
सावित्री ने शीश झुकाया दोनां हाथ जोड़ बोली।
तीन वचन भरदी पहले ख्याल पति का छोड़ बोलो।।
किसके सहारे जिऊंगी न्यूं रली रेत में मरोड बोला।
तीन वचन देता हूँ तू सावित्री अब हाल लेले।
राज पाट कोठी बंगले कोई भी सवाल लेंले।
सत्यवान के प्राण छोड कै चाहे धन माल लेले।।
सती जग सारा परेशान महान दुख,
धर्म बिना कटता ना।।१।।
सास ससुर के नै खोलो गुजर बसर सही ढाल होजा।
भाईयों का वरदान मिले तो पीर भी खुशहाल होजा।।
बचन तीसरे में मांग एक मेरी काक में लाल होजा।
ऐसा ही होगा कहके फेर यम ने दी सवारी जोड़।।
सावित्री संग चलती रही लख बोला क्यू रही दौड़।
सारी बात पूरी करदी अब तो दीजो पीछा छोड़।।
हो सती पुत्र हो गुणवान जवान यमराज पलटता ना।।२
समझ गई मेरे बेटा होवे मेरी भी गुजरान होगी।
सती का पति एक पूरी थारी किस ढाला जवान होगी।।
बिना पति के खुद कहदो मेरी किस तरियां गुजरान होगी
प्रश्न का उत्तर देने मेरे यम को भी झुकना पड़ गया।।
पतिव्रता को बात सुनी कुछ कहन`से रूकना पड़गया।
सावित्री तेरे रे सत के आगे हमको भी झुकना पडगया
हो जा जीवित मिलेगा सत्यवान
ध्यान कहो और जगह घटता ना।।३।।
सास सुसर ना अन्धे पावे करियो जाके टहल बेटी।
राज के मालिक बने मिलेकंगे किले अटारी महल बेटी।।
कर्तव्य कर आनन्द करियो उस सत्यवान की गैल बेटी।
सतियों के इतिहासों में तू सबसे पहले पाई जागी।।
प्रलय तक रह नाम कविता दुनिया में बनाई जागी।
शेरपुर शाहदरे धोरे धर्म कथा गाई जागी।।
'जयकरण' धर्म ले जान ज्ञान,
कदे बिन बाटे बटता ना।।४।।

जयकरण का मशहूर संगी
भूरा बादल

लेखक - प० गुरशरणदास जी के प्रिय शिष्य जयकरण सिह

दोहा- जगत पिता परामातमा कर जग का कल्याण।
'गुरशरदास' के नितय रहे चरण मे ध्यान।।
जल की शोभा कमल कहे और थल की शोभा फूल।
राग की शोभा सभा कहे अगर ढग से करे कबूल।।
धर्म छोड के पाप मे लगा जिन्हो का हेत।
वे नर ऐसे जायेगे जैसे रण रेही का खेत।।

वार्ता- प्यारे भाईयो चित्तौड मे राणा भीमसिह राज करते थे और दिल्ली मे अलाउददीन का राज था राणा के यहा राघव चेतन ब्राह्मण रहता था जो किसी बात पर राजा ने राज से निकाल दिया। राघव चेतन दिल्ली मे खिलजी से मिला और पद्मनी के रूप की तारीफ की। अलाउद्दीन अपने सेनापति सरजा को एक पत्र देता है उसमे लिखा हुआ था' कि मै आपसे सधि करना चाहता हूँ। राना उसे चित्तौड बुला लेता है काफी सत्कार किया पगडी बदल दोस्त बनकर अलाउद्दीन क्या कहता है ?

रागनी
(जवाब - अलाउद्दीन व राना का)

पदमावत के दर्श करा दै राना टाल करे ना।
बनके खिलजी यार मेरा तू गलत सवाल करैं ना।।टेक
गलत सवाल करण की राना कौन सी बात देखली।
ब्याही पै रहा नजर टेक तेरी सब औकात देख ली।।
इस दुनिया मे अपनी इज्जत अपने हाथ देखली।
इन करमो मे यार आबरो होती खाक देखली।।
चर्चा शहर देखली और कुछ ख्याल करै ना।
यारी मे खुवारी करके तू अमर मिशाल करै ना।।१।।
जौनसी बात सोचली राना सौ सौ कोस नहीं सै।
उसमानस का के जीना जिसे बात का रोस नहीं सै।
पद्मावत की सौहरत सुन मेरा दिल खामोश नहीं सै।
उस जैसाकोई दुनिया ना जाके दिल सतोष नहीं सै।
रूप खटक मे होश नहीं सै और तू घाल करै ना।।
ऐसे मनुष्य की पणमेसर भी प्रतीपाल करे ना।।२।।
कौन सा गन्दा कर्म धर्म की जो मरियाद तोड दे।
स चा यार नहीं वे समझे प्यार का माट फोड दे।।
या तो शान दिखा राना या यार से नजर मोड दे।
जान तलक भी हाजिर सै पर नार का जिकर छोड दे
निगाह जोड दे तेरी बहू चाहे बेशक ब्याह करै ना।
पतिव्रता के नैम अटल वो गन्दी चाल करै ना।।३
उठके खिलजी चल पडा था लडके और झगडके।
गद्दी ऊपर बैठाया राना ने हाथ पकड कै।।

रणवासो में पहुँच गया सब हाल सुनाया लडकै।।
मॉथ मे त्यौरी पड़गी सती बैठी दूर बिगड कै।।
सुन 'जयकरण' छन्द घडकै सुर ताल बेताल करे ना
गुरू नहीं जो चेला करके फेर रखवाल करै ना।।४।।

सज्जनो ! दर्पण मे पद्मनी की सूरत देखकर राना भीम को दिल्ली ले गया और जेल मे बन्द कर देता है। पद्मनी के पास पत्र भेजा कि तेरा पति हमारी जेल में है मैं तुझे अपनी बेगम बनाऊगा।

रागनी तर्ज- कौली भर चन्द्रावल रोई

खिलजी की चिट्ठी ने पढकै सती रोई बेशुम्मार।
क्या यतन बनाऊं घिरे दिल्ली मे भरतार।।टेक।।
दर्पण के मा मैं दिखलादो पति लिकडा सादा भोला
धोका करके दुष्ट मगावै मेरा दिल्ली के मा डोला।
सुन सुनके महलों में लोंला सब कटटो होर गई ना।
बूढी ठैरी कटटी होके तरकीब बतावण लागी।
फौज सजाके लडने भेजो उसे न्यू समझावन लागी।
हर नारी बतलावण लागी हम लडने तक तैयार।।१
हिन्दू कुल में जन्म लिया से ना सीखा कदम हटाना।
कुछ वीरो का साहस सवाया कुछ अपना ज़ोर दिखाना
दुश्मन भूलै पाप कमाना म्हारी बाजेगी तलबार।।३।।
हिम्मत का होराम हिमाती न्यू दुनिया कहती आवे।
उसका ठाड ठिकारा कोन्या जो विपतामे धबरावे।।
छन्द 'जयकरण' कथके गावे कर गुनियो का सतकार।।

वार्ता- प्यारे भाईयों ! पदमनी ने पत्र पढा और विचार करने लगी कि किस प्रकार तेरा पति छूट सकता है चुन्देरी के लिये घोडे पर असवार हुई कि बादल से ही कहूँगी कि अपने मामा की बद छुटाने चलती और क्या होता है।

रागनी तर्ज - गंगा जी तेरे खेत में

तकदीर पोच चित्तौड की चली मन मे मान कलेश।
पदमनी रोवती क्या यतन बनाऊगी ।।टेक।।
चली लिकड कै बाहर किले की बुर्जी तक थी गमगीन
सुन्य साथ प्रजा होगी घोडे पै धरे थी जीन।
पछी तक भी रोवण लागे विपता का लखावो सीन
नीत धर्म के औड की लगी दिल के ऊपर तेरा।।१।।
पवनवेग घोडा अम्बर में लगी थी धूल।
सती का हौसला देख देवता बखेरे फूल
कालजे मे खटके घा उस खिलजी की बाता का सूल
हूल पत मान मरौ की सब बात करूगी पेश।
खैचती लगाम चाली घोडा छोडा सीधी बाट।।
रास्ते में तेली मिल गया हिरन गया राही काट।
न्यूं बोली भगवान कुछ करले यवनो के बिछै ना खाट
लाट पती के जोड़ की आज जिन्दगी रहेगी शेष।
मुसीबत सुनाऊं हाल बादल से कहूँगी जाके।
खून का असर खून को आवै ल्यावेगा वो बद छुटा के

'जयकरण' भी नाट गया तो मरूगी गम उपदेश।।

वार्ता - *सबके कहा था कि हमे मजबूत सेनापति चाहिए जब लडकर महाराणा को छुटायेगे।* पदमनी बादल जो राना भीम का भानजा था बोलने गई उसकी घुडचडी हो रही थी औरत मे मिलकर एक गाना गाती और क्या कहती है।

रागनी जवाब - पदमावती का

गम के गौत गावती चली बादल गीत नकल कोन्या।
गाऊ तू सुनता जाईयो बिन कतर्व्य के फल कोन्या।।
रजपुती का ऊचा झन्डा धनी शर्म मे झुका हुआ।
मन मे मैल मलाल करै एक शेर पिजरे रूका हुआ
मुह से बोल लिकडता कोन्या चित चिन्ता मे फुका हुआ
कभी बात का शोर करे बोल समझियो लुका हुआ
गम से हृरदा ठुका हुआ मेरी करती काम अकल कोन्या
तेरी शरण में आगी बादल घनी रूवा या बद करले
रण पै चढ या शादी कर तू एक बात परसद करले
अगर शान चाहव हिन्दूवों की लडने का प्रबन्ध करले,
जो कायरता दौड गई तो खिलजी से सम्बन्ध करले।
मरियाद ने भंग करले जो तेरी भुजा मे बल कोन्या।।२।।
शादी फेर भी हो जागी तेरा मामा फेर मिले कोन्या।।
दुश्मन के फन्दे मे है मौका हरबेर मिले कोन्या।।
पाचो उगली नही एक शेरो के जैर मिले कोन्या।
जिन्दा शेर मिले कोन्या फिर थमा नैन मे जल कोन्या।
सुन मामी की बात बली नै घोडा वापिस फेर दिया।
जहा गीत गाती जननी जा मौड चरण मे गेर दिया।
हिन्दू कुल की लाज बचै न्यू उपदेशो मे घेर दिया।।
पीछे ब्याह रचाऊंगा तेरी चल दिल्ली को शेर दिया।
जग मे ज्ञान बखेर दिया 'जयकरण' तेरे मे छल कोन्या।

वार्ता- सज्जनो बादल की मा पुराने बेर को याद दिलाती ओर क्या कहती है।

रागनी

मान कही अब दिल्ली जईय'
    बादल अपना ब्याह रचइयो।
मत पापी की बद छुटईयो वा दुश्मन से म्हारा।।टेक
बात मे अटके से बोल, जुल्म म्हारे सर पै राखे तोल
ढाल मर्म के बजते कोन्या, बजन लगे तो सजते कोन्या
वृथा जिन्दगी तजने कोन्या, बही असु की धारा।।१।।
घना से भीमसिंह गद्दार, दिया था मेरे पिता को मार
यार चाहे हो रिश्तेदारी, अपनी इज्जत समझे प्यारी।
खुलजा पोल जगत में सारी वो ना होता प्यारा।।२।।
दुश्मन और कांटे को खटक,
    मनुष्य जा शीस रात मे पटक।
अटक लगी बतलाई कोन्या, पदमावत समझाई कोन्या
पीछा करने को आई कोन्या, जब बाप मरा थारा।।३।।

ममता दुश्मन की ठुकराले पुत्र तू पहले ब्याह रचाले।
गाले 'जयकरण' छन्द बनाके शरण गुरू की सेवा ठाके
धूमसिह चल शीश नवाके ले दुर्गे का सहारा।।४।।

रागनी - जवाब पद्मावती का

ब्याह के चा मे फूल रहा कुछ म्हारा मान रहा ना।
यारी रिश्तेदारी का तनै बादल ध्यान रहा ना।।टेक
रब रुठे से जग रुठे जब पडजा फर्क मेल मे।
अदनी से अदनी औरत की सहती रोज सेज रो।।
खुशी दिल मे बेर मेल मे रहती तरी तेल मे।
दूल्हे बनके चाल पडा तेरा मामा सडे जेल मे।।
राजपूतो की चढो बेल मे बिल्कुल प्राण रहा ना।।१।।
तेरा मामा से मेल करा वो खिलजी बनया भोला।
दर्पण के मा शान देख बाका चेहरा पड गया धोला।
पदमावत रोवन लागी सर पडा विपत का गोला।
अलाउददीन मगावे है आज तेरी मामी का डोला।
दुनिया मे होजा रौल कोई छत्री जवान रहा ना।।२।।
असनाई अपने की नाव हो चाहिये पार लगानी।
आने जाने से असनाई होती नही पुरानी।।
पिछला गिल्ला थूक दियो तेरे मामा की शैतानी।
बुरखा मुगल उठावेगे थारी काहे की जिन्दगानी।
समय आवनी जानी हो कोई छत्री जवान रहा ना।।३।।
अगर करे इन्कार यहा कल उडते काग मिलेगे।
रजपूतो की पगडी मे हुये गहर दाग मिलेगे।
गाले 'जयकरण' छन्द बनाके शरन गुरु की सेवा ठाके
धूमसिह शीश नवाके ले दुर्गे का सहारा।।४।।
मेवाडी सग कुल हिन्दूओ के फूटे भाग मिलेगे।
कहै 'जयकरण' उन कवियो के ऊचे राग मिलेगे।।
लुटे सुहाग मिलेगे अगर थारा सही मीजान रहा ना।।५

वार्ता- प्यारे भाईयो अपनी मामी की बात सुन कर बादल को जोश आ गया। सात सौ डोले सजवाये हर डोले मे दो जवान और कहार एक डोले मे धन्ना लुहार को बैठा कर दिल्ली के लिये चलते और क्या हाता है।

रागनी तर्ज - बांदी आई ढूंढ

खून्टी पै लटकाया बैरी मौड हो गया।
बादल के सग मे खाली चित्तौड हो गया। टेक
चले राजपूत अलबेले लडने का घना चाव था।
रण वस्त्र धरे छिपाके बादल का अलग दाव था।
थी यवनो की मनमानी रला रेत मे न्याव भाव था
एक शेर पिजरे घिर गया सबके दिल बुरा चाव था।
न्याव करनिया भूप असुर को ठौड हो गया।
सती बोली साथ लडेगी दिल मे आराम नहीं से।
बादल इन्कार करे था मिटा छत्री जाम नहीं से।

हग, जब तक जिन्दे जग मे थारा रण मे काम नही सै
दे तख्ता बादल दुश्मन का म्हारा कम इतजाम नहीं से
चौदह सौ महावीरो का गठ जोड हो गया।।२
वीरो का साहस चले दिल मे राम मनाके।
दिल्ली के पास पहुँचगे बैठे डोले रुकवाके।।
यहा आई हुई पदमनी न्यू कही दूत ने जाके।
एक लहर खुशी की जागी खिलजी चाला मुस्काके।
बादल से बतलाके बात का तोड हो गया।।३।।
कही बादल से समझाके जब नई प्रीत जोडेगी।
ओ रसम रिवाज पुरानी ये हरगिज ना छोडेगी।।
निज बाल की छाती पै पहले चूडी फोडेगी।
फर फैके चीर कुबे मे बुरखे ने औडेगी।।
फेर 'जयकरण' राम धर्म काओड हो गया।।४।।

वार्ता - सज्जनो बादल से मिलकर अलाउददीन कहने लगा कि डोले ले चलो। बादल ने कहा पहले राजा को जेल स बुलावो उसकी छाती पर अपनी चूडी फोड लेगी फेर आप जो उचित समझे करे राना को जेल से बुलाया गया। चूडी की बजाय धन्ना लुहार बेडी काटने लगा। खिलजी अपने दरबार मे क्या कहता है।

रागनी
(खुदा नाम मांग रही)

फिरी खुदा की मैहर मेरे पै खिलजी करे बयान।
मरे आज मिटेगे सब दिल क अरमान।।टेक।।
कर्म नाम करने का हो सै
बिन कर्तव कोई साथी कोन्या
जो हिम्मत का त्याग करे फेर
उसका खुदा हिमाती कोन्या।।
भीमसिह को कैद करे बिन आज पदमनी आती कोन्या
खाना तक भी ना खाया मनै जब से देखी शान।।१।।
हलकारे करो खबर महल मे डोला खडा शहर से बाहर
तार पदमनी ने ल्यावेगी क्यू ला राखी घनी अवार।
प्र.गो प्यारी राजी होजा करवादो सोलह सिगार।।
लागेगी चमकार रुप जणे खिला गगन मे भान।।२।।
आज तलक ना देखी होगी ऐसी सेज सजाऊगा।
अतर फूलेल तेलका छिडका बिस्तर बीच लगाऊगा।
फूली नही समावेगी जब जी भर लाड लडाऊगा।।
कलमा निका पढाऊगा मेरी बण जागो दिलजान।।३।।
विपरीत बुद्धि विनाश काले बात समझना झूठी नही।
बार-बार खिलजी पूझे क्या ऊची मौहब्बत टूटी नही।
क्या फौलादी पहर लई जो अब तक चूडी टूटी नही।
बालकपण मे सीख लिया 'जयकरण गुरु से ज्ञान।।४।।
दोहा- उठके खिलजी चल दिया गरदिश हुई सवार।
फूटी क्यो चूडी नही जो घनी लगादी वार।।

वार्ता- सज्जनो! खिलजी आकर कहने लगा कि क्या बात है जो इब तक चूडी नहीं फूटी। राजपूत कहने लगे।

रागनी

(तर्ज - तेरा जोगी आया)

तुम समझो जैसी, ना ऐसी वैसी।
ये चूडी हाथ की, इन छत्रानी के हाथ की।।टेक
रजपूतो की बात जगत मे पावे एक निराली।
कुछ अरसे से अभी बादशाह चूडी कटने वाली।।
तुम्हे प्रेम की प्याली पावै और निका पढाकर जावे।।१
थारा खुदा खुशी तुमसे घर बैठ पदमनी आई।
इतनी सुन्दर और जगत मे पावै कोण लुगाई।।
वो सुन शरमाई मैना, बाकी मीठी बोली है ना।।१
अलाउददीन भर्म मे रह गया भूला सब चतुराई।
महावीरो ने भीमसिह की बेडी काट बगाई।।
फेर खुशी मनाई मन मे और कूद पडे बली रण मे।।३
'गुरशरणदास' की सेवा करके छन्द जयकरण गाले।
जो सतगुरु का करे उल्लघन चेला धोका खाले।।
जो ठाले टहल गुरू की पहुँचेगा ठोड गुरू की।।४।।

दोहा - खिलजी को अफसोस था सुन बादल के बोल।
हाय खुदा तनै क्या रची गई डगमग काया डोल।।

वार्ता- सज्जनो! जिस समय राजा भीम की लुहार हथकडी काट देता है तो बादल अलाउददीन का जग का ऐलान कर देता है। आमने-सामने रण मे खडे हुए और सग्राम शुरू हो गया तो जो बादल ने वीरता दिखाई पढिये।

रागनी

(तर्ज - बाढी आरे की तेज बना दे)

बादल की रण मे बजन लगी तलवार ।।टेक।।
खिलजी से बोला दिखलाऊ तनै पदम दर्पण में।
रण के बाजे बजवाये ना दहसत मानी थी मन मे।।
सीना खोल लडा बादल जब कर्ण जोश जगा तन मे
रण चन्डी गई चेत खेत मे सारही दुष्ट लडन लागे।।
था शासन का गर्व परन्तु नखरे तुरत झडन यापे।
कोई कहै लै खुदा बचा कोई ल्हासो नीचे बडन लागे
प्रलय का ढग बनादिया वह चली खून की धार।।१
बादल बोल्या राना से कुछ मामाजी नजदीक रहो।
भारी फौज खडी शत्रु की तेग बजाते ठीक रहो।
दुष्ट मागले जो जाकी देते प्राणो की भीक रहो।
ओ पापी बेईमान आज तेरी मेंटू नाम निसानी ने।।
कई जन्म तेरे साथी रोवै पढके पाप कहानी ने।
बदला भी चुकाऊं जाके करके रान्ड पठानी ने।।
मामी के बदले में करले दुष्ट मौत से प्यार।।२।।
जग देवता जीवन आये बे परमाण लडा बादल।
कर्ण बली की डाल जग में हो सावधान लडा बादल।
भुमण्डल डगमग हाला जब दे ऐलान लडा बादल।

कोई मरे थे तेगो सै ओर कोइ दहशत मे मरते थे।।
शत्रु सेना भारी फेर भी राजपुत ना डरते थे।
उतपातो ने याद करे पग ल्हासो ऊपर धरते थे।।
पीठ दिखा दुश्मन भागा हो घोडे पै असवार।।
बादल ने लिया पकड दुष्ट ने सर चरनो मे गेर दिया
खता माफ कर दे मेरी वो शब्द रोस मे टेर दिया
प्राण दान देके बादल ने घोडा वापिस फेर दिया।
बादल सोया था डेरो मे अन्धकार महाघोर हुआ।।
के बेरा था योधा ने तेरे सर होनी का दौर हुआ।
फूट के कारण कर्म देश मे हिन्दुओ का कमजोर हुआ।
खिलजी से जा मिला 'जयकरण एक हिन्दू गददार।।४

वार्ता- सज्जनो! प्राणदान देकर बादल डेरो मे आ गया। राजा भीमसिह बगैर कहे पदमनी से मिलने चित्तोड चला जाता है। पदमनी क्रोधित होकर क्या कहती है।

रागनी तर्ज - पिया देदे मनै कुल्हाडा
(जवाब पदमनी का - राजा भीमसिंह से)

पिया करले भेष जनाना
दिल मे भय खिलजी का माना आया रात मे।
क्या छत्रापन को जोश रहा ना गात मे।।टेक।।
राजपूत रण छोड भगे कल पिटजा तेरी मनादी।
इकला आया छोड उसे जो गया छोडके शादी।
आधी राता झुकी अधियारी
बेरी जूल्म करे क्यू भारी उसके साथ मे।।१।।
इक्ला बालक छोड दिया क्या बादल बात बिचारै।।
अच्छी भून्डी बनगी तो बाकी मैइया सर ने सारे।
पुकारे बात यही रो रो के
लेगी सुत ने जण भली के खोटी स्यात मे।।२।।
वापिस रण मे चाला जा ना शान देखनी चाहूँ।
कर खिलजी से जग फतह मै ईश्वर के गुण गाऊ।।
खपाऊ मै वरना जिन्दगानी।
सुनक पतिव्रता की बानी तेग ली हाथ मे।।३।।
धन धन हो उन सतियो को जिन्ह धर्म की जोत जलादी
पतियो को भी समझाया और देश की लाज बचा दी
सुनादी कथा 'जयकरण' घडके
चेले गावेगे वे धडके सब देहात मे।।४।।

वार्ता- प्यारे भाईयो! बादल अपने डेरे मे सो गया और राना पहरा देने लगा। उसी रात्रि को अलाउददीन ने बीडा गेर दिया कि जो बादल को मारेगा पाच गाव तथा पाच हजार रुपये पुरस्कार मिलेगा। रामसिह राजपूत बीडा चबाकर ब्राह्मण के भेष मे राना के पास गया तो राना क्या कहता है?

रागनी
(तर्ज - मुझे लूट लिया सरे आम)

अब झूकी सै अन्धेरी रात बात कहो
किस कारण तुम आये।।टेक
चौगरदे मे डोल रजा पाया तरा राज नही।
रजपुतौ की सेना सोई लगाया अन्दाज नही।
बतलादे मै दलिया हूँ या कहदे दगाबाज नही।
भेद छिपाके रामू बोलू बोल्या ब्राह्मण मे निरास भाई
मामूली सा पानी ल्यादे लाग रही प्यास भाई।।
वरना अपने प्राण तजूंगा फूक दिजे ल्हास भाई।
तेरा याद रहेगा ऐहसान प्राण आजदिन पानी घबराये।।१
डूबा भीम विचारों में कोई चालाकी पीछानी नही।
वक्त की करामात सज्जनो! मुनियो ने जानी नही
राना बोल्या सेना सोई मेरे पास पानी नही।
चरनो मे मा लेट गया वो लालच था सवार बोल्या
कई जन्म गुण भूलू ना कही था रामू गददार बोल्या
नीर पिलाया श्राप ओट वा दिल मे कपट धार बोल्या
गई सुनके काया काप श्राप के डर से राना छाये।।२।।
पानी लैण चाल पडा भीम के जगा था रहम।
रामू को बैठाया नहीं दिल मे नही किया बहम।।
चन्दा की उजली चमकी आधी का हुआ था टैम।
डेरे अन्दर बड ग्या पापी कर मे थाम लई तलवार।
चौगरदे ने देखै था जहा सिह सावै था पैर पसार।
पृथ्वी डगमग डोल गई जब बादल का लिया तार।
कुछ लटकी रहगा खाल ताल खूनो तुरत बहाये।।३
बहता देख खून एक दम बादल के बदलगे ख्याल।।
न्यू जानी तेरे मारन खातर मामा ने फैलाया जाल।
ब्याह छोड के आता ना जो पापी की समझता चाल।
अन्तिम कराहट सुनि राना ने चाल के गया था पास।
गरदन कटी देख योधा की राना फूला होस हवास।
एक छलियाके कहने से मनै अपना ही कराया नास।
'जयकरण'कवि मनिमद छन्द सुखबीर शिष्य नै गाये।।४

रागनी
(जवाब - बादल का राज से)

करनी थी दो बात आज मनै खास मामा जी।।टेक।।
आज सब बना हुआ खेल बिगडग्या,
कर्म का पासा उल्टा अडग्या।
दुष्ट लिकडग्या डेरे सै कर नाश मामा जी।।
मेरी रुह डोलेगी सदा तलाश मामा जी।।१।।
मनै ना भय दुश्मन का मानी,
छुटा दी खिलजी की शैतानी।
लख मरदानी हिले जमीं आकाश मामा जी।
तेरी लापरवाही ने दिखा दिये त्रास मामा जी।।२।।
हुआ था पोच घडी पै त्यार,

छोड के ब्याह के मगलचार।
मार गया तलवार कोई बदमाश मामा जी।
मामी नै दिखला देना मेरी ल्हास मामा जी।।३।।
कही सब हिन्दूओ को प्रणाम,
सुख से बस्यो शेरपुर ग्राम।
सुनले मुल्क तमाक बनै इतिहास मामाजी।।
'गुरशरणदास' ने किया जयकरण पास मामा जी।।४।।

वार्ता - सज्जनो! इधर बादल न इतनी कहकर दम तोड दिया उधर पदमनी को सुपने मे बादल दीखता है तो क्या होता है।

रागनी

तर्ज - लुहारी के

तृष्णा चित नै चोरे, जणै बादल धोरे।।टेक।।
आग लगी मौड में, पदमनी को खोटा सुपना दीखे था
चित्तौड मे।।
रै बादल हो रो मामी हो,
सारा हाल बतादे बादल किस तरिया सै जग किया।
जीत गया जग फेर भी मामी ना जग्त मे जिया।।
काप गया सुनके हिया शीश रही फोड मै।।१।।
पीठ पै लगी ना चोट देख लेना खोड मै।
यो क बात सुनाई बादल समझ नही पाई मै।
समझके रहेगी मामीजी जीवन भर तवाइ मै।
तेरे सग लडाई मे क्या हिन्दू रहे मरोड मै।।२।।
पहले से ही राजी रहते हिन्दू तोड फोड मै।
तोड फोड किसने करो खोज के सुना दे सारी।
बेरा ना जणै किसने मामी सोवते की गरदन तारी।
आखरी नमस्ते म्हारी मुखडा चाला मोड मे।।३।।
पदमनी की आंख खुली देखे चारो ओड मै।
थामके कलेजा बैठी कैसी आज राम रची।।
बिगड लियाकाम रण में पदमनी के बात जची।
अबाई 'जयकरण' मची मगन गाकर जोड में।।
समझनियॉ थी राजी रहते छन्दो के निचोड मै।।४।।

वार्ता - सज्जनो! उधर बादल ने दम तोड 'देया तो राजा भीमसिह ल्हास के पास सारी रात विलाप करता रहा और क्या कहता रहा रागनी मे पढिये।

रागनी

तर्ज - रहम थारा बेकार मेरी

के बेरा था आज बहण का लुटग्या माल खजाना।।टेक
बादल ने दम तोड दिया और रहा दरोवता राणा।
कदी बहण का सुहाग लुटा वो वक्त याद आवे था।।
कदे ल्हास पै सर टेके कदे हाथ पकड ठावे था।
आखे खील बोल बादल घना मन मैं गबरावे था।।

बवण कहै मेरा सुत खाया जो ब्याह करन जावे था
रास गात मे ल्यावे मनै घाती कहै जमाना।।१।।
होटो पै खुश्की आगी और लाली झडी गाल की।
दुष्टो को लग गई खबर तेरे बल के करामात की।
बिना बेटे मा रहा करे जैसे डाली बिन पात की।
कगन तक भी खुला नहीं ना मैंहदी दुटी हाथ की।।
सेना रोवै तेरे साथ की भूली पीना खाना।।२।।
मामा और भानजे का हो जग मे प्यार निराला।
एक छलिया के कहने से मनै मुह करवा लिया काला।।
पहाड बरोबर रात लगे जब पडजा दुख कुठाला।
हिन्दुवो के अन्धेरा हुआ दूश्मन के घरो उजाला।।
जगे का जोत चला पाला पर मेरा नहीं ठिकाना।।३
वापिस जा चित्तौड तेरी ना जागी ल्हास दिखाई।
तेरी मामी का दिल फटजा जो तनै बोलके लाई।।
कहै 'जयकरण' भीमसिंह ने रो रो रात बिताई।
प्रेमराज गमगीन सुबह बादल की ल्हास उठाई।।
खिलजी ने आ करी छडाई पहरा रण का बजा।।४

वार्ता सज्जनों! रामसिंह बादल कासर काट कर खिलजी से ईनाम मांगने लगा तो खिलजी किस प्रकार जवाब देता है रागनी में पढिये।

रागनी

तेरे जैसे भारत के मां ना दूजा बकवास मिलै।।टेक
पुरस्कार के बदले में तनै आजीवन कारावास मिलै।
मेहनत कर सुख प्राप्त होय सदा धन के बने कलापी को
बीडा गेर टोहवता खुद मै मिटी हुई इन्साफी की।
तेरे जैसे पापी को बात किसी तरिया साबास मिले।।१
जो कौमी गददार करै तू करग्या उस शैतानी ने।
कई जन्म तक रहूँ सरहाता बादल की मरदानी ने।
के देरा बलवानी नै तेरी कल पडी हुई ल्हास मिले।।२
कर बादल की याद वीरता खिलजी के नैनो जल था।
मुह काला औरनाक काट ली राम करनीं का फल था
मिला नहीं उसे अनजल था,
कहीं हुआ तेरा भी नास मिलै।।३
पाप का सौदा जो बेके वाये होती नहीं बरक्कत से
कहै 'जयकरण' मरना अच्छा जिसकी कोन्या इज्जत से
जैसी किसकी महनत से शिष्य कोई फल पास मिले।।४

वार्ता- राना सारी रात ल्हास के पास विलाप करता सुबह खिलजी ने चढ़ाई करके राना व सारी सेना खत्म कर दी। पदमनी के पास खबर गई तो वह सती होने लगी।

तर्ज - उडजा ये पन्छी

जलजा री ओ अगमी

सतियो का लुटता दामन आज थामले।
तू म्हारी लाज थामले।।टेक
महावीरौ सै खाली होगी दूनिया मे नामी चित्तोड।
भूडल दहलावे था लख रजपुतौ की मान मरोड।।
भाग का पलटग्या पासा चिता मे दी चुडी फोड।
दूष्कर्मी दुश्मन आगया तो आबरू का हौज ढेर।
कर्मगती के आग सज्जनो चले नही हेरा फेर।
अगन देव भी रुठ गये तो क्या धर्म की छोड की मेर।।
ढलजा री ओ अगनी हिन्दूवी का सारा,
नखरा नाज थामले।।
भुमि है पवित्र फेर भी गगाजल छिडकाया गया।
कई कोस के ईद गिर्द मे हवनकुन्ड खूदवाया गया।
चन्दन लकडी सामग्री धी गऊवो का चढाया गया।
इब तक प्रकट हुई नही क्यु आग से बोवर बोली।।
बोली अगनी उत्तर दो सब रजपुतो को वीर बोली।
पदमनी के साथ सारी भर नैनो मे नीर बोली।।
फलजा री ओ अगनी पाप का तू जग मे
बढता ब्याज थामले।।२।।
कुछ मजबूरी साम्ही थी जो हिरदे मे खोलेगी साल।
हिन्दू फसते आप रहे यहा फूट के बिछाके जाल।।
पछी तक भी रोवण लागे धर्म का करे थे ख्याल।
झूठ–कपट छल बेईमाने बिन मेल का तजन नही होता
नर्क बरोबर जगह होय जहा हरका भजन नही होता
मरे बरोबर हुया करे जाकी बात मे वजन नही होता
चलजा री ओ अगनी खोटे समय का तू,
अन्दाज थाम ले।।३।।
धरती माता नमस्कार यहा जन्म लिया आराम किये।
कर मिटटी का तिलक रही तरै वैन सुबह और शाम दिये
हवा मे उड उड आवेगी म्हारी राख ने गगे थाम लिये
था सतियो का तेज मुकददर विपता आगे हुई खडी।
अगनी प्रचड हुई अचानक सती अगन मे कूल पडी।।
गाव शेरपुर दिल्ली मे 'जयकरण' अनोखी कथा गढी।
चलजा री ओ अगनी कवियो की खातिर कुछ,

रागनी

तर्ज - गम के गीत गावती

मेरठ शहर मे खास प्रेस जहा छपै किताब हमारी।
श्री भगवत बुक डिपो में पुस्तक मिलती न्यारी न्यारी।।टेक
से पुस्तक भन्डार रोड पै सही पता बतलाते।
रामरतन रघुनाथ, चतरसिंह बुक डिपो मे आते।।
अजोपाल, कल्याण छपाते कथा बनाके भारी।।१।।
चन्द्र और बलवन्त की पुस्तक छपी मिलेगी ताजी।
'गुरशरण्दास' की धूम छपी जी महान कवि परकाजी

दिल राजी राजा की पुस्तक दुनिया ले ले जारी।।२।।
इसी जिले के कवि सुना बलराज जगत में नाम।
सती निहाल, राजबाला और ना गुच्छा मे खामी।।
हरकेश कवि के दोनों गारे शिष्य नई लहदारी।।३।।
तुरमल सिंह और चमनलाल यहां कवि अडीमल आग्या
सब गुनियों का दास 'जयकरण' पुस्तक पचास छपाग्या।।
गुरु भाई संग में गाग्या वो भागमल प्रचारी।।४।।

सांगीत नल दमयन्ती
फखद मीर रटौल
दूसरा भाग

दोहा - ऊँ० नमै श्री भगवती हस वाहणी मात।
वीणा पुस्तक धारणी माई लज्जा तेरे हाथ।।

वार्ता- जब राणी दमयन्ती का सटकने के लिये अजगर अपना मुह खोलता है तो एक शिकारी तीर से उस नाग को मर देता है। वह पारधी रानी का रूप देख मोहित हो जाता है।

भजन तर्ज - आंगली मरोडे मतना

टेक – चाणचकलगी पारधी के कालजे मे चोट दमयन्ती के रूपकी।
पेली फटी हुआ प्रभात, निखर रहा केले कैसा पात।।
धौले धौले दांत ऊपर पतले–पतले होट, जणे किरण लिकडत हो धूप की।।१।।
इसपै विपता पड रही ठाडी धस रही गारे के माह गाडी
जिस माणस ने घर से काढी उस माणस का खोट,
गई अकल बिगड बेकूप की।।२।।
सुन्दर घणी हूर की परी, बण मे रोवे एकली डरी।
मध जोबन में भरी, गात का चन्दन कैसा बोट,
ये राणी सै किसी भूप की।।३।।
ना कुछ बूझी ना कुछ कही, बात कुछ बाकी कोन्यारही।
रागनी है सही, बावला है 'रघुनाथ' ठोट,
कुछ माया है अलग अनूप की।।४।।

भजन मिलवां - तर्ज गुजरू

शिकारी – तू कौण एकली क्यू रोवे बण मे हाडेके दुख पडग्या।
रा०– मैं दुनिया में दुखियारी हू मेरा नक्शा सब तरियां झड़ग्या।।
शि०– साच बता तेरा दुख मेटूँ मै तेरे पै कुरबान हुया।
रा०– तू कौण मेरा दुखमेटनिया जब अलग मेरा भगवान हुया।।
शि०– भगवान बिचाले मेरे तेरे मै यूँ आशिक दिलजान हुया।
रा०– पर त्रिया ने छेडे सै तेरे क्यू मूरख खपगान हुया।।
शि०– खपकान नहीं गलतानहुया चढाजहर इश्क विषय रलडग्या।
रा०– हट आगे तै दूर परे क्यूँ रोडा बण आगे अडग्या।।१।।
शि०– रोडा नहीं गिलौरी पत्थर चमके धरा चुबारे में।
रा०– दुनिया दूर नहीं दिल से तू समझले एक एक इशारे में ।।
शि०– गुजारा ईश्वर करता है सुख पावे ज्ञान विचारे में।।
शि०– चमक है एक सितारे मे जणे चांद बादलों में बडग्या।
रा०– सहम करेबकवास मगजतेरा कुत्ते से ज्यादा सड़ग्या।।२।।
शि०– सडा दिमाग तेरा लागे तेरी जान बचाई तू गाल बके।
रा०– मेरा पतिव्रता का वरण तू मारा जा बुरी निधा तके।।
शि०– तू मेरे पास रहेगी गौरी बोल खोल मुह सहम ढके।

रा०— है ईश्वर की निधा एक जो सब सृष्टि का रूप लखे।।
शि०— काटा जा जब खेत पके ये जीते जी किस्सा छिडग्या।
रा०— तेरे सिरपै काल पुकार रहा तेरा पाप तेरी अक्कल हडग्या।।३।।
शि०— अक्ल सैननै पिछान लई तेरी बिल्कुल किस्मत माडी है।
रा०— तू पतिव्रता नै छेडे है न्यू माणस मूढ अनाडी है।।
शि०— तू एक मिनट मे समझगी तिरया फिरै बिगाडी है।
रा०— तेरे तन के टुकड हो जागे ये त्रिया धार कुल्हाडी है।।
शि०— यू पारधी मरद पहाडी है तेरा रूप राम बेढब घडग्या।
रा०— सतवन्ती की कथा सही 'रघुनाथ' छन्द मे बन्द जडग्या।।४

वार्ता- पारधी दमयन्ती को मारन के लिये तीर साधता है तो वह तीर पलटकर पारधी के सीन मे लगता है जिससे वह मर जाता है।

रागनी तर्ज फिल्मी - अन्धेर नगरी एक बेर तो

प्राण लगी हूँ तजन, रहा ना वजन, सजन दिल तोड गये,
हो सोवती छोड गये।।टेक।।
भजन—पिया कारणे इस दुनिया का सारा सुख बिसराया।
भरे स्वयवर मे इन्दर का मान घटा धमकाया।।
तोड— पाया कोयना पता, कौणसी खता, बता किस ओड गये,
हो सोवती छोड गये।।१।।
जात बीर की इकली बण मे कैसे धीर धरू।
पता नही इस जिन्दगानी का कितने कष्ट भरू।।
तोड— मरू जहर अब चाट क्यू साडी काट, बाट बुरी दौड गये,
हो सोवती छोड गये।।२।।
बडे प्यार में होके ब्याही अब क्यू दई त्याग मै।
तेरी गैल मै भूखी जलती फिरी आग मे।।
तोड— भाग मे ना है टुकडा दिल का दुखडा मुखडा मोड गये,
हो सोवती छोड गये।।३।।
जीव का मरणा जीणा जग मे ईश्वर के हाथ है।
फिल्मी तर्ज काफिया देशी मस्तराम 'रघुनाथ' है।।
तोड— बुरी बात बीर त्यागणी लगी लागणी रागणी जोड गये,
हो सोवती छोड गये।।४।।

वार्ता- राह मे बनजारो का मिलना और एक बनजारे का दमयन्ती पर मोहित होना दमयन्ती का ईश्वर प्रार्थना करना और आधी का आना।

भजन तर्ज - फिल्म (नया दौर) मांग के साथ तुम्हारा

टेक— *आधी बण मे आई सती उडी पवन के साथ।*
अन्धेरा घेर हुया, हवा का जोर हुया।
वृक्षो के पत्ते खुडके शोर हुया, हुई भयानक रात हा ३।।१
हूल्ला ऊठ चला, जोर से छूट चला।
वायु का बणके गगूट चला, थर थर कापे गात ३।।२
पार पाला हुया, राम रखवाला हुया।
सूरज लिकडा हुया उजाला पेली पेटी हुआ प्रीात हा ३।।३

बिना बताई पाई चली राही राही।
चन्देरी नगरी मे अपने आप आई कथाकथे 'रघुनाथ' हा ३।।४
दोहा - गली गली मे घूमतो रोइ जार बेजार।
आख सूज गई रज मे हुई बावली नार।।
राधे०- तन पै वस्त्र फटे हुये और पगलो कैसी शक्ल हुई।
बच्चे डले मारते थे राणी रज मे बेअकल हुई।।
जो चन्देरी की राणीथी वो दमयन्ती की लगे थी फुवा।
बिना पिछाणे दमयन्ती का ना उनको कुछ पता हुवा।।
वो महल मे बैठी थी राणी रोती दमयन्ती नजर पडी।
बादी भेज बुलाती है और मन मे आई दया बडी।।
तू दुखिया है मैं जाण गई और तेरा दुख बटवाती हू।
गर बुरा नहीं मनमे माने तो हाल पूछना चाहती हू।।
तेरी शक्ल भोली लगती क्यू आख सुजाली रोने मे।
करधीरज ईश्वर कष्ट हरे क्या फायदा जिन्दगी खोने मे।।

भजन- तर्ज फिल्मी - धूल का फूल (तेरे मेरे प्यार का फूल है

टेक - बता तेरा के गाम सै क्या नाम सै के विपता पडगी।
जवान उमर घर छोड के क्यू बाहर लिकडगी।।
कहदे अपनी साफ कहाणी पडिताणी है या जेठानी या सेठानी।।
या राणी है किसी भूप की तेरे रूप की क्यूं लाली झडगी।।१
तेरी स्यान लगे शील सती की शील सती की।
तेरे आगे घटे स्यान रती की स्यान रती की रती की।।
या तेरे पति की तेरी गेल मे मन मैल मे बुरी पैज छिडगी।।२
तेरे रूप की ज्योत निराली ज्योत निराली।
जणे चन्दा की खिली उजाली खिली उजाली।।
बैठ के ठाली टैम मे, बडे प्रेम मे बेमाता घडगी।।३
क्यू रोवे दुख मे घबराई हो घबराई।
कहे 'रघुनाथ' सुणी सोइ गाई हो सोई गाई।।
अजब बणाई रामने, तेरे सामने के तेरी किस्मत अडगी।।४

जवाब दमयन्ती का

दोहा- हाथ जोड विनती करू ना कभी बोलू झूठ।
मैं मरने को त्यार हू भरू जहर की घूट।।

टेक- मेरा पति मने छोड चला गया मैं पतिव्रत धर्म की हू।
न्यू रो रो के हुई बावली हारे हुये कर्म की हू।।
है ईश्वर की एक नजर जो सब सृष्टि का रूप लखै।
शहर के बच्चे कहे बावली डले मार के गाल बकै।
तोड- मेरी ज्वान उमर मनै पापी तकै मैं भरी हुई लाज शरम की हू।१
मेरी लाज बचा मेरी माता हेतू, मै वृथा बोल नहीं सकती।
तू जहा बैठावे वही रहू पक्की हूँ डोल नहीं सकती।।
तोड- और भेद को खोल नहीं सकती मैं बधी हुई गाठ भरम की हू।।२
मै जाणू या मेरा ईश्वर जाणे मेरी गुप्त कहाणी है।

किसी बात की कसर नहीं है मेरी जात क्षत्राणी है।।
तोड– मेरे मै की नहीं निशानी है मै सिघणी सुभा गरम की हू।।३
मै बडी समझ से दिन काटूगी सादे भोले बाणे मे।
जैसा मिलजा वैसा ही खाल्यूँ इतराऊ ना खाणे मे।।
तोड– सही रागनी गाने मे बणी हुई 'रघुनाथ' फरम की हू।।४
दोहा– दमयन्ती की बात सुन दिल मे हुया यकीन।
अब तेरा दुख मिट गया सुन शील सती परवीन।।
राणी– अच्छा बेटी अब मौज उडावो अच्छा पहरो अच्छा खावो।
स्नान ध्यान और दान करो सेवा से मेवा पावो।।

जवाब कवि का

भजन– सदाव्रत दमयन्ती बाटण प्रेम से लगी।।टेक।।
कोई नही किसी का मीत प्रीत का ध्यान हो गया।
करम धरम करने का एक स्थान हो गया।।
मजबूर दूर जब पतिदेव भगवान हो गया।
परालब्ध के भोग योग का ग्यान हो गया।
न्यू दुख के दिन दमयन्ती काटण नैम मे लगी।।१।।
जो मागे सो एक दम दे कम तोलती कोयना।
इधर उधर बेकदर सडक पै डोलती कोयना।।
शान्त शुभा की बणी घणी कदी बोलती कोयना।
मन के मन मे खेद भेद कुछ खोलती कोयना।।
मन बुरा भला दमयन्ती छांटण बहम मे लगी।।२।।
दिल की लगी बुझाणी पाणी आखो मे बहै।
दो बच्चो का प्यार बिचार हदे मे रहै।
तडफ जलन को त्याग आग दुख सबर मे सहै।
मोह शोक लिये रोक बात ना पेट की कहै।।
पेट पडा दमयन्ती आंटण रहम मे लगी।।३।।
मन भाया और चाव चलन सबै एक सा करै।
सुबह शाम शिव नाम बैठ के ध्यान मे धरै।।
श्री शारदा विद्या धन मन मस्ती मे चरै।
'रघुनाथ' साथ गुरू मानसिह को नाव में तरै।।
इसा अमृत रस दमयन्ती चाटण टैमै सै लगी।।४

वार्ता- राजा भीकम का पुरोहित व दूतो को नल व दमयन्ती की खोज के लिये भेजना।
भजन– देश–२ टोहण जाइयो, मेरे दिल का कष्ट मिटाइयो।
कही लगजा तो पता लगाइयो दमयन्ती नल का ।।टेक।।
छोडके चले गये घरबार, भूल गये सब सम्बन्धी प्यार।
शर्मदार के शरम की जचली, याद रही ना ममता पिछली।।
दो बच्चे लोचें जणै मछली पता नहीं जल का।।१।।
ना बिगडी का धेला उठे, ऐब जो करे पटै औ लुटै।
खशबो छुटै फूल खिलने में, मक्खन मिले दूध बिलने में।।
प्यारे मित्र के मिलने मे दुख होजा है हलका।।२।।
दिल ना थामें से थमता ना ध्यान एकसा जमता।

ममता का काटा घणा रडकता, दुख मे दहना नेत्र फडकता।।
हरदम हृदा रहे धडकता लगे आखो से ढंलका।।३।।
मानसिह का ध्यान धरै सै, मिले 'रघुनाथ वो ज्ञान भरेसै।
भजन करेसै सबदुख भगता, लोभ मोह ठगजीव को ठगता।
सुर मे भी सुथरा लगता लहदारी का झलका।।४।।

जवाब दूतों का राजा भीषम से

भजन–फिरे देश–देश मे राजन का नल दमयन्ती पाये।।टेक।।
सिगापुर रगून ब्रह्मा शहर देखा बन्नू कोहाट।
देख लिया आसाम सूबा गोहाटी का सुथरा घाट।।
भारी शहर कलकत्ता है बाजारो में भारी ठाट।
पूना और सितारा बम्बई खूब देखे घूम घूम।।
आगरा बडौदा सूरत शहर की है भारी धूम।
फिर सीधे मद्रास पहुँचे वहा की है निराली भूम।।
तोड– ना बहू बेटी की कूतजी थे सबके एक पहराये।।१।।
ढाका और बगाला देश कामरू तालाश किया।
पूरबी इलाका गंगा पार तक का पास किया।।
फेर गये पजाब वहा कई रोज बास किया।
अमृतसर लाहौर झेलम रावल पिन्डी देख लई।।
फिरिन्टयरको देख निंघा काश्मीर पै टेक लई।
बर्फिला इलाका काया जडायो ने सेक लई।।
तोड– फल मेवा खाकर मजबूत जी रग गोरोरूप सवाये।।२।।
चन्डीगढ पजाबी सूबा फिर २ कै पडताल किया।
देखा बिहार सूबा सारा गोआ को सभाल लिया।।
नैनीताल गढवाल सारा देख नैपाल लिया।
महाराष्ट्र गुजरात देश मारवाड भी छाण लिया।।
अलवर और तिजारा जैपुर जोधपुर भी जाणलिया।
किस्सा क्यो बढाया देख सारा राजस्थान लिया।।
तोड– वहां ऐंठदार रजपूत जी सेवा मे बडे कहाये।।३।
रिवाडी गुडगावां दिल्ली देख लई गली गली।
सहारनपुर हरिद्वार खोज ऋषिकेश तकनही चली।।
अलीगढ मैडू और मथुरा की भाषा लगी भली।।
मेरठ का इलाका हमने घूम कै तमाम देखा।।
कथा के गाणे मे ज्ञान मानसिह का नाम देखा।
खेकेडे फखरपुर धोरे फिरोजपुर एक ग्राम देखा।।
तोड– 'रघुनाथ' की वह करतूत जी यह कथा आनन्द में गाये।।४

वार्ता- पुरोहित प दूत का चन्देरी मे पहुचना और दमयन्ती व पुरोहित का एक दूसरे को पहचानना।

जवाब पुरोहित का दमयन्ती से

भजन– सदाव्रत बांटण वाली, तेरी दमयन्ती कैसी श्यान,
तू बेटी दीखे भीष्म भूप की ।।टेक।।
कर नमो नमो हुये नरम, मिटादे म्हारे हृदे का भरम,

धरम करम डाटण वाली म्हारे मन में भूल महान।
न्यू अपनी अरजी तेरी शरण में पेश की।।१।।
हैं सब दमयन्ती के चिह्न, शक्ल तेरी मिलती है भिन्न २।।
दुख मे दिन काटण वाली तेरे बच्चे हुये बिरान।।
न्यू पर एक-एक बीते बच्चों की समय कलेश की।।२।।
हे तेरे बिना तेरा बाप सूख लिया रंज में अपने आप।
पुन्य पाप छाटण वाली है कुदरत एक समान।।
है हिमा न्यारी जै शिव ओम महेश की।।३।।
कहे 'रघुनाा' हैबडा सबर, तेरे पै दुख पड रहा जबर।
सबै खबर पाटण वाली सुणो लगाकर कान।
है कथा मे कथना लहदारी ठेक की।।४।।

जवाब दमयन्ती का

भजन– सुणके पडित की बाणी, मन मे आई याद कहाणी।
आया भर आखो म पाणी राणी रंज में रोई।।टेक।।
मानता कोय ना पेट पुजारी, गुजारी करू करम कीहारी।
मै नारी हूँ विराण, मेरी कौण करे पहचाण।।
रूठ गये नारायण, मेरी जाण सब खोई।।१।।
फिरी धक्के खाती बणमे, मेरे कुछ बाकी कोयना तन मे।
मन की मन मे झाल डाटणी, एक सबने खबर पाटणी।
पुडिया जहर की चाटणी, काटनी बेल जैसी बोई।।२
मेरा गम मे हृदा भरग्या मेरे सिर पै दुखडा धरग्या
करग्या मेरी गैल मे चाला, बांधा पाप रूप का पाला।।
ओढू कम्बल काला, कोय दुशाला ना लोई।।३।।
ना रहा बात का भरम, कहे 'रघुनाथ' करा हुआ करम।
डोरी शरम काण की तोड दई कच्ची कली मरोड।।
गया रात पाडके दौड, एकली छोड निर्मोही।।४।।

वार्ता- दमयन्ती और पुरोहित को बात करते देख दमयन्ती की बुआ का आना और दोनो क मिलना।

भजन तर्ज – सेलक होगी काया मे जब हाथ मिले हाथा मे
टेक– जाण हुवे पै बुवा भतीजी मिलीं मामता करकै।
हिया उमड कै आवण लाग्या रोई कौली भरकै।।
लाड चाव से पाली थी तू फिरै रंज में भमती।
प्यार के पलडे तुले एक से नहीं कोई सा कमती।।
नल पापी तने पागल बणके बेल काटदी जमती।
दमयन्ती की बुवा की आंसु ना थामे से थमती।।
प्यार करे और पुचकारे न्यू हाथ शीश पै धरकै।।१।।
दासी दास सभी आगे देखे थे खडे महल मे।
शाही वस्त्र मगवाये और बादी लगी टहल में।।
दमयन्ती को पहराये दासी सब चहल पहल मे।
पुरोहित को अति धन दिया तिरा लोहा काट गैल मे
चन्देरी के राज महल मे ध्वजा धरम की फरकै।।२।।

भारीकुशी हुई राणी कू जणे धन कगले को पाग्या।
नई बात छिड रही भवन मे आनन्द सा छाग्या।।
रूपखिला दमयन्ती का सिर झुका चाद शरमाग्या।
पता लगे पै राजा भी चल रणवासो मे आग्या।।
दमयन्ती को देखण आई शहर की बीर लिकडकै।।३।।
जती मरद और सती बीर का इतने धर्म रहे सै।
विषय वासना तजने से दुनिया मे भरम रहै सै।।
हो ईश्वर का ध्यान और आखो मे शरम रहै सै।
सर्व आत्मा एक समझले जब ये करम रहै सै।।
न्यू 'रघुनाथ' शर्म का माणस रहाकरे सै डरकै।।४।।

वार्ता- पुरोहित का कुन्दनपुर मे आकर राजा भीकम को वृतान्त सुनाना और चन्देरी से दमयन्ती का आना और बच्चो से मिलना और माता पिता से अपनी दुख की बिथा सुनाना।

भजन तर्ज– डोले के मा सोगी हीरे ताणकै नै चीर
टेक– जीव बिन देह नदी बिन वारि न्यू पति बिना नारी।
पतिव्रता ने पति बिछडे का दुख सब तै भारी।।
दुख सब देखा जा है पति वियोग ना झिले।
बिना खुशी के हस चमन का फूल ना खिले।।
करतूत पति की कहूँ तो सुण के पत्थर भी हिले।
नही किसी का दोष भोग सब करमो का मिले।।
तोड– किसके आगे रोऊ७७ मा म करम की हारी।।१।।
कलु ने खेल खिलाये राज सब हरा जुवे मे।
अक्ल बिगड जा माणस की एक द्वेश के तुवे मे।।
पागल हो गया पति जूवे की हार हुवे मे।
पता नहीं कहा गिरा नदी नाले कुए मे।।
तोड– नही विचार करणदे जग मे खोटी लाचारी।।२।।
पति बिना पतिव्रता का सूना ससार हो।
वे बन है मेरा महल मे रहना धिक्कार हो।।
प्राणनाथ बिन प्राण तजू ये मेरा विचार हो।
इन दोनो बच्चो का थारे ऊपर प्यार हो।।
तोड– इन्दरसैन बेटा और बेटी इन्दरवती प्यारी।।३।।
हरदम याद सतावे मन मे भूल ना पडै।
ऐसे दुख मे अच्छा जो मेरे जहरी नाग लडै।।
ईश्वर कर दे कष्ट पार जो सामने अडै।
'रघुनाथ' रोज नये छन्द कथा मे प्रेम से घडे।।
तोड– सुर के साथ लगै है सुथरी ठीक लहदारी।।४।।

वार्ता- एक दूत राजा को आकर बतलाता है कि अवधपुरी मे रितुवर्ण का सारथी नल जैसा लगता है परन्तु वह रग का काला है राजा भीकम दमयन्ती से सलाह मिलकार एक पत्र रितुवर्ण को लिखते है नल तीन विद्या मे प्रवीण था १ रथ का हाकना, २ जुआ खेलना, ३ बिना अग्नि के भोजन बनाना। परीक्षा लेने के लिये दमयन्ती के स्वयवर का निमन्त्रण भेजते है। तो रितुवर्ण अपने सारथी नल से कहता है।

दोहा - राजा नल की कामनी है दमयन्ती नाम।
भीकम नृप की है सुता कुन्दनपुर है ग्राम।।
चौबोला– सभी दुनिया मे रूप निराला है।
राजा नल का पता नही कहा गया मतवाला है।।
वो दूसरा पतितालास करे कलका स्वयवर खत डाला है
ये स्वयवर देखने काबिल है एक नया तमाशा आला है।।
मुक०– दूर काफी मजिल है पहुँचना बडी मुश्किल है।
सुनो सारथी ये स्वयवर एक देखने के काबल है।।
दोहा– नल पागल सा हो गया घाव जिगर गये दूख।
मुह से कुछ ना कह सके थूक गया था सूक।।
भजन– दमन का दूसरा स्वयवर सुन२ सन्नाटा सा हो गया।।टेक
नल के दिल मे खडा एकदम काटा सा होग्या।
पहाड मे ककर खावे हन्सा ताल का।।
पृथ्वी मे घर नही बनाता पछी डाल का।
तोड– सौ लालो के लाल का भाटा सा होग्या।।१।।
शोक शोक मे जला करे है देख शौकीन नै।
इश्क ईषा जलन मे राजी जान झोकन नै।।
तोड– आखो मे जल रोकन ने उर आटा सा होग्या।।२।।
जहर चढा काया मे जणे नाग चूट के खा गया।
दुख का तीर लगा तन मे जणे गगन बादल सा छा गया।।
तोड– आख मिची चक्कर आ गया सिर पाटा सा होग्या।।३।।
न्यू सोची ऐसा मौका फेर कदी ना आणे का।
तू 'रघुनाथ' सुमर सुर स्वामी आनन्द यह पाणेका।।
तोड– राम कथा में गाणे का रग छोटा सा होग्या।।४।।

जवाब नल का ईश्वर प्रार्थना

भजन–मेरे बच्चो से मिलादे भगवान मै मूर्ख नादान।।टेक।।
मेरे जीणे का तू ही सहारा मै मूरख हूँ जुवे का हारा।
तोड– प्यारा नाकोई इन्सान तुम्ही करो मेरा ध्यान।।१।।
पडी भवर मे मेरी नैया पार लगादो नाव खिवैया।
तोड– बल्ली लगैया तेरी स्यान जाणे है सकल जिहान।।२।।
मेरे हरदे मे भरम हुया हू, भूल मे झाडी कमल हुया हूँ।
तोड– बेशर्म हुया हू, बेईमान कलू ने बिगाडा मेरा ज्ञान।।३।।
कहे 'रघुनाथ' प्रेम का बेडा सूबसबसो फिरोजपुर खेडा।
तोड– लड्डू पेडा मिष्ठान फूल बतासे मेवा पान।।४।।

वार्ता- नल का रितुवर्ण को समय पर पहुचाने का वचन देना और मन मे भगवान का सुमरण कर रथ हाकना।

भजन तर्ज - संगीत

घोडे चले पवन की चाल।
रितुवरण राजा के हाथ से छूट के गिरा रुमाल।।चेक।।
वायु से भी तेज रथ की चलने की रफ्तार हुई।
नभ मन्डल मे घोर जोर चिन्ता बेशुम्मार हुई।।

रितुवरण राजा की तबियत देखके लाचार हुई।
रथ रोको रथ रोको जल्दी राजा ने आवाज दई।।
गिर गया रुमाल मेरा उठा के लावो न्यू कही।
नल बोला राजा वो ठारहसौ योजन पीछे को गई।।
तोड– बात सारथी की सुण के हुआ भूप के मन मे ख्याल।।१।।
तरह तरह की भावना के रग मे भदरग हुये।
रितुवरण ने देखा तन मे ढग बेढग हुये।।
तीर से भी तेज जैसे उडने मे भुजग हुये।
न्यू सोचा ऐसा करना कोई आदमी का काम नहीं।।
पूरा पता मिले बिना मनको मिले विश्राम नहीं।
रोक दो रथ राजा बोला चलने का प्रोगाम नहीं।।
तोड– मनमे शका हुई घणी उठे सौ–सौ मन की झाल।।
नल ने रथ को रोक दिया राजा ने सवाल किया।
पराक्रम गुण हमने तेरा अच्छी तरह देख लिया।।
अपनी बाण विद्या का फिर ये तमाशा देख लिया।
न्यू बोला ये अपनी विद्या हमे भी सिखाओ तुम।
आप कौन है असली भेद कहके भरममिटाओ तुम।।
तोड– रथ हाफण मे आज आपने कर दिया घणा कमाल।।२।।
नल बोला ये सारा भेद फेर फुरसत मे खुल जागा।
मन्डी कैसा भाव सौदा बोली बुलके तुल जागा।।
स्वयवर का तमाशा आज जै का नारा बुल जागा।
किसे बनावे पति सती कोई भरोसा ना बात का।।
मन से मित्र बणो राजा मै प्रण निभाऊँ साथ का।
गाणा त्यार बणाना काम शौक है रघुनाथ क।।

वार्ता- नल और रितुवरण का कुन्दनपुर पहुचना और राजा भीकम का आकर मिलना और नल को देखकर भ्रमित होना।

दोहा– स्यान सही नल की लगे हो रहा रूप कुरूप।
सही भेद कैसे खुले भया सोच मे भूप।
राधे०– बडे भाव से रितुवरण को अच्छी जगह ठहराते हैं।
फेर महलो मे दमयन्ती से आकर बात बताते है।।
रितुवरण के रथ का सारथी नल से मिलता जुलता है।
रगस्याह सूख के काटा सा हुया क्या कहूँ भेदना खुलता है।।
भजन– सारथी हमको लगा नल की तरह परवीन है।
ना पता किस वास्ते उसका दिल गमगीन है।।टेक।।
दुखतर का दुख है दिल मे इसको सह नही सकता।।
ये दुख नहीं रह सकता अब चन्द दिन का सीन है।
मन मामता मे मेरा मजबूर और मलीन है।।१।।
हिम्मत कतल करने की जब भगवान कातिल मे हुई।।
गम की चोट ओटना गुन्जाईश घायल मे हुई।।
तडफना दिल मे हुई पानी से न्यारी मीन है।
अपने भी अपने ना हुये अब किसका क्या यकीन है।।२।।

बेकार उसका जग में जीना जिसकी उडे बदगोई।
मोती की मानिन्द इज्जत जुबे मे नल ने खोई।।
उसका करे क्या कोई जो दीन से बेदीन है।
सारथी से पूछना या बोलना तौहीन है।।३।।
वैसे तो मेरे दिल में कोई अजनबी उमग है।
तूभी समझ दमयन्ती मै किस ढग मे क्या रग है।।
गाणे मे सुर तुरंग है लहदारी की जग है।
'रघुनाथ' ये कविता सबसे नवीन है।।४।।

जवाब दमयन्ती का अपने पिता से

तर्ज–ओ लूटने वाले जादूगर अब मैने तुझे पहचाना है
भजन– मन्त्रों से अगनी प्रगट कराना नल विद्या ये पढां हुा।
घोडो को चलाना जाने है और खेल जाणता खूब जुवा।।
जो नल होगा तो पराक्रम से विद्या गुण खूब बणा देगा।
महल से लेकर कैम्प तलक नौकर कन्नात तणा देगा।।
भोजन बिन आग बणा देगा नहीं दीखे उठता कहीं धुवा।।१
धर्म का ध्यान राखना हो और मन मे धीरज धरना हो।
करा जो करम है दुनिया मे वो उसी जीवने भरना हो।।
खुद उसको पडे मरनाहो जो खोदते किसी के लिये कुँवा।।२
ईश्वर उसकी मदद करे जो नैम धर्म के पाबन्द है।
है जीव भरा हुवा गलती का और गलती मे ही गन्द है।।
ध्यान करै सै आनन्द है और मोह मनुष को रहा रूवा।।३
मोह मे मानुष भूलता है और करता काम तवाई का।
छुपता नहीं छिपाये से जो हो मजबून सच्चाई का।।
'रघुनाथ' ज्ञान कविताई का श्रीमति शारदा दिये दुवा।।४

वार्ता- भीकम रसोई का कच्चा सीधा नल को भेजता है और दमयन्ती पहचान के लिये बच्चो का लेकर नल के पास जाती है बच्चों को देखकर नल की आखो से पानी बहने लगता है।

जवाब दमयन्ती का

भजन–बेटा बेटी खडे सामने ममता ने मन मोहा।
दिल की झाल डटी ना हूक मार के रोया।।टेक।।
शरम के कारण मरना हो गया सब ससार छुटा।
कलयुग कौंप रहा मेरे ऊपर न्यू घरबार छुटा।।
सब कुनबे का प्यार छुटा जब जूबे मे धन खोया।।१।।
इस जीणे से मरना अच्छा सोचा जहर चाटणा।
जो भेद खुल गया तो बिल्कुल पडे नाटणा।।
हर माणस ने पड़े काटणा जिसने भी जैसा बोया।।२।।
ध्यान हुया जब पूंछे आसू बाकी ना था तन मे।
धोका दिया सती छोड दई सोती हुई बन में।।
सोचके धीरज धरलिया मन मे अपना रूप ल्हकोया।।३
बिना ज्ञान के पता चलेना होणा के काम अगत मे।
गुरू बतावे भेद वेद व्यापक भगवान भगत मे।।
ऐबदार 'रघुनाथ' जगत मे कदी ना सुख तै सोया।।४।।

वार्ता- राजा का बिना अग्नि के भोजन तैयार करना, और बच्चो को देना और बादी का मना करना।

जवाब बांदी व सारथी नल का

भजन- गलती तो करी है तने सारथी न्यू एक,
रोया तू जलन में म्हारे बालको नै देख।।टेक।।
कामतू कर रहा गले में घलन के ढग तेरे दीखे ना चाल चलन के
तोड- ईर्ष्या जलन के तेरे कालजे मे छेक,
सफाई से घाव रहा सोवते मे सेक।।१।।
काम ऐसा कर सकता था ना कोई, बणाई अग्नि बिना रसोई।
तोड- गरम करी बटलोई खाली अगीठी पै टेक,
जादुगर की तरिया तेरा धोके का भेक।।२।।
ना रहीशरम और शाक, चले है तेरी आख और नाक।
तोड- तू दीखे है चालाक भला आदमी ना नेक,
भलाई तो खाई तनैं बावलपण मे बेक।।३।।
मिलाके जोट बोट में बिठले पाला प्रण तोडके पिटले।
तोड- 'रघुनाथ' लिखे ना मिटते उस परमेश्वर के लेख।
प्रसिद्ध महात्मा मारै है उस रेख मे भी मेख।।४।।
छन्द- बादी की बात न्यू सुनी नल नाड़ नीची कर रहे।
पता पाटजा मेरा यहा न्यू मन ही मन मे डर रहे।।
परमात्मा करिये भला धर ध्यान धीरज धर रहे।
हृदा उमड के आ रहा आखो मे आसू भर रहे।।

जवाब नल का बांदी से

भजन- मतना रोके बच्चो को गोदी मे आणदे ओ बादी।
मेरे पास में बैठके उन्हे भोजन खाण्दे ओ बादी।।
तेरे दिल में गिल्ला हुवा मेरा दिल मुख्तिला हुवा।
इन दोनों बच्चों का चेहरा चन्द्रमा सा खिला हुवा।।
दूध और पाणी मिला हुआ तू कैसे छाणदे ओबादी।।१।।
पाणी जार बेजार बहे, ममता मे ससार बहे।
आसू मतना जाणे बादी आखो के माह प्यार बहे।।
गगाजी की धार बहै मल मलके न्हाणदे ओ बादी।।२।।
बडी खुशी का ख्याल मिला, मीन को जलका ताल मिला।
भूको को भोजन मिला जणे कगले को धन माल मिला।
रला रेत में लाल मिला जौहरी को ठाणदे ओ बांदी।।३।।
वेदों का प्रमाण मिला जणे भूले को ध्यान मिला।
कह 'रघुनाथ' कथन करने का मानसिह का ज्ञान मिला।।
भगत को जूं भगवान मिला गुणगाण दे ओ बांदी।।४।।
दोहा- बांदी वहां से चल दई दमयन्ती के पास।
न्यूं बोली वो सारथी राजा नल के खास।।
राधे०- दोनों बच्चो को देखके उसने गोदी में बैठाया जी।
बिन अगनी के मन्त्रो से भोजन तुरत बनाया जी।।
पास बैठाकर बच्चों को भोजन साथ जिमावण लगा।
प्यार करे और पुचकारे आंखों से अश्क बहाण लगा।।

दोहा– सुण बादी की बात को मन मे हुवा विश्वास।
पिया मिलन की लग गइ सती के मन मे आस।।
रो०– पिया मिलने की आस हुई और माता के पास गई।
जो बादी ने बात कही अपनी माता से सती ने कही।।
सुन बेटी का कहना माता ने मता उपाया जी।
हलकारे के हाथ सारथी महलो मे बुलवाया जी।।

जवाब सासू का नल से

भजन सासू– तू बीरसैन का बेटा है. तेरा नल नाम है।
नल– मैं नौकर रितुवरण का रथ हाकण का काम है।।
सासू– तू साफ बतादे मेरे तै मत झूठ बोलिये।
नल– ढके रहण दो ढोल पोल मत माता खोलिये।।
सासू– जो तेरे मन मे मै आज तू सारा धोलिये।
नल– मेरे घाव जिगर मे कच्च्या मत माता छोलिये।
सासू– मत धक्के खाता डोलिये यो तेरा ही ग्राम है।
नल– कदी ना बन्धण मे रहता जो क्षत्री का जाम है।।१।।
सासू– बन्धन नहीं किसी कानल ये तेरा ही राज है।
नल– मै हारा हुया जुवारी हूँ मनै घणी लिहाज है।।
सासू– तेरे यहा पैर पुजे थे एक रोज म्हारे सिरका ताज है।
नल– मैं कह नहीं सकता मेरा मन मा धोकेबाज है।।
सासू– सब कुछ हाजिर आज है तू पूजण का धाम है।
नल– मैं सहन नहीं कर सकता मेरा मगज गुलाम है।।२।।
सासू– तू नाजुक नरम कलाई मन की त्याग गिलानी।
नल– अरी ऐबदार के पीछे माता क्यू ठावो परेशानी।।
सासू– स्याणा सोका होक बेटा क्यू करता नादानी।
नल– जिसकी जो करतूत जगत मे कोन्या रहती छानी।।
सासू– कदी लाभ कदी हाणी कदी सुबह कदी शाम है।
नल– ना समझी की राड समझ मे ज्ञान तमाम है।।३।।
सासू– झगडा राड बढाना बेटा आनन्द खोणा है।
नल– एक दिन मे ना निपटे जीते जी का रोणा है।।
सासू– द्वेष ईर्ष्या का छोड के दाग दिल का धोणा है।
नल– करम करा हुया मिले फालतू झगडा झोणा है।।
सासू– वृथा थूक बिलोना है जो रटता ना राम है।
नल– 'रघुनाथ कहे गुरू मानसिह पूजण का धाम है।।४।।

दमयन्ती और नल की आपस में बातचीत

भजन – तेरी दुनियासे दिल भरग्या, बसाले कोई और घर नया,
जुबे के चक्कर में पाली काफी सजा,
तू देखले अब टोहले सुथरे पति का मजा।
रेडियो में बजा तेरे स्वयंवर का तवा,
दो बच्चों की माता सती का सत ना रहया।।१।।
मै भूल गया वण मे सोती छोड दी
कलयुग में करम की आके आख फोड दी।

मनमे ममता तोडदी दुख जाता ना सहा,
इतना कहके पाणी नल की काख मे बहया।।२।।
मै तेरा ना तू मेरी अब होजा और की,
मरी सूरत होली ईरखा मे खास चोर की।
तेरे कडवे त्यौर की ना मेरे पै दया,
अब कहना था वो कहले फेर जा ना कहया।।३।।
न्य तो मैं भी जाणूं पडके परालब्द सोई,
मेरा तरा ना मतलब जादा राड क्यूं झोई,
क्या करेगा कोई जिसकी उतरगी हया
'रघुनाथ' मामता मोह का चक्कर फन्द मे फया।।४।।

जवाब नल का दमयन्ती से

भजन– न्यू तो मेरे मन मे जचगी दिल उमग मे होग्या।
मन की बात दो पिया कैसे काला रग होग्या।।टेक।।
मन घूंट सबर की भरली, जब सोती की नाड कतरली।
तने नौकरी क्यूँ करली जब तू एकला मलग होग्या।।१।।
अरजी तेरे चरणो में गेरी न्यूँ, ठाली तकलीफ भतेरी।
स्यान देखके तेरी पिया मेरा बोलता भग होग्या।२।।
जाण अब सब तरियो से पटली, नेकी बदनामी छटगी।
डोरी से न्यू डोरी कटगी एकला पतग होग्या।।३।।
गलती मेरी माफ करो अब पिया, सहारा थारा चरणों का लिया।
'रघुनाथ' को ज्ञान गुरु ने दिया न्यूँ गाणे का नया ढग होग्या।।४
भजन– जो कुछ बात कहगी राणी हृदय मे धर ल्यूगा।
खता करे की धर्मराय के जीते ही हां भर ल्यूंगा।।
मतना ताना मारे राणी कष्ट कहानी कहके।
राजा नलने हाथ पकडलिया दमयन्ती राणी कहके।।
दमयन्ती ने मन मोहया न्यू मीठी वाणी कहके।
फेर राजा नलकी गिरन लगा आखों से पाणी बहके।।
शील सति मै तेरा पति मैं तेरे तप से डर ल्यूगा।।१।।
बिन आपस के मेल कदी होता नही गुजारा।
नावपार होजागी मिलके मिलजागा सही किनारा।।
तेरे कैसी सतियों का बुले दुनिया मे जयकारा।
सब दुनिया में रुक्का पडग्या तू जीती मै हारा।
घणा कहगी तो राणी मैं अब जीते जी मरल्यूगा।।२।।
गया आदमी हार जगत मे जीत हुई नारी की।
लगा लई छाती से नल ने भुजा पकड प्यारी की।।
ज़ुबे में दशा बिगड़ गई राणी नल छत्रधारी की।
तू है असली खुद ही समझले हरी भरी क्यारी की।।
भूखा मग फिरे है बण में क्यारी मैं खुद चरल्यूंगा।।३।।
बिछड़े हुये मिले थे दो दिल रग आनन्द का छाग्या।
सीलक हो गई काया में जब हाथ–हाथ में आग्या।।
भजन कथा में गाण का श्री सतगुरू ज्ञान बताग्या।
रघुनाथ ने गुरु मानसिंह जग मे राम बराबर पाग्या।।

आनन्द भाव भजन भगती से धर चरणो मे सर ल्यूगा।।

ओइम

असली सांगीत चन्द्रहास

भेंट दुर्गे जी की

दोहा– ओइम् अक्षर है आदि है आज आनन्दी आव।
हिरदे मै थाई माई बैठकर बुद्धि प्रबल बढावे।।
मैने सुमर लिये जगदीश
नत्थूलाल सतगुरु मिले गहूँ चरण निवाकर सीस।।

रागनी

जेजै ज्वाला कर उजियाला घरका ताळाखोल मेरी देवी।टैक
अपने जन पै किरपा करिये मात मेरे हाथ सीस पै धरिये।
हरिये दुखमन का मुझ निर्धन का अपणे जन का पारकरो खेवा
रहया चरणो मैं ध्यान लगा मै, माता तेरे देस की चाह मै।
सभा मै आइये छद बताइये कष्ट मिटाइये रोज करूँ सेवा।२
हुआ एक नौरगसाह सुल्तान जिसने बहुत किया अभिमान।
मे ध्यान लगाऊँ तेरे गुणगाऊँ भेट चढाऊँ पान–फूल–मेबा।३
बलवन्ती कली दे जोड, मेरे सै क्यूँ मात लिया मुख मोड।
तोड– दुखके खबे मॉता अम्बे जय जगदम्बे सबकी सुधलेवा।४

वार्ता- सज्जनों जिस समय के बीच मे करियल देश में राजा मेधावी राज्य करते थे उसी जमाने मे कुन्तलपुर मे राजा धष्टबुद्धि औरा चन्द्रावती मे राजा कालद्री ये दो राजा और मौजूद थे परन्तु ये दो राजा मधावी को कर देते थ।

राजा मेधावी चक्रवर्ती होते हुए भी बहुत दुखित था क्योंकि उसके कोई सन्तान न थी। एक दिन नारद मुनि दरबार मे आते है यहा राजा मेधावी को वरदान देते हैं कि तेरे एक ऐसा लडका होगा जब तक कवियो की लेखनी रहेगी तब तक मेरे पुत्र का नाम भावी बलवार रहेगा। कुछ दिनों के बाद मेधावी के लडका हुआ उसका नाम चन्द्रहास रखा। उधर राजा धृष्टबुद्धि क साथ राजा मेधावी का युद्ध छिडा और राजा मेधावी मारा गया और चन्द्रहास माता पति की लाश को लेकर सती हो जाती है। उधर धृष्टबुद्धि राज पर कब्जा कर चन्द्रहास के कत्ल की फिकर मे हो जाता है धाय चन्द्रहास की गोद मे लेकर उसके बचाने की फिक्र मे रास्ता बियावान का ले लेती हे

जवाब धाय का

दोहा – करण हार करतार के रग है अधिक कमाल।
कॅगले को राजा करै राजा को कॅगाल।।

रागनी

चन्द्रहास आस रघुवर की और किसी का सहारा कोन्या।
बियावान मै फिरूँ अकेली कोई समीपी प्यारा कोन्या।टेक
केला दिन पे दिन चढया करै थी प्रजा पैरो मै पडया करै थी।
जिनकै माया सडया करै थी मिलता टूक उधारा कोन्या।१
राज मैं बाबन तेरे जिले थे कुल दुनियॉ मै हुक्म पिले थे।
जिब पैदा हुया तेरे महल थे अब रणे को छान कोन्या।२
राम–प्रहलाद बचाए पलमै टटीरी के अडे राखे दलदल मे।
तै गजराल उभारया जल मै मेरा चन्द्रहास उभारया कोन्या।३
चली एक नगर दीखया सास्मी, कहे बलवत थमी नहीं थायमी।

तेरी रही भटकती नान्नी मानी, तू लेकेगोद पुचकारे कोनया।४

गजल

बिगड तकदीर जिब जाती ना कुछ तदबीर चलती है।
सगे भी सत्रु हो जाते, कि जब किस्मत बदलती है।
समझ मै आ गई अच्छी तरह से वो कथा नल की है।
बिपत बढती बिचारे की हार खूँटी निगलती है।।
समय बलिहार है तेरा तू जो चाहे करे सोई।
तेरी सतरज की चाल नई निसदिन निकलती है।।
छुडाई गोद माता की, पिता का प्यार किस्मत ने।
जुदा कर वतन सै अब न जाने क्यो मचलती है।।
बनाता रक को राजा भिखारी राव को करती।
वियोग यह सदा से यूँ ही दुनियॉ को छलती है।।

।। जवाब धाय का ।।

रागनी– या बालक कहॉ ले जाऊँ रोत्ती धढ चढ गी।
चन्द्रहास गोद मैं ले कै घर सै बार लिकड गी।टेक
भूख प्यास मैं बिकल हुई घिरगी सी आवाज लाग्गी।
किसी पेड के नीच्चे बैठक न्यू रात बितावन लागी।।
कधी रोलै कधा चुप हो जा गैया सी डकरावण लाग्गी।
सीने लाकै बच्चे को मन समझावण लाग्गी।।
तोड– किसकौ दोस देवै छड म्हारी किस्मत आग्गे आई।
चन्द्रहास तकदीर तेरी बिपता मै जनम रे ~~पाया~~+
कदी झपटा हो बेटे के सिर नीमा का तेल लगाया।।
बिजली चमकै बूँद पडै झट बूकक मे दुबकाया।
डर २ सारी रात बितादी फिरे दिन निकलता आया।
तोड– फिर चलणे की सुरत लगाई वा आग्गे को बढगी।२
कीच–गार मै रिपट पडे कधा हो ज्या खंडा सिमल कै।
पैरो मै छाल्ले पड गए लम्बी मजिल चल–चल कै।।
जाडडा हो रहया पॉलिलने पड गये पाक पड रहया ढल–ढल कै।
जब बालक रोवे तो मॉ चुप करती हल हल के।।
तोड– घणी थकी और पैर सूज गए काया तभी अकड गई।३
गिरती–पडती बैठती–उठती नगर के धोरै आई।
पहुँच गई उस जगह जहॉ पुलिस घूमती पाई।।
दहसत होणै लगी धाय को जिब सुमरे किसन कन्हाई।
बिन नत्थू के बलवन्त इब तो भगवान करै सहाई।।
तोड– कभी ऐशकरुँ थी राज घणा था म्हारा बण कै बात बिगडीं

।। जवाब राजा व कुन्तलपुर का ।।

जोकि मेधावी राज्य पर कावित थे
दोहा– जाणे वाला कौन है, कौण जिला कौण गामे।
आई हो किस ठौर से, कहॉ जाणे का काम।।

।। जवाब राजा धृष्टबुद्धि का ।।

रागनी– तेरे दीवाने के मॉह छीट लाग री पॉव सन रे गारे मै
बीर वावली कौण फिरै लिये बालक गलियारे मै।टेक
या नल की दमयन्ती नल का खोज लगाणो जा है।
या हूर मैन का विश्वामित्र का ध्यान डगावण जा है।।
या सत्यवान की सावित्री पति–प्राण बचावण जा है।
या रामचद्र की सीता लका मे आग दिवावण जा है।।
तोड– या घर सै लिकाडी पति नै उस बालक के बारे मै।
या सास–नण्द इसै कडवी बोलगी ऑखो मे नीर बहा री।
एक फटी चूँदडी सरपै दीखे जाड्ड सै गात लुका री।।
किसकी लडकी कौण नाम है किसकी राजदुलारी।
धीरै–धीरै पूछे मत्री इधर कहॉ को यूँ जा री।
तोड– परजात बीर ना छेडया करते नाहक घलजा म्हारे मै।२
बीर–बिरायी ना छेडया करते नाहक गल घल जा।
सारी दुनिया कहती आवै घडी टले बरसाते टलजा।।
पीच्छे–पीच्छे जाओ इसके जिब शहर नै दूर लिकडया।।
इसे न्यूँ कह दियौ तैनै क चहिय म्हारे राजके मिलजा।
तोड– तेरा बालक भूक्खा हो भाजन लयादूँ हो मेरे लार मै।३
होस–हवास उड रहे थे नाम क चल दरबारो मै आ गी।
पहचाण लिया धृष्टबुद्धि कौ झट देख तुरत घबरा गी।।
मेरे बच्चे चद्रहास करुँ क्या जान तरी इब जा गी।
पैर पकड लिये राजा के चरणो मे माथ टिका दी।।
तोड– रहम आ गया राव का ~~बलवन्त चली जा चौबॉरे मै~~।४

(रागणी)

बीर बावली कौण फिरे, ले बालक गलिहारे मै।
कपडो कै तेरे छीट लाग री पाऊँ सने गार मै।।टेक
शी बीस बरस की गोरी जागी कडै पसर मै।
जाडे सै कुल गात कॉप रहया लचका लगै कमर मै।।
ब्याहे पति नै आई छोडकै, आग लगाकै घर मै।
या किसी खोट पै त्याग दई प्रीतम ने थोडी उमर मै।।
तोड– या पीहर मै ऐब करया, चलया जिकर भाई–चारे मै।१
चद्रावती का नॉम खेत ब्रह्मा का दास दीखै है।
या कुँआरी कुती गेरन जा रही कर्ण पास दीखै है।
अगद बेट्टा मदोदर का हुआ नास दीक्खे है।।
मछोदरी को गोद्दी मै मुनि बीर ब्यास दीक्खै है।।
तोड– तू यहॉ मौज किरया किरये झॉकीदार चौबारे मै।२
होठ सूख रहे गात कॉप रहया अंखियॉ के मॉह पाणी।
सोन्ने की–सी झलक गात मै चुनरी फटी–पुराणी।।
यूँ सोच कै मुझै मतलब कधी लड पडै वीर बिराणी।
ढेर मार यूँ बोलया अरी सुणती या मर जाणी।।
तोड– मेरी तरफ लखाती क्यो ना क्या काटे गात म्हारे मै।३
कौण गाम की बेट्टी थी ब्याही कौण बगड मै।
य बालक लिये बावली क्यो फिरती जाडे–झड मै।।

किसके डर सै डरी फिरै तेरे लग्या धडकवा धड मै।
कहै बलवत बात तन–मन की बूझूँ झगड २ मै।।
तोड– राम रमामति सब मै रया रहै ज्यूँ यकतारे मै।४

रागणी

दक्खी बीरबान्नी मेरे कलेजे मै चोट लागी,
गोद के मॉह बालक ले रही हाल के लिखावे है।टेक
तलाब सै नार दौड री पति ब्याहे के भाग फोड री।
ओढरी दुलाई जिसपै चोडी गोट लगी जांण ना
पिछाण मेरी ढब लखावै है।१
कर्ज मिलने कू सेठ बुलारी बैरण डोब कारण मॅ तुलरी
खुलरी बिबाई पॉ काटो की खरोट लाग्गी चोर कैसी फेरी।
अन्धेरी रात मै लगावे है।२
सूरज कैसी सान परी मद मै भरी जवान।
लाग्गी आसा मॅ बुलगाइ कैसी सारस कैसी जोट लाग्गी।
सहज–सहज जोली देरी जावै चोरी तै बुलावै है।३
इब क्या बलवत सलाह आपकी शरण लई नत्थू बापकी
ना चाहा पाप की कमाई मेरी जावली मे रिपो लागी डूबी
हुई नाव गुरु कोढ पे टिकावे है।४

।। जवाब राजा का तर्ज राधेश्याम ।।

दोहा– दस्त–बस्त अर्जी करुँ होकर बहुत निढाल।
यह जो ऑख काढकै बोलला दीक्खे है कोतवाल।।
दीक्खे है कोतवाल मुझै डर लगता हुक्म सरकारी का।
कभी जेबडी का सॉप बनाकै ढग बिगाडै नारी का।।
मॅ चोर नहॅ बदमास नही ना या बात हया क्वारी कै।
बुरी टोट्टे की चोट लगी है इस करमो की हारी कै।

।। जवाब राजा का तर्ज राधेश्याम ।।

फिरती है किस कारन, बालक लेकर नार।
तेरे पति किस देश सै करते है क्या ब्यौपार।।
क्या करते ब्यौपार परी तू इकली घर से आई क्यूँ।
रहो गात कॉप और हॉठ खुस्क है चेहरे पर जरदाई क्यॉ।।
क्या तेरे पति को प्रीत नही तुझको मन सै दूर धरी
मुझै साफ बताओ कौन खतापै तुझे बियोगन मजबूर करी।।

ख्याल

धाय– ऐ मेरे महाराज पति परलोक सिधारे दुखिया के।
मेरे जितने देवर–जेठ रहॅ वे दुस्मन सारे दुखिया के।।
राजा– ऐ मेरी दिल जान ! सबर कर किसकारण बेहास हुई।
मै तेरी नौकरी ला दूंगा तू किस कारण खमोस हुई।।
धाय– ऐ मेरे महाराज मुझै तकदीर लिये फिरती बण मे।
मेरा बालक है मैं दुखिया हूँ दान्नो फिरते है दुर दिन मॅ।।

राजा– ऐ मेरी दिलजॉ ! तुझै मॅ महलो मॅ पहुॅचाता हूॅ
जहॉ इतने नौकर हॅ मॅ तेरी तनख्वाह धरवाता हूॅ
धाय– ऐ मेरे महाराज ! मुझै इब जाणे दो परणाम करुॅ।
सिर टेक दिया था चरणो मॅ बलवन्त तेरा नाम करुॅ।

रागणी राजा की

मुझै दोस का भागी करती पैरॉ मॅ सिर धरके।
बालक नै पुचकारण लग गया लोई भीतर करकै।।टेक
मॅ कोतवाल नहीं तुझै बन्द कर दूॅ हवालात मै
मै कुन्तलपुर का राजा हूॅ मेरी घणी जान बात मै।।
यूॅ याणा बालक कहॉ जिडाया माया लाल रात मै।
तुझै रोती देख दया आ गी मरे उठै झाल गात मै।।
तेरे करडाई के दिन टलगे क्यूॅ रोई हिडकी भरकै।।१
मरयादा नहीं छोडया करते करडाई के घेरे मैं।
चांद सूरज भी गहजॉ इस गरदिस के फेरे मैं।।
दुख–सुख दो सागर रहते तन रुपी डेरे मैं।
तू इन बातों को छोड़, चाल कर मौज महल मेरे मै।।
तेरे दिन कटजयॉं बालक पलज्या के आग लगावै घर कै।।२
मेरे इतने दास और दास्सी रहैके तेरी एक जानभारी है।
बडे लाड–चाव सै रक्खैगी मेरी दयाबान नारी है।।
क्या तनख्वा लेगी साफ बता इब तू क्यूॅ सरमारी है।
मेहनत मैं कोई ऐब नही दुनियॉ कहती आरी है।।
पेड नाण मैं ताण सदा जो बन्दा ऊपर नै सरकै।।२
सेर पिंजडै मैं घिरया आलम अलसेटी करकै।
बाज पकडता है उडते को अपणी रुह टेडी करकै।।
तू मन्शा पाप करण लागी मालया बट्टी करकै।
ले तेरा मिटा दूॅ पाप तुझै मै राखूगा बेटी करकै।।
कह बलवन्त बदी नेक्की का इन्साफ चुकैगा हरकै।।४।।

जवाब धाय का

दोहा– बहम दूर हुया नार का चली महल की ओर।
समय फिरा रहा रात–दिन, ज्यूॅ पतग की डोर।।

रागनी

चली रे महल मैं लई आस मिटा मेरे गात का विस्वास।टेक
खेडे बसो दयावान् के हे मेरे राम
बणा दिया गरीबणी का भी काम।
नाम धरया तेरा लाडले मेरे चद्रहास मिटया गात का विस्वास।।१
चली महल मैं चॉंद–सी तस्वीर,
मेरी लियौ राम–राम हमसीर।
आज मिलया तकदीर सै रणवास मिटया मेरे गात का विस्वास।।२
जितने दास–दास्सी होरे सुणो बात,
लगायौ ना काम कै कोई हात।

टहल करुँगी दिन–रात मै सबकी दास मिटग्या गात का विस्वास ।३ ।
जहॉ थी राणी राव की गई डरती
लाल कू चरणो मै धरती ।
सेवा करती खास जावली के मिटया गात का विस्वास । ।४

जवाब राणी का

रागनी– या नवी पहावणी बिना जाण की दो पीड्ढा गेर बगड मै
दुख–सुख की बतलायन लाग्गी नार बैठकै जड मै ।टेक
कौन गाम किसकी छोरी है, कहॉ ब्याही किसकी है ।
के बालक की मॉ होरी है न्यू बूज्झूं झगड २ मै ।१ ।
तरे देवर जेठ, जिठानी कैसी सासू नणद दौराणी कैसी ।
चुन्दर फटी पुराणी कैसी, के दुख नार सुघड मै ।२ ।
प्रीत करो ना तुझसै गाढी, मरो लोग जिन्है घर सै काड्ढी ।
दैकै एक फटी से साड्ढी, काड्ढी जाडे–झड मै ।३ ।
म्हारे महल मैं मौज उडाइये बालक पलजागा जिब जाइये ।
कहै बलवन्त रामगुण गाइये इतने सॉस रहै धड मै ।४ ।

गजल

तेरे हर सॉस से पुरदर्द सदा आती है ।
तीर नमक की तरह दिल मै चुभी जाती है
मौज दरिया पै ना झूलो तुम किस्ती वालो !
सामनै देख लो तूफाने हवा आती है । ।
बाद मैनोशी के जब होस मै आओ साहस !
देख लो सीस उठा कै खून की बू आती है
वियोगी आज हम यह साफ सखुन कहते है ।
आह गरीबो की कभी ये बडा रँग लाती है ।

जवाब धाय का

दोहा– मै दुखिया जन्म की रतन कौर मेरा नामै
ये बेश भगत बेटा मेरा बनकै रहै गुलाम । ।
रागनी– मैं ना पीडे पै बैठणे लायक,
तलैनै ऑख राखलै अपणे दास्सी कहकै हे मगल बोल्ली ।टेक
मै नही नाट्टू तेरे काम नै चाहे तरवा लिए मेरे चाम नै ।
सामणे ना बोल्लूं ना गेरुँ कहया बडा दुख सहया दया कर
भूक्खी प्यास्सी पै करकै बहू छैल वाली । ।१ ।
दास और दास्सी मतलब की मेरे सै कर दे गात गजब की ।
सब बात लिये रोज ताड, झुका रही नाड कधी राड जरासी
करकै लडै गैल वाली । ।२
टोट्टा बेट्टा बेट्टी बिकवा दै, जामै के करादै । सिखा दै सब
काम जगत् मैं भूक, करम की चूक, टुक दिया सेल्ला दास्सी करके, रहूँ टहल वाली । ।३
कहै बलवन्त रट्या कर राम, काम नै छोडा शाम । नाम
तेरा रतनकौर अनमोल, ना करुँ मखौल बोल नही बोल्लूँ
हॉस्सी करकै, ना पहल वाली । ।४

गजल धाय की

ना मैं किसी की ऑख का नूर हू ना किसी के दिल का करार हूँ
जो किसी के काम ना आ सकूँ मै वो एक मुश्ते गुबार हूँ
मेरा वक्त मुझसे बिछड गया, मेरा रग रुप बिगड गया
जो चमन खिजॉ से उजड गया मै उसी की फसके बहार हूँ
कोई मेरे मजार पर आये क्यो मै बेबीस का मजार हूँ
ना वो बलबले ना वो हसरतें ना वो बायदे है ना मुसर्रते
जो नशे की जवानी के थे चढ उन्ही मै नशे का उतर हूँ

जवाब रंगचार का

दोहा– इसी तरह से रात–दिन, होने लगी गुजरान।
बारह साल का हो चला, चन्द्रहास गुणवान।
चौ॰– चन्द्रहास गुणवान रात–दिन रहता मगन भवन मै
खेल–कूद कर आता था माया के पास छन–छन मै।।
एक दिन गोली खेल रहे थे बच्चे कुछ ऑगन मै।
इनमै मिलके हार गया, उल्टा आया महलन मै।
झड– जहॉ बैठी महतारी कहा हुई हार हमारी।
मुझै मॉ पैसे लाओ।।
बच्चो के साथ खेलूँगा मत नीच्चा मुझे दिखाओ।।

जवाब माता का

काफिता–सुनकै बात लाल की तन मै अग्नि हो गई जारी।
मुझै न्यूँ दुनियॉ कहा करैगी कर दिया चन्द्रहास जुआरी।।
मुझे मत शक्ल दिखाइये हाकै जा आवै अत्याचारी।
बोल झिला कोन्या।।टेक।
मॉ मै ऐसा ही खेल खेलूँगा राम रमापति मेल मेलूँगा ।
झेलूँगा दुख तन पै न्यूँ आवे है मन पै मुझ निर्धन पै।।
फौज–किला कोन्या।।
गल दिया राम आसरा लेकै फटया कुरता ऑसुओ सै भरकै।
चलया देकै कूक, लग रही थी भूक दो दिन से टूक
मेरे राम मिला कोन्या।।२
आज भगत उभारन वाले, धुर को पार उतारन वाले।
सारन वाले काज, मेरी राख लाज चाहे मार आज
मुझे तेरा गिला कोन्या।।३।।
करत सुमरन खडइकत बजाता बीण आ रहया सत।
बलवन्त पुजारी, हे कृष्ण मुरारी आस तुम्हारी,
छोल हिलया कोन्या।।४।।

जवाब नारदजी का

दोहा– किसका है तू लाडला क्या तेरा नाम।
आया है किस खूट सै तू ऐ प्यारे गुलफाम।।
गजल– आये थे जैसे जग मे वैसे ही जा रहे हो।

जीवन के दिन सुनहरी वैसे ही बितारहे हो।
हमजोलियॉ मै खेल हॅस–हॅस के दिन बिताये।
अब उसी हॅ के बदले ऑसू बहा रहे हो।।
बचपन को पार करकै जोवन का बाग देखा।
जब गुलची बन रहे थे अब खार ले रहे हो।।
एक बारगी खिजॉ नै सारी बहार लूटी।
जब कर सब न कुछ भी अब तिलमला रहे हो।।

जवाब चन्द्रहास का

का–सुण नारद की गुणबाणी एकदम कॅवर चरणॉ मै गिरग्या
आज मै हार गया लडको मै इसलिए आपकी तरफ फिरग्या
मुझे वरदान जीतने का दो न्यूँही मेरे नैनो मे जल झिरग्या

जवाब नारद का

हाथरस– सुण राजा के बाल चन्द्रहास तेरा नाम।
उदय भाग तेरे हुए ये ले सालगराम।।
य ले सालगराम तुझै भवसागर पार करैगा।
जब तुझ पै भीड पडै तेरा उद्धार करैगा।
लडके जितने तेरे भाग खुलैगे सार करैगा।
तीन साल के बाद तुझै कहीं सरदार करैगा।
झड– इसे ले कॅवर खिलारी करो नगरी की त्यारी।
आज है विषिया की शादी।
तुझै भी जाणा मुजै भी जाना दूर की बात बतादी।।

जवाब चन्द्रहास का

दोहा– चरण कमल मै आपके दीना सौप शरीर।
पार किया ससार सै, मै कॅगला गुरू पीर।।
दीन शरणागत आया है।।टेक
रब तो मै आ ही गया शरण आपके धार।
निज सुत के नाते किया मेरा खेवा पार।।
बहुत दुख मैंने पाया है।।१
घलै यल विद्या तुम्हीं, आम विस्वास।
निर्बल के बल आप हो मै करकै आया आस।।
ठिकाणा कहीं ना पया है।।२
चरण भूलकै चल दिया, मेधावी का लाल।
लडके जितने नगर के, जीत लिये फिलहाल।।
जीत कर लाया है।।२
करी मात सै प्रार्थना कर पहले प्रणाम।
लड्के जीते नगर के, ये ले सालिगराम।।
बियोगी माथ नवाया है।।४

।।जवाब माता का रंगत देवचन्द चौबोला।।

दोहा– नूर चश्म जखते जिगर ऐ मेरे फरजन्द।

किसके गम मे मुबलता हो आये दानिशमन्द।।
चलता होकर दानिशमन्द लाल गलफत सै होस करो तुम,
नौ बजकर गई बीस मिनट चल खाणा नोश करो तु।।
फिर जाणा दरबार लाल इब धौलै पोस करो तुम।
विषिया की शादी होगी इब तोले पोश करो तुम।।
रागनी– कगली का भेस तेरा तू होकै लाचार खडा रहिए।
आज स्वयवर विसिया का बण पहरेदार खडया रहिये।।टेक
जितने राजा आवै बेटटा सबकी श्यान देखिये तू।
रिसि महात्मा ब्राह्मण की कुछ शक्ति ज्ञान देखिये तू।
सब माणस देखिये तू बण खिदमतगार खड्या रहिये।।१
बुरा काम मत करियो बेटटा कहणा मान महतारी का।
वा लगे दाग ना छुटे छुटाया चोर बणै गिरधारी का।
हरदम बखत बिताणा चाहिए नीचापण लाचारी का।
बुरे करम सै डूब गया एक बेटटा था गधारी का।।
अपणे द्वार प्यारी का बण पैरोकार खडया रहियौ।।२
वो ही पार उतारै जग मै जो इन चारौ से दूर रहे।
काम क्रोध मद लोभ त्याग दै भक्ति के मॉह चूर रहे।
कर्म–प्रधान कर्म सै पदवी मिलती सदा जरूर रहै।।
जो दस इन्द्री रहै कब्जे मै मन पाणी मजबूर रहै।
दरबार लगा भदपूर रहै तू ही होसियार खडया रहिये।।३
मन मारै और ममता त्यागे वोसदा सच्चा सत रहे।
दया धर्मले धरै सांति विसियॉ मै सदा इकन्त रहै।
तेरी रोक–टोक नहीं रहै जगत मे जो भगवती के पत रहै।
दोन्नॉ बखत धरै ध्यान हरी का तजता खोटटे अन्त रहै।।
तेरा गुरु बलवन्त रहै तू ताबेदार खडया रहिये।।४

जवाब रंगाचार का

दोहा– उधर कॅवर दरबार का बण चलया ढयौढीवान।
इधर नगर मै आ गये, नारद जी गुणवान।।
का०– स्वयवर किया भूपति ऐसा जैसा जनक यिसाको करैंगे
देस और गैर देस के राजा विसियासै भाव पिया का करैंगे
उधर नारद जी गात्ते आये बेडा पार रियासा का करैगे

जवाब राजा का नारद जी से।।

रागनी– चरण–कमल मै झुक गया राजा लो प्रणाम हमारी।
बडे भाग कुन्तलपुर के जो फिर गई महर तुम्हारी।।टेक
भूत–भविश्य और वर्तमान थारे तीन्नौ काल हाथ मैं।
सात दीप नौ खंड कलस सृष्टि का मोल हाथ मैं।।
मात्थे तिलक त्रिपुण्ड थारे बीणा खडताल हाथ मै।।
करी आरती नारद जी की लेकै थाल हाथ मैं।
सकल आत्मा विष्णु के दे सदा परजा हितकारी।।१।।
दुःखी सुखी भूक्खे नंगे सब राम राम कहते हैं।
जहाँ ब्राह्मण के चरण पडै उसे स्वर्ग–धाम कहते हैं।

जहॉ ब्राह्मण के चरण पड़ै उसे स्वर्ग–धाम कहते हैं।।
अद्भुत लीला ब्राह्मणों की रिग–यजु–साम कहते हैं।
तीन आचमन करकै पी गये सागर का जल खारी।।२।।
जो ब्राह्मण का करे निरादर उसकी मूर्खताई।
इसी बात पै याद एक द्वापर युग की आई।।
यदुवशी दुरवास्सा घोरे बण के गये थे लोग–लुगाई।
एक पुरुष की औरत कहकै रिसि की हसी उडाई।।
कपिल मुनि के सराप से मरे सगर पूत अहकारी।।३।।
अढसठ तीर्थ वहॉ रहैं जहाँ ब्राह्मण बाणी हो री।
दुनियॉ दारी के झंझट सै खैचा–ताणी हो री।।
मै दु:खी मेरा कुटुम्ब दुखी दुख मै मेरी हाणी हो री।
बिसिम नाम दुलारी का घर बेटटी स्याणी हो री।
कौण देस मैं पति बसै बलवन्त बतादै सारी।।४

जवाब नारदजी का

दोहा– सात दीप का ताल है, जिस लडके के पास।
वो तेरी डयौढी पर खड़े, तेरा दामन है खास।।

रागनी रंगत खास

राव– वो लडका उत्तम घर का आज कगाल फिरै।।टैक
कभी था मालिक दुनिया के धन का।
आज उसै तोडा रहता अन्न का।।
कधी था बच्चा बब्बर का आज घिर्या जाळ फिरै।।१
वो ही तेरी लडकी का भरतार है।
बणैगा दुनियॉ का सरदार।।
सर पै पंजा ईश्वर का धर्म की चाल फिरै।।२
जा जॉच करो लड़के का।
और इन्तहान करो लडके का।।
राव– इधर का और उधर काहाथ मै माल फिरै।।३
कहै बलवन्त बड़ा सुलतान।
जाओ करो जल्दी कन्यादान।।
फेर कहया बैठ भजन कर हरका सीस पै काळ फिरै।।४

जवाब राजा की

दोहा– डयौढ़ी पै राजा गये, देख्या चन्द्रहास।
इसने नारद सै कहा, रे हो गया विसवास।।
झूलना दोनों का।।
लडके कू देखकै लग गई आग बदन मै।
सोचा इसनै नारद सै कही भवन में।
मुझै पति बता विषयाका सोचकर मनमै।।
चन्द्रहास– लिया देख कुँवर नै क्रोध राव को भारी।
डर गया समझ कर कोई खता हमारी।।
जाणै किस्मत अब कब लगै हुकम सरकारी।

राजा– राजा नै कुँवर पटक दिया धरती पै।।
तेरे टुकडे करकै इभी बाँध दूँ अरथी।
नालायक हँसणी कहाँ काग को भरती।।
चन्द्रहास– महाराज बताओ खोल खता जो होगी।
मै नमक आपका खाया अशरत भोगी।।
इब कौण से जुर्म मैं मुझे बणा दिया रोगी।
राजा– लगे कहने तैंन्ने इज्जत मेरी तारी।।
विसिया के साथ – मैं शादी करूँ तुम्हारी।
जल्लाद बुलाकै ल्हास गेर दूँ थारी।।
चन्द्रहास– अख्त्यार आपकू छोडो चाहे मारो।
मै दुखिया हूँ मेरा धड से सीस उतारो।
मेरी बिसिया के सग कौण बदी बिचारी।।
राजा– तैं बिसिया के संग करणी चाही साददी।।
इसी खता पै फॉसी की सजा सुणादी।।
इब उसै बुला जो हो तेरा इमदाददी
चन्द्रहास– मेरा इमदाददी है नरसी का गढवाला।
मरा इमदाददी है भाँग–धतूरे वाला।।
मेरा इमदादी है दुनियाँ का रखवाला।
राजा– जल्लाद इधर आओ पकड पाजी को।।
दो सिखा सबक इसे इसक बाजी का।
और ले चलो साथ इसके दुखके साझी को

जवाब चन्द्रहास का।।

रागनी– तेरी लात गात मै राजा दर्द कुढाला करगी।
मै अपणे आपसै नहीं आया मॉ डयौढी वाळा करगी।टेक
ये कह दिया भेज मात नैं इतना कहण बजाइयो रे।
जो कोई आवे दरबारों मैं तू सबको सीस झुकाइयो रे।
जूँठी पत्तल ठाइये रे, मुझै यूँ रखवाला करगी।।१।।
क्या खता हुई मुझ निर्धन की जो आय सताया राजन।
मैं जाणूं मेरा जाणै परमेस्वर ना माल चुराया राजन।
उस भगवान की माया राजन, देश–निकाळा करगी।।२।।
टोटटा खोटटा होवै जगत मै कहते जिसे कगाली।
कित जाऊँ मेरा नहीं ठिकाणा जान मरण मै आली।
विसिया की प्याली मेरी तो जान का गाळा कर गी।।४।।
कहै बलवन्त लात जिब लाग्गी तळै जमीन पै गिर गया।
मतना मारो हे राजन! मैं बिन मारे ही मर गया।
सारा लाड बिखर गया माता दुख दाळ में काळा करगी।।५।

जवाब जल्लाद का

हाथरस–अन्नदाता पिरथवी नाथ कू बन्दे का प्रणाम।
हाजिर खिदमत मैं हुया आकै तेरा गुलाम।।
हाजिर तेरा गुलाम भूप जी किसकी कजा पुकारी।
जल्दी लाओ मेरे सामणै जो मुलजिम सरकारी।

टूकडे-टूकडे करूँ दुस्ट के मारूँ तेज कटारी।
खीचूँ पकड जबान दहन सै भूल जाय मक्कारी।।
झड- मेरे सामनै लाओ, मुझे इब हुकम लगाओ,
इभी सीस उतारूँ स्वामी।
नमक हलाल आपका नौकर खडा आज हो साहमी।।

जवाब राजा का

दोहा- मिलणा-खाणा-पीवणा पाजी का किया बन्द।
फॉसी घर लेजा इसै, गळे मै डालो फन्द।।
बहरे तबील
इसै फासी पै ले जाकै जल्लाद तू,
मार पाजी को छोडो कसर ही नही,
मेरी इज्जत गई मेरी हशमत गई
मेरे दिलपै सबर का असर ही नही।
मैने बच्चा सा पालया इसै अपने घर
इसै पाळैगा कोई बशर ही नही।
मेरा खाकै नमक मेरी लडकी बरै
इसके दिलपै हवाका असर ही नही।
इसकी मॉ को मेरे घर सै निकाल कर
उसके छोडो कपडा बदन पै नही।
कहै बलवन्त करणा मुझै माफ सब
मै जाणूं जनम वो नसर ही नही

जवाब चन्द्रहास का

जल्लादो के हाथ सौप दिया घणा करमा का हेटटा करकै।
बिन खेता क्यूं मारण लागे बेवारिश का बेटटा करकै।टेक
जा होत्ता साहूकार का बाळ तुम कौण थे हाथ उठावण वाळे
तड्प तडप कर मरा करै गरिब्बूं का वस मिटटाण वाळे।।
हिरनाकुस और कश कहॉ गए वो रावण वाळे
साठ हजार सगर के सर गए अपणे कू बडा बतावण वाळे
आनन्दपाल चले गये ले गई मौत ससेटटा करके।।१।।
दुनियॉ धोक्के की टटटी, फना का एक बहान्ना रह गया।
मरणवाळे हाथ थामलै एक काम और बताणा रह गया
नौ महीने रहाथा मॉ के पेट मै उसका जबर उल्हाणा रहग्या
इकलौत्ती का बेटटा मरजया, फेर मॉ का कहॉ ठिकाणा रह गया
जिब काळी बदळी उठा करैथी, घर मै लुको ले थी जेटठा करकै
गरीब आदमी जीवो पर दुनियॉ मै अराम कहॉ है।
एक बात अजमाणी रह गी मेरा सालगराम कहॉ है।।
मेरी मॉत जिब न्यूं पूच्छेगी मेरा चन्द्र गुलफाम कहॉ है।
ऊँची पड-पड कै टाहवगी बच्चे की हड्डी चाम कहॉ ह।
मेरी मॉ कू मेरी ल्हास दे दिया दिल अपने न ढेट्टा करकै।
मारन वाळे हाथ थाम लै ऑख काढ कै क्यूं मुझै डरा रहया
मै तो भाई आदम देह हूँ कीडे नै भी रै जी हो है प्यारा

मेरी आकै खबर वो लेगा जिसनै हिरनाकुस कू मारया।
एक भजन मै नत्थू लिखगे सकर नै सागर कू तारया।
बलवन्त ध्यान हरी सै धरलै पाप का मळिया मेट्टा करकै ।४

जवाब धाय का

रागणी– चन्द्रहास चाद सा चेहरा लाग्गी देक्खण कोटठै चढकै।
आज बेबारिस के बेटे नै, ले गए जल्लाद पकड कै ।टेक
कोई कान पकड रहया था सुत के कोई बैंत पटकारया
ए मेधावी! मारणे वाळे तेरा छिपणे कू चल दिया सितारा।।
एक लाल था बुढिया के आज वो भी पकडया जा रहया।
मेरी सुलगती धुणी सी यूँ लाद चल्या बणजारा।।
बेट्टे उप्पर टोट्टा भला, घर सै बाहर लिकड कै ।१।
साहूकारों के भाग भले, निर्धन का माल खपै है।।
सारी दुनियॉं देख लई सब तरह कँगाल खपै है।
कुन्तलपुर मैं बिना खोट मेरा सुत बेकाळ खपै है।
के जीणा उस मॉं डायण का जिसका यूँ लाल खपै है।।
बेट्टे बिना महल सून्ने खा पाड–पाड कै तडकै ।२
अ। री लुगाइयो दौडी आ इयो मेरे बालक नै छुट्वाइये।।
कोई रस्सी ढिल्ली करवाइयो मत सुत का गळा घुट्वाइयो।
थारी राट्टी पोई थारे बालक राक्खे मेरे सुतके प्राण बचाइयो!
पहाड सै भारी बोझ बाहण का रळ–मिलकै उठवाइयो।
केळ बरगी गोभ कँवर दिया मार कुहाडी जड कै ।३
कुन्तलपुर मै बेटटे का दम बिना कसूर लिकड ग्या।।
मेरी एक ऑंख मै तारा था आज उसी का नूर लिकड गया।।
कहै बलवन्त हुई जब घायल कोठठे तै नीच्चे पडकै ।४

जवाब धाय का

टेक– तू क्यो दिल मे घबरा री मुझै पाणनेवाळी।
जिब कजा आण लगी तू कौण टालणे वाळी।।
रागनी कली– शिव–दधीची–हरिश्चन्दराव से करकै दान चले गये
हिरनाकुश–बाणासुर–रावण कर कर अभिमान चले गये।
भामाशाह और कारू शाह जैसे धनमान चले गये।
दुरयोधन और कर्ण द्रोण भीष्म ऐसे बलवान चले गये।।
तोड– भामासुर और बली लारका गाल बजा गए ठाल्ली ।१
कली– जिब ऐसे ऐसे बली चले फिर हम तुम कौण बिचारे।
क्या ताकत जल्लादो की जो बिना मौत मुझै मारै।।
मालूम हो जा गी चन्द दिनों में कौण जीत्तै कौण हारै।
उसे कौण मारणे वाळा जो हो हरि के सहारे।।
तोड– वो ही मदद करैगा मेरी जो गऊओं का है पाळी।।२
कली– माता–पिता–सुत आज्ञाकारी मनु भरत से भाई।
पांचो कन्या दसो पुजारी अष्ट कुनी ना नाता।
अडसठ तीर्थ सिद्ध चुरास्सी पाँच तत्व के दाता।।
त्रिगुण वेद सदा सुखदाई तीनों के गुण ज्ञाता।

तोड–   जो करमो पै डटै रहै उनका नाम रखवाळी।३
कुन्तलपुर के राजा सै फिर क्यूं मै डर जाऊँ।
मुझै बखश दूध दे रुखसत माता चरणो शीश नवाऊँ।।
रख याद बात आज की मेरी तुझै फिर भी दर्श दिखाऊँ।
खुलया स्कूल जावली मै जहॉ सै मै सदा गुण गाऊँ।।
तोड–   गुरुद्वारे मै नई–नई रगत द्विज बलवन्त पै आ ली।४

जवाब चन्द्रहास का

लिया पकड हस का बच्च जल्लादो नै।
महाराज आज मेरी कौण सुने फरियाद।
उसकू आवै रहम मेरा जिसकै होगी औलाद।।
कोई जाकै कहदो हाल मेरी मैया सै।
गया मल्लाह आज मझधार उतर नैया सै।।
बछडा बिछ्डा है आज मात गैया सै।
अटकी गाडडी गया धुरा निकल पहिया सै।
महाराज मेरी मैया सै मुझे दियो मिलाय।
नौ महीने पेट मैं कुछ भी कह सका नाय।।
लेकर मुझै जल्लाद चले है बन मे,
फॉसी की सजा कम रही राव के मन मै।
मुझै करवात्ते कत्ल आज ये छिन मै,
माता की ढब उठती झाल बदन मे।।
मेरी मइया तेरा बेट्टा है लाचार।
सुपने तुझसे मिललूं और लेऊँ चरण चुचकार
इतनाक हता हुआ जगल मै आता है।
जल्लाद कटारी नगी दिखलात्ता है।
पर दिल मै ना दहशत खात्ता है।
हमकू धरम पै मरणा ही आत्ता है।
मेरे यार करो मत जल्लादो तुम देर।
मै हाजिर मेरी गर्दन हाजिर झट मारो शमशीर
इतनी कह कै गया लडका लेट धरण मै।
बेवारिस का लडका अब के कसर मरण मै।।
भगवान बॅधाओ धीर मैं आया शरण मैव।
अहिल्या तारी जो लग रही धूल चरण मै
मेरे यार तेरा क्यूं कॉप रहया गात।
जल्लादूं के हाथ मैं सौंप दिया मै बाल अवतार
तेरा हाथ कॉपता रोम खडी काया मै।
ऐसा ढग तेरा अजब यार पाया मै।
मुझै मार देर मत लगा शरण आया मै।
बलवन्त मत फॅस इस मोह–माया मे।।
मेरे यार आज कहॉ है सालगराम।
नारदजी नै दिया मुझै यू तेरे सुधारे काम।।
स्तुति चन्द्रहास की कृष्णमुरारी से।।
रा०–   अति दीन जाणकै करो अनुग्रह हे ब्रजराज मुकटवाळे।

ब्रज–बनिता रोकै टेर रही रख ब्रज की लाज मुकटवाळे।
हमे कष्ट सहन करते–करते गये घणे दिन बीत मुकटवाळे।
शुभ कर्म–धर्म की हार हुई पाप की जीत मुकटवाले।।
तेरी गउे रात–दिन कटण लगी ये कैसी अनरीत मुकटवाले।
यह हाल देख भारत माता गाए गम के गीत मुकटवाले।।
तोड– यूँ सत्य–अहिंसा धर्म का छूट गया रिवाज मुकटवाळे।।
वसुदेव देवकी यशोदा के कब भाग खुलैंगे मुकटवाळे।
कब काळीदेह मैं जाकै नाथ नाथोगे नाग मुकटवाळे।।
शिशुपाल मार कब रुक्मणीं का करोगे अटल सुहाग मुकटवाळे।
कब दुर्योधन की मेवा तज खाओगे बिदुर के साग मुकटवाळे
तोड– कब धर्म को सच्चा रक्खोगे स्वर्ग का ताज मुकटवाळै।।
श्लोक सात श्री सीता के अध्याय चार मुकटवाळे।
तैने अर्जुन के सग आणके कर लिया इकरार मुकटवाळे।
तोड– तेरी गोवै रोती देख चकित तेरा सडया समाज मुकटवाहे।
तेरे रूप अनेक कोई करैगा क्या उनकी तहरीर मुकटवाहे।
कही अजर–अमर कहलाता है कही धरै सरीर मुकटवाळे।।
कही पूजा करते मन्दिर मै तेरी धर तस्वीर मुकटवाळे।
तैने द्रोपदीजी का सभा बीच किया अनत चीर मुकटवाळे।।
तोड– कहै दीनदुखी जो तू कल आत्ता तो आइए आज मुकटवाळे।

वार्ता- सज्जनो इसके बाद धाय प्राण त्याग देती है।

जवाब जल्लाद का (नजम)

मेरा नशा भी होता रहे होता रहूँ बरबाद मै।
जेल मै औलाद हो और बाप हो फरियाद मै।।
कत्ल कर सकता नहीं बेटा तुझे मै छोड दूँ।
तेरे बदले खुद मरूँ तेरी हथकडी मै जोड दूँ।।
आशियॉ मै आग लगाके क्या मिला सैयाद को।
कैद मै रक्शा सदा बुलबुले नौशाद को।।
आपका गर खून मॉगा राव नै दरबार मै।
चीर कर अपना कँवर हाजिर करूँ सरकार मै।।

वार्ता- ये बात राजा कालद्री सुन रहा था। चद्रावती रहने वाला था वो। विष्ञया के स्वयवर मे गया। मार्ग मे जल्लाद चद्रहास को लिए मिल जाते है। तो राजा ने सोचा इसकी जान कैसे बचाऊ। मगर वे खुद ही उसे छोड जाते है। अब राजा लडके के पास जाते है।

जवाब कालंद्री

रागणी– देखकै हालत लडके की नैनो ऑसू भर गया।
चन्द्रहास लिया गोद मैं घोडे सै तळै उतर गया।।टेक।।
किसी दुखिया का लाल तू बेटटा बतलादे नहीं घबराना।
कौण खता पै बांध लिया जल्लाद तुझै बतलाना।।
नहीं देक्खा जाएगा मुझ पर किसी का फसाना।
गोळी भरली जल्लादों पै लगा तुरत निशाना।।

फिर यूँ बोलया इन्हैं जब मारूँ दिल मैं ख्याल न्यू कर गया।१
पहलै पूछ लूँ इस से और तन की खाल देखलूँ।
हे भगवान इस दुनियाँ मै ओडडा इसी ओडडे सै लाल देख लूँ
केसी सुन्दर सक्लका है लडका उठाकै लख्त चाल देखलूँ।
पीछै करदूँ राजतिलक दो एक-दिन हाल देखलूँ।
चन्द्रहास कू बैठा घोडे पै झट लम्बे पैर पसार गया।।२।।
स्वयम्बर मे जाणा भूल गया चल वापिस घर पै आग्या।
तत्ता पाणी करवाय रावने फिर चन्द्रहास को नहवाया।।
कदी पुचकार कदी गले लगावे हो! मत रावे मेरी माया।
मेरा सोत्ता भाग उदय होग्या मैन्ने मुस्किल सै बेटटा पाया।।
गोद्‌दी पर बैठाये कँवर कू ताज सीस पै धर् गया।।३।।
इधर खुशी हो रहा राजा उधर हाथ सै डोर लिकड गई।
एक रोज सुपने मैं धृष्टबुद्धि सै नीच्ची गरदन पड गई।
आंख खुली तो देख रहा था कैसी सिरपै गर्दिश चढ गई।।

गजल राजा की

क्या ही रहमत के उडा बदी बदख्वाच कां रग।।
जम गया दिल पै शोख सितमगर का रग।
शरीकद गुन्चादहन आइना रुखसार का रग।।
पास जल्लाद के जब चॉद-सा बच्चा देखा।
खून ना कभी छुपाये ये कही छुपा है।
हशर मै देगा शहादत तेरी तलवार का रग।।
फितने अर्श सीखा है ये आफत की रविश।
गर्दिशे चर्ख ने सीखा तेरी रफ्तार का रग।।
हजरते दाग का शागिर्द हू मै ऐ हैरा।
हसर मे देगा शाहदत तेरी तलवार का रग।।
फितने अर्श सीखा है ये आफत की रविश।
ग्र्दिशे चर्ख ने सीखा तेरी रफ्तार का रंग।।
हजरते दाग का शागिर्द हू मै ऐ हैरा।
हसर मे देगा शाहदत तेरी तलवार का रग।।

जवाब चन्द्रहास का

रागनी- सर पै ताज गात मै चोगा हाथ मै कटार देख्या।
गात मै पसीन्ना आ गया घोडे का सवार देख्या।।टेक
मै बालक दुख मोटे वाळा सुन मेरा बोल दिसोटटे वाळा।
इस दुनियाँ मै टोट्‌टे वाळा ना जीणे का हकदार देख्या।।
जो कोई आवै ठोक्कर मारै यूँ टोट्‌टे का सत्कार देख्या।।१
मै बेटा हूँ बिना बाप का के धन हर लाया आपका।
पिछला कर्म मेरे पाप का, न्यूँ करता बेकार देख्या।।
न कुछ खता बताई ऐसा जालिम सरदार देख्या।।२
कुन्तलपुर के दरम्यान करूँ था मै दुखिया की गुजरान।
विषिया का तोमान लगाकर करता घर से बाहर देख्या।।
मशा पाप करी बेटटी सै लॅगडा सरदार देख्या।।३

अपनी कहदी सारी कहाणीरो पडया चला नैन सै पाणी।।
कहै बलवन्त मात भवानी तेरा भरया हुआ भडार देख्या।
तेरे सिवा कौण दुनियॉ मै मतलब का ससार देख्या।।४

जवाब राजा का

राधेश्याम– चन्द्रहास का हाल सुन कॉपा गात तमाम।
जा राजा तेरा नास हो खपा दिया गुलफाम।।
खपा दिया गुलफाम राव झट गोद कॅवर को ठात्ता है
और मार ऐड बछेडे कै चन्द्रावती की ढब आत्ता है।
पीच्छै जाऊँगा कुन्तलपुर पहलै इसकू घर ले जाऊँ।
बेटा करके पाळूँगा इस और राज–ताज सर धरवाऊँ
औलाद कोई नहीं थी मेरे ईश्वर ने ये फरजन्द दिया।
चन्द्रमा जैसे चेहरे पै रॅग सुरखी नै नौचन्द दिया।।
लेकर लडका घर आया कुरसी पैर उसे बिठाया है।
तू धर्म का बेटटा है इतनी कहकै रुक जाता है।।

जवाब राजा धृष्टबुद्धि का नौकर से

राधेश्याम– प्रात काल महाराज नै जाय किया दरबार।
सिहासन पर बैठकर बुलवाया पहरेदार।।
बुलवा करकै कहा कि चन्द्रावती को ले जाओ तुम।
मेरा तीन साल का कर बाकी पाई पाई भुगताओ तुम।।
गर उजर करै तो साथ–साथ पैगामे जॅग सुणा देना।
जहॉ किला बण्या ताल खुदै यह साफ साफ बतला देना।।
जाओ फिटफौर चले जाओ और लाओ पकड हरामी को।
गर नाटै तो तुम साथ साथ ये खबर पहुँचाना स्वामी को।।

जवाब पहरेदार का

रागनी– चला मस्ती मैं मस्ताना झट हो घोडे पै सवार।।टेक
आग्या ले गया हुक्म सरकारी बजाकर लाता आग्याकारी,
जहॉ कालिन्द्री हॅकारी उससे मै कहदूँ सब समाचार।।१
करै हैं कालन्द्री नै चाळे आज सिर दुसमन चढे कुढाळे।
पहुँच गया जल्दी मतवाला जहॉ कालिन्द्री का दरबार।।२
खडा यूँ ऍठ बीच मस्ताना दिया झट रो॰ से परवाना।
कहा कि मेरा राजा मरदाना लस्कर करणे लगा तैयार।।३
राव मैं नौक्कर दोन्नॉं ढब का जमाना देख्या मतलब का।
गाणा मेरा गजब का है न्यूँ गुणियो का ताबेदार।।

जवाब चन्द्रहास का

दोहा– खत लेकर भूप का नौकर कू बुलवाय।
कहा क्रोध मैं कुँवर नै क्या होणी गई आय।।
रागनी– कह दिये गद्दी पै राजा चन्द्रहास है।
विषिया का पति तेरा जमाई खास है।।टेक
कहॉं है तेरे राजा का ख्याल जमाई का खाणे लगा माल,

इतना नीच महिपाल कह दिया कहॉ विस्वास है।।१
क्या वो डरता नहीं मरणे सै थके ना पाप घडा भरणे सै
नीच कर्म करणै सै सारे कुल का नास है।।२
सुणा दिये साफ खोलकै भाई कर नही देवे तेरा जमाई,
जिब ब्याहवे विसिया जाई कर दूँ पूरी आस है।।३
दिया खत उल्टा हलकारे को लिवाकर लौटगा म्हारे को।
जावली द्वारे को समझूँ स्वर्गवास है।।

जवाब चन्द्रहास का पहरेदार से

रागनी- गात के मॉह पसीना आगया सुणकै बोल सिपाही का
राजनीति मै कहाँ लिख्या है खाणा माल जमाई का।टेक
सुन राजा के ड्यौढीवान् भूप का दुरूस्त नही ईमान।
खाये लूट-लूट महमान दान ना करया कदी पाई का।।१
जुल्म प्रजा पर करता है घडा अनर्थ का भरता है।
वो नही मरणे सै डरता है दावासब कर खुदाई का।।२
जाकै कह दो तुम सरे आम ना देणे कू मेरे पास छदाम।
यहॉ तो सिर्फ राम का नाम नास हो जालिम अन्याई का
मुझे तेरा है विस्वास नत्थू हो गये जावली खास।।
जिनका बलवन्त सदा से दास उच्चारण करै कविताई का।।

जवाब नौकर का

काफिया-सुणकै बात गातमै लगी चला क्रोध मे भरकै।
ये लडका मेधावी का भाई पैदा हुआ दुबारा भरकै।।
दे दिया खत उल्टा राजा कू सामणे चरणो मे सिर धरकै।।

जवाब राजा का रगत आल्हा की

खत बाचा जिस दम नै एकदम लागी बदन मे आग
हुक्म दिया झटपट राजा कू एकदम उठे जैसे कोई नाग।।
चलो सिपाही मेरे सग मै चन्द्रावती का दो खोज मिटाय।
करी सवारी दे पुचकारी वाह रे बछेरे तेरे कहणे क्या।'
एकदम चढा भूप हाथी पै और वो नौकर भी लिया बुलाय।
चन्द्रावती के धोरै पहुँचे और पहले दिन मै लई जॅवाय।।
मै मिला लूँ पहलै राजा सै देखूँ कैसा ढॅग है आज।
गया राव झट दरबारो मै बैठा जहॉ चन्द्रहास महाराज।।
लडका देख अन्धेरी आगी है ईस्वर ये तूने करदी क्या।
ये वो लडका है जो मेरे घर था मै अब इसे छोडू नाय।।
इतनी सोच राव नै पहलै अपणा लीना क्रोध छुपाय।
कही राव सै ये लडका किसका है महाराज दे बताय।।
मै इसको बेटटा मानूँगा बिल्कुल झूठ बोलता नाय।
इतनी कहकर मरदाने नै वो गोददी मै लिया उठाय।।

जवाब कालन्द्री का

दोहा- ये लडका है आपका, इसे सरण लो भूप।

गिर जा बेटा चरण मैं समझ राम का रूप।।
काफिया-रावजी ये लडका तेरा राम नै दिया आपके घर मै
इसे कर लेकर के भेजूँ था आज से पहलै नेम करमै,
मुझै मारो चाहे छोड दो देणे आने लग रह्या कर मैं,

जवाब राजा धृष्टबुद्धि का

का०- दिके राजन माफ करा कर तेरा, जो इसै भेज्जो कुतपुर मै
ये खत मदनसेन को दे देणा, जो मेरा बेट्टा घर मै।
लिख दिया खत मैं विष दे देणा, मुसाफिर आवै नजर मै।।

जवाब चन्द्रहास का

रागनी- मदनसैन कू चिटठी दे दूँ बात मान के तेरे वाळी।
कुन्तलपुर को चाल पड्या था लम्बी चाल बछेरे वाळी।टेक
पड्या कंधे पै चाद्दर का जोडा दहने हाथ मै रेशमी कोडा
ठन-ठन करकै चमका घोडा खुल री हाठ ठठेरे वाळी।।।
कही का कहीं गया घडी स्थान मै सफर तै कर दिया रात
सेळी-सेळी लग रही गात मैं परवा बाळ सबेरे वाळी२
मोर चाकर पै सूरज निकलया सुन्दर बाग नजर मै पड गया
खटका छोड बागमें बड्ग्या करकै निगाह लुटेरे वाळी।।३
आळस आ छोरे नै जा है नीद बैरन धोरे नै आ है।
नॉगल के गोरे नै जा है कृष्णा नदी कडेरे वाळी।।४।।

जवाब विषियाका

दोहा- सखी सहेली बीग मै चलो टहलणे आज।
सुस्ती खो दी बदन की, चेतन करलो साज।।
चबोला- चेतन करलो साज किलफ लाके लट पे।
देखो किस तौर रँग छाया घटा पै।।
बल कै सखी सैर करो बाळीपण की।
सुस्ती और कुफल दूर हो जा मन की।।
गजल- क्या सुहाना वक्त ईश्वर कू सुकर हर बार है।
हर तरफ सरशब्ज खेती और चमन गुलजार है।।
क्या चमकती जोर सै बिजली कोहन मेरी मेहर।
दीखता ये जान लेने का मुझे आसार है।।
बुलबुल चहचहा रहीं गुलशन तमासा देखकर।
कुमारी हॉ करकै फिदा करती वा जॉ निसार है।।
आ गई गुलशन में जिस दम देखती महबूत को।
सोचती ये कौन है या इस्क का बीमार है।।
बैठकै नजदीक देख्या एक लिफाफा जेब मै है।
पढ लिया मजमून कुल समझी मेरा भरतार है।।

जवाब विषिया का सखियों से

राधेश्याम- हटो सहेली दूर सब मत बुलवा कुतवाळ।
परदेसी घणी दूर का दिक्शै बहुत निढाळ।

दिक्खे बहोत निढाल बहण तुम हट कै बात करो सारी।
कधी कच्ची नींद उचट ज्या इसमा सहज मै बतळारी।।
चिटठी पढी लिखा जिसमै बेटटा तुम मेरे मदन सुनो।
बिस दे देणा इस लड़के कू मरदाने मारू मदन सुणो।।
लडकी समझ कै चन्द्रहास और मेरे बाप नै पाप करया।
ये मेरे पिता नै लिखा मैं दुस्मन आज सै बाप करया।।
एक लडकी स्याणी लगा राखी झट टहणो सै वो काढलई।।
दिया कागज उल्टा फटकमै और आप चली रनवास्सों मै।
भगवान बचाणा मेरापति मै आज लगरही तेरी आखों मैं।।

जवाब चन्द्रहास का

दोहा– ऑख खुली लडका उठया झट पहुँचा दरबार।
जहॉ कचहरी मदन की, करता नेक जुहार।
का कॅवरनै खत लडके कू दीना कहा तेराबापका परवान्ना।
मै चन्द्रवती सै आत्ता हूॅ नहीं रस्ते मै किया ठिकाणा।।
मुझै उल्टाखत लिख दीजो जो मुनासिब मुझको हुक्म बजाणा

जवाब मदनसेन का

झूलना– खत पढया कॅवर नै जिसमै लिखा भाई।
इसे विषया दे देणा बेटा छैल सिपाही।।
य तेरे पास भेळूॅ हूॅ कर चतुराइ
चन्द्रहास– कहो राजा इसमै क्या.मजमून पढया है।
जब सै रग कुछ चेहरे पर और चढया है।।
कहो कैसी मरजी कैसा काम बढया है।।
कहो कैसी मरजी कैसा काम बढया है।।
मदन– मैं पण्डित कू बुलवाकै ब्याह कराऊॅ।
अच्छा लडका लडकी से जोग मिलाऊॅ।।
विषया बीबी को दुल्हन बना कपड पहनाऊॅ।
चन्द्रहास– समझ चदहास मेरा ब्याह लिखा राव नैं।
वो समझा नहीं बैरी के असल दॉव नै।
जिसे राम बचावे कोई कहो बुर भाव नै।।

जवाब रंगचार का

राधेश्याम– बुला विप्र को कॅवर ने दी सादी करवाय।
विषया के फेरे दिये काफी धन लुटवाय।।
काफी धन लुटवाय बहन कू न्याया महल बणाया है।
अब उधर दुष्ट राजा वो भी अपणे घर आया है।।
देखा वो लडका जीता है और बेट्टी का भरतार बणया।
मैं रॉ बैटाऊॅ बेट्टी कू तलवार उठा मक्कार बणया।।
बुलवाकै चार जल्लाद देबी मन्दिर मै भेज दिया।
जो सबसे पहलै आवै वहॉ करो कत्ल हुक्म ये भेज दिया
फिर चदहास को बुलवाकै कहा जाओ मन्दिर पुजवाओ,
मैं बिदा करूंगा कलको तुम ये रस्म अदा करकै आवो।।

लडका मन्दिर को चलया साथ कजा हुई थी त्यार।
पर जिसे बचावे रामजी भाई है दुस्मन लाचार।।
है दुस्मन लाचार उधर राजा का लडका मदन चलया।
और साथ बहणोई के होकै शुद्ध बदन का मदन चला।।
मन्दिर के निकट कँवर जी नै कहा चन्हास बहणोई सै।
तुम बाहर रहो मैं जाता हूँ देखूँ तर खुशबाई को।।
यू कदम मदन ने ठाया थाझठ हाथ उठा जल्लादो का।
कर दिया फैसला लडके का ल्हाश तडफता नाशादो का।।
हटा चन्दहास उल्टा जल्दी और उधर भू भी आते है।
बेट्टे को देखा मरा पड्या दामाद को जिन्दा पात्ते है।।
झट ज्ञान हुआ उसे कुदरत का विष देत्त विषया मिली इसै।
उसै कन्यादान मैं राज दिया सुख–दुख झेलया विसया मिली इसै
मजमून यही पै खत्म हुआ चन्द बिसयाका अन्त हुआ।।

गजल खुशी का गाना

गम यार न हो साकी पैमाना हुआ तो क्या हुआ।
मासूर शराबो से मय खात हुआ तो क्या हुआ।
जब दर्द न हो दिल मै क्या इश्क मजा देवे।
हम इश्क के बन्दे है मजहब के नही कायल।।
गर काबा हुआ तो क्या बुतखाना हुआ तो क्या।
इस इश्क की आतिश से जलते हे सभी यारो।।
गर शमॉ हुई तो क्या परवाना हुआ तो क्या।।

हकीकत राय

दोहा– आदि सुमर गणे । कौ फिर सरस्वती का ध्यान।
मुझ मूरख नादान को सुध बुध दीजे ज्ञान।।
लोक– गुरु ब्रहमा गुरु वि णु गुरु साज्ञात महे वरम
गुरु रेव परो ब्रहमा तस्मै श्री गुरुवे नम ।
दोहा– हे गगे भागीरथी स्वर्ग मोक्ष की है धाम।
रघुवीर ारण गुरुदेव को मेरा बार–बार प्रणाम।

।।आरती गणे । ाम कल्याण।।

सुख करयो दुख हरयो गौरी पुत्र गणे ।। टेक।
व‹ तुड सब सुख के दाता मु ाक वाहन करो विधाता।
नर नारी करे थारी पूजा प्रथम हमे ा।१।
जिस पर आनन्द हो तुम प्यारे तैतीस करोड देवता सारे।
बास करे वास हरैं वि णु े । महे ।।२।
ऋि मुनि जन करति गावे योगि वर नित ध्यान लगावे।।
तन मन का का दुखी जन का काटो तुम्ही क्ले ।।२।
इ ट देव रघुवीर ारण के लक्ष्मी चण्द नित दास चरण के।
भक्ति का ाक्ति का तेरे सन्त करे उपदे ।।४।

।।राम कीर्तन।।

श्री राम जय राम जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम ।टेक।
पितु आज्ञा से बनको सिधारे राम दैत्य सघारे और भक्त उभारे राम श्री राम जय राम जय जय राम ।१।
भिलनी के बेर प्रेम सेखा ये राम भक्त जटा उने तेरे गुणगाये राम
श्री राम जय राम जय जय राम ।।२।।
जगजननी की बंध छुडाई राम भक्त भभी ाण की बलि तैलगाई
राम श्री राम जय राम जय जय राम ।।३।।
करुणा के सागर करुणा आके रघुबीर करो
ि य लक्ष्मी तेरा सेवक की पीर हरो।
श्री राम जय राम जय जय राम ।।४।।

वार्ता- सज्जानों धर्मवीर हकीकत राय का•मुख्य वर्णन निम्नलिखित है। इनके बाप का नाम भागमल माता का नाम कोरा स्त्री का नाम लक्ष्मी जाति से खत्री थान स्यालकोट। इसकी आयु ११ व र्ा की थी यह स्यालकोट के मकतब मे पढता था। बाल उम्र में ही इसकी ादी कर दी गई थी। इसकी पत्नी को आये हुये केवल एक सप्ताह हुआ था इसके बाद का किस्सा स्यालकोट के मकतब मे दो हिन्दु लडके पढते थे। हकीकत ओर ई वरचन्द हकीकत पढने मे सब लडकों से चतुर था। एक रोज मुल्ला नमाज अदा करने चला गया मुसलमान लडके खेलने लगे किन्तु हकीकत अपने पाठ को बराबर याद करता रहा। मुसलमान लडको ने सलाह कि आज हकीकत को पाठ याद मत करने दो। सब हकीकत के पास गये और उसे खेलने पर मजबूर किया। किन्तु हकीकत ने कहा यह मकतब का समय है मैं बिल्कुल नहीं खेलूँगा। फितरत ने कहा कि यदि तुम हमारा कहा नहीं मानोगे तो तुम्हे अपनी जिन्दगी से हाथ धोना पडेगा मै नहीं खेलूगा कसम हे दुर्गा भवानी की। हकीकत की इस बात को सुन कर कहा कि हरामजादी तेरी दुर्गा भवानी और हरामजदा तू। इस बात को सुनकर हकीकत को वेध आ गया और फितरत से कहा–

।। जवाब हकीकत का।।

दोहा– गन्दी बाते कह रहा क्यो हुआ न ो मे चूर
मुजको हीणा जानके कितना हुआ मगरुर

।। तज बावले की ।।

रा०– ओ पापी नीच हराम जरातू ताला ठोक जवान में। टेक
बात तेरी बेहुदी पर बे है पाप की गठडी ना सर पै धर, ई वर अल्ला है एक ही नाम,
हिन्दु मुस्लिम जाति फरक इन्सान मे ।।१।।
खोटा घडा पाप का भरणा, बुरी बातो से चाहिए डरना, करना चाहिए सदा ऐसा काम,
लगे प्यारा सबने बीर जहान मे ।।२।।
बणा पागल ना बात विचारी, पुस्तक मेरी फाड दी सारी, थारी कह दूगा बात तमाम,
श्रावण दे जरा मुल्ला जी के कान मे ।।३।।
लक्ष्मीचन्द करी तने ढेरी बस इतनी बात भतेरी मेरी दुर्गा के लिये जो कलाम,
वोही तेरी बीवी फातमा की ान मे ।।४।।

वार्ता- इस झगडे के बीच मे मुल्ला नमाज अदा करके आ जाता है। मकतब की द ा देखके लडको से पूछा क्या झगडा है। किन्तु सबने एक जबान होकर कहा हकीकत ने रसूल जादी को गाली दी है। जब हकीकत से पूछा तो उसने बीता हुआ सही हाल कह सुनाया। मगर मुल्ला को तै ा आ गया उलटा दो ी हकीकत को ठहराकर हुक्म दिया।

।।जवाब मुल्ला का।।

रागनी– इस काफर के दिल की दूर अब सारी गन्द करो,
बाध जूड कै कोठडी मे जलदी बन्द करो ।।टेक।।
इसे पकड लो देर करो ना अल्हा के प्यारो,
एडी से लेके चोटी तक की सभी खाल उतारो,
हन्टर मारो इसके गीत में, मन आनन्द करो।।१।।
एक दोजखी रीस करे है स्वर्ग नसीन की
देख लो कितनी मोटी हिम्मत नीच कमीन की
हतक दीन की पाबन्दी मे इसे पाबन्द करो ।।२।।
दूर सफाई से हटता और चिपटे गदगी से
इसे नमस्ते प्यारी है और नफरत बदगी से
इस जिन्दी से सदा सदी से इसे निरद्वन्द करो ।।३।।
इतनी देना मार इसे जो खबर पटे धुर की,
के गाणा रगवीर रण जिसे खबर नही सुर को
सत्त गुरु की सेवा तन मन से लक्ष्मी चद करो ।।४।।

।। जवाब हकीकत का।।

वार्ता- मुल्ला ने तो दीन इस्लाम का फतबा उसके सर पर रखकर कोठरी के अन्दर बन्द करा दिया।

जवाब हकीकत तर्ज (देख तेरे संसार की हालत) फिल्मी रागनी-

मारपीट के बेदर्दी से मेरे जूड दिये हाथ

मान जाओ मत गेरो हवालात ।।टेक .
मै समझू सब थारी चाल ने क्यू चुटो मेरी खाल ने
चोर डाटता कोतवाल ने कैस गजब की बात ।।१।।
कैसी बढ २ बात बनाते अपन किय पै ना रमाते
हमको काफर बतलाते खुद करो कुभर कमजात ।।२।।
म्हारी सुनता कौण दुहाई थारा राज और थारी खुदाई
बेदर्दी से करी पिटाई नीला पड गया मात ।।३।।
लक्ष्मीचद सब स्याही मलदी मेरी नाव भवर मे चल दी
ई वरचद खबर दो जल्दी जहा पिता और मात ।।४।।

वार्ता- ई वरचन्द जो हकीकत का साथी था घर आकर कोरा को सब हाल बताया और कहा चाची मेरे मित्र को जल्दी छुडाओ।

।। जवाब कोरां का ।।

रागनी- बेटा करा हवालात मे बद सुणके मन घबराया
एक भोत मे टक्कर मारी तुरन्त तिवाला आया।। टेक।।
मेरे हकीकत लाडले मै कैसे रे तुझे बचाऊ
जो तन फासी आयी रे बेटे मै बिन मारे मर जाऊ
तेरी माता हुई रे बावली किस विध तने छुडाऊ
छेक कालेज मे होगे सन्हे जाके किसे दिखाऊ
के रचदी भगवान मेरे सग भेद नही कुछ पाया ।।१।।
जिनके खुद रघुनाथ रुसजॉ उनका कोण हिमाती
लाख जतन करो हाथ न आव जो समय हाथ से जाती
होणी है बलवान जगत मे कोयना पार बसाती
हाय मुल्ला तने तुलम करे मेरी फट २ आवे छाती
आधे बरगी लकडी थी या टाटे बरगी माया ।।२।।
चारो नौरते करु तेरी पूजा दुर्गे मात भवानी
किसी तरह से तुही बजा मेरे बच्चे की जिन्दगानी
उसके बदले मे चाहे मुझे कितनी दो परे ग्नी
उस दुख ने मै समझूगी अपनी कहू जवानी
तो०- जिसकी हो औलाद दुख मे भला किसने सुख पाया ३
सास की आवाज सुनके तुरत बहु भी आली
रोती रोती कोरॉ ने फेर बहुछाती से लाली
अब बचनी दु ावार तेरी नाव भवर मे चाली
कैसे करे सन्तो । लाडली घणी उमर की वाली
लक्ष्मीचद हर चाही जगत मे ना होता मन का चाहा ।।४।।

वार्ता- अपनी सास का रोना सुनकर लक्ष्मी जो हकीकत की बहू थी वह भी आ गई और पति को इस भाति बन्दी सुनकर रोकर सास से कहने लगी।

जवाब लक्ष्मी का तर्ज (पापी पपीहा रें) फिल्मी

रागनी- मैया री मै हूँ निरभाग मेरा लुट गया सुहाग ।।टेक।।
जल बिन मीन तडफे ऐसा मेरा तडफे जिया

जणे कोण कर्म किया प्रभु ने जो दड दिया
खोटी घड जन्म लिया बालेपण मे लग्या दाग ।।१।।
यवनो की बात हाय किसी पैना जागी मोडी राम मेरी किस्मत फोडी बात या करी ना थोडी हस वाली बिछडी जोडी खु ा हुये काले काग ।।२।।
सुणते हो स्वामी उसकी जिसने तेर गुण गाये
नगे २ पैरो धाये य ोदा के खास जाय
भिलनी के बेर खाये भक्त का अलूणा साग ।।३।।
काटणा जरुरो उसने जैसा कोई बीज बोवे
लक्ष्मीचन्द व था टोहवे लिखा तो कर्म का होवे
दुखिया दिन रात रोवे सुखिया तो गावे राग ।।४।।

वार्ता- कुछ देर के बाद भागमल भी आ जाता है उसने भी अपने पुत्र को बन्दी बना सुना महान क ट हुआ फिर अपनी वधु व पुत्र वधु को समझाया अगले दिन हकीकत को काजी की कचहरी मे पे ा किया गया पेरवी के लिये कोरा व भागमल भी गये। किन्तु अपने पुत्र को खडा देखकर कोरा एकदम काजी के सामने पहु जाती है ओर भिखारन बनकर भीख मागती है।

।। जवाब कीरां का तर्ज प्रसिद्ध जिगरी ।।

रागनी– खुदा नाम पै माग रही मै ते आज तेरै से दान
बख ा दे रे काजी लाडलै के मेरे प्राण ।।टेक।।
सोता हुआ लाल कभी खाट से जगाया नही
इसके बिना टुकडा मै अकेली ने खाया न ही
एक ही है आस मेरे दूसरा कोई जाया नही
ओर से के डर के मारे ठन्डे मे न्हुवाया नही
ताड– माटी के माह मतना मिलावे मेरी चन्दा बरगी ान ।।१।।
सभी को जगत से जाणा सदा नही डेरा है
इसके बिना घर मे मेरे घोर अधेरा है
दो दिन से ना कुछ भी खाया भूक्खा लाल मेरा है
बालको के लिये दड इतना ही भतेरा है
तोड– बणकै भिखारण भीख मागरी मै तू मेरा भगवान ।।२।।
सोचिये समझिवे मन में इतना जो ा करे
खता हुई दोन्नू ओर से एकले पै दो ा करे
घर पै बहू बैठी मेरे कैसे वा सन्तो ा करे
देखी नहीं जाती मुझसे ऐसा भारी रो ा करे
तोड– काहे खात्तर जुल्म करे तू भी दो दिन का महमान ।।३।।
कफस की सत्ताई बुलबुल सुणिये तू फरियाद भाई
दिल है रन्जूर मेरा इसे करदे ाद भाई,
कर जा आबाद मुझको तू भी हो आबाद भाई
छाती ऊपर हाथ टेक तेरे औलाद भाई
तोड– सेवक बण के लक्ष्मीचन्द मे लिया गुरु ज्ञान ।।४।।
वार्ता– कोरा की बात सुनकर काजी ने कहा हिन्दू देवी तेरे बेटे का बचने का एक ही उपाय है कि वह मुसलमान बन जाये, दूसरा कोई नहीं किन्तु हृदय ने मान लिया कि बेटा बचेगा नही इससे अच्छा तो मुसलमान बन गया तो मेरी नजर के सामने जिन्दा तो रहेगा। लडके को समझाती है।

।।जवाब कोरां का।।

तर्ज (सारी सारी रात तेंरी याद सताये) फिल्मी

रागनी– मानजा हकीकत मेरी रात आखो के तारे
आखो के तारे और गम के सहारे। दुखियॉ के प्यारे आड मे रह की बैरी मारे है लपेटे।
बणजा मुसलमा तू किस्मत के हैट्टे।।
तोड– मिलते नही है बेटे प्राण उधारे दुखियो के प्यारे ।।१।।
तू जीवे तो मेरी आत्मा ठडी।
दिल के ये पत्थर होरे कट्टे पखडी।।
तो– धोली दिखारे झन्डी सारेस कोरे रे दुखियो के प्यारे ।।२।।
अखियो के बीच छाई अन्धेरी
सुण सुण बाते इनकी द ा बिगडी मेरी।।
तोड– जो हो गये तेरी जान के घारे रे दुखियो के प्यारे।।४।।
ज़ान या बचेगी बेटे होजा इनके रुख मे।
हमको भी सुख मिलै तेरे ही सुख मे
तोड– लक्ष्मीचन्द म्हारे दुख मे दुखी है बिचारे रे दुखियो के प्यारे ।।४।।

।। जवाब हकीकत का तर्ज काया पलट जिगरीं ।।

रागनी– मरण दे जननी फिकर करे मत मेरा ।।टेक।।
त्रू जित रितु ध्वज सागर से महीपाल हुये
हरी चन्द महादानी त्रि कू के लाल हुये
रावण जैसे महायोधा जिनके बस मे काल हुये
बडे बडे योधा प थ्वी ऊपर दिन रैन हुये
अ ट भी म बारा विकरम चार चित्रसैन हुये
बावक जनक ब्र ज्ञानी ६ चकवे बेन हुये
ताड– तू ही बतादे कौण रहा री सदा गाड के डेरा
सूर्य उदय से लेके अस्त तक के राज कहा
करै थे पखेफू छाया उनके बता ताज कहा
रा स औतार जननी क ण जैसे आज कहा
पापियो.को दड माता प्रभु ने आखीर दिया
उसी पै न्यौछावर मेरा जिसने यु रीर दिया
धर्म हेतु मोरध्वज ने अपना बेटा चीर दिया
तो.– मै मर गया तो समझ जगत मे अमर नाम हो तेरा ।।२।।
कग्गो की जमात मै री हसी का ना साज मिले
हिन्दू धर्म छोडने से खुदा की समाज मिले
धर्म नही त्यागू चाहे त्रिलोकी का राज मिले
अधर्म का ना । जग मे धर्म की तो जीत चाहिये
धर्म से कल्याण सबका धर्म से ही प्रीत चाहिये
अर्थी चाल्ले सजके मेरी धर्म के गाणे गीत चाहिए
तो.– प ुओ से भी तले मनु य जिसे नही धर्म का बेरा ।।३।।
जणे कितनी बार मरे कितनी बार पैदा हुये
लाखो बार जन्म लेके फेर भी अलहेदा हुये
कितनो से बैर किया कितनो पै दा हुये
जणे कितनी बार माता इन्द्रियो का भाग लिया
बहुत बार मगन हुये बहुत बार सोग लिया

ूरबीर राजा बन गये जोगी बनके जोग लिया।
तो॰– आनन्द हो रघुवीर ारण का दिन का ूर अंधेरा ।।४।।
वार्ता- जब हकीकत ने मुसलमान बनाना स्वीकार नहीं किया तो काजी ने मौत का फतवा कामयाब कर दिया अगले दिन वह मुकदमा मिर्जा अमीर वेग के दरबार मे पहुचता है, भागमल व कोरा भी पैरवी के लिये जाते है और ाहर के बहुत से आदमी भी उनके साथ पहुचते है।
रागनी– सेठ भागमल संग मे कोरा मन मे करके सोग चल,
उनके पीछे २ सज्जनों बहुत ाहर के लोग चले ।टेक।
ऊचे टेक दी बात जरासी हासी मे होगी गल फासी,
चहरे ऊपर छाई उदासी, दीन दया के योग चले ।२।
रज गातनै नितप्रति झोरे है प्रभु लुट गये कल्लरकोरे,
मानो किसी वैद्य के धोरे वे कटवावण रोग चले ।२।
जो मान ा हो हया ारम के वे ही पाबन्द दीन धरम के
लिये जन्म के किये करम के आप भोगने भोग चले ।३।
लक्ष्मीचन्द जरदी छागी ऐसी चोट जिगर पै लागी
या दुनिया से बने बैरगी लेन कहीं बे जोग चले ।४।

वार्ता- मिरजा अमीर वेग से हकीकत से पूछा, क्या तुमने बीवी फतवा को गाली दी है। हकीकत ने मकतब का सच्चा हाल कह सुनाया, जब मिर्जा जी ने सुना तो काजी से कहा कि मामले की ुरुआत मुस्लिम लडको ने की और दुर्गा को गाली, अगर हिन्दू लडका गुनहगार है, तो इससे पहले मुसलमान लडका गुनहगार है। काजी ने कहा आपने तो रि वत ले ली और क्या न्याय करेंगे। तब मिर्जा जी ने हकीकत के इरादे की जाच के लिये कहा कि तू मुसलमान बनजा हकीकत ने उत्तर दिया

ोर– अमर जिन्दगी हो मेरी तो मुसलमान बन जाऊ मैं
गर ऐसा नहीं हो सकता क्यो व था धर्म गवाऊ मैं।
कुदरत ने मुझसे धोखा किया पीट रहा हू यो सर मैं
मुसलमान करना था उसे क्यो पैदा किया हिन्दू घर मे
इतनी हिम्मत ना मेरी जो तेरी दुख्तर को ब्याहू
एक को तो दुख देके चला हूं इसको सुख पहूचाऊ
वार्ता- जब मिर्जा के हर लालच के सामने लडका नहीं झुका तो उसे पक्का समझते हुये मिर्जा ने अपने यहा अन्याय करना उचित नहीं समझा। उस मुकदमे को लाहौर हाई कोर्ट नवाब के पास भेजता है और अपनी चार तजवींस लिख कर मुलजिस मुकदमा दोनों को भेजता है।

।। अमीर वेग को तजबींज ।।

रा॰– बहुत से लालच दिये लडके को, एक चली ना तदवीर
मिरजा वेग न तंग होकै फेर ठाई कलम आखीर ।।टेक।।
उल्टा फातवा धरें मेंरे पै बात कहू जिसको
कट्टे हुयें बेईमान सभी समझाऊ किस किस को
इतनी मोटी सजा दूं इसको कहता नहीं जमीर ।।१।
भुखे माता–पिता हैं जिन्दगी नैं खावे
करते दोनों विलाप रात को रंज में ना सोवैं
बुरी तरह ये दौन्नू रोवें बहै नैन सै नीर ।।२।।
काजी धमकी देते ारह की इनकी भी बजा
मुझे खुदा का डर लगता मेंरे भी सर पे कजा

इसे मौत की दे दू सजा कोई मिलती नही नजीर ।।३।।
जुल्म करे रघुवीर वही जो मानस बेदर्दी
लक्ष्मीचन्द कहे लिखकै फैसला कलम तुरत धरदी
थारे हाथ मे सुपर्द कर दी अब इसकी तकदीर ।।४।।

वार्ता- भागमल और कोरा रात भर विचार मे रहे, भागमल ने कहा आज हम और तुम मुकदमे की पैरवी के लिय लाहौर चले जायेंगे बाद मे बहु किसके सहारे रहेगी इसलिए इसे कुछ समय के लिये इसकी मा के पास भेज दो और समझाकर इस बहु को डोले मे बैठा दे, कोरा लक्ष्मी के पास जाती है और प्रेमपूर्वक समझाती है।

।। जवाब कोरां तर्ज (धूल का फूल फिल्मी) ।।

रागनी– तू चालीजा पीहर नै धर धीर नै, हाय गम के सफर में तेरे लिये विश्राम ना री इस पापी घर मै ।टेक।।
सुखिया मानस कभी रोता ना री
जिसके दरक पैर वो साता ना री
होता ना दुख सहन री गई चैन री कहा फोडूं सर मैं ।।१।।
फूल अधूरा टूट गया है
पाप करम हमे लूट गया है
फूट गया है तेरा भाग री लगा दागरा तेरे वाली उमर में ।२।
रीत भात तें कुछ ना जानी
पडे सभी नैं ठोकर खानी
पानी हो गया गातका इस बात का कहू किसे जिकर मैं ।३।
लक्ष्मी चन्द इस नर चोले में
मानस तग हो वक्त ओले मे
डाल में अब चल बहु मत हल बहु धर नीति हर में ।।४।।

वार्ता- अपनी सास के समझाने पर लक्ष्मी डाले में सवार होकर अपने पींहर को जाती है।

।। जवाब लक्ष्मी तर्ज (नगरीं नगरीं द्वारे द्वारे) ।।

रागनी– रोती रोती चली लक्ष्मी कर के सुरत निभानी
सबर का मुक्का मारा पेट मे भरा आख मे पानी ।टेक।
बिना पति मेरा बेडा धारो धार बहया है
ऐसा दुख ना पडियों किसी पै जैसा मने सहया है
कौन से जन्म का पाप दहया पडी मुसीबत ठानी।।
हे भगवान सदा भक्तों की आके हडो पीर नै
लाज बचाई द्रोपदी की तारै थे दु ट चीर नै
बाल उमर में कठिन बीर नै ऐसी चोट निभानी ।२।
एक बर आके हालत म्हारी देख यही पै साजन
मै तो यहा तडफ रही तुम दुखो वहा पै साजन
तेरे बिन जणे कहां पै साजन पडेगी ठोकर खानी ।३।
एक दरोगा जमींदार और सग मै चार सिपाही
खु ा होता वो वीर चला था तबियत ना घबराई
मात्र भूमि से होके विदा लाहौर की पकड़ी राही
लक्ष्मीचन्द का भी रह गया केवल आधार नमस्ते।४।

वार्ता- हकीकत राय और लक्ष्मी की मुठभेड ाकोट से बाहर निकलते ही हो जाती है। अपने पति को देखकर लक्ष्मी

एकदम हकीकत की और दौडती है किन्तु हकीकत ने आने से मना कर दिया, फिर दरोगा के कहने से हकीकत और लक्ष्मी की बात आपस मे होती है।

रा०- ओ छोडके जाने वाले सज्जन एक सुनता जाइये बोल मेरा
तेरे बिन हम कैसे रहे बरबाद हुआ बिल्कुल डेरा।टेक।
एक के मरते ही सब मर जावे साजर है या बात सही
कौन से जन्म की करनी अचानक गल घोटा और आन दही
मै कई दिन से पिया तडफ रही ना कुछ भी पता चला तेरा
पति का कर्तव पत्नी के लिये पहला पालन पो ाण है
मरे लिये मेरी किस्मत का उल्टा मो ान है
दुनिया की दिवाली रो ान है और मेरे घर मे अधेरा।२।
पिता भ्रात के मरने से पहर की बन्द होगी घाटी
मेरे लिये कहीं चैंन नहीं है असला ना ा की हू टाटी
मैने यहॉ भीकरी कलियामाटी और दागी करके चली चेहरा
लक्ष्मीचन्द मुक्ति तेरी रघुवीर गुरु का ारना हो
तोरी जुदाई मे साजन अपघात मुझे कहीं करना हो
बिना मौत के मरना हो कहीं ढूढूगी कूवा,झेरा।४।

।। जवाब हकीकत का तर्ज खातर की ।।

रागनी- मत गोरी घबराइये, मेरी मत गोरा घबराइये।
लक्ष्मीचन्द उभर भर रोना विरह वि ा चाटूगी
तेरी जुदाई मौत से बढके कैसे दिल डाटूगी
किस तारियॉ से दिन काटूगी मेरी उमर है यानी ।४।

वार्ता- उधर हवालात मे से हकीकत को निकालकर लाहौर लेकर चलते है, चलते समय वह अपनी मात भूमि को श्रद्धाजलि देता है।

।। जवाब हकीकत तर्ज (दे ा) जिगरी ।।

रागनी- स्यालकोट की भूमि री तुझ बारम्बार नमस्ते
इस तुछ सेवक की री कर स्वीकार नमस्ते।टेक।
आखिर नै मैं बच्चा हू तेरी जैसा बुरा भला हू
अन्न खाया तेरा जल पिया गोदी के बीच,पला हू
धरम परीक्षा है मेरी अब तो नही हला हू
छोड सहारा तेरा री लाहोर के बीच चला हू
गली कूचा और सदर मौहल्ला हर बाजार नमस्ते।१।
कमजोरो के ऊपर सज्जनो कितना जबर करते है
सर पै गठडी धरकै गुनाह की फेर फकर करते है
हमको काफर बतलाते खुद आप कुफर करते है
खु ा रहियो तुम अहलेवतन और हम तो सफर करते हैं
बच्चा बूढा अदना आला हर सरदार नमस्ते ।२।
तुमको भी प्रणाम मेरा है दुर्गे मात भवानी
तेरे ऊपर बलिदान यह छोटी ही जिन्दगानी
रोया करेंगे दुनिया वाले सुनके मेरी कहानी
रग लायेगी मेरे हिन्द में ये मेरी कुर्बानी

माता पिता के चरणों मे मेरा सौ बार नमस्ते।३।
हाथ हथकडी पैरों में बेडा मेरे गल मे तोक पहराई
मिलेगी लाहोर ल्हा । मेरी तू जुडा अरथ चली आइये।टेक।
लक्ष्मी लिकड गई निरभागी चोट कुढाली तेरे लागी।
तेरी सुनके मां मरजागी मत उसके आगे बताइये।२।
मै तुझे भेद बता दूं सारा मुझको हिन्दू धर्म हैं प्यारा।
जो तैने देखना स्वर्ग द्वारा तुरत सती हो जाइये।२।
एक काम तू करिये आके राबी नदी के तट पै जाके।
पहले मेरी ल्हा । न्हुवाके फेर पीछे तू न्हाइय।३।
जो मानस हो अडण के वे पक्क सदा पावे परण के।
लक्षमीचन्द रघुवीर ारण के ज्ञान प्रेम से गाइये।४।

वार्ता- सज्जनो हकीकत राय ने लक्ष्मी से कहा चिन्ता की कोई बात नहीं मैं धर्म की वेदी पर बलिदान होने जा रहा हूं। ई *वर मुझे अपनी परीक्षा मे पूर्ण करे सबर का प्यासा पीकर के श्रगार में मस्त रहना, जाओ मेरी भावना अब पीहर* जाओ। मेरा सफर लम्बा हे और वक्त तंग इतना कहकर हकीकत राय लक्ष्मी से विदा होकर चले जाते है और अपन पति के बिछोडे के बाद उन की याद मे रोती है और तग होती है।

।। जवाब लक्ष्मी का तर्ज तेरी प्यारी २ सूरत को ।।

तेरी प्यारी तडफ रही हाय तजक अकेली चले पिया
प्यारे म्हारे लिये वे बुरे बने जिनको समझते भले पिया प्यारे
कुछ तो कहे का ध्यान करो
दया मेरे पे भगवान करो
एतकदीरों की लहरों क्यों अस्त मेरा तुम भान करो।
ढोती ही रहूंगी जीवनभर सर पै दुखो डलेपिया प्यारे।।
एक पयासी की प्यास गई
जीवन की सब आस गई
हाणहार के चक्कर में या पति पत्नि की रास गई।
भूल गये क्यों निज वायदे तुम कैसे बचन से हल पिया प्यारे
बडे बडे झक मार गये
आखिर गिलानी धार गये
ऋ ि महात्मा गांधी जन सब किस्मत आगे हार जये।
वाहे जितना जतन करोपर आई विप्त नाटले पिया प्यारे।३।
लक्षमीचन्द दो कालिब इकजा बीर मरद के होते हैं।
बिना मरकें औरत का यह जीवनना बिल्कुल पले पिया प्यारे।

वार्ता- हकीकत को लाहौर में ले जाकर के नाजिम के दरबार में पे । किया गया। उन्होंने पूछा कि ये मुकदमा कहा से आया है। काजी सुलेमान ने पे । होकर कहा वे मुकदमा स्यालकोट से आया है और तौहीने इस्लाम का मुकदमा है। यह बात हो रहीं थी दोस्त नाम का मुस्लमान नवाब के सामने पे । होता है। नवाब तुम कौन हो और क्या चाहते हो। दोस्त सरकार मेरीं एक मुजारिस है गौर से सुनिये।

।। जवाब खुदा दोस्त का तर्ज (छल करता चल मेरे से) ।।

रागनी– खुदा दोस्त है नाम हमारा अल्ला का मतवाला हैं
स्यालकोट का मुल्जिम मैं भी वही का रहने वाला ।टेक।

जो भी कहना जरुर कहूगा मै कोन्या घबराता हू
इस लडके के बारे मे कुछ बात तुम्हे बतलाता हू
इक इसाफी चाहता हू पेरा रुयबा करे खुदा आला।२।
हाकिम को नहीं होना चाहिये कच्चा कानो का
सनी कहू मै जो मानोगे कहना इन बेइमानो का
दुनिया मे मुसलमानो का यह हो जागा मुह काला।२।
आग तासुब भडकाते हो कटटे करके पाजी
मन माना फतबा रख करके रह रह बनाते है ताजी
बेईमान ये मुल्ला काजी करते है गडबड झाला।३।
लक्ष्मीचद भवसिन्ध तरने को सत्तगुरु का रण चाहिये
थोडी सी जिन्दगी दुनिया मे इससे भी डरना चाहिये
ना किसी का का करना चाहिये बन्द अपने हाथ से ताला।४।

वार्ता- खुदा दोस्त की बातो पर नवाब पर प्रभाव पडा उन्होने हुक्म दिया कि हम इस मुकदमे का कल करेग इसके बाद भागमल ने पे । होकर कहा सरकार मेरे बच्चे की जमाबत आठ पहर के लिए किसी ते पर मन्जूर कर लीजिए चूकि मेरा बच्चा आठ दिन से भूखा है इस बात पर काजियो ने कुछ अडचन लगाई किन्तु नवाब ने कोई बात नहीं मानी और मुलजिम को आठ पहर के लिये पाच हजार रुपये की नकद जमानत मन्जूर की जाहौर के प्रसिद्ध सेट दीनदयाल ने उस लडके की जमानत की और लडका भागमल को दे दिया ओर कहा आप मेरी धर्म ााला मे चलिए आपको सब सामान नहीं मिलेगा।

दोहा– है पिता माता के साथ मे चले हकीकत राय।
धर्म ाला जहा सेठ की पहुच वही पै आय।।
काफिया–माता ने बडे प्रेम से बेटे का लाड लडाया।
और साबुन से मल २ जल से तुरत न्हुवाया
इसके बाद कोरा ने खटरस का खाद्य बनाया।।

वार्ता- कोरा दो थाली मे भोजन लगाकर लाई एक भागमल और एक हकीकत के लिए किन्तु जिस समय हकीकत को भोजन के लिए कहा गया लडके ने बिल्कुल इन्कार कर दिया और कहा कि मेरा तो अन न है भोजन करुगा वरना ज्यो का त्यो आत्मा लेकर के भगवान के दरबार मे जाऊगा। हकीकत ने भोजन नहीं किया तीनो प्राणी धर्म ााला मे भूखे पडे रहे। लाहौर मे हिन्दू और मुसलमानो मे इस बात की तकडी ज्वाला भडक गई। अगलेदिन हजारो हिन्दू मुसलमान इकट्ठे होकर नवाब के दरबार मे पहुँचते है। उधर भागमल और कोरा भी लडके को लेकर चलते है

।। जवाब कवि का (तर्ज खटखट जिगरी) ।।

रागनी अगले दिन दस बजते रै करी दरबारी की त्यारी
चले रोते रोते वे दो नू पुरु । और नारी।टेक।
हाय मुल्ला बेईमान कुकरमी छल से हमे लूटग्ला
बिगडा बुढापा सब तरियो से म्हारा भाग्या फूट गया
एकदम सर पै पहाड टूटग्या मरे चोट लगी बडी भारी।१।
बैठा हावका छात्ती मे जो उनकी द ा लखाते
जिनका जग मे राम रुसजा वे सब ढाला मर जाते अप्पा पीटे जा डकारते, था नीर नैन से जारी।२।
मोटी से मोटी पडी विपत पर कोन्या कभी डरे हम
बिना खता बिन बात मौत के मुह पै आण धरे पम।
स्व तारियॉ बरबाद करे हम तते है सच्चे गिरधारी।३।

मेरे बच्चे नै कोई वचादो मै सबके पूज्जू चरण जी
बैठा बैठाये आगी मौत और हुआ मरण जी
तेरे बिना रघुबीर ारण जी सुनता कौन हमारी।४।

।। जवाब हकीकत की नवाब से ।।

वार्ता- हकीकत को नवाब के यहा पे ा किया गया, किन्तु हिन्दू और मुसलमानों की भीड देखकर नवाब घबराया उसने हकीकत से कहा कि तुम मुसलमान बन जाओ, नाजिम बात सुनकर हकीकत ने उत्तर दिया।

।। तर्ज (पहले पैसा फिर भगवान फिल्मी) ।।

रागनी- क्यों नाजिम बना नादान बन्दा दो दिन का मेहमान
एकदिन जानाहो जाना मरजाना फिर लोटके न आना।टेक।
दिन बिगडता ही सब कुछ बिगडे में इन बातों को जानूं
फेर ठिकाना कहीं ना मिलता सुनी मैंने अपने कानू
जोमानु मैं तेरी बात मेरी लगे जातकै पात बिगडे बाना।१।
काबे से सुन्दर लगता है वि वनाथ जी मुझको।
गगा अच्छी या आबेकोसर पूछ बात किसी द्विजको।।
तुझको बणा रहे इस्लाम हमको प्यार राम का नाम हूं मस्ताना
अब तो मील जान के अन्दर फंसनी थी सो फंसली।
सतुम लोगों को मेरी आत्मा कसनी थी सो कसली।।
असली हूं क्षत्री का लाल मेरा पहाड बराबर ख्या लइसेनिभाना
मेरे साथ में बाजी लाहरे पूरे पैज परण की।
मैं नहीं बदलूं मुझे कसम है दुर्गा जी के चरण की
 ारण की ओट लक्ष्मीचन्द ज्ञान की चोट सत का गाना।४।

वार्ता- हकीकत की इस बात को सुन नाजिम, को वेध आ गया और उसने हकीकत के कतल का हुक्म दे दिया भागमल बेहो ा होकर गिर जाता है खुदा दोस्त जाकर भागमल को उठाता है

।। ामिल रागनी दोनों की तर्ज (देहाती फिल्म) जिगरी ।।

रा-खु.- उठजा कमबख्त उठजा चल दिया तेरे नैन का तारा
भा-कैसे उठूं खुदा दोस्त मैं करता ना ारीर सहारा ।टेक।
खु- जिंदगी या पड़ी भतेरी उठजा तू फेर सालिये।
भा- जिंदगी म्हारी रही काहे की बिल्कुल बरबाद होलिये।
खु- मुक्का तू मार पेट में आगे ना भेद खोलिये।
भा- काटे ना खून रहा है चाहे मेरी नब्ज टोहलिया।।
खु- इसम ना दो ा किसी का करग्या तेरा कर्म किनारा।
भा- तो यायो मैं भी जाणू भाग के आगे ना ना चलना चारा।१।
खु- पत्थर की कपके छाती भरले तू घूंट सबर की।
भा मेरे मंग में बेइन्साफी नाजिम ने आज जबर की।।
खु- तेरी भी खुदा सुनेगा सुनता वो फर दो ब ार की।
भा- अपना ना फिकर है उसकी याणी है बहु उमर की।।
खु- सुनके रोया खुदा दोस्त भी चाली आंसू की धारा
भा- योड़ तेरे सिवा इस दुनिया में पाया ना कोई म्हारा।२।

खु– उठजा मेरा हाथ पकड कै अबजा क्यूं तले पडा है
भा– फैला मेरे जहर रीर मे बिरता का नाग लडा है
खु– सुपरद करदे बेटे न सममुख जल्लाद खडा है
भा– करना मुझे पडेगा जरुरी ऐसा मेरा वक्त अडा है
खु– बैड फेर कर भागमल देकर कै तुरन्त उभारा।
भा– तोड करदु मेरा मुह उघेनै जिघे मेरा कवर दिदारा।3।
खु– घबराया खुदा दोस्त भी उसकी भी तबियत डर ली
भा– चाल्या कही लाल छोड कै कहके न्यू कोली भर ली
खु– इसमै ना सन्देह कुछ भी तनैं या चोर जबर ली
भा– रोना न्यूं घ णा मनै रे कचिया मेरी बेल कतर ली
खु– जाकै रघुबीर रण से कह दूं तेरा किस्सा सारा
भा– तोड लगती है चोट उसी के होता जो दर्दी प्यारा।4।

वार्ता- अपने पिता की द ा को देखकर हकीकत ने कहा आप मत रोओ मैं धर्म की वेदी पर बलिदान होने जा रहा हूँ किन्तु जानता हू की पुत्र का मौह विचित्र होता है। लडका महाभारत का प्रमाण देता है।

।। जवाब हकीकत का तर्ज (वि ाल मोहनी) जिगरी ।।

रागनी– मोह के व । मे हुये थे पारथ ना मानी एक बात सुनो
दैवलोक को वले क ण फेर ले अर्जुन को साथ सुना
वायुयान के जरिये से वे फेर पहुच कैला । गये
मारग में ना रुक कही भी धुर िवाजी के पास गये
उनके आगे कहदी जोणसी लेके आस गये
उनके सग में धरमराज घर एक ंकर के दास गये
तोड– ज्यादा देर ना रुके कही भी चल हाथों हाथ सुनो।1।
देवराज ने श्री क ण का बहुत घ णा सम्मान किया उनके आगे मुरलीधर ने सब अपना व्लोख्यान किया
इसका पुत्र मरा है युद्ध मे यह मोह ने अज्ञान किया
उस लडके से हमें मिला दो यो तुमको परे ान किया
तोड– युद्ध करज पडा अधूरा विनय हमारी नाथ सुनी।2।
लाखों वीर ।कल अभिमन्यु खडे हुये सन्मुख आके
देने लगे सब ताने त ।ने उनकी तरफ हाथ ठाके
यह पापी बेईमान अधरमी आया युद्ध से घबराके
उनकी बातें सुनके पारथ खडे हुये थे ।रमाके
तोड़– दुर बचनो की मारबुरी फेर कोप गया था गात सुनो।3
मेरे हृदय में मूर्ख क्यों इतने सन्ताप बने
बात तत्व की चाहिये सोचनी लघु तोल और नप बने
बुरी कीर्ती हो दुनिया की इसके भागी आप बने
कितनी बार तेरे बेटे कितनी बार जणे बाप बने
तोड़– लक्ष्मीचंद कहे अच्छेद जीव के नही होती है जात सुनो।4।

वार्ता- अपने पिता को धैर्य देकर वह लुडका मकतल में चला जाता है, मकतल (कतल की जगह) से बाहर हहारों हिन्दू व मुसलमानों की भीड लगी थी, हकीकत ने कत्ल ने कातिल से कहा जरा मैं अपने भगवान की स्तुति कर लू तब मेरी गरदन पर तलवार मारना।

।। जवाब हकीकत तर्ज (ऐ दिल मुझे बता दे) फिल्मी ।।

रागनी– अब वीर हकीकत सज्जनों दुनियों से कटण लाग्या कर आंख बन्द मन मैं ि व नाक रटण लाग्या ।।टेक ।।
खडे काजी मुल्ला सारे वे वेडव भरे गुमार मे
तलवा के नीचे गरदन थी फिर भी जो । कुवर में
सत्त ऊपर बाल में कोई बिरला डटण लागया ।१।
बुरी हालत माता पिता की ना सास मिले टोहये।
तने इन्वर बुरी करी हम सब यारिया खोये।।
सब हिन्दू प्रेमी रोये तन खून घटण लाग्या ।२।
है सच्चा मित्र जगत में मानस का धर्म सहारा।
यो दुनियाँ मतलब की ना कोई भी प्यारा।।
वो बेढब अटल नजारा हर दिल में बढण लाग्या ।३।
कहे लक्ष्मीचन्द तबियत फेरे दूर करा डरसा।
गरदन करदी न्यारी लग्या एक पल का अरसा।।
करे देव पु प व ा जब ीस कटण लाग्य ।४।

वार्ता- हकीकत की ला । हिन्दुओं ने ले लीं किन्तु जब म ान में दाह संस्कार करने लगे ता काजितों ने वहा को फूंकने नहीं दिया ला । पड़ी हुई है, मां रोकर कहती है।

।। जवाब कोरा का तर्ज (भूल भूलैया) जिगरी ।।

रा॰नी करके चला निरा । रोवे र तेरी मा।
ना पाये धड़ में सीस टोहवे रे तेरी मा।।टेक
ढूंढ़ना पडग्य कुवा झेरा कुछ भी दग रहा ना मेरा।
तेरा उठ जगत से बास रोवेरे तेरी मॉं ना पाये धड में ।१
कैसे मनु य कर्म से लड सर पै आई भोगना पडे।
यासड़े सुबह की ब्हा ारोवरें तेरी मां ना पाय धड़ में ।२
वक्त तैं पता चलें प्यारों का भाई बन्ध रिस्तेदारों का।
तारा का बणां रोहता । रोवरें तेरी मां नापायें घडमे ।३।
लक्ष्मीचन्द उड़ग्या ठिया न्यू बेचेन हुआ मेरा जिया।
हुयासब तरियां से ना । रावेरे तेरी मां नापाय धड में ।४।

वार्ता- चौ॰ निगाही जो लाहौर का सबसे बडा जमींदार था, उसने लड़के की ल्हा । फूंकने के लिए ५ बीघा भूमि थी, उसमें हकीकत की ल्हा । का दाह संस्कार हुआ मजार आज तक है। उधर जब लख्मी को यह पता चला कि मेरे पति की मौत हो चुकी है वह अपने पतिं से किए वायदे के अनुसार सती होना चाहती है मगर उसके भाव देखकर उसकी बूढी मा लक्ष्मी को समझाती है।

।। जवाब मां का तर्ज (नया दौर) फिल्मी ।।

रागनी– क्यूं ऐसी धारे मनम मानजा मेरी लक्ष्मी ।टेक।
तेरी मा दुख घण पा जागी,
जो तू दाग ऐसा ला जागी।
मेरी आ जागी जान बिघन में, तानजा है लक्ष्मी ।१।
तुझे दया चाहिये मेरी लेणी,
मेरे बसकी चोट ना या खेणी।
ना देणी आग मुझे धन में, मानजा हे लक्ष्मी ।२।

यू सहम चॉद सा गहजा।
के रहजा बाकी तन मे मानज ह लक्षमी।३।
कह लक्षमी चन्द भली आगे,
तू जीती रहे मेरे आगे।
मत दागे रीर अमन मे, मनाज्ञ ह लक्षमी।४।

वार्ता- लक्ष्मी ने अपनी माता से कहा मेरा सकल्प अटल है आप कुछ भी कहे मै सती जरुर हूगी। इसके बाद तमाम नगर इकट्ठा होकर लक्ष्मी के सती होने का प्रबन्ध करता है, चन्दन की चिता तैयार की गई और लक्ष्मी उसमे बैठ जाती है।

जवाब लक्ष्मी का तर्ज छाती तोड (जिगरी)

रागनी– चिता बीच बैठ गई लक्ष्मी जिन्दगी खोवण लागी, उसकी हालत देख २ के दुनिया रोवण लागी।टेक।
ब्रहम् सनातन अधि वर तुम सबके मात पिता हो।
कहीं वि णु कहीं ब्रहमा रुप कही भोलनाथ पिता हो।
बहुत दिनों से हुए स्वर्गवासी मेरे भ्रातपिता हो।
ए नगरी के लोगो तुम ही मेरे मात पिता हो।।
किसी जन्म के किए कर्म के डल मै ढोवण लागी।१।
पास तुम्हारे आऊ फिकर क्यू भरतार करो तुम।
तुम कुछ दूर मेरे से पिता कम रफ्तार करो तुम।।
आखिर मैं हू पत्नी थारी मुझसे प्यार करो तुम।
अपनी दासी की तुच्छ सेवा अब स्वीकार करो तुम।।
इतनी कहके आसू से वा मुखढा धावण लागी।२।
सबको मेरी बहन नमस्ते जितनी सखी सहेली।
बिना पिया के कोई मत रहियो इस दुनिया में केली।।
याणी उमर मे बहन बीर पै चोट नही झेली।
बिना पिया म ाण बराबर जग मे हाट हवेली।।
अब साजन की याद बहन हे मन भलोवण लागी।३।
तू भी अब सन्तो । धारिये क्यू जननी घबराई।
मात समझिये तनै कोक से नही लक्ष्मी जाई।।
मेरी उस घर की त्यारी जहा पै तेरा जमाई।
इतनी कहके चुपकी होगी चिता मे अग्नि लाई।।
लक्ष्मीचन्द दर्दीली कविता दिल नै मोहरण लागी।४।

।। कोरां व भागमल ।।

वार्ता- हकीकत अन्ते टी के बाद भागमल व कोरां दूरवे ी भे । में दिल्ली को चलते है।

।। जवाब कवि का तर्ज (सात पांच बारह) ।।

रागनी करी दिल्ली हर को त्यारी सब देख रहे नरनारी
हाय भगवा भे । थी दिल पै ठेस और नीर नैन से जारी।टेक।
पीछे कर्म कुछ ऐसे कीन,
हाय प्रभु जी सारे सुख छीने।
दीने सत्ता, सबको पता, देव बता किसकी खता,
तकदीद फूटेगी म्हारी।१।
हाय बेटी लक्ष्मी तू भी आग मे जली,

अपने वचन से ना रत्ती हिली।
भली या बुरी जो भी करी सच्च हरी द टी फिरी,
सब तरिया हा गई खुवारी।२।
किसी के कर्म मे नो चाल्ले चारा
कहके रोया आसुओ की बही धारा
थारा यह प्यार, सच्चा सत्कार छोडा विचार जावो नरनार
खू ा रहे ाीरी।३।
लक्ष्मीचन्द चाल दिये लेके गम को
रात दिना मजिल करी घोट दम को।
हमको यहॉ, सुख है कहा, आये वहा सज्जनो जहा
लाल किला सरकारी।४।

वार्ता- ाहजहा बाद ाह सो रहे थे, रात को हकीकत की रुह स्वप्न में दिखाई देती है सुन्दर बालक को देखकर बाद ाह को प्रेम आया और बच्च का गोद मे लेना चाहा किन्तु बच्चा नहीं आता, दोनो की बाते होती है

।। दोनों की प्र नौत्तरी तर्ज (जिगरी) ।।

रागनी बा– खेलने वाले हिन्दु बच्चे आजा गोद मे मेरी।
ह– चुपका होके बैठ बाद ाह क्यो लक्ल बिगडरी तेरी।टेक
बा– लेके गोद मे अपनी मै तेरे लाड लडाणा चाहऊं।
ह– तेरे कैसे जालिम की कोन्या गोद मे रे आऊ।
बा– जो आने से टाल करेगा मै तुझे रे पकड के लाऊ।
ह– हाथ नही आने का मै तेरे बहुत दूर भाग जाऊं।
बा– इस नाराजी का कारण क्यू इतनी दे रहा फेरी।
ह– अधकार मिचा तेरे राज मे होरी डूब्बा ढेरी।१।
बा– डूब्बा ढेरी किसने कर दी चाहिये या बात बतानी।
ह– कमजोरो को तेरे राज मे पडरी ठोकर खानी।
बा– कैसी ठोकर कौन मारता मै अबलो ना जानी।
ह– सब बेरा पट जागा तने तू जब डूब्बे बिन पानी।
बा– बिना खता मै आज तलक ना विप्ता किसी पै गेरी।
ह– जगजाने पै सब पता चलजा या ताजीपीद बखेरी।२।
बा– अबलो जितनी बात करी तै सरी बहम भरम की।
ह– ारमदार की खातिर तो ये काफी है हया रे ारम की।
बा– साफ खोल दे तने कसम अपने हिन्दू धरम की।
ह– के पूछेगा चुपका बैठजा जालिम मेरे तू मरम की।
बा– जल्दी बता दे मै व्याकुल होरा मतना लावे देरी।
ह– दो दुखियो से बात पूछिये लावेंगे कल को सबेरे।३।
बा– ाह ने बढके फेर आगे को लडका पकडना चाहया।
मारा तार पडा ताज तले ऐसा नि ाना लाया।
निच्चे पलंग से गिरगया बाद ाह आख खुली घबराया
अन्तर ध्यान हुई मिन्टों मे वा सुपने की माया।
पागल बरगा हुआ चेहरा मुमताज बेगम को टेरी।
आख मिची रघुबीर ारण आगी थी तुरन्त अंधेरी।४।

वार्ता बाद ाह की आख खुल गई और स्वप्न के विचार पर बडी चिन्ता हुई प्रात होने पर ागमल ने सदा दी दुहाई तर दरबार मे मेरी दुहाई है बाद ाह। उन दोनो को बुलाया किन्तु बाद ाह का देखकर भागमल को हिडकी बन्ध गई बार बार पूछने पर भी चुप रहा आखिर बाद ाह नाराज हाकर कहने लगे कि तू पागल है, बेहोणी ह खोल क्या है तेरी हकीकत ान्त होकर भागमल कुल कहानी बतलाना है।

।। जवाब भागमल का बाद ाह से ।।

तर्ज (बेगाना) जिगरी

रागनी- ना मै पागल मै बेह ी ओर नही दगाबाज मे
के पूछगा बाद ाह हम लुटेगे तेरे राज मे ।टेक
एक दिया था लाल प्रभु ने दुख दिखान के लिए
वा बेठाया था मदरसे म पढान के लिए।
मुल्ला मस्जिद मे गये सजदे चुकान के लिए
हो गये लडके इकट्ठे दिल बहलाने के लिये।।
तोड- मूल मे सब कुछ लिया और दुख दिया है ब्याज म।।१
काठडी मे बन्द किया और सर पै फतबा धर दिया
अगले दिन काजी के आगे पे ा कचहरी कर दिया
म मुसल्मा ना बनूगा लडके ने उत्तर दिया
ताड आग के ोले भडकगे बस इसी आवाज मे।।२
मिरजा जी ने फैसले की बहुत सी कोि ा करी
पर मेरे उस बावले न एक भी ना सर धरी
काजी बाले लेगी रि वत मौर की तबियत डरी
भज दिया लाहौर मुकदमा लिखके जुमल सरसरी
तोड- जिसकी रहयत हो दुखी ले खाक ऐस ताज म।।३
वही जालिम काजिनो के जहाद के नारे चले
बन मुसल्मा मै ना बन्ता झगडे ये सारे चले
सोप दिया जल्लाद को फेर जान क घारे चले
कतल मकतल मे किया हाय कुछ भी ना चारे चल
ताड- करमो का रघुवीर बन्धन कैसा हा गया गया आज म।४
रागनी- बाद ाह नै चक्कर आग्य डोल गया सब गात

।। जवाब बाद ाह का ।।

तर्ज (तावली बुलाइये री मॉ)

सच्चा सुपना होग्या दिख्या जो रात।टेक
उठे जबान अबके कहदू भाई मै
रत्ती रत्ती तेरे मग की बात पाई मै
तोड- बच्चो की लडई मे करी कितनी बड बात।१।
मेरे पास लुटके आयया कर्मो के हारे,
बेरा ना करके रहैगे आहो के नारे,
तोड- मेरे मुह पुछेगे यारे सारे काले हाथ।२
जिनके दया धर्म ना वे जीवते मरे,
सज्जनो के हृदय सदा पाप से डरे,
तोड- परलोक परलोक के समान करे वाके अबतेरा साध।३
लक्ष्मीचन्द जो कुदरत करती है अच्छा,

भागमल उल्टा ना आवे तेरा बच्चा,
तोड- करुगा इन्साभ सच्चा लाऊ नही णत।४।

वार्ता- बाद ाह ने भागमल से कहा तुम लाहौर चलो और रावी नदी पर आज के दिन मिलना और उस दिन तेरा न्याय किया जायेगा, फिर बाद ाह भी घोडे पर सवार हो लाहौर पहुच गये किन्तु यकायक ाह को देखकर नवाब घबरा गया। बाद ाह ने कहा दिल्ली का जलवायु खराब होने के कारण मै यहा आया। कहो राज का काम तो ठीक है कोई काफर तो वदी नही कर रहा है। नवाब ने कहा एक काफर ने मुह उठाया था वही खत्म कर दिया गया हकीकत का किस्सा, सूनाया, बाद ाह ने कह, काजी मुल्लाओ को बुलाकर रावी पर सैर कराओ, सब काजी बुबा लिए गए और नाव मे बैठा दिए।

।। जवाब कवि का ।।

रागनी- कई करी नाव तैयार सब बिठा लिये थे काजी।टेक
काजी मुल्ला सोच रहे भारी तो इनाम होगा,
काफरो पै रोब जमे दुनिया मे नाम होगा।
खूब खावे खूब पीये मौज का सब काम होगा,
तासुवी जो मानस थे वे मिने को उभार रहे।
हजारो थे नर नारी द य को निहार रहे,
मोटा था जनून दिल मे बाद ाह विचार रहे।
ये साल नीच मक्कार हाय कितने होरे राजी।१।
अल्लाहो अकबर के नारे जोर जोर बोल्ले सारे
ेखवी बघार रहे अपना वजन तोल्ले सारे।
आपस मे बतलाय रहे पिछले भद खोल्ले सारे,
मल्लाहो से ाहजहा कह रहे कभी सारा खोदो खेल
आज नै जो चूक गये कोल्हू के माह दूगा पेल,
चाडी कुत्तो आगे गेरु हड्डियो का काढू तेल।
तोड- कभी गधा गऊ ना इकसार ना कग्गा बणे नमाजी।२।
हसे खेल मगन होर आपस मे उड रहे रंग
हिन्दु जालिम काफर होते खूब इन्हे करे तग।
खडे जो तमा ा बीन देख देख होरे दग,
चलती २ कि ती आई जहा पै था पानी का दौर।
मल्लाहो ने कोडी कर दी करने लगे काजी ोर।
डूबगे बचाओ हम नै कहने लगे जोर जोर।।
तोड- जब बेड गया मझदार सब डूबो दिये थे पाजी।।३
और जो खडे थे बहार देख देख डर गये।
औरत मरद बच्चों के मुह मे पानी भर गये।।
हुचक हुचक कर रहे तडफ-तडफ मर गये।
बहुत से न्यू सोचे जग मे होता है भगवान पैसा।।
दो दिन की जिन्दगी दुनिया फेर अभिमान कैसा।
भोगणा जरुरी पडता करता है इन्सान जैसा।।
तोड- रगुवीर कर्म से हार और जीते कर्म से बाजी।।४

वार्ता- इसके प चात नवाब को लेकर बाद ाह दिल्ली आ गये दरबार किया ओर नवाब का जमना मे डुबोया खुदा दोस्त को सोने का लिखित मिरजा अमीर बेग को नवाब का पद और चौ॰ निगाही की माल गुजारी हमे ा के लिये माफ को इसके बाद भागमल से कहा कि तुम ग हस्थी बनी भागमल इन्कार करता है बाद ाह की कठोर प्रतिज्ञा के

कारण भागमल ग हस्थी बनता है और हिन्दू व मुसलमान से एक एक समय की पूजा व नमाज का दान बाद ाह मागते है स्वय भी खुदा से दुबा करत है या खुदा इसके एक बच्चा दे यह बाते रागनी मे मौजूद है पढिये।

रागनी ामिल तर्ज (जिगरी)

बाद॰– अब कोन्या उल्टा आवे ओ भागमल तेरा जाया।
भा॰– जो होनी थी होगी किस्मत नै रग दिखाया।।टेक
बाद॰– तेरी हुई मलिया मा टी आया वपता का घेरा।
भा॰– फिरी ई वरी की माया ना उसके घर का है बेरा।।
बाद॰– अब बनके रहु जगत मे मै बेटा बाप तू मेरा।
भा॰– ऐ सच्चे जहॉपनाह इन्साध गजब तेरा।।
बाद– मेरी तबियत खु । होजागी एक कर दे मनका चाहया
तोड– कहो जग के अन्नदाता जो जी नै आपके भाया।।१
बाद॰– अब मेरे कहने से यू तार फकीरी बाना।
भा॰– के ही इसके तारे तै मुझे इतना बात बताना।।
बाद॰– तू हटके बन ग हस्थी और स्लाल कोट को जाना।
भा॰– या बात नहीं मानू अब अब बन मे करु ठिकाना।।
बाद॰– मेरी बाद तत्व गहरी का मत एक दम करे सफाया।
तोड– मेरे दर्द कुढाला है वो जो ना जाता रन्ज भुलाया।।
बाद॰– जो तू उल्टा ना जाता मै भी खाना पीना सब त्याग्या
भा॰– सुन बाद ाह को बात नै सज्जनो दुखिया चक्कर मे आ गया
बाद॰– यू तेरे से भी गहरा मेरे तीर रन्ज का लाग्या।
भा॰– मत प्रतिज्ञा करो ऐसी थारी बात मरमकी मै पाग्या।
बाद॰– तुम स्यालकोट को जाओ मेरी आनन्द हो जब काया
तोड– लई बात मान बाद ाह की उल्टी बस्ती मे आया।।३
ऐ सुनने वाले प्रेमी अब भेद सुनो तुम जड का।
जो सच्चे धर्मवादी उन्हे कैसा जगत मे धडका।।
एक व । बीत गया पूरा था चार घडी का तडका।
फेर भागमल के घर हुआ उसी क्त का लडका।।
कहे लक्ष्मीचन्द दुनियॉ मे है उसकी अदभुत माया।
तोड़–चाहे लाख छतन कर लो ना भेद किसी ने पाया।।४

ओइम
असली सांगीत
नरसी का भात
लेखक - खास उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध कवि
पं० रघुवीर शरण सूप निवासी कृत

दोहा– अष्ट भुजी बैंतालनी कर बेडे नै पार पार।
फिर कृपा कर मुझ दास पै जन तेरे आधार।
राजरानी दे वाक बानी चारो वेदो नै बखानी सुभ करै।
माता विधातासकल गुण गाता दाताकाज सतोके करै।
अदना से आला करे प्रभु तू ऐसा जगदीस।
मानसिह सतगुरु मिले गहूँ चरण निवाकें सीस।
कीर्तन– श्री राम जय राम जय जय राम। टेक
भिल्नी के बेर प्रेम सैं तै खाये राम।
भक्त जटाऊ जी ने तेरे गुण गाये राम।
श्री राम जय राम जय जय राम।१
भक्त भभीक्षण की जा बचाई राम।
भक्त सुदामा जी की बली तो लगाई राम।
श्री राम जय राम जय जय राम।२

वार्ता- सज्जनो झूनागढ के अन्दर मगूमल सेठ बडे धनवान सेठ थे जिनके सात लडके थे। सबसे बडा लडका नरसी था नरसी बडा मूजी था। वह एक बार गगा स्नान के वास्ते गगा पर गया वहा भगवान कृष्ण ब्राह्मण का भेष बनाकर गय और दान मागा नरसी नाट गया। भगवान ने बहुत मनाये की नरसी ने एक छदाम का वायदा किया सकल्प कराकर भगवान अन्तरध्यान हुये। थोडे दिनो के बाद भगवान अपनी छदाम लेने गये, नौकर द्वारा आने की सूचना दी। जवाब आया सेठ जी बीमार है, अन्त यहा तक हुआ कि नरसी ने अपनी अर्थी बधवा ली और शमसान ले जाने की आज्ञा दी, नौकर लेकर चले। तदन्तर भगवान नरसी का रुप बनाकर गद्दी पर बैठ गये और नौकरो से कहा एक फर्जी नरसी फिरता है उसे मत घुसने देना। बाद मे नरसी शमसान से लौटकर आया उसे अन्दर न जाने दिया। बहुत से झगडे हुए, राजा के यहा बाद मे हारा। फिर भगवान की प्रशसा की और अपने किये की माफी मागी कृष्ण अन्तरध्यान हुये। बाद मे नरसी ने अपनी ९६ करोड माया दान कर दी, आप भी फकीर बन गये। इसी नरसी की लडकी सिरसागढ मन्शा सेठ के लडके से ब्याही थी। वहा भी नरसी की दशा का पता चलता है। हरनन्दी की सास जो हरनन्दी से बहुत तग थी। प्रसन्न हुई और मन्शा सेठ से बतलाती है और फिर हरनन्दी को कहती है।

जवाब सेठानी का

दोहा– अपणे पति सै कहने लगी मन मै करकै प्यार।
एक खसी की बात तुम सुनो पति भरतार।
रागनी– नरसी सेठ के टोट्टा आ गया जाती रही साहुकारी।
अबधूत रुप लिया धार सेठ दर–दर का हुवा भिकारी।टेक
छाणवैं करोड खरी मारा हरि नाम पै सट्टा करगे।
दिन धौलि गये काढ दिवाला बिस्तर कट्ठा करगे।

जगत सेठ इस दुनिया सै अपणा मन खट्टा करगे।
हरनन्दी का नखरा झडग्या तेरी बिगडी रिस्तेदारी।१
टूट्टी की ना बूट्टी पिया बिगडी नही समरी नर सै।
एक मदिर का बना पुजारी लगन लगाली हरसै।
हाल बेहाल हुवा उसका एक टुकडे ना तरसे।
जगत सिठाणी तेरी सघण जोकधि लिकडी ना घर सै।
मर बिध दुखी हुआ तडफै दिन रात बिचारी।२
तोसक तकिये पिलग मसैरी सभी उटगे पिया।
खटरस और छत्तीस प्रकारी पकवान छुटगे पिया।
सब दसो मे चाल रहे ब्यौहार टूट गे पिया।
सब रेख गई लौट सेठ के राम रूठ गे पिया।
सब दुनिया मे उसकी कधी के नोटिस होंगे जारी।३
जिस दिन सै हरनन्दी मेरे घर पै ब्याही आई।
कधी नही खाया सुख तै टुकडा पेट भराई।
सुबह सै लेकै साम तलक नित म्हारी करै बुराई।
बहुत दिनो मे मेरे हरि नै दुख की दई दवाई।
रगबीरसरण जो अन्त करै उसै फल देत्ते गिरधारी।४

जवाब मन्शा का

दोहा– बक–बक मत मूरख करै औरत कमजात।
किसी की निन्दा जो करै क्या आत्ता हे हात।
रागनी– पर निन्दा अपने आकै नै कधी नही सुख हो है।
यार सगे रिस्तेदारो के बिगडन का दुख हो है।टेक
सुत–दारा और धन–जोबन परि माट्टी की काया का।
छण भर मै यूँ ढँग बदलै जूँ भानू की छाया का।
मिथ्या जग की माया का यूँ सपन सा टुक हो है।
तामस के बस होकै राड क्यूँ करती काम छेड का।
वो मरे हुये हाथी के तुल्य तू गलिका बलद हेड का।
जिघे होता वजन पेड का उसी तरफ रुख हो है।२
दो दिन की जिन्दगी के ऊप्पर अच्छी भुन्डी करलो।
कोई यस लेलो दुनिया मै कोई घडा पाप का भरलो।
निस्चय होजा जगपरलो जिब आस्वापति खुस हो है।
रगबीरसरण है टोट्टा खोट्टा बुरी तरह सै खोत्ता।
जिस तन लाग्गै वोही तन मूड पकड कै रोत्ता।
उसका सबनै दुख होत्ता रै जो मानस मुख हो है।४

वार्ता- जब मन्शा सेठ ने उसकी बात में रुचि न बढाई तो हरनन्दी से जाकर कहती है कि अपनी पुत्री के विवाह का भात नौत के आ और सुना भी है कि तेरे बाप की दशा भी बिगड चुकी, साथ ही ताना भी कसती है।

जवाब सेठानी का

दोहा– बहुत दिनों के बाद मै फूट गया है पाप।
सुना है फक्कड हो लिया हरनन्दी तेरा बांप।।
रागनी– हरनन्दी तेरा बाप सेठ गया क्यू कर काढ दिवाला।

घर–घर फिरै मागता टुकडे क्यूँ कर होग्या चाल्ला। टेक
तू कहया करैथी तेरा बाप है मालिक जवाहरात का।
जडे हीरे मोती छज्जे मै एक कमरा असल धात का।
म्हारे लाल किरोडी करै रोशनी चादन सारी रात का।
तू कहै थी चन्दर हार जडाऊ बेटटी के धरा भात का।
चम्पाकली जडाऊँ जवारातका हारढुकरह्या आला।१
सेठ्ठां के घर जिकर रहे था हूंडी जगत सेठ की।
सोन्ने चादी क ताल खुद फिरै मछली लैट की।
हीरे मोत्ती के थाल कधी समधी की नजर भेट की।
तू जगत सेठ की बेटटी होकै भुल्ली बात ढेठ की।
मूँज का तग्गड एक लगोटा लेया कम्बल काला।२
सेठ्ठॉ` घर रुक्का पडया ना मिलण किसी तै जात्ता।
था जहाज भरण का काम रोज का परदेसॉ तै लात्ता।
एक करोड दो चार करोड को बीजक मै लिखवात्ता।
सोन्ने के पत्थर पडे चौक मै बैठ बीच मै न्हात्ता।
चांदी की ईंट लगी खस्सी मै जिसे कहते गन्दा नाला।३
सच्चे लाल् जडे पॉवो मै पडी खाट सावन् की।
भौरैं अन्दर कई कोठडी नई चीज टोहवणं की।।
चॉदी सोन्ने की म्हारै एक रसोई खावण–पीवण की।
रगबीरसरण कहै फल लाग्गैगा भली बोवण की।।
बोवणिया तो बो दैगा काई खावे खावण आला।।

जवाब हरनन्दी का

रागनी– हडती–फिरती छायारी सास्सू समय आवणी–जाणी।
देखपिछोवा बात न कर तू कदसै हुई सिठाणी।।टेक।।
ब्याह–बैर और प्रीति की रीति सब सै करणी चहिए।
सरमादार नै तरज गुफ्तगू खोप सै करणी चहिये।।
सुख मे सुख की दुखवाले सै गम की करणी चहिये।
अपना म्हारा फरक देख वैसी हमसै करणी चहिये।।
उस दिन की गई सास भूल तू तकै थी आस बिराणी।१
सौ सौ ऐब काढ दै जिसकी पडज्या फरक बात के।
मेरे पिता की करकै बुराई के ठावै आग गात मै।।
हीरे–मोत्ती जवाहरात दिये उसनै मेरी दॉत मै।
जो खुद ही फिरै राम का मारा के दे दैगा भात मै।
तेरे कैसी उसके सास्सू कधी भरा करै थी पाणी।२
आज चाख कै बात करै तू कब सै री लाट थी।
मेरे ब्याह सै पहलै तू सास्सू री बारा–बाट थी।।
एक फट्या हुया बिस्तर था एक टूट्टी खाट थी।
घर मैं नही थे बरग जली एक फूट्टी हाट थी।।
थारे सरसै तारया करज फेर भी नॉ कदर पिछाणी।३
मेरे बाप नै आज तलक थारे काम बणाये।
तेरे बाप ने करकै मोल तेरे खरे दाम गिणाये।।
फूँके सरीर की ढेरी करदी ऐसे वचन सुणाये।

केह कहदूँ मेरे सभी इरादे ढैगे चिणे–चिणाये।।
कहे कबीर या दुनिया जाणै मेरी–तेरी कहाणी।।४।।
काफिया–सुणी बात बहूकी कडवी, कोन्या गात मे रही समाई
मत तावल करै हरनन्दी तेरी काढूँ सब गुमराई।।
नहीं वार करी थी पलकी चलकै पास पति के आई।
दोहा– चुपकी होकै बैठ जा थूकं सभी समाज।
हो जागी बदनामी मतना तारै लाज।।

जवाब मन्शा सेठ का

रागनी– पुत्र वधु सिष्य सेवक सठ सै लडना ठीक नहीं।
इतना त्यागन करदै रै गोरी अडना ठीक नहीं।।टेक
सात द्वीप और चौदह भुवन जा तपगे नौ खन्ड मै।
उसकी लीला ऐसी बदले बदल्या नक्सा सेकिड मे।।
किसी नै हीणा समझ घमड मे सडना ठीक नहीं।१
पूरे करके सास सभी नै जाणा है हरकै।
बदी और भलाई छूटती माणस की भरकै।।
धन–जोवन मन धोक्का करकै हडना ठीक नहीं।२
मेरी भी या जा गी आबरू तेरी घुस–घुस मै।
माट्टी का रही गेर पतगा बिन गाहे भुस मै।
जिस मारग मै काटे उसमै पडना ठीक नहीं।३
रगबीरसरण नहीं पता है जगत मै दुख–सुख की हदका।
एक नहीं तेरै डटी नार तनै समझारासा कद का।
सतगुरु के परखे बिन पद का घडना ठीक नहीं।

जवाब सेठानी का

दोहा– जिनद पूरी करनी पडे प्यारे पति एक बात की।
नरसी पर चिटटी लिखै तुम पोती क भात की।

वार्ता- अब मन्शा अपनी सेठानी के चक्कर मे आकर नरसी पै भात की चिटठी व लग्न लिखकर नाई ब्राह्मणो को भेजना है।

रागनी– लिखदो चिट्ठी पचात मै समान भात का सारा।
चादी के हौ थाल दो सौ कई सौ सुनहरी न्यारे।
हजारो गिलास चादी सोने के मँगवाओ प्यारे।
लोट्टे हो वजन मै पूरे काम मै आवेगे म्हारे।
सोन्ने के घडे हौं पचास तोल मे हौ एक धडी।
चादी के हौं बिन गिणती देखैंगी लुगाई खडी।
हीरे–जवाहरात जडी बॉधने की लावै घडी।
हों पच्चीस साल परॉत सुनहरी ग्यारा।१
कसैडी पतीली चमवे कहो सै हजार ल्यावै।
चौक्की हो सुनहरी इक्कीस समधी और समधन न्हावैं।
सोन्ने चॉदी के हौं पावे ऐसे पलग भिजवावे।
बारह मण छुवारे ल्यावै आठ मण बादाम पक्के।

चादी के बक्सॉ मै भरके बाणियो मे जागे रक्खे।
एक भी छटॉक घटगे आबते नॉ मिल जॉ धक्के।
हीरे–कणी जडाऊँ नाथ, ये हो एक साथ ही बारा।
पेट्टी तो सुनहरी नौ नौ हार हौ करोडी चार।
दात इतनी ल्यावे आवै गाडियो की लगे लार।
तम्बू और तस्बोटी तेरी खात्तर ही मिलैगी बार।
एक लाख पेके रग के रेशमी लिखवाये थान।
मखमली गलीचे तोमक तकियौ का होगा दान।।
लाख हौ सुनहरी ओन्ने देख कैं शरमाजा भान।
एक जडा ताज जवाहरात मै समधी का ल्यावै न्यारा।।
पसमीने की साडी लिक्खो सिमधण नै मॅगाई आठ।
अभीसै लगी है तेरे चॉद से मुखडे की बाट।।
हरनन्दी कह कमी रहजा नाडा मै मरूँगी काट।
जवाहरात की जडाऊँ तियल हरनन्दी की न्यारी।।
मौहर और असरफी म्हारै कमीनो को दीजॉ सारी।
चॉदी के दो पत्थर लावै वजन मै हौ खूब भारी।।
रगबीर कहै ल्या साथ मै तेरा जोण हिमात्ती प्यारा।।४

जवाब कवि का

रागनी– नाई ब्राह्मण दये चाल चिटठी लेकै नरसी के भातकी।
झूठ ना एक सभी लिखे सॉच अक्षर तोल नाप और जॉच
पॉच दिखे थे लाल सोभा म्हारि इसै होगी परॉत की।१
उसकी ईश्वर ही सुध लेगा मारदी मरे हुये कै तेगा।
के देगा काढ कै खाल भाई गई ऑख फूट पॅचात की।।
अपने पीट रहे पेटटा नै जुल्म करया मॅगू के बेट्ठा ने।
सेठ्ठा नै करे कमाल अजा या बुरी नरसी के साथ की।।३
कहै रगबीर इसी हलचल मै झूनागढ के गये अस्थल मे।

जवाब नाई का

दोहा– नाई ब्राह्मण हो दुखी रहे आपसे मै बतलाय।
सारी नगरी खोज ली नरसी मिलया कहीं नाय।।
रागनी– कोठे ऊपर खडी सिठाणी अपने ध्यान के मॉह।
सूरज बरगा रूप धूप जणै खिली भान के माह।।टेक
रागनी– कोठ्ठे ऊपर खडी सिठाणी अपने ध्यान के मॉह,
सूरज बरगा रूप धूप जणै खिली भान के मॉह।
सूरज बरगा रूप धूप जणै खिली भान के मॉह।टेक
नाई हुया इसक मे चूर असली देवी बरगा नूर।
था टोटा भरपूर फरक पर नहीं सान के मॉह।
दो नयनो के फेर से करै, कधी उस ओड कधी जा परै
ऐसी छत पै नै फिरै सेरनी जूँ बियाबान के मॉह।२
कोई किना ही दिल डांटै, लग्या हुआ कालजा चाट्टै
जैसे बछेरी खुरें काट्टै कोई बधी सान के मॉह।३
कहै रगबीर रही थी दीख, चमकै गक मैं पान की पीक।

सीधा गीणा ठीक कह कुछ धरा तान के मॉह।४

जवाब सेठानी का

दोहा– सूरज कू जल दे तभी की नारी नै गोर।
अपणे पति का नाम सुण फेर आई उस ओर।
रागनी– आइयौ बतलाइयौ बात हो किस देश के भाई।
पूछो हो किसका भेद थारी बात ना पाई।टेक
पूछा हो किसका भेद थारी बात ना पाई।टेक
पूछ्या हो नरसी सेठ ने क्या है काम नरसी सै।
करसी सै बुझी आग को सिलगा रहे भाई।
क्या मामला जबर है रै कुछ है नहीं तन सा।
सरसा मैं मन्सा सेठ कै लडकी मेरी ब्याही।२
जो मॉगते फिरै थे उनकी तेजी है होती आई
जो अरब–पति थे उनके नौ रही पाई।३
रगबीरसरण म्हारे साथ या क्या राम नै करी।
तेरी स्यान है हरी यूँ पर्वत हो ग्या राई।४

जवाब ब्राह्मण का

रागनी– इस नगरी मै सिठाणी हम आये सेठ नरसी कै।
एक चिट्ठा एक लग्न भातका, लाये सेठ नरसी कै।टेक
एक बार पहलै भी आये थे भरकै प्रेम उम्हा मैं।
बूड्ढा हो गया सरीर मेरा कुछ पडग्या फर्क निंघा मैं।
हरनन्दी के ब्याह मैं खट रस खाये सेठ नरसी कै।१
त्रिया भ्रम सा हो गया पता ना जाणा हमें किशन नै।
करके इसारा बतलादे उस जगत् सेठ के घर नै।
सारे आन्द ईश्वर नै फर्माये सेठ नरसी कै।२
झूनागढ का चप्पा–चप्पा गली खोजली सारी।
कोई कहै वो भूक्का हो लिया नही रही साहूकारी।
कोई कहै अक गिरधारी मन भाये सेठ नरसी के।३
रगबीरशरण नै अपनी कलम सै ऐसे अक्षर लिक्खे।
जगत् सेठ के आग्गै जगत् के सभी सेठ है फिक्के।
चौदह बिलात्तों के सिक्के बतलाये सेठ नरसी कै।४

जवाब सेठानी का

दोहा– लग्न भागत का जिब सुण्या, भरा काया मैं रोस।
अपने कर्मो पर तभी करण लगी अफसोस।
रागनी– मेरै ना कोई बेट्टा एक बेट्टी न्यू ख्याल होरया है।
समधी नै के बेरा म्हारा के हाल होरया है।टेक
कभी म्हारै दूध के खाल बहै थे हम जगजाहिर सेठ कहै थे।
जहॉ पर हम रहैं थे काचों का ताल होरया है।१
थी क्या मन्सा सेठ की पोट्टी म्हारी ना झाल किसीने ओट्टी।
लिक्खी चिटठी खोट्टी–खोटटी, जिगर मै साल होरया है।
जो हरनन्दी बेट्टी मरज्या, हमै सब तान्ने देगी परजा।

था मन्सा के सिर कर्जा, म्हारा दिया माल होरया है।२
रगबीर बडा करा ढेट्टा कधी दिए लाल सेठ की भेट्टा।
भगवान अरबपति सेठ आज कगाल हो रहया है।४

वार्ता- यह बात सुन सेठानी कहती है कि मेरे पति आपको गौशाला मे मिलेगे वहॉ चले जाओ उनको वहॉ भेज देती है। बाद मे नरसी आते है और सेठानी से चिता का कारण पूछते हैं

जवाब सेठानी व नरसी का

रागनी सेठ– आये सिरसागढ सै चिटठी लेकै हो ब्राह्मण नाई।
नरसी– दो आये मेहमान सुणे सेठ नै लहर खुसी की आई।टेक
सेठानी– सबसै मोटा फिकर पति है भी न बिस्तर का।
न– पडी टोट्टे की मजबूरी काम करै पैन्ने सस्तर का।
से– घर मै एक लिहाफ पुराणा फटे हुये अस्तर का।
न– सारी उमर मै दाग लग्या आज गहरे नस्तर का।
से– मत फिकर करै भरतार सुणै गे जादौ राई।
७– वे क्या है हूर उन्होने कोई बात बताई।१
से– लग्न भात का लाये पिया तेरी धेवती की साद्दी।
न– के पता नही समधी नै हुई म्हारी मोटी बर्बादी
से– बुरे बखत मै हीणे नै भी हो जा है आजाद्दी।
न– नहीं आब सगे की तारै जो माणस होत्ते बुनियादी'
स- जो गया पिया ना भात मरै विष खा मेरी जाई।
न– मैं कहॉ सै भर दूँ भात मेरे ना खोटटी पाई।२
से– जग के रसम–रिवाज पिया करे बिना नहीं सरता।
न– हो बिन मतलब मेरी नार बात कोई नहीं नी करता।
से– यू पडकै रहा बबाल इसी का तो भारी डर था।
न– जब क्यो ना मिलाय हात पास मै मेरे जर था।
से- इस बात नै जाणै कौण बता नगरी के भाई।
न– ळे दुनियॉ मै विख्यात दान करी सभी कमाई।
सेत' इन बातो का ख्याल छोड करो बात ठिकाणे की।
न– बणै ठीक–ठिकाणा तभी रसम हो ठीक कमाणे की।
से– समय रात का आ गया चिता उनके ठहराणे की।
न– यू बथवा बगादै दूर टाल है म्हारे भी खाणे की।
से– रगबीरसरण टोट्टे मै बुरा लगै है सगा जमाई।
न– इस कर्म रेख के आग्गै किसी की ना पार बसाई।४

वार्ता– नरसी तो परेशान होकर एक किसान की झोपडी मे जाकर पड रहता है उधर नाई और पडित परेशान होते है नरसी का पतानहीं चलता। भगवान भक्त की लाज बचाने के लिये पुजारी का यप बनाकर उन नेगियो के पास आते है और उनका कष्ट दूर करके भात का लगन अपने अधिकार मे लेते हैं।

रागनी– जब जब भीड पडी भक्तो पै खुद देहधारी बणगे।
ताली–कुन्जी ले मन्दिर की हरि पुजारी बणगे।टेक
बिगडी आब भक्त मेरे की न्यू सोच कै बॉत चले थे।
लाज बचावण की खातिर नरसी के तात चले थे।

नौकर बणकै नरसी सेठ के खुद रघुनाथ चले थे।
भक्तो के हित नाई ब्राह्मण कही भिखारी बणगे।
गरुड–सवारी छोड मुरारी पैदल–पैदल धाये।
निज भक्तो के प्रेम मै फॅसकै साग अलूणे खाये।
कही सुदामा के तन्दुल कही झूठे बेर मन भाये।
कही चिता के खडे नेवगी चलकै धारै आये।
देखलो सच्चे प्रेम के बस मै आग्याकारी बणगे।२
जाके पास फेर बोले प्रेम मे सुणियो बात जरासी।
किसकी बाट मे खडे यहॉं तुम किसकी करो तलासी।
या तो तुम पागल हुये इश्क मे मनवास्सी सोला रास्सी।
किस कारण सै व्याकुल हो यह कैसी छाई उदासी।
भेददी जणै अण जाणी है ऐसे बनवारी बणगे।३
मन की साफ खोलकर कह दो मै थारा सुख उठाऊ।
परदेस्सी जो दूर देश के तुम्हे अभी ठहराऊ।
जिस वस्तु की चाहना हो इभी थरी खात्तिर ल्याऊ।
प० जगतसेठ नरसी का मै नौकर जड की बात बताऊ।
कहै रगवीर के जीणे उनको जा हर से हारी बणगे।४
रागनी– हरि टहल बजावण लाग्ग
गरम सुराही भर कै नीर पेर धुवावण लाग्गे।टेक
नाना रूप धरे गिरधारी कधी मन्दिर के बणे पुजारी।
भोजन लाये छत्तीस प्रकारी उन्हे रे खुवावण लाग्गे।१
भगत के बसमे रहै आटठोपहर हरि तो सकतकिये पलगमसैरी
मखमली गद्दे काम सुनहरी उन पेर सुवावण लाग्गे।२
जिब भगतो की आई तवाई तभी प्रभु बन करी सुहाई।
रात को आप खुद बणकै नाई चरण धुवावण लाग्गे।३
गाडी बिगडी थी बिन आवग कह रगबीर वोहा जलथामण
नरसी सेठ को नाई ब्राह्मण बहुत सराहवण लाग्गे।४

वार्ता- हे सज्जनो प्रात होने पर भगवान कृष्ण ने नाई ब्राह्मणो को दक्षिणा देकर विदा किया उधर नरसी किसान की झोपडी से उठकर मन्दिर मे आया उस मन्दिर मे और भी एक साधु रहते थे किन्तु एक सीखचन्द नाम का साधु था वह नरसी का मित्र था नरसी ने सीखचन्द को अपनी सब मुसीबत सुनाई सीखचन्द मे कहा मित्र चिन्ता की कोई बात नही हम सब आपकी सहायता करेगे और भात मे चलगे किन्तु तेरा किसी किसान से मेल हा तो एक बैल गाडी माग ले नरसी सीखचन्द की बात सुनकर बोला मेरा एक जाट यार है चलो उसके पास चले और बेल गाडी मागे नरसी जाट के पास आता है जाट ने बडा सम्मान किका और आने का कारण पूछा अब नरसी हाथ जोड कर जाट से प्राथना करता है।

जवाब नरसी का

दोहा– हाथ जोड नरसी कहै करौ चौधरी ख्याल।
मै भिक्षुक तेरे द्वार का पूरा करो सवाल।
रागनी– बडे रै निमाणे पण मै बोल्या शरमा कै।
दो वाकद एक गाडी चौधरी अपणी दे ल्याकै।टेक
दुनियॉं जाणै कुफल लागरा मेरी किस्मत कै।
के सिर मारूँ जाकै बिक रहया उस बेमोली फेटटी के।

एक पैसे का नही सहारा नरसी मलिया मेटटी कै।
तेरी बेटटी कै भरना भात मन सिरसागढ जाकै।१
आसका बाप निराश की मॉ होत की बहण बतलाते है
धीरज मै मित्र और नारी काम बखत पै आते है।
और न्यू तो चिकनी-चुपडी बात्ते बहुत से लोग बनात्ते है।
अजमात्ते है इन चारों ने टोट्टे मै आकै।२
कधी लख घटै कधी करोड बधे नही फिक्र था तेजी मदी का
मन्था सेठ नै कुछ ना सोची लिकडा आदत गन्दी का आज मछली के गक मै कटवा लाग रहग्या फन्दी का।
हरनन्दी का फिकर घणा कधी मरजया विष खाकै।३
रघवीर बिगाडी जो ईश्वर नै वा समर सकी ना कभी नर सै
तेरे बिना नहीं काई मेरा मै चाल्या था सोच न्यूँ ही घर सै
पाहयॉ मैं दई गेर जाट के पगडी तार तुरत सर सै।
अपने घर सै मतना भेजिये मान्नै खाली ठाकै।४

जवाब जाट का

दोहा- सुण कै इतनी बात को बन्द हुई थी जाड।
नरसी सै कहै चौधरी नीच्ची करकै नाड।
रागनी- नरसी सेठ सै जाट विचारा बोल्या जोड कै हाथ।
वा गाडी हुई पुराणी बकदी का काग्गे खोदे गात।टेक
इन्होने दुख दिया घणा कर मै मच गी गदगी मेरे घर मै।।
कुटटी लिकडै गोब्बर मै, भाई जाड रही ना दॉत।
इनसे तेरा काम चलै नॉ एक दिन मै दो कोस चले ना।
जहॉ बैठ ज्या फेर उठै ना, कितनी मार लो लात।२
टोटे नै खाक मै दिया मिलाकै, कर दिया कोडा खूब हिलाकै
इन्हे ठुवाऊँ रोज बुलाके भाइयो की पचात।३
कह रगवीर ह बुरी हाल से हड्डा लिकडी बार खाल स।
सुन्ने छोडे तीन साल स गलतान्नी है ना नाथ।४

वार्ता- जाट की बात सुनकर नरसी ने कहा मित्र जसी भी हाल ह आप मुझे उस हाल हालत में दे दो जाट न बैल आर गाडी बतला दी। नरसी गाडी के पास आया और गाडी न चली तब रज में होकर कहता ह।

जवाब कवि का

रागनी- नरसी रोक बोल्या बेट्टी होती नॉ मरै।
कौण हॉक्के गाडडी किसी नै भी कार ना करी।टेक
दुख वालो ल्यौ देख बाप चल्या बेटटी के घर पै।
के जीणा यूँ इतना दुख जिब आण पडै नॅर पै।
कैसे तारूँ या गठडी सर पै पाप की धरी।१
भगत की भगति आप हरी खुद चलै विचार कै।
कादधै लाठठी एक लंगोटटा चोट मार कै।
गढवाले का रूप धर कै आ गे आप हरी।२
मेहनल करकै खालै इसमै ना कुछ है दोसा।
एक तम्माकू की पेड़ी और ल्यूँगा एक गोस्सा।
सवा रुपया एक परोस्सा मिहनत समझ खरी।३
कह रगवीर विपत ठाकै माणस का सरीर मुॅसै।

उनकी सुण सुण बात सभी नगरी के लोग हँसे।
जिस बिपत मैं भगत फॅसे प्रभु आकै करौ बरी।४

वार्ता- भगवान कृष्ण गढवाल बनकर भक्त की गाडी लेकर सिरसा को चलते है।

दोहा- पहलै तो हरि प्रेम सै, करने लगे बिचार।
अपणे साद्‌दी भगत की, गाडडी करी तइयार।
काफिया-किसनजी जोड भगत की गाडडी फौरन झूनागढ सै धाये
जितने साधू नरसी के सॅग सारे गाडडी बीच बिठाये।
करकै रात – दिनौ की मजिल सारे सिरसागढ मैं आये।

वार्ता- मन्शा सेठ को जब पता चला कि नरसी चौदह फकीरों सहित आया है नाई को कहा उनको गौशाला मे डाल दो ऐसा ही किया गया। नरसी की निंदा सब शहर में हो गई तो आधी रात को हरनन्दी अपने पिता को पीटने चलती है।

जवाब हरनन्दी का

रागनी- हाथ कोरडा लेकै कटारी रात पाड चाली।
अपने पिता सै हरनन्दी रे करण राड चाली।टेक
दुनिया मारै बोल जखम मेरी छात्ती करकै।
ऐसी गहरी बदनामी सै पिण्ड छूटै मरकै।
गुस्से के मॉह भरकै पीसती दात-जोड चाल्ली।१
मिलते ही सिर अलग करूँ मेरै पल की देर नी।
लाश उठा चाहे कुँवे के मॉह पडज्या गेरनी।
जैसे किसी पै बिगड़ सेरणी बण मै दहाड चाल्ली।२
न्यूँ भी ना सोच्चा आँख फूट गी इन लाज भौंरॉ की।
ठस्स की पच लगै वहॉ रिश्तेदारो की।
लुहकती छिपती दीवारॉ की लेत्ती आड चाल्ली।।३
कहे रगबीर बिछी कम्बली जहॉ उसके बाप की।
दोन्नों हात सै उसकी नाड की भरली चाप सी।
धरम आसरा छोड पाप की करण बाड चाल्ली।४
दोहा- दरवाजे के सामणै फौरन पहुॅची आय।
पिता कौं जाय कै, सोत्ता लीना ठाय।
रागनी- साधू हो जायकै हो चाल ना मै तार दूँगी खाल।
तेरे कैसे बेईमान फिरै धी-बेट्‌टी का अन्न खात्ते।
फिरै दाग कुल कै लात्ते, तनक नही है सरमात्ते।
घणे पिटोगे ना जात्ते, मार कर दूॅ घायल।१
कौड़ी पैसा पास नहीं था, ना बेट्‌टी के आणा था।
मॉग करकै खाणां था कहीं डूब कै मर जाणा था।
दाग ना लगाणा था करके फकीरी हालक।२
के दे देगा पास तेरे जिब आवैगें नात्ती गोत्ती।
या मनसा की ब्याह ली पोती उसै कितनी दे रेशम धोती।
हंस चुगै कैसे मोती बिना हौ सरोवर-ताल।३

जवाब शामिल रागनी

हरनन्दी– बेईमान बाहर कुल कू लजावण आया।
नरसी– टोट्टे का भात्ती तेरा धमकावै ना मेरी माया।टेक
हरनन्दी– आत्ता क्यूँ भात भरण नै जिब कगाली घर मै।
नरसी– मान्नी नहीं माता तेरी काफी यूँ सिर पटक्या मै।
हरनन्दी– गन्दी क्यूँ करली नीति प्रीति तै लाकै हर सै।
नरसी– सोच्चा कधी लाडडो रावै दीपक नै लेकै कर मै।
हरनन्दी– दीपक की शोभा खात्तिर कितने किरोडी लाया।
नरसी– जिब थे किरोडी पास मन्शा का मान घटाया।१
हरनन्दी– यहाँ के भण्डारा था तू ल्याया दस–बीस माडे।
नरसी– बिप्ता मैं जो माणस सात्थी मै ना बेटटी छोडे।
हरनन्दी– इनकी भी करूँ मरम्मत आये बेईमान निगोडे।
नरसी – इज्जत ना तारे हरनन्दी चाले ज्या कीडे–कोडे।
हरनन्दी– कौण से मुँह सै मेरे घर का यूँ टुकडा खाया।
नरसी– आत्ता क्यूँ मैं बेट्टी तेरै होत्ता कोई मेरै जाया।२
हरनन्दी– कर रहे सब निन्दा तेरी नगरी क़े लोग लुगाई।
नरसी– वो के दुख जाणै किसी का जिसकै ना फटी बुवाई।
हरनन्दी– दुनियाँ सब तान्ने मारै कहाँ तक मै करूँ समाई।
नरसी– दुनियाँ की चाल दूरँगी किस कौया दे है भरमाई।
हरनन्दी– कगाली बेहद बेट्टी गर्दिश का चक्कर खाया।३
हरनन्दी– चाल्या जा इभी रात नै देकै यूँ धक्का बोल्ली।
नरसी– दिल के होगे टुकडे ऐसी दी मार बसोल्ली।
हरनन्दी– गुस्से में ठाया कोरडा मारण नै त्यार होली।
नरसी– मारै ना बेटी मेरे बोल्या यूँ देकै झोल्ली।
हरनन्दी– कर दूँगी टुकडे तेरे तडकं जो पापी पाया।
नरसी– ऐसा रगबीर सरण यूँ जात्ता ना बखत भुलाया।४

वार्ता– हरनन्दी यह कह चली गई यदि तुम सवेरे न गये तो प्रात: बुरी तरह से निकाले जाओगे नरसी का नीद नही आती। ब्रह्म मुहूर्त होता है नरसी गऊशाला से बाहर आकर देखते हैं एक मारवाडी सेठ भात का सब सामान लिये बैठा है। आपस मे बातचीत होती है नरसी ने कहा महाराज सामान तो हमारे मतलब का है किन्तु हमारे पास तो पैसा नहीं फिर भगवान बोले –

जवाब कृष्ण का

रागनी– चुन्नी और चोला असली जडे है सितारे ले लै।
नकदी का ब्यौत नहीं सेठ जी उधार ले–लै।टेक
ला दी तेरे सामणे ढेरि, पसन्द ना आवै चीज वा मेरी।
करूँ हूँ खुशामद तेरी, किस्न जी के प्यारे ले–लै।१
नरसी क्यो चक्कर में आ रहा, मै करता बिसवास तुम्हारा
बरी काा समाना सारा, मैहदी और छुआरे ले–लै।२
साडी पसमीने की ल्याया और क्यू ज्यादे झगडा गाया।
आपकू मैं देणें आया कहणे सै हमारे ले–लै।३
कह रगबीर मैं जाऊँ, फिरै टोहे सै नॉ पाऊँ नरसी।
है: के बताऊँ नरसी मुफ्त ही मै सारे ले–लै।४

वार्ता– यह सब बात नरसी ने सीखचन्द को बतलाई। सीखचन्द सुनकर नरसी से बोला।

जवाब सीखचन्द खाती का

रागनी– नहीं जाणा और नहीं है पिछाणा।

वो मुरली वाला था स्याम बावले नरसी।टैक
ना समझा भेद हर का रिस्तेदार नही थारे घर का।
सौदागर का भरकै बाणा ल्याया था चीज तमाम।
बावले नरसी।१
दुनिया ऊजड हो गी बसके तेरी ता बात गात मै।
भक्ति-रस के नै ल्या दिया लाणा आग थै दया-धाम।
बावले नरसी।२
सहारा लगै नही रोये सै उखडी नीव गढी चाये सै।
इब टोहणे सै मुश्किल पाणा केस बणगा यूँ काम।
बावले नरसी।३

वार्ता- हे सज्जनो भात का बुलावा दिया जाता है भगवान भी अपना रथ द्वारका से जोडकर सिरसा मे आते है। नगर के लोग लुगाई रथ को देखकर माहित हो जाते है। भगवान अपना रथ लेकर गऊशाला मे आत है।

नत्थूलाल प्रेम का जग करै काई पूरा हो सतसग।
मानसिह कहै प्रेम सै गाणा अपन प्रभु का नाम।
बावले नरसी।४
रागनी- हरि के रथ की घोर सोर सिरसा गढ सारे मै।
सोन्ने की बुर्जी हीरे-मोती जड सितारे मै।।टेक
पर्दा पडया सुनहरी सच्चा बात बताई ना जाती।
जगमग-जगमग होरी रथ मे ज्यात लखाई ना जात्ती।
सूरज कैसी किरण चमकती नजर हटाई ना जात्ती।
तीन्नॉ लोक दिखाई दे रहे करी वडाई ना जाती।
कहै लुगाई मनसा होणॉ ना जार विचार मै।१
सोन्ने के जड तलावे पीचणी जिनमे सच्ची लगी कणी।
सब बहुओ के परदे टूट गये चाल्ल वाकी बहू घणी।
घूघट खोल बहू खडी आग्गे मध मे जोबन खडी तणी।
कोई भूलगी कुर्ता पहरण ऐसी बावली बीर बणी।
कोई खावे पै धरके हाथ करै बात इशारे मै।२
कोई पन्द्रह सोला अठारा सब कर छोरी सिगार चली।
कोई तावल मै भाग्गी नगे सिर पल्ला डार चली।
कुत्ते बड गये घर मै दूध खिडा दिया हारे मे।३
ब्याहली नस्सो रलगड होगे कोई खडा बरात्ती मै।
कोई बरात्ती किस छोरे के हाथ धरे खडया छात्ती मै।
किसी का कुर्ता हटया पेट से सलपट पड रहे गात्ती मै।
कह रघुबीर बावले होगे या ताकत नरसी भाती मे।
मिसराणी कोठे पै देक्खे खडी चमारी गारें मै।४

वार्ता- हे सज्जनो भगवान ने नरसी को समझाया और कहा अब देर न करो। मेरे कहने से रथ मे बैठो और भात करो। हरि के समझाने पर नरसी रथ मे बैठकर चलता है।

रागनी- चले हरि गैल रथ नरसी नै जुडवाया।टेक
हरनन्दी- चौमुखा चिराग बाल हरनन्दी भी त्यार हुई।
गावै थी रंगीले गीत कटठी सारी नार हुई।

बहुत सी खडी हुई कोठठे पै कोई खडी बार हुई।
नरसी– कुबेर उसमे बैठठे साथ मै थी योग माया।
कॅू चावन किस्न बने आनन्द थी नरसी काया।
झमाझम रथ मै होरी आरते के ऊपर आया।
हरनन्दी– कलम और दवात लेकें कई–कई मनीम खडे।
कोढी और कगाल अन्धे बहुत स यतीम खडे।
भाई–चारा–रिश्तेदार बॉध–बॉध सीम खडे।
चार सै चॉदी के थाल कई तो सुनहरी दिये।
कत्तिस सौ गिलास चादी सोन्ने क जो पेस किये।
सवा सौ सुनहरी घडे पूरे ढाई धडी दिये।
इक्यावन लाल परात पच्चिस देख जगत चकराया।१
हरनन्दी– हरनन्दी नै अपणे मन मै बात का जिब ध्यान धरा।
गलती के मॉह फॅसें मैन्ने पिता का अपमान करा।
हाथ मलरी कितना मोटटा चाला मै भगवान करया।
नरसी– कसैडी पतीली चमच और लाटो की लार लाई।
पिलग और सुनहरी चौकी जिन्हे रहे तार नाई।
सोने और चॉंदी की इभी अम्बर से फवार आई।
आज लोक दुनियॉ मै इतना किसी ने ना भात भरया।
धन्य नरसी सेठ तुझे सम्भल ऊपर पाट धरया।
नरसी– तीस मण छुवारे ल्यारे अठारा मण बदाम पक्के।
चॉदी के बक्सो मे भरके बणियो के बीच रक्खे;
देखकै समान मन्शा सेठ के तो छुटटे छक्के।
चौबीस नाथ जडाऊॅ देखकै आनन्द हाग्यी काया।२
रोवण लागी हिडकी बधगी भागके नै कौली भली।
नरसी– पेटटी तो सुनहरी ढार लाल थे किरोडी आठ।
दात के धरण की खात्तिर मन्सा कै ना पाई खाट।
मौळर असर्फी इतनी माटटी क ना पाये म्राट।
हरनन्दी– हाथ जोड हरनन्दी बोल्ली किस्न का जाप करो।
रात की बातॉ का ना ख्याल पिताजी आप करौ।
पहली ही निगाह सै देक्खी मेरी गलती माफ करौ।
नरसी– लाक्खॉ थे सुनहरी ओन्ने पीले रग के लाक्खो थान।
पसमीने की साडी लिक्खो समधण ने मगाई आठ।
मखमली गलीचे तोशक तकियॉ का होगा दान।
जवाहरात की जडाऊ तियल हरनन्दी की न्यारी।
हरनन्दी– की तियल ऐसी देखी जिसे पड गया रोला।
सोलाह मण के चार पत्थर कमती नही एक तोला।
नरसी– भगी तो सकेरे गाल राहगीर सकेरे बाट।
दुनियॉ आप्पा पोखी होरयी बणियॉ भी सकेरे हाठ।
धोब्बी बोल्या धोब्बण तै चल पहलै तो सकेरे घाट।
हरनन्दी– देखल्यौ तमास्सा लोग्गो भगति की करामात का।
करियो मत मान भाइयो धनजोबन और गात का।
आज लो है रूक्का जग मैं नरसी के भात. का।
नरसी – वो ही हुआ पार जग सै माणस जो सबर का रहया।
धोब्बी का धन लेगे इधर का ना उधर का रहया।
सर नै पीट रोया साला घाट का ना घर का रहया।
कह रगबीर ना पता किसी नै ऐसी हर की माया।४

सन्दर्भ एवं सहायक

आधार ग्रंथ एवं लोक साहित्य

अजीतसिह राजाबाला, पंडित रघुनाथ सिंह निवासी फिरोजपुर
जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेस गुजरी बाजार, मेरठ
अमरसिह राठौर, चन्द्रलाल भाट उर्फ वाददी निवासी दन्तनगर
अग्रवाल बुक डिपो खारी बावली, दिल्ली
अशरफ की झलक, निवासी अडोली
श्री भगवत बुक डिपो, पुरानी तहसील मेरठ
कान्ता देवी, चन्द्रलाल भाट उर्फ वाददी
जवाहर बुक डिपो भारतीय प्रेस गुजरी बाजार मेरठ
कृषि विज्ञान की गॉवो की कहावते, राजकुमारी श्रीवास्तव
आर्य बुक डिपो, करोल बाग नई दिल्ली–११०००५, जनवरी १९८३
गजना गौरी चन्द्रलाल भाट उर्फ वाददी
जवाहर बुक डिपो भारतीय प्रेस गुजरी बाजार, मेरठ
चन्द्रहास, पडित बलवन्त सिह उर्फ बुल्ली निवासीनागल
गर्ग एण्ड को थोक पुस्तकालय ४८४, खारी बावली, दिल्ली
चन्द्रहास तथा शाही लकडहारा पडित नत्थूराम निवासी घोघा
अग्रवाल प्रकाशन करोल बाग नई दिल्ली
रूपकला जादूखोरी चतुर सुजान बुद्धूलाल, गिरीशचन्द्र निवासी सालह खेडी, मुजफ्फरनगर
जवाहर बुक डिपो, गुजरी बाजार मेरठ
नरसी भात, पंडित रघुबीर शरण निवासी सूप
जवाहर बुक डिपो, गुजरी बाजार मेरठ
नरसी का भात, पंडित रामरतन कौशिक निवासी टीला
जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेस गुजरी बाजार मेरठ
नल दमयन्ती, पंडित रघुनाथ सिंह निवासी फिरोजपुर
जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेस गुजरी बाजार मेरठ
नागिन, चन्द्रलाल भाट उर्फ वाददी निवासी दन्तनगर
अग्रवाल बुक डिपो खारी बावली दिल्ली
निहालदे के परवाने, चन्द्रलाल भाट उर्फ वाददी निवासी दन्तनगर
अग्रवाल बुक डिपो खारी बावली दिल्ली
पन्ना धाय जयकरण सिह ग्राम शेरपुर सूबा दिल्ली
भगवत गंज बुक डिपो बुलन्दशहर
पांडव जन्म पंडित रामरतन कौशिक निवासी टीला
भगवत बुक डिपो, पुरानी तहसील मेरठ

प्राचीन भारत का इतिहास, डॉ० कृष्ण ओझा
कला संकाय राजस्थान वि०वि० जयपुर
रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली जयपुर
प्राचीन भारत का इतिहास, वी०डी० महाजन
एस० चॉद एंड कम्पनी लिमिटेड रामनगर, नई दिल्ली – ११०००५
१९६६ प्रथम संस्करण
पूरणमल बाग नौलक्खा, पंडित रामरतन कौशिक निवासी टीला
जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेस गुजरी बाजार मेरठ
पृथ्वी सिंह किरणमई, चन्द्रलाल भाट उर्फ वाददी निवासी दन्तनगर
जवाहर नगर बुक डिपो, भारतीय प्रेस गुजरी बाजार मेरठ
भारतीय संस्कृति तथा संस्कृति का विकास, वी०एन० धूनिया,
लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा।
भारतीय सस्कृति और उसका इतिहास, डॉ० सत्यकेतु विद्यालकार
खंडित प्रति
भारतीय संस्कृति की सांस्कृतिक रेखाएँ, परशुराम चतुर्वेदी
खंडित प्रति
भूरा बादल, जयकरण सिंह ग्रम शेरपुर सूबा दिल्ली
श्री भगवत बुक डिपो पुरानी तहसील मेरठ
मस्तानी जोगण, चन्द्र भाट उर्फ वाददी निवासी दन्तनगर
शंकरदास अगनपाल कागजी हालू बाजार भिवानी (हरियाणा)
मेरठ जनपद एक सर्वेक्षण एव मेरठ का भूगोल और इतिहास
आचार्य नेमचन्द सुमन प्रभात कार्यालय, छीपी टैक, १९७६, प्रथम संस्करण
रन्नो का बयान, चौ० हरिसिंह 'गजब'
जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेकस गुजरी बाजार मेरठ
रामरतन का गुच्छा, पंडित रामरतन कौशिक निवासी टीला
जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेस गुजरी बाजार मेरठ
वन पर्व, पंडित रघुनाथ सिंह निवासी फिरोजपुर
जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेस गुजरी बाजार मेरठ
राजा विक्रमादित्य, नत्थूराम निवासी धोघा
अग्रवाल बुक डिपो, भारतीय प्रेस गुजरी बाजार मेरठ
लोक साहित्य, डॉ० कृष्ण देव उपाध्याय एवं सांस्कृत्यायन
हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास षाडश भाग,
नागरी प्रचारिणी सभा काशी
लोक साहित्य समीक्षा डॉ० कृष्ण चन्द्र शर्मा
खंडित प्रति
श्रवण कुमार, पंडित रघुनाथ सिंह निवासी फिरोजपुर
जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेस गुजरी बाजार मेरठ

सांवल्दे राजा कारक, पंडित रामरतन कौशिक निवासी टीला
जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेस गुजरी बाजार मेरठ
हरियाणा लोक साहित्य, डा० भीमसिंह मणिक
खंडित प्रति
हूरमैन का, चन्द्रलाल भाट उर्फ वाददी निवासी दन्तनगर
जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेस गुजरी बाजार मेरठ
हकीकतराय, पंडित लक्ष्मीचन्द शर्मा निवासी सूप
कुलभूषण कवि राज पं० लक्ष्मीचन्द शर्मा वैद्य शास्त्री
हरिश्चन्द्र राज्यदान, पंडित रामरतन कौशिक निवासी टीला
जवाहर बुक डिपो, भारतीय प्रेस गुजरी बाजार मेरठ
हिन्दुओ के व्रत, पर्व और त्यौहार, रामप्रताप त्रिपाठी
लोकभारती प्रकाशन, १५ ए महात्मा गॉधी मार्ग इलाहाबाद।
हस्तलिखित पांडुलिपि, पंडित लक्ष्मीचन्द शर्मा
उत्तानपाद
कर्ण
गोपीचन्द महाराज
दुश्यन्त शकुन्तला
ध्रुव भक्त
नरसी का भात
पिंगला भरतरी
सत्यवान सावित्री
सोमनाथ प्रथावती
हकीकतराय
स्वामी शकरदास की रचनाऍ (हस्तलिखित पांडुलिपि)
आर्य समाज पर्व
बुद्धि प्रकाश
वृहत ज्ञान चिन्तामणि
वृहत ज्ञान प्रकाश
मुक्ति प्रकाश

सहायक ग्रन्थ

कौरवी लोकोक्तियॉ, प्रो० शिवकुमार शाण्डिल्य
मगला प्रकाशन नयी दिल्ली – २२
दिवंगत हिन्दी सेवी प्रथम भाग, आचार्य क्षेमचन्द सुमन
ब्रज लोक कथाओं का अध्ययन, डॉ० सत्येन्द्र
ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, डॉ० सत्येन्द्र
साहित्यलोचन, डॉ० श्यामसुन्दर
हिन्दी साहित्य कोश भाग १

संस्कृत ग्रन्थ

जैमिनीय उपनिषद ३/२८
ऋग्वेद, संपा० श्रीराम शर्मा
सस्कृत संस्थान बरेली १६६५
अग्निपुराण, संपा० श्रीराम शर्मा
संस्कृत संस्थान बरेली १६६८
गरुड पुराण, संपा० श्रीराम शर्मा
संस्कृति संस्थान बरेली १६६८
पाणिणि अष्टाध्यायी ५.१४४
महाभारत १.८४
गीता ३.३६, ३.२२, ३.२४
महापुराण पुष्पदन्त कृत, सं० डा० पी० एल० वैन
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी, १६७८
श्रीमदभगवदगीता, गीता प्रेस गोरखपुर
सं० २०३४

जिला गजेटियर्स

मुजफ्फरनगर डिस्ट्रिक्ट, भाग ३, संपा० एच०आर० नेविल
गर्वमेंट प्रेस यूनाइटेड प्रोविन्सेज, १६०३
मेरठ डिस्ट्रिक्ट भाग ४, संपा० एच०आर० नेविल
गर्वमेंट प्रेस, यूनाइटेड प्रोविन्सेज १६२२
मुरादाबाद गजेटियर्स भाग–१६
सं. एच.क्यू. नेविल गर्वनमेंट प्रेस, १६११
गजेटियर आफ सहारनपुर डिस्ट्रिकट, भगा २
संपा० एच.क्यू. नेविल गर्वनमेंट प्रेस १६२७
गजेटियर आफ बिजनौर डिस्ट्रिक्ट
एच.क्यू. नेविल, गर्वनमेंट प्रेस १६०८